LIBRARY OF CONGRESS.

UNITED STATES OF AMERICA.

CHAP. ____________

SHELF ____________

9—404

Bible. N.T. Gospels. Hindi. 1864

धर्म्मपुस्तकके अन्तभागके पांच खण्ड।

अर्थात

मत्ती औ मार्क औ लूक औ योहन रचित

# प्रभु यीशु ख्रीष्टका सुसमाचार।

और

प्रेरितोंकी क्रियाओंका वृत्तान्त।

जो

यूनानी भाषासे हिन्दीमें किये गये हैं।

---

THE

# FOUR GOSPELS

AND THE

# ACTS OF THE APOSTLES,

IN HINDI.

---

CALCUTTA:

PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS, CIRCULAR ROAD.

1864.

BS315
H47G4
1864
Orien
Hind

Sw.
25 Ja '01

# मत्ती रचित सुसमाचार।

## १ पहिला पर्व्व।

१ यीशु ख्रीष्टकी बंशावलि। १८ उसके जन्मकी कथा।

१ इब्राहीमके सन्तान दाऊदके सन्तान यीशु ख्रीष्टकी
२ बंशावलि। इब्राहीमका पुत्र इसहाक इसहाकका पुत्र या-
३ कूब याकूबके पुत्र यिहूदा और उसके भाई हुए। ता-
मरसे यिहूदाके पुत्र पेरस और जेरह हुए पेरसका पुत्र
४ हिस्रोन हिस्रोनका पुत्र अराम। अरामका पुत्र अम्मी-
नादब अम्मीनादबका पुत्र नहशोन नहशोनका पुत्र
५ सलमोन। राहबसे सलमोनका पुत्र बोअस हुआ रूतसे
६ बोअसका पुत्र ओबेद हुआ ओबेदका पुत्र यिशी। यि-
शीका पुत्र दाऊद राजा ऊरियाहकी बिधवासे दाऊद
७ राजाका पुत्र सुलेमान हुआ। सुलेमानका पुत्र रिहबु-
आम रिहबुआमका पुत्र अबियाह अबियाहका पुत्र
८ आसा। आसाका पुत्र यिहोशाफट यिहोशाफटका पुत्र
९ यिहोरम यिहोरमका सन्तान उज्जियाह। उज्जियाहका
पुत्र योथम योथमका पुत्र आहस आहसका पुत्र हिजकि-
१० याह। हिजकियाहका पुत्र मनस्सी मनस्सीका पुत्र आमोन
११ आमोनका पुत्र योशियाह। बाबुल नगरको जानेके सम-
यमें योशियाहके सन्तान यिखनियाह और उसके भाई
१२ हुए। बाबुलको जानेके पीछे यिखनियाहका पुत्र शलति-
१३ येल शलतियेलका पुत्र जिरुबाबुल। जिरुबाबुलका पुत्र

अबीहूद अबीहूदका पुत्र इलियाकीम इलियाकीमका
पुत्र असोर। असोरका पुत्र सादोक सादोकका पुत्र आ- १४
खीम आखीमका पुत्र इलीहूद। इलीहूदका पुत्र इलि- १५
याजर इलियाजरका पुत्र मत्तान मत्तानका पुत्र याकूब।
याकूबका पुत्र यूसफ जो मरियमका स्वामी था जिससे १६
योशु जो ख्रीष्ट कहावता है उत्पन्न हुआ। सो सब पीढ़ि- १७
यां इब्राहीमसे दाऊदलों चैादह पीढ़ी श्रैार दाऊदसे
बाबुलको जानेलों चैादह पीढ़ी श्रैार बाबुलको जानेके
समयसे ख्रीष्टलों चैादह पीढ़ी थीं।
योशु ख्रीष्टका जन्म इस रीतिसे हुआ. उसकी माता १८
मरियमकी यूसफसे मंगनी हुई थी पर उनके एकट्ठे हो-
नेके पहिले वह देख पड़ी कि पवित्र आत्मासे गर्भवती है।
तब उसके स्वामी यूसफने जो धर्म्मी मनुष्य था श्रैार १९
उसपर प्रगटमें कलंक लगाने नहीं चाहता था उसे चुप-
केसे त्यागनेकी इच्छा किई। जब वह इन बातोंकी २०
चिन्ता करता था देखो परमेश्वरके एक दूतने स्वप्नमें उसे
दर्शन दे कहा हे दाऊदके सन्तान यूसफ तू अपनी स्त्री
मरियमको अपने यहां लानेसे मत डर क्योंकि उसको
जो गर्भ रहा है सो पवित्र आत्मासे है। वह पुत्र जनेगी २१
श्रैार तू उसका नाम योशु रखना क्योंकि वह अपने
लोगोंको उनके पापोंसे बचावेगा। यह सब इसलिये २२
हुआ कि जो बचन परमेश्वरने भविष्यद्वक्ताके द्वारासे
कहा था सो पूरा होवे. कि देखो कुंवारी गर्भवती होगी २३
श्रैार पुत्र जनेगी श्रैार वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे
जिसका अर्थ यह है ईश्वर हमारे संग। तब यूसफने २४

नींदसे उठके जैसा परमेश्वरके दूतने उसे आज्ञा दिई थी
वैसा किया और अपनी स्त्रीको अपने यहां लाया।
२५ परन्तु जबलों वह अपना पहिलौठा पुत्र न जनी तबलों
उसको न जाना और उसने उसका नाम यीशु रखा।

## २ दूसरा पर्ब्ब ।

१ ज्योतिषियोंका यीशुको खोजना। १३ यूसफका यीशु और मरियमको मिसरमें ले जाना। १६ हेरोदका बैतलहमके बालकोंको घात करना। १९ यूसफका परिवार सहित मिसरसे लौटना और नासरतमें बसना।

१ हेरोद राजाके दिनोंमें जब यिहूदिया देशके बैतलहम
नगरमें यीशुका जन्म हुआ तब देखो पूर्ब्बसे कितने ज्यो-
२ तिषी यिरूशलीम नगरमें आये. और बोले यिहूदि-
योंका राजा जिसका जन्म हुआ है कहां है क्योंकि हमने
पूर्ब्बमें उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने
३ आये हैं। यह सुनके हेरोद राजा और उसके साथ
४ सारे यिरूशलीमके निवासी घबरा गये। और उसने
लोगोंके सब प्रधान याजकों और अध्यापकोंको एकट्ठे
५ कर उनसे पूछा ख्रीष्ट कहां जन्मेगा। उन्होंने उससे कहा
यिहूदियाके बैतलहम नगरमें क्योंकि भविष्यद्वक्ताके द्वारा
६ यूं लिखा गया है. कि हे यिहूदा देशके बैतलहम तू
किसी रीतिसे यिहूदाकी राजधानियोंमें सबसे छोटी
नहीं है क्योंकि तुझमेंसे एक अधिपति निकलेगा जो
७ मेरे इस्रायेली लोगका चरवाहा होगा। तब हेरोदने
ज्योतिषियोंको चुपकेसे बुलाके उन्हें यत्नसे पूछा कि तारा
८ किस समय दिखाई दिया। और उसने यह कहके उन्हें
बैतलहम भेजा कि जाके उस बालकके विषयमें यत्नसे

बूझो और जब उसे पावो तब मुझे सन्देश देओ कि मैं भी
जाके उसको प्रणाम करूं। वे राजाकी सुनके चले गये ९
और देखो जो तारा उन्होंने पूर्व्वमें देखा था सो उनके
आगे आगे चला यहांलों कि जहां बालक था उस
स्थानके ऊपर पहुंचके ठहर गया। वे उस तारेको देखके १०
अत्यन्त आनन्दित हुए। और घरमें पहुंचके उन्होंने बा- ११
लकको उसकी माता मरियमके संग देखा और दण्डवत
कर उसे प्रणाम किया और अपनी सम्पत्ति खोलके उस-
को सोना और लोबान और गन्धरस भेंट चढ़ाई। और १२
स्वप्नमें ईश्वरसे यह आज्ञा पाके कि हेरोदके पास मत
फिर जाओ वे दूसरे मार्गसे अपने देशको चले गये।

उनके जानेके पीछे देखो परमेश्वरके एक दूतने स्वप्नमें १३
यूसफको दर्शन दे कहा उठ बालक और उसकी माताको
लेके मिसर देशको भाग जा और जबलों मैं तुझे न कहूं
तबलों वहीं रह क्योंकि हेरोद नाश करनेके लिये बा-
लकको ढूंढेगा। वह उठ रातहीको बालक और उसकी १४
माताको लेके मिसरको चला गया. और हेरोदके मरने- १५
लों वहीं रहा कि जो बचन परमेश्वरने भविष्यद्वक्ताके
द्वारासे कहा था कि मैंने अपने पुत्रको मिसरमेंसे बुलाया
सो पूरा होवे।

जब हेरोदने देखा कि ज्योतिषियोंने मुझसे ठट्ठा किया १६
है तब अति क्रोधित हुआ और लोगोंको भेजके जिस
समयको उसने ज्योतिषियोंसे यत्नसे पूछा था उस
समयके अनुसार बैतलहममें और उसके सारे सिवानों-
मेंके सब बालकोंको जो दो बरसके और दो बरससे

१७ छोटे थे मरवा डाला। तब जो बचन यिरमियाह भवि-
१८ ष्यद्वक्ताने कहा था सो पूरा हुआ. कि रामा नगरमें एक
शब्द अर्थात हाहाकार और रोना और बड़ा बिलाप
सुना गया राहेल अपने बालकोंके लिये रोती थी और
शान्त होने न चाहती थी क्योंकि वे नहीं हैं।
१९ हेरोदके मरनेके पीछे देखो परमेश्वरके एक दूतने मि-
२० सरमें यूसफको स्वप्नमें दर्शन दे कहा. उठ बालक और
उसकी माताको लेके इस्रायेल देशको जा क्योंकि जो
२१ लोग बालकका प्राण लेने चाहते थे सो मर गये हैं। तब
वह उठ बालक और उसकी माताको लेके इस्रायेल
२२ देशमें आया। परन्तु जब उसने सुना कि अर्खिलाव अपने
पिता हेरोदके स्थानमें यिहूदियाका राजा हुआ है तब
वहां जानेसे डरा और स्वप्नमें ईश्वरसे आज्ञा पाके
२३ गालीलके सिवानोंमें गया. और नासरत नाम एक
नगरमें आके बास किया कि जो बचन भविष्यद्वक्ताओंसे
कहा गया था कि वह नासरी कहावेगा सो पूरा होवे।

## ३ तीसरा पर्ब्ब।

१ योहन डूब देनेहारेका वृत्तान्त। ७ उसका उपदेश और भविष्यद्वाक्य।
१३ यीशुका डूब लेना।

१ उन दिनोंमें योहन डूब देनेहारा आके यिहूदियाके
२ जंगलमें उपदेश करने लगा. और कहने लगा कि
पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्गका राज्य निकट आया है।
३ यह वही है जिसके विषयमें यिशैयाह भविष्यद्वक्ताने
कहा किसीका शब्द हुआ जो जंगलमें पुकारता है कि

परमेश्वरका पन्थ बनाओ उसके राजमार्ग सीधे करो।
इस योहनका बस्त्र ऊंटके रोमका था और उसकी ४
कटिमें चमड़ेका पटुका बंधा था और उसका भोजन
टिड्डियां औ बन मधु था। तब यिरूशलीमके और सारे ५
यिहूदियाके और यर्दन नदीके आसपास सारे देशके
रहनेहारे उस पास निकल आये. और अपने अपने ६
पापेंको मानके यर्दनमें उससे डूब लिया।
जब उसने बहुतेरे फरीशियों और सदूकियोंको उस- ७
से डूब लेनेको आते देखा तब उनसे कहा हे सांपोंके बंश
किसने तुम्हें आनेवाले क्रोधसे भागनेको चिताया है।
पश्चात्तापके योग्य फल लाओ। और अपने अपने मन- ८
में यह चिन्ता मत करो कि हमारा पिता इब्राहीम है
क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरोंसे
इब्राहीमके लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। और १०
अब भी कुल्हाड़ी पेड़ोंकी जड़पर लगी है इसलिये जो जो
पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और
आगमें डाला जाता है। मैं तो तुम्हें पश्चात्तापके लिये ११
जलमें डूब देता हूं परन्तु जो मेरे पीछे आता है सो
मुझसे अधिक शक्तिमान है मैं उसकी जूतियां उठानेके
योग्य नहीं वह तुम्हें पवित्र आत्मामें और आगमें डूब
देगा। उसका सूप उसके हाथमें है और वह अपना १२
सारा खलिहान शुद्ध करेगा और अपने गेहूंको खत्तेमें
एकट्ठा करेगा परन्तु भूसीको उस आगसे जो नहीं बुझती
है जलावेगा।
तब यीशु योहनसे डूब लेनेको उस पास गालीलसे १३

१४ यर्दनके तीरपर आया। परन्तु योहन यह कहके उसे
बर्जने लगा कि मुझे आपके हाथसे डूब लेना अवश्य
१५ है और क्या आप मेरे पास आते हैं। यीशुने उसको
उत्तर दिया कि अब ऐसा होने दे क्योंकि इसी रीतिसे
सब धर्म्मको पूरा करना हमें चाहियें. तब उसने होने
१६ दिया। यीशु डूब लेके तुरन्त जलसे ऊपर आया और
देखो उसके लिये स्वर्ग खुल गया और उसने ईश्वरके
आत्माको कपोतकी नाईं उतरते और अपने ऊपर
१७ आते देखा। और देखो यह आकाशबाणी हुई कि यह
मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं।

## ४ चौथा पर्ब्ब।

१ यीशुकी परीक्षा। १२ उसका कफर्नाऊममें रहना। १७ उपदेश करना
और कई एक शिष्योंको बुलाना। २३ बहुत रोगियोंको चंगा करना।

१ तब आत्मा यीशुको जंगलमें ले गया कि शैतानसे उस-
२ की परीक्षा किई जाय। वह चालीस दिन और चालीस
३ रात उपवास करके पीछे भूखा हुआ। तब परीक्षा कर-
नेहारेने उस पास आ कहा जो तू ईश्वरका पुत्र है तो
४ कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जावें। उसने उत्तर
दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटीसे नहीं परन्तु
हर एक बातसे जो ईश्वरके मुखसे निकलती है जीयेगा।
५ तब शैतानने उसको पवित्र नगरमें ले जाके मन्दिरके
६ कलशपर खड़ा किया. और उससे कहा जो तू ईश्व-
रका पुत्र है तो अपनेको नीचे गिरा क्योंकि लिखा
है कि वह तेरे विषयमें अपने दूतोंको आज्ञा देगा

आर वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांवमें
७ पत्थरपर चाेट लगे। यीशुने उससे कहा फिर भी
लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरकी परीक्षा मत
८ कर। फिर शैताननें उसे एक अति ऊंचे पर्व्वतपर
ले जाके उसको जगतके सब राज्य आर उनका बिभव
९ दिखाये. आर उससे कहा जो तू दंडवत कर मुझे
१० प्रणाम करे तो मैं यह सब तुझे देऊंगा। तब यीशुने
उससे कहा हे शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है कि
तू परमेश्वर अपने ईश्वरको प्रणाम कर आर केवल
११ उसीकी सेवा कर। तब शैताननें उसको छोड़ा आर
देखो स्वर्ग दूतोंने आ उसकी सेवा किई।
१२ जब यीशुने सुना कि योहन बन्दीगृहमें डाला गया
१३ तब गालीलको चला गया। आर नासरत नगरको
छोड़के उसने कफर्नाहुम नगरमें जो समुद्रके तीरपर
जिबुलून आर नप्तालीके बंशोंके सिवानोंमें है आके
१४ बास किया. कि जो बचन यिशैयाह भविष्यद्वक्तासे
१५ कहा गया था सो पूरा होवे. कि जिबुलूनका देश
आर नप्तालीका देश समुद्रकी आर यर्दनके उस पार
१६ अन्यदेशियोंका गालील. जो लोग अंधकारमें बैठे थे
उन्होंने बड़ी ज्योति देखी आर जो मृत्युके देश आर
छायामें बैठे थे उनपर ज्योति उदय हुई।
१७ उस समयसे यीशु उपदेश करने आर यह कहने लगा
कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्गका राज्य निकट आया
१८ है। यीशुने गालीलके समुद्रके तीरपर फिरते हुए दो
भाइयोंको अर्थात शिमोनको जो पितर कहावता है

और उसके भाई अन्द्रियको समुद्रमें जाल डालते देखा
१९ क्योंकि वे मछुवे थे। उसने उनसे कहा मेरे पीछे आओ
२० मैं तुमको मनुष्योंके मछुवे बनाऊंगा। वे तुरन्त जालोंको
२१ छोड़के उसके पीछे हो लिये। वहांसे आगे बढ़के
उसने और दो भाइयोंको अर्थात जबदीके पुत्र याकूब
और उसके भाई योहनको अपने पिता जबदीके संग
नावपर अपने जाल सुधारते देखा और उन्हें बुलाया।
२२ और वे तुरन्त नावको और अपने पिताको छोड़के
उसके पीछे हो लिये।

२३ तब यीशु सारे गालील देशमें उनकी सभाओंमें उप-
देश करता हुआ और राज्यका सुसमाचार प्रचार
करता हुआ और लोगोंमें हर एक रोग और हर एक
२४ व्याधिको चंगा करता हुआ फिरा किया। उसकी कीर्त्ति
सब सुरिया देशमें भी फैल गई और लोग सब रोगियोंको
जो नाना प्रकारके रोगों औ पीड़ाओंसे दुःखी थे और
भूतग्रस्तों और मिर्गीहों और अर्द्धांगियोंको उस पास
२५ लाये और उसने उन्हें चंगा किया। और गालील और
दिकापलि और यिरूशलीम और यिहूदियासे और
यर्दनके उस पारसे बड़ी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिई।

## ५ पांचवां पर्ब्ब।

१ पर्ब्बतपर यीशुके उपदेशका आरंभ। ३ धन्य कौन हैं इसका निर्णय। १३ लोण और ज्योतिके दृष्टान्तसे शिष्योंका बखान। १७ यीशुके प्रगट होनेका कारण। २१ क्रोध करनेका निषेध। २७ कुदृष्टि करनेका निषेध। ३१ पत्नीको त्यागनेका निषेध। ३३ किरिया खानेका निषेध। ३८ लड़ाई करनेका निषेध। ४३ शत्रुओंको प्रेम करनेका उपदेश।

यीशु भीड़को देखके पर्ब्बतपर चढ़ गया और जब १
वह बैठा तब उसके शिष्य उस पास आये। और वह २
अपना मुंह खोलके उन्हें उपदेश देने लगा।

धन्य वे जो मनमें दीन हैं क्योंकि स्वर्गका राज्य ३
उन्हींका है। धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति ४
पावेंगे। धन्य वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथिवीके अधिकारी ५
होंगे। धन्य वे जो धर्म्मके भूखे और प्यासे हैं क्योंकि ६
वे तृप्त किये जायेंगे। धन्य वे जो दयावन्त हैं क्योंकि ७
उनपर दया किई जायगी। धन्य वे जिनके मन शुद्ध हैं ८
क्योंकि वे ईश्वरको देखेंगे। धन्य वे जो मेल करवैये हैं ९
क्योंकि वे ईश्वरके सन्तान कहावेंगे। धन्य वे जो धर्म्मके १०
कारण सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्गका राज्य उन्हींका
है। धन्य तुम हो जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा ११
करें और तुम्हें सतावें और झूठ बोलते हुए तुम्हारे
बिरुद्ध सब प्रकारकी बुरी बात कहें। आनन्दित और १२
आह्लादित होओ क्योंकि तुम स्वर्गमें बहुत फल पाओगे.
उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओंको जो तुमसे आगे थे इसी
रीतिसे सताया।

तुम पृथिवीके लोण हो परन्तु यदि लोणका स्वाद १३
बिगड़ जाय तो वह किससे लोणा किया जायगा. वह
तबसे किसी कामका नहीं केवल बाहर फेंके जाने और
मनुष्योंके पांवोंसे रौंदे जानेके योग्य है। तुम जगतके १४
प्रकाश हो. जो नगर पहाड़पर बसा है सो छिप नहीं
सकता। और लोग दीपकको बारके बर्त्तनके नीचे नहीं १५
परन्तु दीवटपर रखते हैं और वह सभोंको जो घरमें हैं

१६ ज्योति देता है। वैसेही तुम्हारा प्रकाश मनुष्योंके आगे
चमके इसलिये कि वे तुम्हारे भले कामोंको देखके
तुम्हारे स्वर्गबासी पिताका गुणानुबाद करें।
१७ मत समझो कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यद्वक्ताओंका
पुस्तक लोप करनेको आया हूं मैं लोप करनेको नहीं
१८ परन्तु पूरा करनेको आया हूं। क्योंकि मैं तुमसे सच
कहता हूं कि जबलों आकाश औ पृथिवी टल न जायें
तबलों व्यवस्थासे एक मात्रा अथवा एक बिन्दु बिना पूरा
१९ हुए नहीं टलेगा। इसलिये जो कोई इन अति छोटी
आज्ञाओंमेंसे एकको लोप करे और लोगोंको वैसेही
सिखावे वह स्वर्गके राज्यमें सबसे छोटा कहावेगा परन्तु
जो कोई उन्हें पालन करे और सिखावे वह स्वर्गके
२० राज्यमें बड़ा कहावेगा। मैं तुमसे कहता हूं यदि तुम्हारा
धर्म्म अध्यापकों और फरीशियोंके धर्म्मसे अधिक न होवे
तो तुम स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करने न पाओगे।
२१ तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे कहा गया था कि
नरहिंसा मत कर और जो कोई नरहिंसा करे सो
२२ बिचार स्थानमें दंडके योग्य होगा। परन्तु मैं तुमसे
कहता हूं कि जो कोई अपने भाईसे अकारण क्रोध
करे सो बिचार स्थानमें दंडके योग्य होगा और जो
कोई अपने भाईसे कहे कि रे तुच्छ सो न्याइयोंकी
सभामें दंडके योग्य होगा और जो कोई कहे कि रे मूर्ख
२३ सो नरककी आगके दंडके योग्य होगा। सो यदि तू
अपना चढ़ावा बेदीपर लावे और वहां स्मरण करे कि
तेरे भाईके मनमें तेरी ओर कुछ है तो अपना चढ़ावा

वहां बेदीके साम्ने छोड़के चला जा. पहिले अपने भाईसे २४
मिलाप कर तब आके अपना चढ़ावा चढ़ा। जबलों २५
तू अपने मुद्दईके संग मार्गमें है उससे बेग मिलाप कर
ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे न्यायीको सोंपे और न्यायी तुझे
प्यादेको सोंपे और तू बन्दीगृहमें डाला जाय। मैं तुझसे २६
सच कहता हूं कि जबलों तू कौड़ी कौड़ी भर न देवे
तबलों वहांसे छूटने न पावेगा।

तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे कहा गया था कि २७
परस्त्रीगमन मत कर। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि २८
जो कोई किसी स्त्रीपर कुइच्छासे दृष्टि करे वह अपने
मनमें उससे व्यभिचार कर चुका है। जो तेरी दहिनी २९
आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे
क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगोंमेंसे एक अंग नाश
होवे और तेरा सकल शरीर नरकमें न डाला जाय।
और जो तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे ३०
काटके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगोंमेंसे
एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरकमें न
डाला जाय।

यह भी कहा गया कि जो कोई अपनी स्त्रीको त्यागे सो ३१
उसको त्यागपत्र देवे। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो ३२
कोई व्यभिचारको छोड़ और किसी हेतुसे अपनी स्त्रीको
त्यागे सो उससे व्यभिचार करवाता है और जो कोई उस
त्यागी हुईसे बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है।

फिर तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे कहा गया था ३३
कि झूठी किरिया मत खा परन्तु परमेश्वरके लिये अपनी

३४ किरियाओंको पूरी कर। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कोई
किरिया मत खाओ न स्वर्गकी क्योंकि वह ईश्वरका सिंहा-
३५ सन है, न धरतीकी क्योंकि वह उसके चरणोंकी पीढ़ी
है न यिरूशलीमकी क्योंकि वह महा राजाका नगर है।
३६ अपने सिरकी भी किरिया मत खा क्योंकि तू एक बालको
३७ उजला अथवा काला नहीं कर सकता है। परन्तु तु-
म्हारी बातचीत हां हां नहीं नहीं होवे, जो कुछ इनसे
अधिक है सो उस दुष्टसे होता है।

३८ तुमने सुना है कि कहा गया था कि आंखके बदले
३९ आंख और दांतके बदले दांत। पर मैं तुमसे कहता हूं
बुरेका साम्ना मत करो परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल-
४० पर थपेड़ा मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। जो
तुझपर नालिश करके तेरा अंगा लेने चाहे उसको दो-
४१ हर भी लेने दे। जो कोई तुझे आध कोश बेगारी ले जाय
४२ उसके संग कोश भर चला जा। जो तुझसे मांगे उसको
दे और जो तुझसे ऋण लेने चाहे उससे मुंह मत मोड़।

४३ तुमने सुना है कि कहा गया था कि अपने पड़ोसीको
४४ प्यार कर और अपने बैरीसे बैर कर। परन्तु मैं तुमसे
कहता हूं कि अपने बैरियोंको प्यार करो, जो तुम्हें स्राप
देवें उनको आशीस देओ जो तुमसे बैर करें उनसे भलाई
करो और जो तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें सतावें
४५ उनके लिये प्रार्थना करो, जिस्तें तुम अपने स्वर्गबासी
पिताके सन्तान होओ क्योंकि वह बुरे औ भले लोगोंपर
अपना सूर्य्य उदय करता है और धर्म्मियों और अध-
४६ र्म्मियोंपर मेंह बरसाता है। जो तुम उनसे प्रेम करो

जो तुमसे प्रेम करते हैं तो क्या फल पाओगे, क्या कर
उगाहनेहारे भी ऐसा नहीं करते हैं। और जो तुम ४७
केवल अपने भाइयोंको नमस्कार करो तो कौनसा बड़ा
काम करते हो, क्या कर उगाहनेहारे भी ऐसा नहीं
करते हैं। सो जैसा तुम्हारा स्वर्गबासी पिता सिद्ध है ४८
तैसे तुम भी सिद्ध होओ।

## ६ छठवां पर्ब्ब।

१ धर्म्म कर्म्मके विषयमें यीशुका उपदेश। २ दान करनेकी विधि। ५ प्रार्थना करनेकी विधि। १४ क्षमा करनेका उपदेश। १६ उपवास करनेकी विधि। १९ संसारमें मन लगानेका निषेध।

सचेत रहो कि तुम मनुष्योंको दिखानेके लिये उनके १
आगे अपने धर्म्मके कार्य्य न करो नहीं तो अपने स्वर्गबासी
पितासे कुछ फल न पाओगे।
इसलिये जब तू दान करे तब अपने आगे तुरही मत २
बजवा जैसा कपटी लोग सभाके घरों और मार्गोंमें करते
हैं कि मनुष्य उनकी बड़ाई करें, मैं तुमसे सच कहता
हूं वे अपना फल पा चुके हैं। परन्तु जब तू दान करे ३
तब तेरा दहिना हाथ जो कुछ करे सो तेरा बायां हाथ
न जाने, कि तेरा दान गुप्तमें होय और तेरा पिता ४
जो गुप्तमें देखता है आपही तुझे प्रगटमें फल देगा।
जब तू प्रार्थना करे तब कपटियोंके समान मत हो ५
क्योंकि मनुष्योंको दिखानेके लिये सभाके घरोंमें और
सड़कोंके कोनोंमें खड़े होके प्रार्थना करना उनको प्रिय
लगता है, मैं तुमसे सच कहता हूं वे अपना फल पा

६ चुके हैं। परन्तु जब तू प्रार्थना करे तब अपनी कोठरीमें
जा और द्वार मून्दके अपने पितासे जो गुप्तमें है प्रार्थना
कर और तेरा पिता जो गुप्तमें देखता है तुझे प्रगटमें फल
७ देगा। प्रार्थना करनेमें देवपूजकोंकी नाईं बहुत व्यर्थ बातें
मत बोला करो क्योंकि वे समझते हैं कि हमारे बहुत
८ बोलनेसे हमारी सुनी जायगी। सो तुम उनके समान
मत होओ क्योंकि तुम्हारे मांगनेके पहिले तुम्हारा पिता
९ जानता है तुम्हें क्या क्या आवश्यक है। तुम इस रीतिसे
प्रार्थना करो. हे हमारे स्वर्गबासी पिता तेरा नाम पवित्र
१० किया जाय. तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्गमें वैसे
११ पृथिवीपर पूरी होय. हमारी दिनभरकी रोटी आज
१२ हमें दे. और जैसे हम अपने ऋणियोंको क्षमा करते
१३ हैं तैसे हमारे ऋणोंको क्षमा कर. और हमें परीक्षामें
मत डाल परन्तु दुष्टसे बचा [क्योंकि राज्य और पराक्रम
और महिमा सदा तेरे हैं. आमीन]।

१४ जो तुम मनुष्योंके अपराध क्षमा करो तो तुम्हारा
१५ स्वर्गीय पिता तुम्हें भी क्षमा करेगा। परन्तु जो तुम मनु-
ष्योंके अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे
अपराध क्षमा न करेगा।

१६ जब तुम उपवास करो तब कपटियोंके समान उदास
रूप मत होओ क्योंकि वे अपने मुंह मलीन करते हैं
कि मनुष्योंको उपवासी दिखाई देवें. मैं तुमसे सच
१७ कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं। परन्तु जब तू उप-
वास करे तब अपने सिरपर तेल मल और अपना मुंह
१८ धो. कि तू मनुष्योंको नहीं परन्तु अपने पिताको जो

गुप्तमें है उपवासी दिखाई देवे और तेरा पिता जो गुप्तमें
देखता है तुझे प्रगटमें फल देगा।
अपने लिये पृथिवीपर धनका संचय मत करो जहां १९
कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध देते
और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्गमें धनका २०
संचय करो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ता है और
जहां चोर न सेंध देते न चुराते हैं। क्योंकि जहां तुम्हारा २१
धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। शरीरका २२
दीपक आंख है इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो
तो तेरा सकल शरीर उजियाला होगा। परन्तु यदि २३
तेरी आंख बुरी हो तो तेरा सकल शरीर अंधियारा
होगा. जो ज्योति तुझमें है सो यदि अंधकार है तो वह
अंधकार कैसा बड़ा है। कोई मनुष्य दो स्वामियोंकी २४
सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एकसे बैर करेगा
और दूसरेको प्यार करेगा अथवा एकसे लगा रहेगा
और दूसरेको तुच्छ जानेगा. तुम ईश्वर और धन दोनों-
की सेवा नहीं कर सकते हो। इसलिये मैं तुमसे कहता २५
हूं अपने प्राणके लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायें-
गे और क्या पीयेंगे और न अपने शरीरके लिये कि क्या
पहिरेंगे. क्या भोजनसे प्राण और बस्त्रसे शरीर बड़ा
नहीं है। आकाशके पंछियोंको देखो. वे न बोते हैं न २६
लवते हैं न खत्तोंमें बटोरते हैं तौभी तुम्हारा स्वर्गीय
पिता उनको पालता है. क्या तुम उनसे बड़े नहीं हो।
तुममेंसे कौन मनुष्य चिन्ता करनेसे अपनी आयुको २७
दौड़को एक हाथ भी बढ़ा सकता है। और तुम बस्त्रके २८

लिये क्यों चिन्ता करते हो. खेतके सोसन फूलोंको देख
लो वे कैसे बढ़ते हैं. वे न परिश्रम करते हैं न कातते
२९ हैं। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि सुलेमान भी अपने
सारे बिभवमें उनमेंसे एकके तुल्य बिभूषित न था।
३० यदि ईश्वर खेतकी घासको जो आज है और कल चूल्हेमें
झोंकी जायगी ऐसी बिभूषित करता है तो हे अल्प बिश्वा-
सियो क्या वह बहुत अधिक करके तुम्हें नहीं पहिरा-
३१ वेगा। सो तुम यह चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे
३२ अथवा क्या पीयेंगे अथवा क्या पहिरेंगे। देवपूजक
लोग इन सब बस्तुओंको खोज करते हैं और तुम्हारा
स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब बस्तुओंका
३३ प्रयोजन है। पहिले ईश्वरके राज्य और उसके धर्म्मको
३४ खोज करो तब यह सब बस्तु भी तुम्हें दिई जायेंगीं। सो
कलके लिये चिन्ता मत करो क्योंकि कल अपनी बस्तु-
ओंके लिये आपही चिन्ता करेगा. हर एक दिनके
लिये उसी दिनका दुःख बहुत है।

## ७ सातवां पर्ब्ब ।

१ दूसरोंपर दोष लगानेका निषेध। ७ प्रार्थना करनेका उपदेश। १३ सकेत फाटकसे पैठनेका उपदेश। १५ झूठे उपदेशकोंका निर्णय। २१ ईश्वरकी आज्ञा पालन करनेकी आवश्यकता। २४ घरकी नेव डालनेका दृष्टान्त। २८ पर्ब्बतपरके उपदेशकी समाप्ति।

१ दूसरोंका बिचार मत करो कि तुम्हारा बिचार न
२ किया जाय। क्योंकि जिस बिचारसे तुम बिचार करते
हो उसीसे तुम्हारा बिचार किया जायगा और जिस

नापसे तुम नापते हो उसीसे तुम्हारे लिये नापा जायगा।
जो तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है उसे तू क्यों देखता है ३
और तेरेही नेत्रमेंका लट्ठा तुझे नहीं सूझता। अथवा ४
तू अपने भाईसे क्योंकर कहेगा रहिये मैं तेरे नेत्रसे यह
तिनका निकालूं और देख तेरेही नेत्रमें लट्ठा है। हे ५
कपटी पहिले अपने नेत्रसे लट्ठा निकाल दे तब तू अपने
भाईके नेत्रसे तिनका निकालनेको अच्छी रीतिसे देखेगा।
पवित्र बस्तु कुत्तोंको मत देओ और अपने मोतियोंको ६
सूअरोंके आगे मत फेंको ऐसा न हो कि वे उन्हें अपने
पांवोंसे रौंदें और फिरके तुमको फाड़ डालें।

मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढो तो तुम पाओगे ७
खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। क्योंकि जो ८
कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो
पाता है और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जाय-
गा। तुममेंसे कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे ९
रोटी मांगे तो उसको पत्थर देगा। और जो वह मछली १०
मांगे तो क्या वह उसको सांप देगा। सो यदि तुम बुरे ११
होके अपने लड़कोंको अच्छे दान देने जानते हो तो
कितना अधिक करके तुम्हारा स्वर्गबासी पिता उन्होंको
जो उससे मांगते हैं उत्तम बस्तु देगा। जो कुछ तुम १२
चाहते हो कि मनुष्य तुमसे करें तुम भी उनसे वैसाही
करो क्योंकि यही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकका
सार है।

सकेत फाटकसे प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह फाटक १३
और चाकर है वह मार्ग जो बिनाशको पहुंचाता है और

१४ बहुत हैं जो उससे पैठते हैं। वह फाटक कैसा सकेत
और वह मार्ग कैसा सकरा है जो जीवनको पहुंचाता
है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।

१५ झूठे भविष्यद्वक्ताओंसे चैाकस रहो जो भेड़ोंके भेषमें
तुम्हारे पास आते हैं परन्तु अन्तरमें लुटेरू हुंड़ार हैं।
१६ तुम उनके फलोंसे उन्हें पहचानोगे. क्या मनुष्य कांटोंके
१७ पेड़से दाख अथवा ऊंटकटारेसे गूलर तोड़ते हैं। इसी
रीतिसे हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल फलता है और
१८ निकम्मा पेड़ बुरा फल फलता है। अच्छा पेड़ बुरा फल
नहीं फल सकता है और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल
१९ फल सकता है। जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है
२० सो काटा जाता और आगमें डाला जाता है। सो तुम
उनके फलोंसे उन्हें पहचानोगे।

२१ हर एक जो मुझसे हे प्रभु हे प्रभु कहता है स्वर्गके
राज्यमें प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गबासी
२२ पिताकी इच्छापर चलता है। उस दिनमें बहुतेरे मुझसे
कहेंगे हे प्रभु हे प्रभु क्या हमने आपके नामसे भविष्य-
द्वाक्य नहीं कहा और आपके नामसे भूत नहीं निकाले
२३ और आपके नामसे बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये। तब
मैं उनसे खोलके कहूंगा मैंने तुमको कभी नहीं जाना
हे कुकर्म्म करनेहारो मुझसे दूर होओ।

२४ इसलिये जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन
करे मैं उसकी उपमा एक बुद्धिमान मनुष्यसे देऊंगा
२५ जिसने अपना घर पत्थरपर बनाया। और मेंह बरसा
औ बाढ़ आई औ आंधी चली और उस घरपर लगी

पर वह नहीं गिरा क्योंकि उसकी नेव पत्थरपर डाली
गई थी। परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें २६
पालन न करे उसकी उपमा एक निर्बुद्धि मनुष्यसे दिई
जायगी जिसने अपना घर बालूपर बनाया। और मेंह २७
बरसा औ बाढ़ आई औ आंधी चली और उस घरपर
लगी और वह गिरा और उसका बड़ा पतन हुआ।
जब यीशु यह बातें कह चुका तब लोग उसके उप- २८
देशसे अचंभित हुए। क्योंकि उसने अध्यापकोंकी रीतिसे २९
नहीं परन्तु अधिकारीकी रीतिसे उन्हें उपदेश दिया।

## ८ आठवां पर्ब्ब।

१ यीशुका एक कोढ़ीको चंगा करना। ५ एक शतपतिके दासको चंगा करना। १४ पितरकी सासको चंगा करना। १६ बहुत रोगियोंको चंगा करना। १८ शिष्य होनेके विषयमें यीशुकी कथा। २३ उसका आंधीको थांभना। २८ दो मनुष्योंमेंसे भूत निकालना।

जब यीशु उस पर्ब्बतसे उतरा तब बड़ी भीड़ उसके १
पीछे हो लिई। और देखो एक कोढ़ीने आ उसको २
प्रणाम कर कहा हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध
कर सकते हैं। यीशुने हाथ बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो ३
चाहता हूं शुद्ध हो जा, और उसका कोढ़ तुरन्त शुद्ध
हो गया। तब यीशुने उससे कहा देख किसीसे मत कह ४
परन्तु जा अपने तईं याजकको दिखा और जो चढ़ावा
मूसाने ठहराया उसे लोगोंपर साक्षी होनेके लिये चढ़ा।
जब यीशुने कफर्नाहुममें प्रवेश किया तब एक शत- ५
पतिने उस पास आ उससे बिन्ती किई, कि हे प्रभु मेरा ६
सेवक घरमें अर्द्धांग रोगसे अति पीड़ित पड़ा है। यीशुने ७

८ उससे कहा मैं आके उसे चंगा करूंगा। शतपतिने उत्तर
दिया कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घरमें
आवें पर बचन मात्र भी कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो
९ जायगा। क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे
बशमें हैं और मैं एकको कहता हूं जा तो वह जाता है
और दूसरेको आ तो वह आता है और अपने दासको
१० यह कर तो वह करता है। यह सुनके यीशुने अचंभा
किया और जो लोग उसके पीछेसे आते थे उनसे कहा मैं
तुमसे सच कहता हूं कि मैंने इस्रायेली लोगोंमें भी ऐसा
११ बड़ा बिश्वास नहीं पाया है। और मैं तुमसे कहता हूं
कि बहुतेरे लोग पूर्ब्ब और पश्चिमसे आके इब्राहीम और
१२ इसहाक और याकूबके साथ स्वर्गके राज्यमें बैठेंगे। परन्तु
राज्यके सन्तान बाहरके अंधकारमें डाले जायेंगे जहां
१३ रोना औ दांत पीसना होगा। तब यीशुने शतपतिसे
कहा जाइये जैसा तूने बिश्वास किया है वैसाही तुझे होवे
और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।

१४ यीशुने पितरके घरमें आके उसकी सासको पड़ी हुई
१५ और ज्वरसे पीड़ित देखा। उसने उसका हाथ छूआ
और ज्वरने उसको छोड़ा और वह उठके उनकी सेवा
करने लगी।

१६ सांझको लोग बहुतसे भूतग्रस्तोंको उस पास लाये और
उसने बचनहीसे भूतोंको निकाला और सब रोगियोंको
१७ चंगा किया। कि जो बचन यिशैयाह भविष्यद्वक्तासे कहा
गया था कि उसने हमारी दुर्बलताओंको ग्रहण किया
और रोगोंको उठा लिया सो पूरा होवे।

यीशुने अपने आसपास बड़ी भीड़ देखके उस पार १८
जानेकी आज्ञा किई। और एक अध्यापकने आ उससे १९
कहा हे गुरु जहां जहां आप जायें तहां मैं आपके पीछे
चलूंगा। यीशुने उससे कहा लोमड़ियोंको मांदें और २०
आकाशके पंछियोंको बसेरे हैं परन्तु मनुष्यके पुचको सिर
रखनेको स्थान नहीं है। उसके शिष्योंमेंसे दूसरेने उससे २१
कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिताको गाड़ने दी-
जिये। यीशुने उससे कहा तू मेरे पीछे हो ले और मृत- २२
कोंको अपने मृतकोंको गाड़ने दे।

जब वह नावपर चढ़ा तब उसके शिष्य उसके पीछे हो २३
लिये। और देखो समुद्रमें ऐसे बड़े हिलकोरे उठे कि २४
नाव लहरोंसे ढंप जाती थी परन्तु वह सोता था। तब २५
उसके शिष्योंने उस पास आके उसे जगाके कहा हे प्रभु
हमें बचाइये हम नष्ट होते हैं। उसने उनसे कहा हे २६
अल्प बिश्वासियो क्यों डरते हो, तब उसने उठके बयार
और समुद्रको डांटा और बड़ा नीवा हो गया। और वे २७
लोग अचंभा करके बोले यह कैसा मनुष्य है कि बयार
और समुद्र भी उसकी आज्ञा मानते हैं।

जब यीशु उस पार गिर्गाशियोंके देशमें पहुंचा तब दो २८
भूतग्रस्त मनुष्य कबरस्थानमेंसे निकलते हुए उससे आ
मिले जो यहांलों अति प्रचंड थे कि उस मार्गसे कोई नहीं
जा सकता था। और देखो उन्होंने चिल्लाके कहा हे यीशु २९
ईश्वरके पुच आपको हमसे क्या काम, क्या आप समयके
आगे हमें पीड़ा देनेको यहां आये हैं। बहुतसे सूअरोंका ३०
एक झुंड उनसे कुछ दूर चरता था। सो भूतोंने उससे ३१

बिन्ती कर कहा जो आप हमें निकालते हैं तो सूअरोंके
३२ झुंडमें पैठने दीजिये। उसने उनसे कहा जाओ और वे
निकलके सूअरोंके झुंडमें पैठे और देखो सूअरोंका सारा
झुंड कड़ाड़ेपरसे समुद्रमें दौड़ गया और पानीमें डूब
३३ मरा। पर चरवाहे भागे और नगरमें जाके सब बातें
३४ और भूतग्रस्तोंकी कथा भी सुनाईं। और देखो सारे
नगरके लोग यीशुसे भेंट करनेको निकले और उसको
देखके बिन्ती किई कि हमारे सिवानोंसे निकल जाइये।

## ९ नवां पर्ब्ब।

१ यीशुका एक अर्द्धांगीको चंगा करना और उसका पाप क्षमा करना। ९ मत्तीको बुलाना और पापियोंके संग भोजन करना। १४ उपवास करनेका ब्योरा बताना। १८ एक कन्याको जिलाना और एक स्त्रीको चंगा करना। २७ दो अंधोंके नेत्र खोलना। ३२ भूतग्रस्त गूंगेको चंगा करना। ३५ दीनहीनोंपर यीशुकी दया।

१ यीशु नावपर चढ़के उस पार जाके अपने नगरमें
पहुंचा।
२ देखो लोग एक अर्द्धांगीको खाटपर पड़े हुए उस
पास लाये और यीशुने उन्होंका बिश्वास देखके उस
अर्द्धांगीसे कहा हे पुत्र ढाढ़स कर तेरे पाप क्षमा किये
३ गये हैं। तब देखो कितने अध्यापकोंने अपने अपने मनमें
४ कहा यह तो ईश्वरकी निन्दा करता है। यीशुने उनके
मनकी बातें जानके कहा तुम लोग अपने अपने मनमें क्यों
५ बुरी चिन्ता करते हो। कौन बात सहज है यह कहना
कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि
६ उठ और चल। परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्यके

पुत्रको पृथिवीपर पाप क्षमा करनेका अधिकार है (तब
उसने उस अर्द्धांगीसे कहा) उठ अपनी खाट उठाके अपने
घरको जा। वह उठके अपने घरको चला गया। लोगोंने ७ ८
यह देखके अचंभा किया और ईश्वरकी स्तुति किई जिसने
मनुष्योंको ऐसा अधिकार दिया।

वहांसे आगे बढ़के यीशुने एक मनुष्यको कर उगाहनेके ९
स्थानमें बैठे देखा जिसका नाम मत्ती था और उससे
कहा मेरे पीछे आ. तब वह उठके उसके पीछे हो
लिया। जब यीशु घरमें भोजनपर बैठा तब देखो बहुत १०
कर उगाहनेहारे और पापी लोग आ उसके और उसके
शिष्योंके संग बैठ गये। यह देखके फरीशियोंने उसके ११
शिष्योंसे कहा तुम्हारा गुरु कर उगाहनेहारों और पापि-
योंके संग क्यों खाता है। यीशुने यह सुनके उनसे कहा १२
निरोगियोंको वैद्यका प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियोंको।
तुम जाके इसका अर्थ सीखो कि मैं दयाको चाहता हूं १३
बलिदानको नहीं. क्योंकि मैं धर्म्मियोंको नहीं परन्तु
पापियोंको पश्चात्तापके लिये बुलाने आया हूं।

तब योहनके शिष्योंने उस पास आ कहा हम लोग और १४
फरीशी लोग क्यों बार बार उपवास करते हैं परन्तु आ-
पके शिष्य उपवास नहीं करते। यीशुने उनसे कहा जबलों १५
दूल्हा सखाओंके संग रहे तबलों क्या वे शोक कर सकते
हैं. परन्तु वे दिन आवेंगे जिनमें दूल्हा उनसे अलग
किया जायगा तब वे उपवास करेंगे। कोई मनुष्य कोरे १६
कपड़ेका टुकड़ा पुराने वस्त्रमें नहीं लगाता है क्योंकि वह
टुकड़ा वस्त्रसे कुछ और भी फाड़ लेता है और उसका

१७ फटा बढ़ जाता है। और लोग नया दाख रस पुराने
कुप्पोंमें नहीं भरते नहीं तो कुप्पे फट जाते हैं और
दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं. परन्तु
नया दाख रस नये कुप्पोंमें भरते हैं और दोनोंकी रक्षा
होती है।

१८ यीशु उनसे यह बातें कहताही था कि देखो एक
अध्यक्षने आके उसको प्रणाम कर कहा मेरी बेटी अभी
मर गई परन्तु आप आके अपना हाथ उसपर रखिये
१९ तो वह जीयेगी। तब यीशु उठके अपने शिष्यों समेत
उसके पीछे हो लिया।

२० और देखो एक स्त्रीने जिसका बारह बरससे लोहू
बहता था पीछेसे आ उसके बस्त्रके आंचलको छूआ।
२१ क्योंकि उसने अपने मनमें कहा यदि मैं केवल उसके
२२ बस्त्रको छूओं तो चंगी हो जाऊंगी। यीशुने पीछे फिरके
उसे देखके कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे बिश्वासने तुझे
चंगा किया है. सो वह स्त्री उसी घड़ीसे चंगी हुई।

२३ यीशुने उस अध्यक्षके घरपर पहुंचके बजनियोंको
२४ और बहुत लोगोंको धूम मचाते देखा. और उनसे
कहा अलग जाओ कन्या मरी नहीं पर सोती है.
२५ और वे उसका उपहास करने लगे। परन्तु जब लोग
बाहर किये गये तब उसने भीतर जा कन्याका हाथ
२६ पकड़ा और वह उठी। यह कीर्त्ति उस सारे देशमें
फैल गई।

२७ जब यीशु वहांसे आगे बढ़ा तब दो अंधे पुकारते और
यह कहते हुए उसके पीछे हो लिये कि हे दाऊदके

सन्तान हमपर दया कीजिये। जब वह घरमें पहुंचा २८
तब वे अंधे उस पास आये और योशुने उनसे कहा क्या
तुम बिश्वास करते हो कि मैं यह काम कर सकता हूं.
वे उससे बोले हां प्रभु। तब उसने उनकी आंखें छूके कहा २९
तुम्हारे बिश्वासके समान तुमको होवे। इसपर उनकी ३०
आंखें खुल गईं और यीशुने उन्हें चिताके कहा देखो कोई
इसको न जाने। तौभी उन्होंने बाहर जाके उस सारे ३१
देशमें उसकी कीर्त्ति फैलाई।

जब वे बाहर जाते थे देखो लोग एक भूतग्रस्त गूंगे ३२
मनुष्यको यीशु पास लाये। जब भूत निकाला गया ३३
तब गूंगा बोलने लगा और लोगोंने अचंभा कर कहा
इस्रायेलमें ऐसा कभी न देखा गया। परन्तु फरीशियोंने ३४
कहा वह भूतोंके प्रधानकी सहायतासे भूतोंको निका-
लता है।

तब यीशु सब नगरों और गांवोंमें उनकी सभाओंमें ३५
उपदेश करता हुआ और राज्यका सुसमाचार प्रचार
करता हुआ और लोगोंमें हर एक रोग और हर एक
व्याधिको चंगा करता हुआ फिरा किया। जब उसने ३६
बहुत लोगोंको देखा तब उसको उनपर दया आई क्योंकि
वे बिन रखवालेकी भेड़ोंकी नाईं व्याकुल और छिन्नभिन्न
किये हुए थे। तब उसने अपने शिष्योंसे कहा कटनी ३७
बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं। इसलिये कटनीके स्वा- ३८
मीसे बिन्ती करो कि वह अपनी कटनीमें बनिहारोंको
भेजे।

## १० दसवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका बारह प्रेरितोंको ठहराके भेजना । १६ उन्हें अनेक बातोंके विषयमें चिताना और सिखाना ।

१ यीशुने अपने बारह शिष्योंको अपने पास बुलाके उन्हें
अशुद्ध भूतोंपर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और
२ हर एक रोग और हर एक व्याधिको चंगा करें। बारह
प्रेरितोंके नाम ये हैं पहिला शिमोन जो पितर कहावता
है और उसका भाई अन्द्रिय, जबदीका पुत्र याकूब और
३ उसका भाई योहन, फिलिप और बर्थलमई, थोमा और
मत्ती कर उगाहनेहारा, अलफईका पुत्र याकूब और
४ लिब्बई जो थद्दई कहावता है, शिमोन कानानी और यि-
५ हूदा इस्करियोती जिसने उसे पकड़वाया। इन बारहोंको
यीशुने यह आज्ञा देके भेजा कि अन्यदेशियोंकी ओर मत
जाओ और शोमिरोनियोंके किसी नगरमें मत पैठो।
६ परन्तु इस्रायेलके घरानेकी खोई हुई भेड़ोंके पास जाओ।
७ और जाते हुए प्रचार कर कहो कि स्वर्गका राज्य निकट
८ आया है। रोगियोंको चंगा करो कोढ़ियोंको शुद्ध करो
मृतकोंको जिलाओ भूतोंको निकालो, तुमने सेंतमेत
९ पाया है सेंतमेत देओ। अपने पटुकोंमें न सोना न रूपा
१० न ताम्बा रखो। मार्गके लिये न झोली न दो अंगे न जूते
न लाठी लेओ क्योंकि बनिहार अपने भोजनके योग्य
११ है। जिस किसी नगर अथवा गांवमें तुम प्रवेश करो
बूझो उसमें कौन योग्य है और जबलों वहांसे न निकलो
१२ तबलों उसके यहां रहो। घरमें प्रवेश करते हुए उसको
१३ आशीस देओ। जो वह घर योग्य होय तो तुम्हारा

कल्याण उसपर पहुंचे परन्तु जो वह योग्य न होय तो
तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास फिर आवे। और जो १४
कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी बातें न सुने उसके
घरसे अथवा उस नगरसे निकलते हुए अपने पांवोंको
धूल झाड़ डालो। मैं तुमसे सच कहता हूं कि बिचारके १५
दिनमें उस नगरकी दशासे सदोम और अमोराके देश-
की दशा सहने योग्य होगी।

देखो मैं तुम्हें भेड़ोंके समान हुंड़ारोंके बीचमें भेजता १६
हूं सो सांपोंकी नाईं बुद्धिमान और कपोतोंकी नाईं सूधे
होओ। परन्तु मनुष्योंसे चौकस रहो क्योंकि वे तुम्हें पंचा- १७
यतोंमें सोंपेंगे और अपनी सभाओंमें तुम्हें कोड़े मारेंगे।
तुम मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओंके आगे उनपर और १८
अन्यदेशियोंपर साक्षी होनेके लिये पहुंचाये जाओगे।
परन्तु जब वे तुम्हें सोंपें तब किस रीतिसे अथवा क्या १९
कहोगे इसकी चिन्ता मत करो क्योंकि जो कुछ तुमको
कहना होगा सो उसी घड़ी तुम्हें दिया जायगा। बोलने- २०
हारे तो तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिताका आत्मा
तुममें बोलता है। भाई भाईको और पिता पुत्रको बध २१
किये जानेको सोंपेंगे और लड़के माता पिताके बिरुद्ध
उठके उन्हें घात करवावेंगे। मेरे नामके कारण सब लोग २२
तुमसे बैर करेंगे पर जो अन्तलों स्थिर रहे सोई त्राण
पावेगा। जब वे तुम्हें एक नगरमें सतावें तब दूसरेमें भाग २३
जाओ. मैं तुमसे सत्य कहता हूं तुम इस्रायेलके सब
नगरोंमें नहीं फिर चुकोगे कि उतनेमें मनुष्यका पुत्र
आवेगा। शिष्य गुरुसे बड़ा नहीं है और न दास अपने २४

२५ स्वामीसे। यही बहुत है कि शिष्य अपने गुरुके तुल्य और
दास अपने स्वामीके तुल्य होवे. जो उन्होंने घरके स्वामी-
का नाम बालजिबूल रखा है तो वे कितना अधिक करके
२६ उसके घरवालोंको वैसा नाम रखेंगे। सो तुम उनसे मत
डरो क्योंकि कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जाय-
२७ गा और न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा। जो मैं
तुमसे अंधियारेमें कहता हूं उसे उजियालेमें कहो और
जो तुम कानोंमें सुनते हो उसे कोठोंपरसे प्रचार करो।
२८ उनसे मत डरो जो शरीरको मार डालते हैं पर आत्माको
मार डालने नहीं सकते हैं परन्तु उसीसे डरो जो आत्मा
२९ और शरीर दोनोंको नरकमें नाश कर सकता है। क्या
एक पैसेमें दो गौरैया नहीं बिकतीं तौभी तुम्हारे पिता
३० बिना उनमेंसे एक भी भूमिपर नहीं गिरेगी। तुम्हारे
३१ सिरके बाल भी सब गिने हुए हैं। इसलिये मत डरो तुम
३२ बहुत गौरैयाओंसे अधिक मोलके हो। जो कोई मनुष्यों-
के आगे मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गबासी पि-
३३ ताके आगे मान लेऊंगा। परन्तु जो कोई मनुष्योंके आगे
मुझसे मुकरे उससे मैं भी अपने स्वर्गबासी पिताके आगे
३४ मुकरूंगा। मत समझो कि मैं पृथिवीपर मिलाप करवा-
नेको आया हूं मैं मिलाप करवानेको नहीं परन्तु खड्ग
३५ चलवानेको आया हूं। मैं मनुष्यको उसके पितासे और
बेटीको उसकी मांसे और पतोहूको उसकी साससे अलग
३६ करने आया हूं। मनुष्यके घरहीके लोग उसके बैरी
३७ होंगे। जो माता अथवा पिताको मुझसे अधिक प्रेम करता
है सो मेरे योग्य नहीं और जो पुत्र अथवा पुत्रीको मुझसे

अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं। और जो ३८
अपना क्रूश लेके मेरे पीछे नहीं आता है सो मेरे योग्य
नहीं। जो अपना प्राण पावे सो उसे खोवेगा और जो ३९
मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे पावेगा। जो तुम्हें ४०
ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे
ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारेको ग्रहण करता है।
जो भविष्यद्वक्ताके नामसे भविष्यद्वक्ताको ग्रहण करे सो ४१
भविष्यद्वक्ताका फल पावेगा और जो धर्म्मीके नामसे
धर्म्मीको ग्रहण करे सो धर्म्मीका फल पावेगा। जो कोई ४२
इन छोटोंमेंसे एकको शिष्यके नामसे केवल एक कटोरा
ठंढा पानी पिलावे मैं तुमसे सच कहता हूं वह किसी
रीतिसे अपना फल न खोवेगा।

## ११ एग्यारहवां पर्ब्ब।

१ यीशुका योहनके शिष्योंको उत्तर देना। ७ योहनके विषयमें उसकी साक्षी। १६ उस समयके लोगोंकी उपमा। २० कई एक नगरोंके अबिश्वासपर उलहना। २५ यीशुका अपने पिताका धन्य मानना। २८ दुःखी लोगोंका नेवता करना।

जब यीशु अपने बारह शिष्योंको आज्ञा दे चुका तब १
उनके नगरोंमें शिक्षा और उपदेश करनेको वहांसे
चला।

योहनने बन्दीगृहमें ख्रीष्टके कार्य्योंका समाचार सुनके २
अपने शिष्योंमेंसे दो जनोंको उससे यह कहनेको भेजा,
कि जो आनेवाला था सो क्या आपही हैं अथवा हम ३
दूसरेकी बाट जोहें। यीशुने उन्हें उत्तर दिया कि जो कुछ ४
तुम सुनते और देखते हो सो जाके योहनसे कहो, कि ५

अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये
जाते हैं और बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते
६ हैं और कंगालोंको सुसमाचार सुनाया जाता है. और
जो कोई मेरे विषयमें ठोकर न खावे सो धन्य है।
७ जब वे चले जाते थे तब यीशु योहनके विषयमें लो-
गोंसे कहने लगा तुम जंगलमें क्या देखनेको निकले क्या
८ पवनसे हिलते हुए नरकटको। फिर तुम क्या देखनेको
निकले क्या सूक्ष्म बस्त्र पहिने हुए मनुष्यको. देखो जो
९ सूक्ष्म बस्त्र पहिनते हैं सो राजाओंके घरोंमें हैं। फिर
तुम क्या देखनेको निकले क्या भविष्यद्वक्ताको. हां मैं
तुमसे कहता हूं एक मनुष्यको जो भविष्यद्वक्तासे भी
१० अधिक है। क्योंकि यह वही है जिसके विषयमें लिखा है
कि देख मैं अपने दूतको तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे
११ तेरा पन्थ बनावेगा। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो
स्त्रियोंसे जन्मे हैं उनमेंसे योहन डूब देनेहारेसे बड़ा कोई
प्रगट नहीं हुआ है परन्तु जो स्वर्गके राज्यमें अति छोटा
१२ है सो उससे बड़ा है। योहन डूब देनेहारेके दिनोंसे
अबलों स्वर्गके राज्यके लिये बरियाई किई जाती है और
१३ बरियार लोग उसे ले लेते हैं। क्योंकि योहनलों सारे
१४ भविष्यद्वक्ताओंने और व्यवस्थाने भविष्यद्वाणी कही। और
जो तुम इस बातको ग्रहण करोगे तो जानो कि एलियाह
१५ जो आनेवाला था सो यही है। जिसको सुननेके कान हों
सो सुने।
१६ मैं इस समयके लोगोंकी उपमा किससे देऊंगा. वे
बालकोंके समान हैं जो बाजारोंमें बैठके अपने संगियोंको

पुकारते. और कहते हैं हमने तुम्हारे लिये बांसली १७
बजाई और तुम न नाचे हमने तुम्हारे लिये बिलाप
किया और तुमने छाती न पीटी। क्योंकि योहन न खाता १८
न पीता आया और वे कहते हैं उसे भूत लगा है।
मनुष्यका पुत्र खाता और पीता आया है और वे कहते १९
हैं देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और
पापियोंका मित्र. परन्तु ज्ञान अपने सन्तानोंसे निर्दोष
ठहराया गया है।

तब वह उन नगरोंको जिन्होंमें उसके अधिक आश्चर्य्य २०
कर्म्म किये गये उलहना देने लगा क्योंकि उन्होंने पश्चा-
त्ताप नहीं किया। हाय तू कोराजीन. हाय तू बैतसैदा. २१
जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्होंमें किये गये हैं सो यदि सोर और
सीदोनमें किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट
पहिनके और राखमें बैठके पश्चात्ताप करते। परन्तु मैं २२
तुमसे कहता हूं कि बिचारके दिनमें तुम्हारी दशासे सोर
और सीदोनकी दशा सहने योग्य होगी। और हे कफ- २३
र्नाहुम जो स्वर्गलों ऊंचा किया गया है तू नरकलों नीचा
किया जायगा. जो आश्चर्य्य कर्म्म तुझमें किये गये हैं सो
यदि सदोममें किये जाते तो वह आजलों बना रहता।
परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि बिचारके दिनमें तेरी २४
दशासे सदोमके देशकी दशा सहने योग्य होगी।

इसपर उस समयमें यीशुने कहा हे पिता स्वर्ग और २५
पृथिवीके प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तूने इन
बातोंको ज्ञानवानों और बुद्धिमानोंसे गुप्त रखा है और
उन्हें बालकोंपर प्रगट किया है। हां हे पिता क्योंकि २६

२७ तेरी दृष्टिमें यही अच्छा लगा। मेरे पिताने मुझे सब
कुछ सोंपा है और पुत्रको कोई नहीं जानता है केवल
पिता और पिताको कोई नहीं जानता है केवल पुत्र और
वही जिसपर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे।
२८ हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझसे दबे हो
२९ मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा। मेरा जूआ
अपने ऊपर लेओ और मुझसे सीखो क्योंकि मैं नम्र और
मनमें दीन हूं और तुम अपने मनोंमें बिश्राम पाओगे।
३० क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।

## १२ बारहवां पर्ब्ब।

१ योशुका बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना। १४ उसकी नम्रतासे भविष्यद्वाक्यका पूरा होना। २२ लोगोंके अपबादका खंडन। ३३ मनके खभावका दृष्टान्त। ३८ यिहूदियोंके दोषका प्रमाण। ४३ उनकी बुरी दशा। ४६ योशुके कुटुम्बका बर्णन।

१ उस समयमें यीशु बिश्रामके दिन खेतोंमें होके गया
और उसके शिष्य भूखे हो बालें तोड़ने और खाने लगे।
२ फरीशियोंने यह देखके उससे कहा देखिये जो काम बि-
श्रामके दिनमें करना उचित नहीं है सो आपके शिष्य
३ करते हैं। उसने उनसे कहा क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि
दाऊदने जब वह और उसके संगी लोग भूखे हुए तब
४ क्या किया. उसने क्योंकर ईश्वरके घरमें जाके भेंटकी
रोटियां खाईं जिन्हें खाना न उसको न उसके संगियोंको
५ परन्तु केवल याजकोंको उचित था। अथवा क्या तुमने
व्यवस्थामें नहीं पढ़ा है कि मन्दिरमें याजक लोग बि-
श्रामके दिनोंमें बिश्रामवारकी विधिको लंघन करते हैं

और निर्दोष हैं। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि यहां ६
एक है जो मन्दिरसे भी बड़ा है। जो तुम इसका अर्थ ७
जानते कि मैं दयाको चाहता हूं बलिदानको नहीं तो
तुम निर्दोषोंको दोषी न ठहराते। मनुष्यका पुत्र बि- ८
श्रामवारका भी प्रभु है।

वहांसे जाके वह उनकी सभाके घरमें आया। ९
और देखो एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था और १०
उन्होंने उसपर दोष लगानेके लिये उससे पूछा क्या बि-
श्रामके दिनोंमें चंगा करना उचित है। उसने उनसे कहा ११
तुममेंसे कौन मनुष्य होगा कि उसका एक भेड़ हो और
जो वह बिश्रामके दिन गढ़ेमें गिरे तो उसे पकड़के न
निकालेगा। फिर मनुष्य भेड़से कितना बड़ा है. इस- १२
लिये बिश्रामके दिनोंमें भलाई करना उचित है। तब १३
उसने उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ बढ़ा. उसने
उसको बढ़ाया और वह फिर दूसरे हाथकी नाईं भला
चंगा हो गया।

तब फरीशियोंने बाहर जाके यीशुके बिरुद्ध आपसमें १४
बिचार किया इसलिये कि उसे नाश करें। यह जानके १५
यीशु वहांसे चला गया और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो
लिई और उसने उन सभोंको चंगा किया. और उन्हें १६
दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो. कि जो बचन १७
यिशैयाह भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा होवे.
कि देखो मेरा सेवक जिसे मैंने चुना है और मेरा प्रिय १८
जिससे मेरा मन अति प्रसन्न है. मैं अपना आत्मा उसपर
रखूंगा और वह अन्यदेशियोंको सत्य व्यवस्था बतावेगा।

१९ वह न झगड़ेगा न धूम मचावेगा न सड़कोंमें कोई उसका
२० शब्द सुनेगा। वह जबलों सत्य व्यवस्थाको प्रबल न करे
तबलों कुचले हुए नरकटको न तोड़ेगा और धूआं देने-
२१ हारी बत्तीको न बुझावेगा। और अन्यदेशी लोग उसके
नामपर आशा रखेंगे।
२२ तब लोग एक भूतग्रस्त अंधे और गूंगे मनुष्यको उस
पास लाये और उसने उसे चंगा किया यहांलों कि वह
२३ जो अंधा औ गूंगा था देखने औ बोलने लगा। इस-
पर सब लोग बिस्मित होके बोले यह क्या दाऊदका
२४ सन्तान है। परन्तु फरीशियोंने यह सुनके कहा यह तो
बालजिबूल नाम भूतोंके प्रधानकी सहायता बिना भूतों-
२५ को नहीं निकालता है। यीशुने उनके मनकी बातें जानके
उनसे कहा जिस जिस राज्यमें फूट पड़ी है वह राज्य
उजड़ जाता है और कोई नगर अथवा घराना जिसमें
२६ फूट पड़ी है नहीं ठहरेगा। और यदि शैतान शैतानको
निकालता है तो उसमें फूट पड़ी है फिर उसका राज्य
२७ क्योंकर ठहरेगा। और जो मैं बालजिबूलकी सहाय-
तासे भूतोंको निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किसकी
सहायतासे निकालते हैं. इसलिये वे तुम्हारे न्याय
२८ करनेहारे होंगे। परन्तु जो मैं ईश्वरके आत्माकी सहा-
यतासे भूतोंको निकालता हूं तो निस्सन्देह ईश्वरका
२९ राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है। यदि बलवन्तको
कोई पहिले न बांधे तो क्योंकर उस बलवन्तके घरमें
पैठके उसकी सामग्री लूट सके. परन्तु उसे बांधके उसके
३० घरको लूटेगा। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिरुद्ध है

और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है। इस- ३१
लिये मैं तुमसे कहता हूं कि सब प्रकारका पाप और
निन्दा मनुष्योंके लिये क्षमा किया जायगा परन्तु पवित्र
आत्माकी निन्दा मनुष्योंके लिये नहीं क्षमा किई जायगी।
जो कोई मनुष्यके पुत्रके बिरोधमें बात कहे वह उसके ३२
लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो कोई पवित्र आत्माके
बिरोधमें कुछ कहे वह उसके लिये न इस लोकमें न
परलोकमें क्षमा किया जायगा।

यदि पेड़को अच्छा कहो तो उसके फलको भी अच्छा ३३
कहो अथवा पेड़को निकम्मा कहो तो उसके फलको भी
निकम्मा कहो क्योंकि फलहीसे पेड़ पहचाना जाता है।
हे सांपोंके बंश तुम बुरे होके अच्छी बातें क्योंकर कह ३४
सकते हो क्योंकि जो मनमें भरा है उसीको मुंह बोलता
है। भला मनुष्य मनके भले भंडारसे भली बातें निका- ३५
लता है और बुरा मनुष्य बुरे भंडारसे बुरी बातें निकालता
है। मैं तुमसे कहता हूं कि मनुष्य जो जो अनर्थ बातें ३६
कहें बिचारके दिनमें हर एक बातका लेखा देंगे। क्योंकि ३७
तू अपनी बातोंसे निर्दोष अथवा अपनी बातोंसे दोषी
ठहराया जायगा।

इसपर कितने अध्यापकों और फरीशियोंने कहा हे ३८
गुरु हम आपसे एक चिन्ह देखने चाहते हैं। उसने उन्हें ३९
उत्तर दिया कि इस समयके दुष्ट और ब्यभिचारी लोग
चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उनको नहीं दिया
जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह। जिस रीतिसे ४०
यूनस तीन दिन और तीन रात मछलीके पेटमें था उसी

रीतिसे मनुष्यका पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथि-
४१ वीके भीतर रहेगा। निनिवीय लोग बिचारके दिनमें
इस समयके लोगोंके संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे
क्योंकि उन्होंने यूनसका उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया
४२ और देखो यहां एक है जो यूनससे भी बड़ा है। दक्षि-
णकी राणी बिचारके दिनमें इस समयके लोगोंके संग
उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमानका ज्ञान
सुननेको पृथिवीके अन्तसे आई और देखो यहां एक है
जो सुलेमानसे भी बड़ा है।

४३ जब अशुद्ध भूत मनुष्यसे निकल जाता है तब सूखे
स्थानोंमें बिश्राम ढूंढ़ता फिरता पर नहीं पाता है।
४४ तब वह कहता है कि मैं अपने घरमें जहांसे निकला
फिर जाऊंगा और आके उसे सूना झाड़ा बुहारा सुथरा
४५ पाता है। तब वह जाके अपनेसे अधिक दुष्ट सात और
भूतोंको अपने संग ले आता है और वे भीतर पैठके वहां
बास करते हैं और उस मनुष्यकी पिछली दशा पहिलीसे
बुरी होती है. इस समयके दुष्ट लोगोंकी दशा ऐसी
होगी।

४६ यीशु लोगोंसे बात करताही था कि देखो उसकी माता
और उसके भाई बाहर खड़े हुए उससे बोलने चाहते
४७ थे। तब किसीने उससे कहा देखिये आपकी माता और
आपके भाई बाहर खड़े हुए आपसे बोलने चाहते हैं।
४८ उसने कहनेहारेको उत्तर दिया कि मेरी माता कौन है
४९ और मेरे भाई कौन हैं। और अपने शिष्योंकी ओर
अपना हाथ बढ़ाके उसने कहा देखो मेरी माता और मेरे

भाई। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गवासी पिताकी इच्छापर ५०
चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है।

## १३ तेरहवां पर्व्व।

१ बीज बोनेहारेका दृष्टान्त। १० दृष्टान्तोंसे उपदेश करनेका कारण। १८ बोनेहारेके दृष्टान्तका अर्थ। २४ जंगली दानेका दृष्टान्त। ३१ राईके दाने और खमीरके दृष्टान्त। ३४ यीशुके विषयमें एक भविष्य-द्वाक्यका पूरा होना। ३६ जंगली दानेके दृष्टान्तका अर्थ। ४४ गुप्त धन और मोतीके दृष्टान्त। ४७ महाजालका दृष्टान्त। ५१ ज्ञानवान शिष्योंकी उपमा। ५३ यीशुका अपने देशके लोगोंमें अपमान होना।

उस दिन यीशु घरसे निकलके समुद्रके तीरपर बैठा। १
और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नाव- २
पर चढ़के बैठा और सब लोग तीरपर खड़े रहे। तब ३
उसने उनसे दृष्टान्तोंमें बहुतसी बातें कहीं कि देखो एक
बोनेहारा बीज बोनेको निकला। बोनेमें कितने बीज ४
मार्गकी ओर गिरे और पंछियोंने आके उन्हें चुग लिया।
कितने पत्थरैली भूमिपर गिरे जहां उनको बहुत मिट्टी ५
न मिली और बहुत मिट्टी न मिलनेसे वे बेग उगे। परन्तु ६
सूर्य्य उदय होनेपर वे झुलस गये और जड़ न पकड़नेसे
सूख गये। कितने कांटोंके बीचमें गिरे और कांटोंने ७
बढ़के उनको दबा डाला। परन्तु कितने अच्छी भूमिपर ८
गिरे और फल फले कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई
तीस गुणे। जिसको सुननेके कान हों सो सुने। ९
तब शिष्योंने उस पास आ उससे कहा आप उनसे १०
दृष्टान्तोंमें क्यों बोलते हैं। उसने उनको उत्तर दिया कि ११
तुमको स्वर्गके राज्यके भेद जाननेका अधिकार दिया गया

१२ है परन्तु उनको नहीं दिया गया है। क्योंकि जो कोई
रखता है उसको और दिया जायगा और उसको बहुत
होगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उससे जो कुछ
१३ उसके पास है सो भी ले लिया जायगा। इसलिये मैं
उनसे दृष्टान्तोंमें बोलता हूं क्योंकि वे देखते हुए नहीं
देखते हैं और सुनते हुए नहीं सुनते और न बूझते हैं।
१४ और यिशैयाहकी यह भविष्यद्वाणी उनमें पूरी होती है
कि तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते
१५ हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि इन लोगोंका
मन मोटा हो गया है और वे कानोंसे ऊंचा सुनते हैं
और अपने नेत्र मूंद लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी
नेत्रोंसे देखें और कानोंसे सुनें और मनसे समझें और
१६ फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। परन्तु धन्य तुम्हारे
नेत्र कि वे देखते हैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं।
१७ क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो तुम देखते हो
उसको बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और धर्म्मियोंने देखने
चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उसको सुनने
चाहा पर न सुना।

१८
१९ सो तुम बोनेहारेके दृष्टान्तका अर्थ सुनो। जो कोई
राज्यका बचन सुनके नहीं बूझता है उसके मनमें जो
कुछ बोया गया था सो वह दुष्ट आके छीन लेता है, यह
२० वही है जिसमें बीज मार्गकी ओर बोया गया। जिसमें
बीज पत्थरैली भूमिपर बोया गया सो वही है जो बचन-
२१ को सुनके तुरन्त आनन्दसे ग्रहण करता है। परन्तु
उसमें जड़ न बंधनेसे वह थोड़ी बेर ठहरता है और

बचनके कारण क्लेश अथवा उपद्रव होनेपर तुरन्त ठोकर
खाता है। जिसमें बीज कांटोंके बीचमें बोया गया सो २२
वही है जो बचन सुनता है पर इस संसारकी चिन्ता
और धनकी माया बचनको दबाती है और वह निष्फल
होता है। पर जिसमें बीज अच्छी भूमिपर बोया गया २३
सो वही है जो बचन सुनके बूझता है और वह तो फल
देता है और कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस
गुणे फलता है।

उसने उन्हें दूसरा दृष्टान्त दिया कि स्वर्गके राज्यकी २४
उपमा एक मनुष्यसे दिई जाती है जिसने अपने खेतमें
अच्छा बीज बोया। परन्तु जब लोग सोये थे तब उसका २५
बैरी आके गेहूंके बीचमें जंगली बीज बोके चला गया।
जब अंकुर निकले और बालें लगीं तब जंगली दाने भी २६
दिखाई दिये। इसपर गृहस्थके दासोंने आ उससे कहा २७
हे स्वामी क्या आपने अपने खेतमें अच्छा बीज न बोया.
फिर जंगली दाने उसमें कहांसे आये। उसने उनसे २८
कहा किसी बैरीने यह किया है. दासोंने उससे कहा
आपकी इच्छा होय तो हम जाके उनको बटोर लेवें।
उसने कहा सो नहीं न हो कि जंगली दाने बटोरनेमें २९
उनके संग गेहूं भी उखाड़ लेओ। कटनीलों दोनोंको एक ३०
संग बढ़ने देओ और कटनीके समयमें मैं काटनेहारोंसे
कहूंगा पहिले जंगली दाने बटोरके जलानेके लिये उनके
गट्ठे बांधो परन्तु गेहूंको मेरे खत्तेमें एकट्ठा करो।

उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्गका राज्य ३१
राईके एक दानेकी नाईं है जिसे किसी मनुष्यने लेके अपने

३२ खेतमें बोया। वह तो सब बीजोंसे छोटा है परन्तु जब बढ़
जाता तब साग पातसे बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो
जाता है कि आकाशके पंछी आके उसकी डालियोंपर बसे-
३३ रा करते हैं। उसने एक और दृष्टान्त उनसे कहा कि स्वर्ग-
का राज्य खमीरकी नाईं है जिसको किसी स्त्रीने लेके तीन
पसेरी आटेमें छिपा रखा यहांलों कि सब खमीर हो गया।
३४ यह सब बातें यीशुने दृष्टान्तोंमें लोगोंसे कहीं और
३५ बिना दृष्टान्तसे उनको कुछ न कहा. कि जो बचन
भविष्यद्वक्तासे कहा गया था कि मैं दृष्टान्तोंमें अपना मुंह
खोलूंगा जो बातें जगतकी उत्पत्तिसे गुप्त रहीं उन्हें बर्णन
करूंगा सो पूरा होवे।
३६ तब यीशु लोगोंको बिदा कर घरमें आया और उसके
शिष्योंने उस पास आ कहा खेतके जंगली दानेके दृष्टान्तका
३७ अर्थ हमें समझाइये। उसने उनको उत्तर दिया कि जो
३८ अच्छा बीज बोता है सो मनुष्यका पुत्र है। खेत तो संसार
है अच्छा बीज राज्यके सन्तान हैं और जंगली बीज दुष्टके
३९ सन्तान हैं। जिस बैरीने उनको बोया सो शैतान है कटनी
४० जगतका अन्त है और काटनेहारे स्वर्गदूत हैं। सो जैसे
जंगली दाने बटोरे जाते और आगसे जलाये जाते हैं
४१ वैसाही इस जगतके अन्तमें होगा। मनुष्यका पुत्र अपने
दूतोंको भेजेगा और वे उसके राज्यमेंसे सब ठोकरके
४२ कारणोंको और कुकर्म्म करनेहारोंको बटोर लेंगे. और
उन्हें आगके कुंडमें डालेंगे जहां रोना औ दांत पीसना
४३ होगा। तब धर्म्मी लोग अपने पिताके राज्यमें सूर्य्यकी
नाईं चमकेंगे. जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

फिर स्वर्गका राज्य खेतमें छिपाये हुए धनके समान ४४
है जिसे किसी मनुष्यने पाके गुप्त रखा और वह उसके
आनन्दके कारण जाके अपना सब कुछ बेचके उस खेत-
को मोल लेता है। फिर स्वर्गका राज्य एक ब्योपारीके ४५
समान है जो अच्छे मोतियोंको ढूंढता था। उसने जब एक ४६
बड़े मोलका मोती पाया तब जाके अपना सब कुछ बेचके
उसे मोल लिया।

फिर स्वर्गका राज्य महाजालके समान है जो समुद्रमें ४७
डाला गया और हर प्रकारकी मछलियोंको घेर लिया।
जब वह भर गया तब लोग उसको तीरपर खींच लाये ४८
और बैठके अच्छी अच्छीको पात्रोंमें बटोरा और नि-
कम्मी निकम्मीको फेंक दिया। जगतके अन्तमें वैसाही ४९
होगा. स्वर्गदूत आके दुष्टोंको धर्म्मियोंके बीचमेंसे अलग
करेंगे. और उन्हें आगके कुंडमें डालेंगे जहां रोना औ ५०
दांत पीसना होगा।

यीशुने उनसे कहा क्या तुमने यह सब बातें समझीं. ५१
वे उससे बोले हां प्रभु। उसने उनसे कहा इसलिये हर ५२
एक अध्यापक जिसने स्वर्गके राज्यकी शिक्षा पाई है गृह-
स्थके समान है जो अपने भंडारसे नई और पुरानी बस्तु
निकालता है।

जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तब वहांसे चला ५३
गया। और उसने अपने देशमें आ उनकी सभाके घरमें ५४
उन्हें ऐसा उपदेश दिया कि वे अचंभित हो बोले इसको
यह ज्ञान और ये आश्चर्य्य कर्म्म कहांसे हुए। यह क्या ५५
बढ़ईका पुत्र नहीं है. क्या उसकी माताका नाम मरि-

यम और उसके भाइयोंके नाम याकूब और योशी और
५६ शिमोन और यिहूदा नहीं हैं। और क्या उसकी सब
बहिनें हमारे यहां नहीं हैं. फिर उसको यह सब कहांसे
५७ हुआ। सो उन्होंने उसके विषयमें ठोकर खाई परन्तु
यीशुने उनसे कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और अपना
५८ घर छोड़के और कहीं निरादर नहीं होता है। और
उसने वहां उनके अबिश्वासके कारण बहुत आश्चर्य्य कर्म्म
नहीं किये।

## १४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ योहन डूब देनेहारेकी मृत्यु। १३ यीशुका बहुत रोगियोंको चंगा करना। १५ पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना। २२ समुद्रपर चलना। ३४ गिनेसरतके रोगियोंको चंगा करना।

१ उस समयमें चौथाईके राजा हेरोदने यीशुकी कीर्त्ति
२ सुनी. और अपने सेवकोंसे कहा यह तो योहन डूब
देनेहारा है वह मृतकोंमेंसे जी उठा है इसलिये आश्चर्य्य
३ कर्म्म उससे प्रगट होते हैं। क्योंकि हेरोदने अपने भाई
फिलिपकी स्त्री हेरोदियाके कारण योहनको पकड़के उसे
४ बांधा था और बन्दीगृहमें डाला था। क्योंकि योहनने
उससे कहा था कि इस स्त्रीको रखना तुझको उचित
५ नहीं है। और वह उसे मार डालने चाहता था पर
६ लोगोंसे डरा क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे। परन्तु
हेरोदके जन्म दिनकी सभामें हेरोदियाकी पुत्रीने सभामें
७ नाच कर हेरोदको प्रसन्न किया। इसलिये उसने किरिया
खाके अंगीकार किया कि जो कुछ तू मांगे मैं तुझे देऊंगा।

वह अपनी माताकी उस्काई हुई बोली योहन डूब देने- ८
हारेका सिर यहां थालमें मुझे दीजिये। तब राजा उदास ९
हुआ परन्तु उस किरियाके और अपने संग बैठनेहारोंके
कारण उसने देनेकी आज्ञा किई। और उसने भेजकर १०
बन्दीगृहमें योहनका सिर कटवाया। और उसका सिर ११
थालमें कन्याको पहुंचा दिया गया और वह उसको
अपनी मांके पास ले गई। तब उसके शिष्योंने आके १२
उसकी लोथको उठाके गाड़ा और आके यीशुसे इसका
समाचार कहा।

जब यीशुने यह सुना तब नावपर चढ़के वहांसे किसी १३
जंगली स्थानमें एकांतमें गया और लोग यह सुनके नग-
रोंमेंसे पैदल उसके पीछे हो लिये। यीशुने निकलके १४
बहुत लोगोंको देखा और उनपर दया कर उनके रोगि-
योंको चंगा किया।

जब सांझ हुई तब उसके शिष्योंने उस पास आ कहा १५
यह तो जंगली स्थान है और बेला अब बीत गई है लोगोंको
बिदा कीजिये कि वे बस्तियोंमें जाके अपने लिये भोजन
मोल लेवें। यीशुने उनसे कहा उन्हें जानेका प्रयोजन १६
नहीं तुम उन्हें खानेको देओ। उन्होंने उससे कहा यहां १७
हमारे पास केवल पांच रोटी और दो मछली हैं। उसने १८
कहा उनको यहां मेरे पास लाओ। तब उसने लोगोंको १९
घासपर बैठनेकी आज्ञा दिई और उन पांच रोटियों
और दो मछलियोंको ले स्वर्गकी ओर देखके धन्यबाद
किया और रोटियां तोड़के शिष्योंको दिईं और शिष्योंने
लोगोंको दिईं। सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े २०

२१ बच रहे उन्होंने उनकी बारह टोकरी भरी उठाईं। जि-
न्होंने खाया से स्त्रियों और बालकोंको छोड़ पांच सहस्र
पुरुषोंके अटकल थे।
२२ तब यीशुने तुरन्त अपने शिष्योंको दृढ़ आज्ञा दिई कि
जबलों मैं लोगोंको बिदा करूं तुम नावपर चढ़के मेरे आगे
२३ उस पार जाओ। वह लोगोंको बिदा कर प्रार्थना करनेको
एकान्तमें पर्व्वतपर चढ़ गया और सांझको वहां अकेला
२४ था। उस समय नाव समुद्रके बीचमें लहरोंसे उछल
२५ रही थी क्योंकि बयार सन्मुखकी थी। रातके चौथे पहरमें
२६ यीशु समुद्रपर चलते हुए उनके पास गया। शिष्य लोग
उसको समुद्रपर चलते देखके घबरा गये और बोले यह
२७ प्रेत है और डरके मारे चिल्लाये। यीशु तुरन्त उनसे बात
२८ करने लगा और कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत। तब
पितरने उसको उत्तर दिया कि हे प्रभु यदि आपही हैं
तो मुझे अपने पास जलपर आनेकी आज्ञा दीजिये।
२९ उसने कहा आ। तब पितर नावपरसे उतरके यीशु पास
३० जानेको जलपर चलने लगा। परन्तु बयारको प्रचंड देख-
के वह डर गया और जब डूबने लगा तब चिल्लाके बोला
३१ हे प्रभु मुझे बचाइये। यीशुने तुरन्त हाथ बढ़ाके उसको
थांभ लिया और उससे कहा हे अल्पबिश्वासी क्यों
३२ सन्देह किया। जब वे नावपर चढ़े तब बयार थम गई।
३३ इसपर जो लोग नावपर थे सो आके यीशुको प्रणाम
करके बोले सचमुच आप ईश्वरके पुत्र हैं।
३४ वे पार उतरके गिनेसरत देशमें पहुंचे। और वहांके
३५ लोगोंने यीशुको चीन्हके आसपासके सारे देशमें कहला

भेजा और सब रोगियोंको उस पास लाये. और उससे ३६
बिन्ती किई कि वे केवल उसके बस्त्रके आंचलको छूवें
और जितनोंने छूआ सब चंगे किये गये।

## १५ पन्द्रहवां पर्व्व।

१ यीशुका फरीशियोंको उनके व्यवहारोंके विषयमें दपटना। १० अपवित्रताके हेतुका बर्णन करना। २१ एक अन्यदेशी स्त्रीकी बेटीको चंगा करना। २९ बज़त रोगियोंको चंगा करना। ३२ चार सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना।

तब यिरूशलीमके कितने अध्यापकों और फरीशियोंने १
यीशु पास आ कहा. आपके शिष्य लोग क्यों प्राचीनोंके २
व्यवहार लंघन करते हैं क्योंकि जब वे रोटी खाते तब
अपने हाथ नहीं धोते हैं। उसने उनको उत्तर दिया कि ३
तुम भी क्यों अपने व्यवहारोंके कारण ईश्वरकी आज्ञाको
लंघन करते हो। क्योंकि ईश्वरने आज्ञा किई कि अपने ४
माता पिताका आदर कर और जो कोई माता अथवा
पिताकी निन्दा करे सो मार डाला जाय। परन्तु तुम ५
कहते हो यदि कोई अपने माता अथवा पितासे कहे कि
जो कुछ तुझको मुझसे लाभ होता सो संकल्प किया गया
है तो उसको अपनी माता अथवा अपने पिताका आदर
करनेका और कुछ प्रयोजन नहीं। सो तुमने अपने व्यव- ६
हारोंके कारण ईश्वरकी आज्ञाको उठा दिया है। हे ७
कपटियो यिशैयाहने तुम्हारे विषयमें यह भविष्यद्वाणी
अच्छी कही. कि ये लोग अपने मुंहसे मेरे निकट आते ८
हैं और होंठोंसे मेरा आदर करते हैं परन्तु उनका मन
मुझसे दूर रहता है। पर वे वृथा मेरी उपासना करते ९

हैं क्योंकि मनुष्योंकी आज्ञाओंको धर्म्मोपदेश ठहराके
सिखाते हैं ।
१० और उसने लोगोंको अपने पास बुलाके उनसे कहा
११ सुनो और बूझो। जो मुंहमें समाता है सो मनुष्यको अप-
वित्र नहीं करता है परन्तु जो मुंहसे निकलता है सोई
१२ मनुष्यको अपवित्र करता है। तब उसके शिष्योंने आ
उससे कहा क्या आप जानते हैं कि फरीशियोंने यह
१३ बचन सुनके ठोकर खाई। उसने उत्तर दिया कि हर
एक गाछ जो मेरे स्वर्गीय पिताने नहीं लगाया है उखाड़ा
१४ जायगा। उनको रहने दो. वे अंधोंके अंधे अगुवे हैं और
अंधा यदि अंधेको मार्ग बतावे तो दोनों गढ़ेमें गिर
१५ पड़ेंगे । तब पितरने उसको उत्तर दिया कि इस दृष्टान्त-
१६ का अर्थ हमें समझाइये। यीशुने कहा तुम भी क्या अबलों
१७ निर्बुद्धि हो। क्या तुम अबलों नहीं बूझते हो कि जो कुछ
मुंहमें समाता सो पेटमें जाता है और संडासमें फेंका
१८ जाता है। परन्तु जो कुछ मुंहसे निकलता है सो मनसे
बाहर आता है और वही मनुष्यको अपवित्र करता है।
१९ क्योंकि मनसे नाना भांतिकी कुचिन्ता नरहिंसा परस्त्री-
गमन व्यभिचार चोरी झूठी साक्षी और ईश्वरकी निन्दा
२० निकलती हैं। येही हैं जो मनुष्यको अपवित्र करती हैं
परन्तु बिन धोये हाथोंसे भोजन करना मनुष्यको अपवित्र
नहीं करता है ।
२१ यीशु वहांसे निकलके सोर और सीदोनके सिवानोंमें
२२ गया । और देखो उन सिवानोंमेंकी एक कनानी स्त्रीने
निकलकर पुकारके उससे कहा हे प्रभु दाऊदके सन्तान

मुझपर दया कीजिये मेरी बेटी भूतसे अति पीड़ित है।
परन्तु उसने उसको कुछ उत्तर न दिया और उसके २३
शिष्योंने आ उससे बिन्ती कर कहा इसको बिदा कीजिये
क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे पुकारती है। उसने उत्तर २४
दिया कि इस्रायेलके घरानेकी खोई हुई भेड़ोंको छोड़ मैं
किसीके पास नहीं भेजा गया हूं। तब स्त्रीने आ उसको २५
प्रणाम कर कहा हे प्रभु मेरा उपकार कीजिये। उसने २६
उत्तर दिया कि लड़कोंकी रोटी लेके कुत्तोंके आगे
फेंकना अच्छा नहीं है। स्त्रीने कहा सच हे प्रभु तौभी २७
कुत्ते जो चूरचार उनके स्वामियोंकी मेजसे गिरते हैं सो
खाते हैं। तब यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे नारी २८
तेरा बिश्वास बड़ा है जैसा तू चाहती है वैसाही तुझे होय.
और उसकी बेटी उसी घड़ीसे चंगी हुई।

यीशु वहांसे जाके गालीलके समुद्रके निकट आया २९
और पर्व्वतपर चढ़के वहां बैठा। और बड़ी बड़ी भीड़ ३०
अपने संग लंगड़ों अंधों गूंगों टुंडों और बहुतसे औरों-
को लेके यीशु पास आई और उन्हें उसके चरणोंपर
डाला और उसने उन्हें चंगा किया. यहांलों कि जब ३१
लोगोंने देखा कि गूंगे बोलते हैं टुंडे चंगे होते हैं लंगड़े
चलते हैं और अंधे देखते हैं तब अचंभा करके इस्रा-
येलके ईश्वरकी स्तुति किई।

तब यीशुने अपने शिष्योंको अपने पास बुलाके कहा ३२
मुझे इन लोगोंपर दया आती है क्योंकि वे तीन दिनसे
मेरे संग रहे हैं और उनके पास कुछ खानेको नहीं है
और मैं उनको भोजन बिना बिदा करने नहीं चाहता हूं

३३ न हो कि मार्गमें उनका बल घट जाय। उसके शिष्योंने
उससे कहा हमें इस जंगलमें कहांसे इतनी रोटी मिलेगी
३४ कि हम इतनी बड़ी भीड़को तृप्त करें। यीशुने उनसे कहा
तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं. उन्होंने कहा सात और
३५ थोड़ीसी छोटी मछलियां। तब उसने लोगोंको भूमिपर
३६ बैठनेकी आज्ञा दिई। और उसने उन सात रोटियोंको
और मछलियोंको लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने
३७ शिष्योंको दिया और शिष्योंने लोगोंको दिया। सो सब
खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्होंने उनके
३८ सात टोकरे भरे उठाये। जिन्होंने खाया सो स्त्रियां और
३९ बालकोंको छोड़ चार सहस्र पुरुष थे। तब यीशु लो-
गोंको बिदा कर नावपर चढ़के मगदला नगरके सिवा-
नोंमें आया।

## १६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ यीशुका चिन्ह मांगनेहारोंको डांटना। ५ अपने शिष्योंको फरीशियोंकी शिक्षाके विषयमें चिताना। १३ यीशुके विषयमें लोगोंका और शिष्योंका बिचार और उसका पितरको प्रश्न देना। २१ अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना और पितरको डांटना। २४ शिष्य होनेकी विधि।

१ तब फरीशियों और सदूकियोंने यीशु पास आ उसकी
परीक्षा करनेको उससे चाहा कि हमें आकाशका एक
२ चिन्ह दिखाइये। उसने उनको उत्तर दिया सांझको तुम
कहते हो कि फरछा होगा क्योंकि आकाश लाल है और
भोरको कहते हो कि आज आंधी आवेगी क्योंकि आकाश
३ लाल और धूमला है। हे कपटियो तुम आकाशका रूप
बूझ सकते हो क्या तुम समयोंके चिन्ह नहीं बूझ सकते

हो। इस समयके दुष्ट श्रोर ब्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते ४
हैं परन्तु कोई चिन्ह उनको नहीं दिया जायगा केवल
यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह. तब वह उन्हें छोड़के चला
गया।

उसके शिष्य लोग उस पार पहुंचके रोटी लेना भूल ५
गये। श्रोर यीशुने उनसे कहा देखो फरीशियों श्रोर सदू- ६
कियोंके खमीरसे चोकस रहो। वे श्रापसमें बिचार करने ७
लगे यह इसलिये है कि हमने रोटी न लिई। यह ८
जानके यीशुने उनसे कहा हे श्रल्पबिश्वासियो तुम रोटी
न लेनेके कारण क्यों श्रापसमें बिचार करते हो। क्या ९
तुम श्रबलों नहीं बूझते हो श्रोर उन पांच सहस्रकी पांच
रोटी नहीं स्मरण करते हो श्रोर कितनी टोकरियां
तुमने उठाईं। श्रोर न उन चार सहस्रकी सात रोटी श्रोर १०
कितने टोकरे तुमने उठाये। तुम क्यों नहीं बूझते हो कि ११
मैंने तुमको फरीशियों श्रोर सदूकियोंके खमीरसे चोकस
रहनेको जो कहा सो रोटीके विषयमें नहीं कहा। तब १२
उन्होंने बूझा कि उसने रोटीके खमीरसे नहीं परन्तु
फरीशियों श्रोर सदूकियोंकी शिक्षासे चोकस रहनेको
कहा।

यीशुने कैसरिया फिलिपीके सिवानोंमें श्राके श्रपने १३
शिष्यांसे पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं मनुष्यका पुत्र कैान
हूं। उन्होंने कहा कितने तो श्रापको योहन डूब देनेहारा १४
कहते हैं कितने एलियाह कहते हैं श्रोर कितने यिरमि-
याह श्रथवा भविष्यद्वक्ताश्रोंमेंसे एक कहते हैं। उसने १५
उनसे कहा तुम क्या कहते हो मैं कैान हूं। शिमोन १६

पितरने उत्तर दिया कि आप जीवते ईश्वरके पुत्र ख्रीष्ट हैं।
१७ यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे यूनसके पुत्र शिमोन
तू धन्य है क्योंकि मांस औ लोहूने नहीं परन्तु मेरे स्वर्ग-
१८ बासी पिताने यह बात तुझपर प्रगट किई। और मैं भी
तुझसे कहता हूं कि तू पितर है और मैं इसी पत्थरपर
अपनी मंडली बनाऊंगा और परलोकके फाटक उसपर
१९ प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्गके राज्यकी कुंजियां देऊंगा
और जो कुछ तू पृथिवीपर बांधेगा सो स्वर्गमें बंधा
हुआ होगा और जो कुछ तू पृथिवीपर खोलेगा सो
२० स्वर्गमें खुला हुआ होगा। तब उसने अपने शिष्योंको
चिताया कि किसीसे मत कहो कि मैं यीशु जो हूं सो
ख्रीष्ट हूं।

२१ उस समयसे यीशु अपने शिष्योंको बताने लगा कि मुझे
अवश्य है कि यिरूशलीममें जाऊं और प्राचीनों और
प्रधान याजकों और अध्यापकोंसे बहुत दुःख उठाऊं
२२ और मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं। तब
पितर उसे लेके उसको डांटके कहने लगा कि हे प्रभु
२३ आपपर दया रहे यह तो आपको कभी न होगा। उसने
मुंह फेरके पितरसे कहा हे शैतान मेरे साम्हनेसे दूर
हो तू मेरे लिये ठोकर है क्योंकि तुझे ईश्वरकी बातोंका
नहीं परन्तु मनुष्योंकी बातोंका सोच रहता है।

२४ तब यीशुने अपने शिष्योंसे कहा यदि कोई मेरे पीछे
आने चाहे तो अपनी इच्छाको मारे और अपना क्रूश
२५ उठाके मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण
बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये

अपना प्राण खोवे सो उसे पावेगा। यदि मनुष्य सारे २६
जगतको प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उसको
क्या लाभ होगा, अथवा मनुष्य अपने प्राणकी सन्ती
क्या देगा। मनुष्यका पुत्र अपने दूतोंके संग अपने पिताके २७
ऐश्वर्य्यमें आवेगा और तब वह हर एक मनुष्यको उसके
कार्य्यके अनुसार फल देगा। मैं तुमसे सच कहता हूं कि २८
जो यहां खड़े हैं उनमेंसे कोई कोई हैं कि जबलों मनुष्यके
पुत्रको उसके राज्यमें आते न देखें तबलों मृत्युका स्वाद
न चीखेंगे।

## १७ सत्रहवां पर्ब्ब।

१ यीशुका शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना। १० एलियाहके आनेका अर्थ उन्हें बताना। १४ एक भूतग्रस्त लड़केको चंगा करना और बिश्वासके गुणका बखान करना। २२ अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना। २४ मन्दिरका कर देनेके लिये आश्चर्य्य कर्म्म करना।

छः दिनके पीछे यीशु पितर और याकूब और उसके १
भाई योहनको लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्व्वतपर एकान्तमें ले
गया। और उनके आगे उसका रूप बदल गया और २
उसका मुंह सूर्य्यके तुल्य चमका और उसका बस्त्र ज्यो-
तिकी नाईं उजला हुआ। और देखो मूसा और एलि- ३
याह उसके संग बात करते हुए उनको दिखाई दिये।
इसपर पितरने यीशुसे कहा हे प्रभु हमारा यहां रहना ४
अच्छा है, यदि आपकी इच्छा होय तो हम तीन डेरे
यहां बनावें एक आपके लिये एक मूसाके लिये और एक
एलियाहके लिये। वह बोलताही था कि देखो एक ५
ज्योतिमय मेघने उन्हें छा लिया और देखो उस मेघसे

यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति
६ प्रसन्न हूं उसकी सुनो। शिष्य लोग यह सुनके औंधे
७ मुंह गिरे और निपट डर गये। यीशुने उन पास आके
८ उन्हें छूके कहा उठो डरो मत। तब उन्होंने अपनी आंखें
९ उठाके यीशुको छोड़के और किसीको न देखा। जब वे
उस पर्ब्बतसे उतरते थे तब यीशुने उनको आज्ञा दिई
कि जबलों मनुष्यका पुत्र मृतकोंमेंसे नहीं जी उठे तबलों
इस दर्शनका समाचार किसीसे मत कहो।
१०　और उसके शिष्योंने उससे पूछा फिर अध्यापक लोग
११ क्यों कहते हैं कि एलियाहको पहिले आना होगा। यीशुने
उनको उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके
१२ सब कुछ सुधारेगा। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि एलि-
याह आ चुका है और उन्होंने उसको नहीं चीन्हा परन्तु
उससे जो कुछ चाहा सो किया. इस रीतिसे मनुष्यका
१३ पुत्र भी उनसे दुःख पावेगा। तब शिष्योंने बूझा कि वह
योहन डूब देनेहारेके विषयमें हमसे कहता है।
१४　जब वे लोगोंके निकट पहुंचे तब किसी मनुष्यने यीशु
१५ पास आ घुटने टेकके उससे कहा. हे प्रभु मेरे पुत्रपर
दया कीजिये वह मिर्गीके रोगसे अति पीड़ित है कि बार-
१६ बार आगमें और बारबार पानीमें गिर पड़ता है। और
मैं उसको आपके शिष्योंके पास लाया परन्तु वे उसे चंगा
१७ नहीं कर सके। यीशुने उत्तर दिया कि हे अविश्वासी
और हठीले लोगो मैं कबलों तुम्हारे संग रहूंगा और
कबलों तुम्हारी सहूंगा. उसको यहां मेरे पास लाओ।
१८ तब यीशुने भूतको डांटा और वह उसमेंसे निकला और

लड़का उसी घड़ीसे चंगा हुआ। तब शिष्योंने निरालेमें १९
यीशु पास आ कहा हम उस भूतको क्यों नहीं निकाल
सके। यीशुने उनसे कहा तुम्हारे अबिश्वासके कारण २०
क्योंकि मैं तुमसे सत्य कहता हूं यदि तुमको राईके एक
दानेके तुल्य बिश्वास होय तो तुम इस पहाड़से जो
कहोगे कि यहांसे वहां चला जा वह जायगा और कोई
काम तुमसे असाध्य नहीं होगा। तौभी जो इस प्रकारके २१
हैं सो प्रार्थना और उपवास बिना और किसी उपायसे
निकाले नहीं जाते हैं।

जब वे गालीलमें फिरते थे तब यीशुने उनसे कहा २२
मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके हाथमें पकड़वाया जायगा। वे २३
उसको मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा.
इसपर वे बहुत उदास हुए।

जब वे कफर्नाहुममें पहुंचे तब मन्दिरका कर लेनेहारे २४
पितरके पास आके बोले क्या तुम्हारा गुरु मन्दिरका कर
नहीं देता है. उसने कहा हां देता है। जब पितर घरमें २५
आया तब यीशुने उसके बोलनेके पहिले उससे कहा हे
शिमोन तू क्या समझता है. पृथिवीके राजा लोग कर
अथवा खिराज किनसे लेते हैं अपने सन्तानोंसे अथवा
परायोंसे। पितरने उससे कहा परायोंसे. यीशुने उससे २६
कहा तब तो सन्तान बचे हुए हैं। तौभी जिस्तें हम २७
उनको ठोकर न खिलावें इसलिये तू समुद्रके तीरपर जाके
बंसी डाल और जो मछली पहिले निकले उसको ले.
तू उसका मुंह खोलनेसे एक रुपैया पावेगा उसीको लेके
मेरे और अपने लिये उन्हें दे।

# १८ अठारहवां पर्ब्ब ।

१ नम्र होनेका उपदेश । ७ ठोकर खानेका निषेध । ११ खोई हुई भेड़का दृष्टान्त । १५ दोषी भाईसे कैसा व्यवहार चाहिये इसका बर्णन और मंडलीका अधिकार । २१ क्षमा करनेका उपदेश और निर्दय दासका दृष्टान्त ।

१ उसी घड़ी शिष्योंने यीशु पास आ कहा स्वर्गके राज्यमें
२ बड़ा कौन है । यीशुने एक बालकको अपने पास बुलाके
३ उनके बीचमें खड़ा किया. और कहा मैं तुम्हें सच
कहता हूं जो तुम मन न फिरावो और बालकोंके समान
न हो जावो तो स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करने न पाओगे ।
४ जो कोई अपनेको इस बालकके समान दीन करे सोई
५ स्वर्गके राज्यमें बड़ा है । और जो कोई मेरे नामसे एक
६ ऐसे बालकको ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है । परन्तु
जो कोई इन छोटोंमेंसे जो मुझपर बिश्वास करते हैं
एकको ठोकर खिलावे उसके लिये भला होता कि चक्की-
का पाट उसके गलेमें लटकाया जाता और वह समुद्रके
गहिरावमें डुबाया जाता ।
७ ठोकरोंके कारण हाय संसार. ठोकरें अवश्य लगेंगीं
परन्तु हाय वह मनुष्य जिसके द्वारासे ठोकर लगती है ।
८ जो तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो
उसे काटके फेंक दे. लंगड़ा अथवा टुंडा होके जीवनमें
प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ अथवा
९ दो पांव रहते हुए तू अनन्त आगमें डाला जाय । और
जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके

फेंक दे. काना होके जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये
इससे भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरककी आगमें
डाला जाय। देखो कि तुम इन छोटोंमेंसे एकको तुच्छ न १०
जानो क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि स्वर्गमें उनके दूत मेरे
स्वर्गबासी पिताका मुंह नित्य देखते हैं।

मनुष्यका पुत्र खोये हुएको बचाने आया है। तुम क्या ११ १२
समझते हो. जो किसी मनुष्यकी सौ भेड़ होवें और
उनमेंसे एक भटक जाय तो क्या वह निन्नानवेको पहा-
ड़ोंपर छोड़के उस भटकी हुईको नहीं जाके ढूंढ़ता है।
और मैं तुमसे सत्य कहता हूं यदि ऐसा हो कि वह १३
उसको पावे तो जो निन्नानवे नहीं भटक गई थीं उनसे
अधिक वह उस भेड़के लिये आनन्द करता है। ऐसाही १४
तुम्हारे स्वर्गबासी पिताकी इच्छा नहीं है कि इन छोटों-
मेंसे एक भी नाश होवे।

यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जाके उसके १५
संग एकान्तमें उसको समझा दे. जो वह तेरी सुने तो
तूने अपने भाईको पाया है। परन्तु जो वह न सुने तो १६
एक अथवा दो जनको अपने संग ले जा कि दो अथवा
तीन साक्षियोंके मुंहसे हर एक बात ठहराई जाय। जो वह १७
उनकी न माने तो मंडलीसे कह दे परन्तु जो वह मंड-
लीकी भी न माने तो तेरे लेखे देवपूजक और कर उगा-
हनेहारासा होय। मैं तुमसे सच कहता हूं जो कुछ तुम १८
पृथिवीपर बांधोगे सो स्वर्गमें बंधा हुआ होगा और जो
कुछ तुम पृथिवीपर खोलोगे सो स्वर्गमें खुला हुआ
होगा। फिर मैं तुमसे कहता हूं यदि पृथिवीपर तुममेंसे १९

दो मनुष्य जो कुछ मांगें उस बातके विषयमें एक मन
होवें तो वह उनके लिये मेरे स्वर्गबासी पिताकी ओरसे
२० हो जायगी। क्योंकि जहां दो अथवा तीन मेरे नामपर
एकट्ठे होवें तहां मैं उनके बीचमें हूं।
२१ तब पितरने उस पास आ कहा हे प्रभु मेरा भाई कै
बेर मेरा अपराध करे और मैं उसको क्षमा करूं. क्या
२२ सात बेरलों। यीशुने उससे कहा मैं तुझसे नहीं कहता
२३ हूं कि सात बेरलों परन्तु सत्तर गुणे सात बेरलों। इस-
लिये स्वर्गके राज्यकी उपमा एक राजासे दिई जाती है
२४ जिसने अपने दासोंसे लेखा लेने चाहा। जब वह लेखा
लेने लगा तब एक जन जो दस सहस्र तोड़े धारता था
२५ उसके पास पहुंचाया गया। जब कि भर देनेको उस पास
कुछ न था उसके स्वामीने आज्ञा किई कि वह और
उसकी स्त्री और लड़के बाले और जो कुछ उसका था
२६ सब बेचा जाय और वह ऋण भर दिया जाय। इसपर
उस दासने दंडवत कर उसे प्रणाम किया और कहा हे
प्रभु मेरे विषयमें धीरज धरिये मैं आपको सब भर देऊं-
२७ गा। तब उस दासके स्वामीने दया कर उसे छोड़ दिया
२८ और उसका ऋण क्षमा किया। परन्तु उसी दासने
बाहर निकलके अपने संगी दासोंमेंसे एकको पाया जो
उसकी एक सौ सूकी धारता था और उसको पकड़के
उसका गला दाबके कहा जो कुछ तू धारता है मुझे दे।
२९ इसपर उसके संगी दासने उसके पांवों पड़के उससे
बिन्ती कर कहा मेरे विषयमें धीरज धरिये मैं आपको
३० सब भर देऊंगा। उसने न माना परन्तु जाके उसे बन्दी-

गृहमें डाला कि जबलों ऋणको भर न देवे तबलों वहीं
रहे। उसके संगी दास लोग जो हुआ था सो देखके ३१
बहुत उदास हुए और जाके सब कुछ जो हुआ था
अपने स्वामीको बताया। तब उस दासके स्वामीने उसको ३२
अपने पास बुलाके उससे कहा हे दुष्ट दास तूने जो
मुझसे बिन्ती किई तो मैंने तुझे वह सब ऋण क्षमा
किया। सो जैसा मैंने तुझपर दया किई वैसा क्या तुझे ३३
भी अपने संगी दासपर दया करना उचित न था। और ३४
उसके स्वामीने क्रोध कर उसे दंडकारकोंके हाथ सोंप
दिया कि जबलों वह उसका सब ऋण भर न देवे तबलों
उनके हाथमें रहे। यूंही यदि तुममेंसे हर एक अपने ३५
अपने मनसे अपने भाईके अपराध क्षमा न करे तो मेरा
स्वर्गबासी पिता भी तुमसे वैसा करेगा।

## १९ उनीसवां पर्व्व।

१ पत्नीको त्यागनेका निषेध। १३ यीशुका बालकोंको आशीस देना। १६ एक धनवान जवानसे उसकी बातचीत। २३ धनी लोगोंकी दशाका बर्णन। २७ शिष्योंके फलकी प्रतिज्ञा।

जब यीशु यह बातें कह चुका तब गालीलसे जाके १
यर्दनके उस पार यिहूदियाके सिवानोंमें आया। और २
बड़ी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिईं और उसने उन्हें
वहां चंगा किया। तब फरीशियोंने उस पास आ उसकी ३
परीक्षा करनेको उससे कहा क्या किसी कारणसे अपनी
स्त्रीको त्यागना मनुष्यको उचित है। उसने उनको उत्तर ४
दिया क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि सृजनहारने आरंभसे
नर और नारी करके मनुष्योंको उत्पन्न किया। और ५

कहा इस हेतुसे मनुष्य अपने माता पिताको छोड़के
अपनी स्त्रीसे मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे।
६ सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं इसलिये जो कुछ ईश्व-
७ रने जोड़ा है उसको मनुष्य अलग न करे। उन्होंने उससे
कहा फिर मूसाने क्यों त्यागपत्र देने और स्त्रीको त्याग-
८ नेकी आज्ञा किई। उसने उनसे कहा मूसाने तुम्हारे
मनकी कठोरताके कारण तुमको अपनी अपनी स्त्रियां
९ त्यागने दिया परन्तु आरंभसे ऐसा नहीं था। और मैं
तुमसे कहता हूं कि जो कोई ब्यभिचारको छोड़ और
किसी हेतुसे अपनी स्त्रीको त्यागके दूसरीसे बिवाह करे
सो परस्त्रीगमन करता है और जो उस त्यागी हुईसे
१० बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है। उसके शिष्योंने
उससे कहा यदि पुरुषको स्त्रीके संग इस प्रकारका सम्बन्ध
११ है तो बिवाह करना अच्छा नहीं है। उसने उनसे कहा
सब लोग यह बचन ग्रहण नहीं कर सकते हैं केवल वे
१२ जिनको दिया गया है। क्योंकि कोई कोई नपुंसक हैं जो
माताके गर्भसे ऐसेही जन्मे और कोई कोई नपुंसक हैं जो
मनुष्योंसे नपुंसक किये गये हैं और कोई कोई नपुंसक
हैं जिन्होंने स्वर्गके राज्यके लिये अपनेको नपुंसक किये
हैं. जो इसको ग्रहण कर सके सो ग्रहण करे।

१३ तब लोग कितने बालकोंको यीशु पास लाये कि वह
उनपर हाथ रखके प्रार्थना करे परन्तु शिष्योंने उन्हें
१४ डांटा। यीशुने कहा बालकोंको मेरे पास आने दो और
१५ उन्हें मत बर्जो क्योंकि स्वर्गका राज्य ऐसोंका है। और
वह उनपर हाथ रखके वहांसे चला गया।

और देखो एक मनुष्यने उस पास आ उससे कहा हे १६
उत्तम गुरु अनन्त जीवन पानेको मैं कौनसा उत्तम काम
करूं। उसने उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है॰ १७
कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर॰ परन्तु जो
तू जीवनमें प्रवेश किया चाहता है तो आज्ञाओंको पालन
कर। उसने उससे कहा कौन कौन आज्ञा॰ यीशुने १८
कहा यह कि नरहिंसा मत कर परस्त्रीगमन मत कर
चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे॰ अपने माता पिताका १९
आदर कर और अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम
कर। उस जवानने उससे कहा इन सभोंको मैंने अपने २०
लड़कपनसे पालन किया है मुझे अब क्या घटी है।
यीशुने उससे कहा जो तू सिद्ध हुआ चाहता है तो जा २१
अपनी सम्पत्ति बेचके कंगालोंको दे और तू स्वर्गमें धन
पावेगा और आ मेरे पीछे हो ले। वह जवान यह बात २२
सुनके उदास चला गया क्योंकि उसको बहुत धन था।

तब यीशुने अपने शिष्योंसे कहा मैं तुमसे सच कहता २३
हूं कि धनवानको स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करना कठिन
होगा। फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वरके राज्यमें २४
धनवानके प्रवेश करनेसे ऊंटका सूईके नाकेमेंसे जाना
सहज है। यह सुनके उसके शिष्योंने निपट अचंभित २५
हो कहा तब तो किसका त्राण हो सकता है। यीशुने २६
उनपर दृष्टि कर उनसे कहा मनुष्योंसे यह अन्होना है
परन्तु ईश्वरसे सब कुछ हो सकता है।

तब पितरने उसको उत्तर दिया कि देखिये हम लोग २७
सब कुछ छोड़के आपके पीछे हो लिये हैं सो हमें क्या

२८ मिलेगा। यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं
कि नई सृष्टिमें जब मनुष्यका पुत्र अपने ऐश्वर्य्यके सिंहा-
सनपर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो
बारह सिंहासनोंपर बैठके इस्रायेलके बारह कुलोंका
२९ न्याय करोगे। और जिस किसीने मेरे नामके लिये घरों
वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों
वा भूमिको त्यागा है सो सौ गुणा पावेगा और अनन्त
३० जीवनका अधिकारी होगा। परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं
पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे।

## २० बीसवां पर्ब्ब।

१ गृहस्थके बनिहारोंका दृष्टान्त। १७ यीशुका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना। २० दो शिष्योंकी बिन्तीका उत्तर देना। २४ दीन होनेका उपदेश। २९ यीशुका दो अंधोंके नेत्र खोलना।

१ स्वर्गका राज्य किसी गृहस्थके समान है जो भोरको
निकला कि अपने दाखकी बारीमें बनिहारोंको लगावे।
२ और उसने बनिहारोंके साथ दिनभरकी एक एक सूकी
३ मजूरी ठहराके उन्हें अपने दाखकी बारीमें भेजा। जब
पहर एक दिन चढ़ा तब उसने बाहर जाके औरोंको
४ चौकमें बेकार खड़े देखा, और उनसे कहा तुम भी
दाखकी बारीमें जाओ और जो कुछ उचित होय मैं
५ तुम्हें देऊंगा, सो वे भी गये। फिर उसने दूसरे और
६ तीसरे पहरके निकट बाहर जाके वैसाही किया। घड़ी
एक दिन रहते उसने बाहर जाके औरोंको बेकार खड़े
पाया और उनसे कहा तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े
७ हो। उन्होंने उससे कहा किसीने हमको काममें नहीं

लगाया है. उसने उन्हें कहा तुम भी दाखकी बारीमें
जाओ और जो कुछ उचित होय सो पाओगे। जब ८
सांझ हुई तब दाखकी बारीके स्वामीने अपने भंडारीसे
कहा बनिहारोंको बुलाके पिछलोंसे आरंभ कर अगलों-
तक उन्हें मजूरी दे। सो जो लोग घड़ी एक दिन रहते ९
कामपर आये थे उन्होंने आके एक एक सूकी पाई। तब १०
अगले आये और समझा कि हम अधिक पावेंगे परन्तु
उन्होंने भी एक एक सूकी पाई। इसको लेके वे उस गृह- ११
स्थपर कुड़कुड़ाके बोले. इन पिछलोंने एकही घड़ी काम १२
किया और आपने उनको हमारे तुल्य किया है जिन्हों-
ने दिनभरका भार और घाम सहा। उसने उनमेंसे १३
एकको उत्तर दिया कि हे मित्र मैं तुझसे कुछ अनीति
नहीं करता हूं. क्या तूनें मुझसे एक सूकी लेनेको न
ठहराया। अपना ले और चला जा. मेरी इच्छा है कि १४
जितना तुझको उतना इस पिछलेको भी देऊं। क्या मुझे १५
उचित नहीं कि अपने धनसे जो चाहूं सो करूं. क्या
तू मेरे भले होनेके कारण बुरी दृष्टिसे देखता है। इस १६
रीतिसे जो पिछले हैं सो अगले होंगे और जो अगले हैं
सो पिछले होंगे क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने
हुए थोड़े हैं।

योशुने यिरूशलीमको जाते हुए मार्गमें बारह शिष्यों- १७
को एकांतमें ले जाके उनसे कहा. देखो हम यिरूशलीम- १८
को जाते हैं और मनुष्यका पुत्र प्रधान याजकों और
अध्यापकोंके हाथ पकड़वाया जायगा और वे उसको
बधके योग्य ठहरावेंगे. और उसको अन्यदेशियोंके हाथ १९

सोंपेंगे कि वे उससे ठट्ठा करें श्रोर कोड़े मारें श्रोर
क्रूशपर घात करें, परन्तु वह तीसरे दिन जी उठेगा।
२०     तब जबदीके पुत्रोंकी माताने अपने पुत्रोंके संग योशु पास
२१ आ प्रणाम कर उससे कुछ मांगा। उसने उससे कहा
तू क्या चाहती है, वह उससे बोली आप यह कहिये
कि आपके राज्यमें मेरे इन दो पुत्रोंमेंसे एक आपकी
२२ दहिनी श्रोर श्रोर दूसरा बाईं श्रोर बैठे। योशुने उत्तर
दिया तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो, जिस कटोरेसे
मैं पीनेपर हूं क्या तुम उससे पी सकते हो श्रोर जो डूब
मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो, उन्होंने उससे
२३ कहा हम सकते हैं। उसने उनसे कहा तुम मेरे कटोरेसे
तो पीश्रोगे श्रोर जो डूब मैं लेता हूं उसे लेश्रोगे परन्तु
जिन्होंके लिये मेरे पितासे तैयार किया गया है उन्हें
छोड़ श्रोर किसीको अपनी दहिनी श्रोर अपनी बाईं
श्रोर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है।
२४     यह सुनके दसों शिष्य उन दोनों भाइयोंपर रिसिआये।
२५ योशुने उनको अपने पास बुलाके कहा तुम जानते हो
कि अन्यदेशियोंके अध्यक्ष लोग उन्होंपर प्रभुता करते हैं
२६ श्रोर जो बड़े हैं सो उन्होंपर अधिकार रखते हैं। परन्तु
तुम्होंमें ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्होंमें बड़ा हुआ
२७ चाहे सो तुम्हारा सेवक होवे। श्रोर जो कोई तुम्होंमें
२८ प्रधान हुआ चाहे सो तुम्हारा दास होवे। इसी रीतिसे
मनुष्यका पुत्र सेवा करवानेको नहीं परन्तु सेवा करनेको
श्रोर बहुतोंके उद्धारके दाममें अपना प्राण देनेको
आया है।

जब वे यिरीहो नगरसे निकलते थे तब बहुत लोग २९
यीशुके पीछे हो लिये। और देखो दो अंधे जो मार्गकी ३०
ओर बैठे थे यह सुनके कि यीशु जाता है पुकारके बोले हे
प्रभु दाऊदके सन्तान हमपर दया कीजिये। लोगोंने ३१
उन्हें डांटा कि वे चुप रहें परन्तु उन्होंने अधिक पुकारा
हे प्रभु दाऊदके सन्तान हमपर दया कीजिये। तब यीशु ३२
खड़ा रहा और उनको बुलाके कहा तुम क्या चाहते हो
कि मैं तुम्हारे लिये करूं। उन्होंने उससे कहा हे प्रभु ३३
हमारी आंखें खुल जायें। यीशुने दया कर उनकी आंखें ३४
छूईं और वे तुरन्त आंखोंसे देखने लगे और उसके पीछे
हो लिये।

## २१ इकईसवां पर्ब्ब।

१ यीशुका यिरूशलीममें जाना। १२ ब्योपारियोंको मन्दिरसे निकालना और आश्चर्य्य कर्म्म वहां करना। १८ गूलरके वृक्षको स्राप देना और बिश्वासके गुणका बखान करना। २३ प्रधान याजकोंको निरुत्तर करना। २८ दो पुत्रोंका दृष्टान्त। ३३ दुष्ट मालियोंका दृष्टान्त।

जब वे यिरूशलीमके निकट आये और जैतून पर्ब्बतके १
समीप बैतफगी गांव पास पहुंचे तब यीशुने दो शिष्योंको
यह कहके भेजा. कि जो गांव तुम्हारे सन्मुख है उसमें २
जाओ और तुम तुरन्त एक गधीको बंधी हुई और उसके
साथ बच्चेको पाओगे उन्हें खोलके मेरे पास लाओ। जो ३
तुमसे कोई कुछ कहे तो कहो कि प्रभुको इनका प्रयोजन
है तब वह तुरन्त उनको भेजेगा। यह सब इसलिये हुआ ४
कि जो बचन भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा
होवे. कि सियोनकी पुत्रीसे कहो देख तेरा राजा नम्र ५

और गदहेपर हां लादूके बच्चेपर बैठा हुआ तेरे पास
६ आता है। सो शिष्योंने जाके जैसा यीशुने उन्हें आज्ञा
७ दिई वैसा किया। और वे उस गदहीको और बच्चेको
लाये और उनपर अपने कपड़े रखके यीशुको उनपर
८ बैठाया। और बहुतेरे लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें
बिछाये और औरोंने वृक्षोंसे डालियां काटके मार्गमें बि-
९ छाईं। और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्होंने पुकारके
कहा दाऊदके सन्तानकी जय॰ धन्य वह जो परमेश्वरके
नामसे आता है॰ सबसे ऊंचे स्थानमें जयजयकार होवे।
१० जब उसने यिरूशलीममें प्रवेश किया तब सारे नगरके
११ निवासी घबराके बोले यह कौन है। लोगोंने कहा यह
गालीलके नासरत नगरका भविष्यद्वक्ता यीशु है।
१२ यीशुने ईश्वरके मन्दिरमें जाके जो लोग मन्दिरमें बेचते
औ मोल लेते थे उन सभोंको निकाल दिया और सर्रा-
फोंके पीढ़ोंको और कपोतोंके बेचनेहारोंकी चौकियोंको
१३ उलट दिया॰ और उनसे कहा लिखा है कि मेरा घर
प्रार्थनाका घर कहावेगा॰ परन्तु तुमने उसे डाकूओंका
१४ खोह बनाया है। तब अन्धे और लंगड़े उस पास मन्दिर-
१५ में आये और उसने उन्हें चंगा किया। जब प्रधान याज-
कों और अध्यापकोंने इन आश्चर्य्य कर्म्मोंको जो उसने
किये और लड़कोंको जो मन्दिरमें दाऊदके सन्तानकी जय
पुकारते थे देखा तब उन्होंने रिसियाके उससे कहा क्या
१६ तू सुनता कि ये क्या कहते हैं। यीशुने उनसे कहा हां॰
क्या तुमने कभी यह बचन नहीं पढ़ा कि बालकों और
दूध पीनेहारे लड़कोंके मुंहसे तूने स्तुति करवाई है।

तब वह उन्हें छोड़के नगरके बाहर बैथनियाको गया और १७
वहां टिका।

भोरको जब वह नगरको फिर जाता था तब उसको १८
भूख लगी। और मार्गमें एक गूलरका वृक्ष देखके वह १९
उस पास आया परन्तु उसमें और कुछ न पाया केवल
पत्ते और उसको कहा तुझमें फिर कभी फल न लगे.
इसपर गूलरका वृक्ष तुरन्त सूख गया। यह देखके शि- २०
ष्योंने अचंभा कर कहा गूलरका वृक्ष क्याही शीघ्र सूख
गया। यीशुने उनको उत्तर दिया कि मैं तुमसे सच कहता २१
हूं जो तुम बिश्वास करो और सन्देह न रखो तो जो इस
गूलरके वृक्षसे किया गया है केवल इतना न करोगे परन्तु
यदि इस पहाड़से कहो कि उठ समुद्रमें गिर पड़ तो
वैसाही होगा। और जो कुछ तुम बिश्वास करके प्रार्थना- २२
में मांगोगे सो पाओगे।

जब वह मन्दिरमें गया और उपदेश करता था तब २३
लोगोंके प्रधान याजकों और प्राचीनोंने उस पास आ कहा
तुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है और यह अधि-
कार किसने तुझको दिया। यीशुने उनको उत्तर दिया २४
कि मैं भी तुमसे एक बात पूछूंगा जो तुम मुझे उसका उत्तर
देओ तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करनेका
कैसा अधिकार है। योहनका डूब देना कहांसे हुआ २५
स्वर्गकी अथवा मनुष्योंकी ओरसे. तब वे आपसमें बिचार
करने लगे कि जो हम कहें स्वर्गकी ओरसे तो वह हमसे
कहेगा फिर तुमने उसका बिश्वास क्यों नहीं किया। और २६
जो हम कहें मनुष्योंकी ओरसे तो हमें लोगोंका डर है

२७ क्योंकि सब लोग योहनको भविष्यद्वक्ता जानते हैं। सो
उन्होंने यीशुको उत्तर दिया कि हम नहीं जानते. तब
उसने उनसे कहा तो मैं भी तुमको नहीं बताता हूं
कि मुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है।
२८ तुम क्या समझते हो. किसी मनुष्यके दो पुत्र थे और
उसने पहिलेके पास आ कहा हे पुत्र आज मेरी दाखकी
२९ बारीमें जाके काम कर। उसने उत्तर दिया मैं नहीं
३० जाऊंगा परन्तु पीछे पछताके गया। फिर उसने दूसरेके
पास आके वैसाही कहा. उसने उत्तर दिया हे प्रभु मैं
३१ जाता हूं परन्तु गया नहीं। इन दोनोंमेंसे किसने पिता-
की इच्छा पूरी किई. वे उससे बोले पहिलेने. यीशुने
उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि कर उगाहनेहारे
और बेश्या तुमसे आगे ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करते हैं।
३२ क्योंकि योहन धर्म्मके मार्गसे तुम्हारे पास आया और
तुमने उसका बिश्वास न किया परन्तु कर उगाहनेहारों
और बेश्याओंने उसका बिश्वास किया और तुम लोग
यह देखके पीछेसे भी नहीं पछताये कि उसका बिश्वास
करते।
३३ एक और दृष्टान्त सुनो. एक गृहस्थ था जिसने दाखकी
बारी लगाई और उसको चहुं ओर बेड़ दिया और
उसमें रसका कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालि-
३४ योंको उसका ठीका दे परदेशको चला गया। जब फलका
समय निकट आया तब उसने अपने दासोंको उसका
३५ फल लेनेको मालियोंके पास भेजा। परन्तु मालियोंने
उसके दासोंको लेके एकको मारा दूसरेको घात किया

और तीसरेको पत्थरवाह किया। फिर उसने पहिले ३६
दासोंसे अधिक दूसरे दासोंको भेजा और उन्होंने उनसे
भी वैसाही किया। सबके पीछे उसने यह कहके अपने ३७
पुत्रको उनके पास भेजा कि वे मेरे पुत्रका आदर करेंगे।
परन्तु मालियोंने उसके पुत्रको देखके आपसमें कहा यह ३८
तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें और उसका
अधिकार ले लेवें। और उन्होंने उसे लेके दाखकी बारीसे ३९
बाहर निकालके मार डाला। इसलिये जब दाखकी ४०
बारीका स्वामी आवेगा तब उन मालियोंसे क्या करेगा।
उन्होंने उससे कहा वह उन बुरे लोगोंको बुरी रीतिसे ४१
नाश करेगा और दाखकी बारीका ठीका दूसरे मालि-
योंको देगा जो फलोंको उनके समयोंमें उसे दिया करेंगे।
यीशुने उनसे कहा क्या तुमने कभी धर्म्मपुस्तकमें यह ४२
बचन नहीं पढ़ा कि जिस पत्थरको थवइयोंने निकम्मा
जाना वही कोनेका सिरा हुआ है. यह परमेश्वरका कार्य्य
है और हमारी दृष्टिमें अद्भुत है। इसलिये मैं तुमसे कहता ४३
हूं कि ईश्वरका राज्य तुमसे ले लिया जायगा और और
लोगोंको दिया जायगा जो उसके फल दिया करेंगे। जो ४४
इस पत्थरपर गिरेगा सो चूर हो जायगा और जिस
किसीपर वह गिरेगा उसको पीस डालेगा। प्रधान याज- ४५
कों और फरीशियोंने उसके दृष्टान्तोंको सुनके जाना कि
वह हमारे विषयमें बोलता है। और उन्होंने उसे ४६
पकड़ने चाहा परन्तु लोगोंसे डरे क्योंकि वे उसको भवि-
ष्यद्वक्ता जानते थे।

---

## २२ बाईसवां पर्व्व।

१ बिवाहके भोजका दृष्टान्त। १५ यीशुका कर देनेके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना। २३ जी उठनेके विषयमें सदूकियोंको निरुत्तर करना। ३४ श्रेष्ठ आज्ञाके विषयमें ब्यवस्थापकको उत्तर देना। ४१ अपनी पदवीके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना।

१ इसपर यीशुने फिर उनसे दृष्टान्तोंमें कहा, स्वर्गके
२ राज्यकी उपमा एक राजासे दिई जाती है जो अपने
३ पुत्रका बिवाह करता था। और उसने अपने दासोंको
भेजा कि नेवतहरियोंको बिवाहके भोजमें बुलावें परन्तु
४ उन्होंने आने न चाहा। फिर उसने दूसरे दासोंको यह
कहके भेजा कि नेवतहरियोंसे कहो देखो मैंने अपना
भोज तैयार किया है और मेरे बैल और मोटे पशु मारे
गये हैं और सब कुछ तैयार है बिवाहके भोजमें आओ।
५ परन्तु नेवतहरियोंने इसका कुछ सोच न किया पर कोई
अपने खेतको और कोई अपने ब्योपारको चले गये।
६ औरोंने उसके दासोंको पकड़के दुर्दशा करके मार डाला।
७ यह सुनके राजाने क्रोध किया और अपनी सेना भेजके
उन हत्यारोंको नाश किया और उनके नगरको फूंक
८ दिया। तब उसने अपने दासोंसे कहा बिवाहका भोज
९ तो तैयार है परन्तु नेवतहरी योग्य नहीं ठहरे। इस-
लिये चौराहोंमें जाके जितने लोग तुम्हें मिलें सभोंको
१० बिवाहके भोजमें बुलाओ। सो उन दासोंने मार्गोंमें जाके
क्या बुरे क्या भले जितने उन्हें मिले सभोंको एकट्ठे किया
११ और बिवाहका स्थान जेवनहरियोंसे भर गया। जब

राजा जेवनहरियोंको देखनेको भीतर आया तब उसने
वहां एक मनुष्यको देखा जो बिवाहीय बस्त्र नहीं पहिने
हुए था। उसने उससे कहा हे मित्र तू यहां बिना बिवा- १२
हीय बस्त्र पहिने क्योंकर भीतर आया. वह निरुत्तर
हुआ। तब राजाने सेवकोंसे कहा इसके हाथ पांव बांधा १३
और उसको ले जाके बाहरके अंधकारमें डाल देओ जहां
रोना औ दांत पीसना होगा। क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं १४
परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।

तब फरीशियोंने जाके आपसमें बिचार किया इसलिये १५
कि यीशुको बातमें फंसावें। सो उन्होंने अपने शिष्योंको १६
हेरोदियोंके संग उस पास यह कहनेको भेजा कि हे गुरु
हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और ईश्वरका मार्ग सत्यता-
से बताते हैं और किसीका खटका नहीं रखते हैं क्योंकि
आप मनुष्योंका मुंह देखके बात नहीं करते हैं। सो १७
हमसे कहिये आप क्या समझते हैं. कैसरको कर देना
उचित है अथवा नहीं। यीशुने उनकी दुष्टता जानके १८
कहा हे कपटियो मेरी परीक्षा क्यों करते हो। करका १९
मुद्रा मुझे दिखाओ. तब वे उस पास एक सूकी लाये।
उसने उनसे कहा यह मूर्त्ति और छाप किसकी है। २०
वे उससे बोले कैसरकी. तब उसने उनसे कहा तो जो २१
कैसरका है सो कैसरको देओ और जो ईश्वरका है सो
ईश्वरको देओ। यह सुनके वे अचंभित हुए और उसको २२
छोड़के चले गये।

उसी दिन सदूकी लोग जो कहते हैं कि मृतकोंका जी २३
उठना नहीं होगा उस पास आये और उससे पूछा.

२४ कि हे गुरु मूसाने कहा यदि कोई मनुष्य निःसन्तान मर
जाय तो उसका भाई उसकी स्त्रीसे बिवाह करे और
२५ अपने भाईके लिये बंश खड़ा करे। सो हमारे यहां सात
भाई थे. पहिले भाईने बिवाह किया और निःसन्तान
मर जानेसे अपनी स्त्रीको अपने भाईके लिये छोड़ा।
२६ दूसरे और तीसरे भाईने भी सातवें भाईतक वैसाही
२७ किया। सबके पीछे स्त्री भी मर गई। सो मृतकोंके जी
२८ उठनेपर वह इन सातोंमेंसे किसकी स्त्री होगी क्योंकि
२९ सभोंने उससे बिवाह किया। यीशुने उनको उत्तर दिया
कि तुम धर्म्मपुस्तक और ईश्वरकी शक्ति न बूझके भूलमें
३० पड़े हो। क्योंकि मृतकोंके जी उठनेपर वे न बिवाह करते
न बिवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्गमें ईश्वरके दूतोंके समान
३१ हैं। मृतकोंके जी उठनेके विषयमें क्या तुमने यह बचन
३२ जो ईश्वरने तुमसे कहा नहीं पढ़ा है. कि मैं इब्राहीमका
ईश्वर और इसहाकका ईश्वर और याकूबका ईश्वर हूं.
३३ ईश्वर मृतकोंका नहीं परन्तु जीवतोंका ईश्वर है। यह
सुनकर लोग उसके उपदेशसे अचंभित हुए।
३४ जब फरीशियोंने सुना कि यीशुने सदूकियोंको निरु-
३५ त्तर किया तब वे एकट्ठे हुए। और उनमेंसे एकने जो
३६ व्यवस्थापक था उसकी परीक्षा करनेको उससे पूछा. हे
३७ गुरु व्यवस्थामें बड़ी आज्ञा कौन है। यीशुने उससे कहा
तू परमेश्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे और अपने
३८ सारे प्राणसे और अपनी सारी बुद्धिसे प्रेम कर। यही
३९ पहिली और बड़ी आज्ञा है। और दूसरी उसके समान
है अर्थात तू अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर।

इन दो आज्ञाओंसे सारी व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओंका ४०
पुस्तक सम्बन्ध रखते हैं।
फरीशियोंके एकट्ठे होते हुए यीशुने उनसे पूछा, ४१
ख्रीष्टके विषयमें तुम क्या समझते हो वह किसका पुत्र ४२
है, वे उससे बोले दाऊदका। उसने उनसे कहा तो दाऊद ४३
क्योंकर आत्माकी शिक्षासे उसको प्रभु कहता है, कि पर- ४४
मेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा जबलों मैं तेरे शत्रुओंको तेरे
चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी ओर
बैठ। यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उसका पुत्र ४५
क्योंकर है। इसके उत्तरमें कोई उससे एक बात नहीं ४६
बोल सका और उस दिनसे किसीको फिर उससे कुछ
पूछनेका साहस न हुआ।

## २३ तेईसवां पर्ब्ब।

१ अध्यापकोंकी शिक्षा और बोलचालके विषयमें यीशुका उपदेश। १३ उसका अध्यापकों और फरीशियोंको उलहना देना। ३४ यिरूशलीमके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी।

तब यीशुने लोगोंसे और अपने शिष्योंसे कहा, १
अध्यापक और फरीशी लोग मूसाके आसनपर बैठे हैं। २
इसलिये जो कुछ वे तुम्हें माननेको कहें सो मानो और ३
पालन करो परन्तु उनके कर्म्मोंके अनुसार मत करो
क्योंकि वे कहते हैं और करते नहीं। वे भारी बोझ बां- ४
धते हैं जिनको उठाना कठिन है और उन्हें मनुष्योंके
कांधोंपर धर देते हैं परन्तु उन्हें अपनी उंगलीसे भी सर-
काने नहीं चाहते हैं। वे मनुष्योंको दिखानेके लिये अपने ५

६ सब कर्म्म करते हैं। वे अपने यन्त्रोंको चौड़े करते हैं और
७ अपने बस्त्रोंके आंचल बढ़ाते हैं। जेवनारोंमें ऊंचे स्थान
और सभाके घरोंमें ऊंचे आसन और बाजारोंमें नम-
स्कार और मनुष्योंसे गुरु गुरु कहलाना उनको प्रिय
८ लगते हैं। परन्तु तुम गुरु मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा
९ एक गुरु है अर्थात ख्रीष्ट और तुम सब भाई हो। और
पृथिवीपर किसीको अपना पिता मत कहो क्योंकि
१० तुम्हारा एक पिता है अर्थात वही जो स्वर्गमें है। और
गुरु भी मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात
११ ख्रीष्ट। जो तुम्होंमें बड़ा हो सो तुम्हारा सेवक होगा।
१२ जो कोई अपनेको ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और
जो कोई अपनेको नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा।
१३ हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम
मनुष्योंपर स्वर्गके राज्यका द्वार मून्दते हो. न आपही
उसमें प्रवेश करते हो और न प्रवेश करनेहारोंको प्रवेश
१४ करने देते हो। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरी-
शियो तुम बिधवाओंके घर खा जाते हो और बहानाके
लिये बड़ी बेरलों प्रार्थना करते हो इसलिये तुम अधिक
१५ दंड पाओगे। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो
तुम एक जनको अपने मतमें लानेको सारे जल औ थल-
में फिरा करते हो और जब वह मतमें आया है तब
१६ उसको अपनेसे दूना नरकके योग्य बनाते हो। हाय
तुम अन्धे अगुवो जो कहते हो यदि कोई मन्दिरकी
किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु यदि कोई मन्दिर-
१७ के सोनेकी किरिया खाय तो ऋणी है। हे मूर्खों और

अन्धो कैान बड़ा है वह सोना अथवा वह मन्दिर जो
सोनेको पवित्र करता है। फिर कहते हो यदि कोई १८
बेदीकी किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु जो चढ़ावा
बेदीपर है यदि कोई उसकी किरिया खाय तो ऋणी
है। हे मूर्खो और अन्धो कैान बड़ा है वह चढ़ावा १९
अथवा वह बेदी जो चढ़ावेको पवित्र करती है। इसलिये २०
जो बेदीकी किरिया खाता है सो उसकी किरिया और
जो कुछ उसपर है उसकी भी किरिया खाता है। और २१
जो मन्दिरकी किरिया खाता है सो उसकी किरिया और
जो उसमें बास करता है उसकी भी किरिया खाता है।
और जो स्वर्गकी किरिया खाता है सो ईश्वरके सिंहासन- २२
की किरिया और जो उसपर बैठा है उसकी भी किरिया
खाता है। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो २३
तुम पोदीने और सोए और जीरेका दसवां अंश देते हो
परन्तु तुमने ब्यवस्थाकी भारी बातोंको अर्थात न्याय और
दया और बिश्वासको छोड़ दिया है. इन्हें करना और
उन्हें न छोड़ना उचित था। हे अन्धे अगुवो जो मच्छरको २४
छान डालते हो और ऊंटको निगलते हो। हाय तुम २५
कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम कटोरे और थालको
बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर और
अन्यायसे भरे हैं। हे अन्धे फरीशी पहिले कटोरे और २६
थालके भीतर शुद्ध कर कि वे बाहर भी शुद्ध होवें। हाय २७
तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम चूना फेरी
हुई कबरोंके समान हो जो बाहरसे सुन्दर दिखाई देती
हैं परन्तु भीतर म्रतकोंकी हड्डियोंसे और सब प्रकारकी

२८ मलिनतासे भरी हैं। इसी रीतिसे तुम भी बाहरसे
मनुष्योंको धर्म्मी दिखाई देते हो परन्तु भीतर कपट और
२९ अधर्म्मसे भरे हो। हाय तुम कपटी अध्यापको और
फरीशियो तुम भविष्यद्वक्ताओंकी कबरें बनाते हो और
३० धर्म्मियोंकी कबरें संवारते हो, और कहते हो यदि हम
अपने पितरोंके दिनोंमें होते तो भविष्यद्वक्ताओंका लोहू
३१ बहानेमें उनके संगी न होते। इससे तुम अपनेपर साक्षी
३२ देते हो कि तुम भविष्यद्वक्ताओंके घातकोंके सन्तान हो। सो
३३ तुम अपने पितरोंका नपुआ भरो। हे सांपो हे सर्प्पोंके
वंश तुम नरकके दंडसे क्योंकर बचोगे।

३४ इसलिये देखो मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और
बुद्धिमानों और अध्यापकोंको भेजता हूं और तुम उन-
मेंसे कितनोंको मार डालोगे और क्रूशपर चढ़ाओगे और
कितनोंको अपनी सभाओंमें कोड़े मारोगे और नगर
३५ नगर सताओगे, कि धर्म्मी हाबिलके लोहूसे लेके बर-
खियाहके पुत्र जिखरियाहके लोहूतक जिसे तुमने मन्दिर
और वेदीके बीचमें मार डाला जितने धर्म्मियोंका लोहू
३६ पृथिवीपर बहाया जाता है सब तुमपर पड़े। मैं तुमसे
सच कहता हूं यह सब बातें इसी समयके लोगोंपर
३७ पड़ेंगीं। हे यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ता-
ओंको मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं
उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चोंको पंखोंके
नीचे एकट्ठे करती है वैसेही मैंने कितनी बेर तेरे बाल-
कोंको एकट्ठे करनेकी इच्छा किई परन्तु तुमने न चाहा।
३८ देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है।

क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं जबलों तुम न कहोगे धन्य ३९
वह जो परमेश्वरके नामसे आता है तबलों तुम मुझे अबसे
फिर न देखोगे।

## २४ चौबीसवां पर्ब्ब।

१ मन्दिरके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी। ३ उस समयके चिन्ह। ९ शिष्यों-पर उपद्रव होगा। १५ यिहूदी लोग बड़ा कष्ट पावेंगे। २३ झूठे खीष्ट प्रगट होंगे। २९ मनुष्यके पुत्रके आनेका बर्णन। ३२ गूलरके वृक्षका दृष्टान्त। ३६ जलप्रलयसे उस समयकी उपमा। ४२ सचेत रहनेका उपदेश और दासोंका दृष्टान्त।

जब यीशु मन्दिरसे निकलके जाता था तब उसके शिष्य १
लोग उसको मन्दिरकी रचना दिखानेको उस पास
आये। यीशुने उनसे कहा क्या तुम यह सब नहीं देखते २
हो. मैं तुमसे सच कहता हूं यहां पत्थरपर पत्थर भी
न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा।

जब वह जैतून पर्ब्बतपर बैठा था तब शिष्योंने निरालेमें ३
उस पास आ कहा हमोंसे कहिये यह कब होगा और
आपके आनेका और जगतके अन्तका क्या चिन्ह होगा।
यीशुने उनको उत्तर दिया चौकस रहो कि कोई तुम्हें न ४
भरमावे। क्योंकि बहुत लोग मेरे नामसे आके कहेंगे मैं ५
खीष्ट हूं और बहुतोंको भरमावेंगे। तुम लड़ाइयां और ६
लड़ाइयोंकी चर्चा सुनोगे. देखो मत घबराओ क्योंकि इन
सभोंका होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समयमें नहीं
होगा। क्योंकि देश देशके और राज्य राज्यके बिरुद्ध ७
उठेंगे और अनेक स्थानोंमें अकाल और मरियां और
भुईंडोल होंगे। यह सब दुःखोंका आरंभ होगा। ८

९ तब वे तुम्हें पकड़वायेंगे कि क्लेश पावो और तुम्हें मार
डालेंगे और मेरे नामके कारण सब देशोंके लाेग तुमसे बैर
१० करेंगे। तब बहुतेरे ठोकर खायेंगे और एक दूसरेको
११ पकड़वायगा और एक दूसरेसे बैर करेगा। और बहुतसे
१२ झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके बहुतोंको भरमावेंगे। और
१३ अधर्म्मके बढ़नेसे बहुतोंका प्रेम ठंडा हो जायगा। पर
१४ जो अन्तलों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा। और राज्यका
यह सुसमाचार सब देशोंके लोगोंपर साक्षी होनेके लिये
समस्त संसारमें सुनाया जायगा. तब अन्त होगा।

१५ सो जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित बस्तुको जिस-
की बात दानियेल भविष्यद्वक्तासे कही गई पवित्र स्थानमें
१६ खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे). तब जो यिहूदियामें
१७ हों सो पहाड़ोंपर भागें। जो कोठेपर हो सो अपने घर-
१८ मेंसे कुछ लेनेको न उतरे। और जो खेतमें हो सो अपना
१९ बस्त्र लेनेको पीछे न फिरे। उन दिनोंमें हाय हाय गर्भ-
२० वतियां और दूध पिलानेवालियां। परन्तु प्रार्थना करो
कि तुमको जाड़ेमें अथवा बिश्रामवारमें भागना न होवे।
२१ क्योंकि उस समयमें ऐसा महा क्लेश होगा जैसा जगतके
२२ आरंभसे अबतक न हुआ और कभी न होगा। जो वे
दिन घटाये न जाते तो कोई प्राणी न बचता परन्तु चुने
हुए लोगोंके कारण वे दिन घटाये जायेंगे।

२३ तब यदि कोई तुमसे कहे देखो ख्रीष्ट यहां है अथवा
२४ वहां है तो प्रतीति मत करो। क्योंकि झूठे ख्रीष्ट और
झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके ऐसे बड़े चिन्ह और अद्भुत
काम दिखावेंगे कि जो हो सकता तो चुने हुए लोगोंको

भी भरमाते। देखो मैंने आगेसे तुम्हें कह दिया है। २५
इसलिये जो वे तुमसे कहें देखो जंगलमें है तो बाहर मत २६
जाओ अथवा देखो कोठरियोंमें हैं तो प्रतीति मत करो।
क्योंकि जैसे बिजली पूर्ब्बसे निकलती और पश्चिमलों २७
चमकती है वैसाही मनुष्यके पुत्रका आना भी होगा।
जहां कहीं लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे। २८

उन दिनोंके क्लेशके पीछे तुरन्त सूर्य्य अंधियारा हो २९
जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा तारे आकाशसे
गिर पड़ेंगे और आकाशकी सेना डिग जायगी। तब ३०
मनुष्यके पुत्रका चिन्ह आकाशमें दिखाई देगा और तब
पृथिवीके सब कुलोंके लोग छाती पीटेंगे और मनुष्यके
पुत्रको पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्यसे आकाशके मेघोंपर
आते देखेंगे। और वह अपने दूतोंको तुरहीके महा ३१
शब्द सहित भेजेगा और वे आकाशके इस सिवानेसे उस
सिवानेतक चहुं दिशासे उसके चुने हुए लोगोंको एकट्ठे
करेंगे।

गूलरके वृक्षसे दृष्टान्त सीखो. जब उसकी डाली कोमल ३२
हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते हो कि
धूपकाला निकट है। इस रीतिसे जब तुम इन सब ३३
बातोंको देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वारपर
है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलों यह सब बातें ३४
पूरी न हो जायें तबलों इस समयके लोग नहीं जाते
रहेंगे। आकाश औा पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी ३५
बातें कभी न टलेंगीं।

उस दिन और उस घड़ीके विषयमें न कोई मनुष्य ३६

३७ जानता है न स्वर्गके दूत परन्तु केवल मेरा पिता। जैसे
नूहके दिन हुए वैसाही मनुष्यके पुचका आना भी होगा।
३८ जैसे जलप्रलयके आगेके दिनोंमें लोग जिस दिनलों नूह
जहाजपर न चढ़ा उसी दिनलों खाते औ पीते विवाह
३९ करते औ बिवाह देते थे. और जबलों जलप्रलय आके
उन सभोंको ले न गया तबलों उन्हें चेत न हुआ वैसाही
४० मनुष्यके पुचका आना भी होगा। तब दो जन खेतमें
४१ होंगे एक लिया जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा। दो
स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगीं एक लिई जायगी और दूसरी
छोड़ी जायगी।

४२ इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो
४३ तुम्हारा प्रभु किस घड़ी आवेगा। पर यही जानते हो
कि यदि घरका स्वामी जानता चोर किस पहरमें आवेगा
तो वह जागता रहता और अपने घरमें सेंध पड़ने न
४४ देता। इसलिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ीका
अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्यका पुच
४५ आवेगा। वह बिश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है
जिसे उसके स्वामीने अपने परिवारपर प्रधान किया हो
४६ कि समयमें उन्हें भोजन देवे। वह दास धन्य है जिसे
४७ उसका स्वामी आके ऐसा करते पावे। मैं तुमसे सत्य
कहता हूं वह उसे अपनी सब सम्पत्तिपर प्रधान करेगा।
४८ परन्तु जो वह दुष्ट दास अपने मनमें कहे मेरा स्वामी
४९ आनेमें बिलम्ब करता है. और अपने संगी दासोंको
५० मारने और मतवाले लोगोंके संग खाने पीने लगे. तो
जिस दिन वह बाट जोहता न रहे और जिस घड़ीका

वह अनुमान न करे उसीमें उस दासका स्वामी आवे-
गा। और उसको बड़ी ताड़ना देके कपटियोंके संग उसका ५१
अंश देगा जहां रोना औ दांत पीसना होगा।

## २५ पचीसवां पर्व्व।

१ दस कुंवारियोंका दृष्टान्त। १४ तोड़ोंका दृष्टान्त। ३१ न्यायके दिनका बर्णन।

तब स्वर्गके राज्यकी उपमा दस कुंवारियोंसे दिई १
जायगी जो अपनी मशालें लेके दूल्हेसे मिलनेको नि-
कलीं। उन्होंमेंसे पांच सुबुद्धि और पांच निर्बुद्धि थीं। २
जो निर्बुद्धि थीं उन्होंने अपनी मशालोंको ले अपने संग तेल ३
न लिया। परन्तु सुबुद्धियोंने अपनी मशालोंके संग अपने ४
पात्रोंमें तेल लिया। दूल्हेके बिलम्ब करनेसे वे सब ऊंघीं ५
और सो गईं। आधी रातको धूम मची कि देखो दूल्हा ६
आता है उससे मिलनेको निकलो। तब वे सब कुंवा- ७
रियां उठके अपनी मशालोंको सजने लगीं। और निर्बुद्धि- ८
योंने सुबुद्धियोंसे कहा अपने तेलमेंसे कुछ हमको दीजिये
क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। परन्तु सुबुद्धियोंने ९
उत्तर दिया क्या जानें हमारे और तुम्हारे लिये बस न
होय सो अच्छा है कि तुम बेचनेहारोंके पास जाके अपने
लिये मोल लेओ। ज्यों वे मोल लेनेको जाती थीं त्योंही १०
दूल्हा आ पहुंचा और जो तैयार थीं सो उसके संग
बिवाहके घरमें गईं और द्वार मून्दा गया। पीछे दूसरी ११
कुंवारियां भी आके बोलीं हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये
खोलिये। उसने उत्तर दिया कि मैं तुमसे सच कहता हूं १२

१३ मैं तुमको नहीं जानता हूं। इसलिये जागते रहो क्योंकि
तुम न वह दिन न घड़ी जानते हो जिसमें मनुष्यका
पुत्र आवेगा।
१४ क्योंकि वह एक मनुष्यके समान है जिसने परदेशको
जाते हुए अपनेही दासोंको बुलाके उनको अपना धन
१५ सोंपा। उसने एकको पांच तोड़े दूसरेको दो तीसरेको
एक हर एकको उसके सामर्थ्यके अनुसार दिया और
१६ तुरन्त परदेशको चला। तब जिसने पांच तोड़े पाये
उसने जाके उनसे ब्योपार कर पांच तोड़े और कमाये।
१७ इसी रीतिसे जिसने दो पाये उसने भी दो तोड़े और
१८ कमाये। परन्तु जिसने एक तोड़ा पाया उसने जाके मिट्टी-
१९ में खोदके अपने स्वामीके रुपैये छिपा रखे। बहुत दिनोंके
पीछे उन दासोंका स्वामी आया और उनसे लेखा लेने
२० लगा। तब जिसने पांच तोड़े पाये थे उसने पांच तोड़े
और लाके कहा हे प्रभु आपने मुझे पांच तोड़े सोंपे
२१ देखिये मैंने उनसे पांच तोड़े और कमाये हैं। उसके
स्वामीने उससे कहा धन्य हे उत्तम और बिश्वासयोग्य दास
तू थोड़ेमें बिश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुतपर प्रधान करूं-
२२ गा. अपने प्रभुके आनन्दमें प्रवेश कर। जिसने दो तोड़े
पाये थे उसने भी आके कहा हे प्रभु आपने मुझे दो तोड़े
२३ सोंपे देखिये मैंने उनसे दो तोड़े और कमाये हैं। उसके
स्वामीने उससे कहा धन्य हे उत्तम और बिश्वासयोग्य
दास तू थोड़ेमें बिश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुतपर प्रधान
२४ करूंगा. अपने प्रभुके आनन्दमें प्रवेश कर। तब जिसने
एक तोड़ा पाया था उसने आके कहा हे प्रभु मैं आपको

जानता था कि आप कठोर मनुष्य हैं जहां आपने नहीं
बोया वहां लवते हैं और जहां आपने नहीं छींटा वहांसे
एकट्ठा करते हैं। सो मैं डरा और जाके आपका तोड़ा २५
मिट्टीमें छिपाया. देखिये अपना ले लीजिये। उसके २६
स्वामीने उसे उत्तर दिया कि हे दुष्ट और आलसी दास
तू जानता था कि जहां मैंने नहीं बोया वहां लवता हूं
और जहां मैंने नहीं छींटा वहांसे एकट्ठा करता हूं। तो २७
तुझे उचित था कि मेरे रुपैये महाजनोंके हाथ सोंपता
तब मैं आके अपना धन ब्याज समेत पाता। इसलिये वह २८
तोड़ा उससे लेओ और जिस पास दस तोड़े हैं उसे देओ।
क्योंकि जो कोई रखता है उसको और दिया जायगा २९
और उसको बहुत होगा परन्तु जो नहीं रखता है उस-
से जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया जायगा। और ३०
उस निकम्मे दासको बाहरके अन्धकारमें डाल देओ जहां
रोना औ दांत पीसना होगा।

जब मनुष्यका पुत्र अपने ऐश्वर्य्य सहित आवेगा और ३१
सब पवित्र दूत उसके साथ तब वह अपने ऐश्वर्य्यके सिं-
हासनपर बैठेगा। और सब देशोंके लोग उसके आगे ३२
एकट्ठे किये जायेंगे और जैसा गड़ेरिया भेड़ोंको बक-
रियोंसे अलग करता है तैसा वह उन्हें एक दूसरेसे अलग
करेगा। और वह भेड़ोंको अपनी दहिनी ओर और ३३
बकरियोंको बाईं ओर खड़ा करेगा। तब राजा उनसे ३४
जो उसकी दहिनी ओर हैं कहेगा हे मेरे पिताके धन्य
लोगो आओ जो राज्य जगतकी उत्पत्तिसे तुम्हारे लिये
तैयार किया गया है उसके अधिकारी होओ. क्योंकि मैं ३५

भूखा था और तुमने मुझे खानेको दिया मैं प्यासा था
और तुमने मुझे पिलाया मैं परदेशी था और तुम मुझे
३६ अपने घरमें लाये. मैं नंगा था और तुमने मुझे पहिराया
मैं रोगी था और तुमने मेरी सुध लिई मैं बन्दीगृहमें था
३७ और तुम मेरे पास आये। तब धर्म्मी लोग उसको उत्तर
देंगे कि हे प्रभु हमने कब आपको भूखा देखा और
३८ खिलाया अथवा प्यासा और पिलाया। हमने कब आप-
को परदेशी देखा और अपने घरमें लाये अथवा नंगा
३९ और पहिराया। और हमने कब आपको रोगी अथवा
४० बन्दीगृहमें देखा और आपके पास गये। तब राजा उन्हें
उत्तर देगा मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुमने मेरे इन
अति छोटे भाइयोंमेंसे एकसे जोई भर किया सो मुझसे
४१ किया। तब वह उनसे जो बाईं ओर हैं कहेगा हे स्रापित
लोगो मेरे पाससे उस अनन्त आगमें जाओ जो शैतान
४२ और उसके दूतोंके लिये तैयार किई गई है. क्योंकि
मैं भूखा था और तुमने मुझे खानेको नहीं दिया मैं
४३ प्यासा था और तुमने मुझे नहीं पिलाया. मैं परदेशी
था और तुम मुझे अपने घरमें नहीं लाये मैं नंगा था
और तुमने मुझे नहीं पहिराया मैं रोगी और बन्दीगृहमें
४४ था और तुमने मेरी सुध न लिई। तब वे भी उत्तर
देंगे कि हे प्रभु हमने कब आपको भूखा वा प्यासा वा
परदेशी वा नंगा वा रोगी वा बन्दीगृहमें देखा और
४५ आपकी सेवा न किई। तब वह उन्हें उत्तर देगा मैं तुमसे
सच कहता हूं कि तुमने इन अति छोटोंमेंसे एकसे जोई
४६ भर नहीं किया सो मुझसे नहीं किया। सो ये लोग

अनन्त दंडमें परन्तु धर्म्मी लोग अनन्त जीवनमें जा रहेंगे।

## २६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ यीशुको बध करनेका परामर्श। ६ एक स्त्रीका उसके सिरपर सुगन्ध तेल ढालना। १४ यिहूदाका बिश्वासघात करना। १७ शिष्योंका निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाना। २० उनके संग यीशुका भोजन करना और यिहूदाके विषयमें भविष्यद्वाक्य कहना। २६ प्रभु भोजका निरूपण। ३१ पितरके यीशुसे मुकर जानेकी भविष्यद्वाणी। ३६ बारीमें यीशुका महा शोक। ४७ उसका पकड़ा जाना। ५७ उसको महायाजकके पास ले जाना और बधके योग्य ठहराके अपमान करना। ६९ पितरका उससे मुकर जाना।

जब यीशु यह सब बातें कह चुका तब अपने शिष्योंसे १
कहा, तुम जानते हो कि दो दिनके पीछे निस्तार २
पर्ब्ब होगा और मनुष्यका पुत्र क्रूशपर चढ़ाये जाने-
को पकड़वाया जायगा। तब लोगोंके प्रधान याजक और ३
अध्यापक और प्राचीन लोग कियाफा नाम महायाजक-
के घरमें एकट्ठे हुए, और आपसमें बिचार किया कि ४
यीशुको छलसे पकड़के मार डालें। परन्तु उन्होंने कहा ५
पर्ब्बमें नहीं न हो कि लोगोंमें हुल्लड़ होवे।
जब यीशु बैथनियामें शिमोन कोढ़ीके घरमें था, ६
तब एक स्त्री उजले पत्थरके पात्रमें बहुत मोलका सुगन्ध तेल ७
लेके उस पास आई और जब वह भोजनपर बैठा था तब
उसके सिरपर ढाला। यह देखके उसके शिष्य रिसिया- ८
के बोले यह क्षय क्यों हुआ। क्योंकि यह सुगन्ध तेल बहुत ९
दाममें बिक सकता और कंगालोंको दिया जा सकता।
यीशुने यह जानके उनसे कहा क्यों स्त्रीको दुःख देते हो, १०

११ उसने अच्छा काम मुझसे किया है। कंगाल लोग तुम्हारे
संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं
१२ रहूंगा। उसने मेरे देहपर यह सुगन्ध तेल जो ढाला है
१३ सो मेरे गाड़े जानेके लिये किया है। मैं तुमसे सत्य कहता
हूं सारे जगतमें जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया
जाय तहां यह भी जो इसने किया है उसके स्मरणके
लिये कहा जायगा।

१४ तब बारह शिष्योंमेंसे यिहूदा इस्करियोती नाम एक
१५ शिष्य प्रधान याजकोंके पास गया. और कहा जो मैं
यीशुको आप लोगोंके हाथ पकड़वाऊं तो आप लोग मुझे
१६ क्या देंगे. उन्होंने उसको तीस रुपैये देनेको ठहराया। सो
वह उसी समयसे उसको पकड़वानेका अवसर ढूंढ़ने लगा।

१७ अखमीरी रोटीके पर्ब्बके पहिले दिन शिष्य लोग यीशु
पास आ उससे बोले आप कहां चाहते हैं कि हम आपके
१८ लिये निस्तार पर्ब्बका भोजन खानेकी तैयारी करें। उसने
कहा नगरमें अमुक मनुष्यके पास जाके उससे कहो गुरु
कहता है कि मेरा समय निकट है मैं अपने शिष्योंके संग
१९ तेरे यहां निस्तार पर्ब्बका भोजन करूंगा। सो शिष्योंने
जैसा यीशुने उन्हें आज्ञा दिई वैसा किया और निस्तार
पर्ब्बका भोजन बनाया।

२० सांझको यीशु बारह शिष्योंके संग भोजनपर बैठा।
२१ जब वे खाते थे तब उसने कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि
२२ तुममेंसे एक मुझे पकड़वायगा। इसपर वे बहुत उदास
हुए और हर एक उससे कहने लगा हे प्रभु वह क्या मैं
२३ हूं। उसने उत्तर दिया कि जो मेरे संग थालीमें हाथ

डालता है सोई मुझे पकड़वायगा। मनुष्यका पुत्र जैसा २४
उसके विषयमें लिखा है वैसाही जाता है परन्तु हाय वह
मनुष्य जिससे मनुष्यका पुत्र पकड़वाया जाता है, जो
उस मनुष्यका जन्म न होता तो उसके लिये भला होता।
तब उसके पकड़वानेहारे यिहूदाने उत्तर दिया कि हे २५
गुरु वह क्या मैं हूं, यीशु उससे बोला तू तो कह चुका।
जब वे खाते थे तब यीशुने रोटी लेके धन्यबाद किया २६
और उसे तोड़के शिष्योंको दिया और कहा लेओ खाओ
यह मेरा देह है। और उसने कटोरा लेके धन्य माना और २७
उनको देके कहा तुम सब इससे पीओ। क्योंकि यह मेरा २८
लोहू अर्थात नये नियमका लोहू है जो बहुतोंके लिये
पापमोचनके निमित्त बहाया जाता है। मैं तुमसे कहता २९
हूं कि जिस दिनलों मैं तुम्हारे संग अपने पिताके राज्यमें
उसे नया न पीऊं उस दिनलों मैं अबसे यह दाख रस
कभी न पीऊंगा। और वे भजन गाके जैतून पर्ब्बतपर गये। ३०
तब यीशुने उनसे कहा तुम सब इसी रात मेरे विषयमें ३१
ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरियेको मारूंगा
और झुंडकी भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं। परन्तु मैं ३२
अपने जी उठनेके पीछे तुम्हारे आगे गालीलको जाऊंगा।
पितरने उसको उत्तर दिया यदि सब आपके विषयमें ३३
ठोकर खावें तौभी मैं कभी ठोकर न खाऊंगा। यीशुने ३४
उससे कहा मैं तुझे सत्य कहता हूं कि इसी रात मुर्गके
बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा। पितरने ३५
उससे कहा जो आपके संग मुझे मरना हो तौभी मैं
आपसे कभी न मुकरूंगा, सब शिष्योंने भी वैसाही कहा।

३६ तब यीशुने शिष्योंके संग गेतशिमनी नाम स्थानमें आके
उनसे कहा जबलों मैं वहां जाके प्रार्थना करूं तबलों तुम
३७ यहां बैठो। और वह पितरको और जबदीके दोनों
पुत्रोंको अपने संग ले गया और शोक करने और बहुत
३८ उदास होने लगा। तब उसने उनसे कहा मेरा मन
यहांलों अति उदास है कि मैं मरनेपर हूं. तुम यहां
३९ ठहरके मेरे संग जागते रहो। और थोड़ा आगे बढ़के
वह मुंहके बल गिरा और प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता
जो हो सके तो यह कटोरा मेरे पाससे टल जाय तौभी
जैसा मैं चाहता हूं वैसा न होय पर जैसा तू चाहता
४० है। तब उसने शिष्योंके पास आ उन्हें सोते पाया और
पितरसे कहा सो तुम मेरे संग एक घड़ी नहीं जाग
४१ सके। जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें
४२ न पड़ो. मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। फिर
उसने दूसरी बेर जाके प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता
जो बिना पीनेसे यह कटोरा मेरे पाससे नहीं टल सकता
४३ है तो तेरी इच्छा पूरी होय। तब उसने आके उन्हें फिर
४४ सोते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींदसे भरी थीं। उनको
छोड़के उसने फिर जाके तीसरी बेर वही बात कहके
४५ प्रार्थना किई। तब उसने अपने शिष्योंके पास आ उनसे
कहा सो तुम सोते रहते और बिश्राम करते हो. देखो
घड़ी आ पहुंची है और मनुष्यका पुत्र पापियोंके हाथमें
४६ पकड़वाया जाता है। उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता
है सो निकट आया है।

४७ वह बोलताही था कि देखो यिहूदा जो बारह शिष्यों-

मेंसे एक था आ पहुंचा और लोगोंके प्रधान याजकों
और प्राचीनोंकी ओरसे बहुत लोग खड्ग और लाठियां
लिये हुए उसके संग। यीशुके पकड़वानेहारेने उन्हें यह ४८
पता दिया था कि जिसको मैं चूमूं वही है उसको पकड़ो।
और वह तुरन्त यीशु पास आके बोला हे गुरु प्रणाम ४९
और उसको चूमा। यीशुने उससे कहा हे मित्र तू किस ५०
लिये आया है. तब उन्होंने आके यीशुपर हाथ डालके
उसे पकड़ा। इसपर देखो यीशुके संगियोंमेंसे एकने हाथ ५१
बढ़ाके अपना खड्ग खींचके महायाजकके दासको मारा
और उसका कान उड़ा दिया। तब यीशुने उससे कहा ५२
अपना खड्ग फिर काठीमें रख क्योंकि जो लोग खड्ग
खींचते हैं सो सब खड्गसे नाश किये जायेंगे। क्या तू ५३
समझता है कि मैं अभी अपने पितासे बिन्ती नहीं कर
सकता हूं और वह मेरे पास स्वर्गदूतोंकी बारह सेना-
ओंसे अधिक पहुंचा न देगा। परन्तु तब धर्म्मपुस्तकमें जो ५४
लिखा है कि ऐसा होना अवश्य है सो क्योंकर पूरा होय।
उसी घड़ी यीशुने लोगोंसे कहा क्या तुम मुझे पकड़नेको ५५
जैसे डाकूपर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो. मैं
मन्दिरमें उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग बैठता
था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा। परन्तु यह सब इस- ५६
लिये हुआ कि भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तककी बातें पूरी
होवें. तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे।

जिन्होंने यीशुको पकड़ा सो उसको कियाफा महाया- ५७
जकके पास ले गये जहां अध्यापक और प्राचीन लोग
एकट्ठे हुए। पितर दूर दूर उसके पीछे महायाजकके ५८

अंगनेलों चला गया और भीतर जाके इसका अन्त देख-
५८ नेको प्यादोंके संग बैठा। प्रधान याजकों और प्राचीनोंने
और न्याइयोंकी सारी सभाने यीशुको घात करवानेके
६० लिये उसपर झूठी साक्षी ढूंढी परन्तु न पाई। बहुतेरे
६१ झूठे साक्षी तो आये तौभी उन्होंने नहीं पाई। अन्तमें
दो झूठे साक्षी आके बोले इसने कहा कि मैं ईश्वरका
मन्दिर ढा सकता और उसे तीन दिनमें फिर बना
६२ सकता हूं। तब महायाजकने खड़ा हो यीशुसे कहा क्या
तू कुछ उत्तर नहीं देता है. ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या
६३ साक्षी देते हैं। परन्तु यीशु चुप रहा इसपर महायाजकने
उससे कहा मैं तुझे जीवते ईश्वरकी किरिया देता हूं
६४ हमोंसे कह तू ईश्वरका पुत्र ख्रीष्ट है कि नहीं। यीशु
उससे बोला तू तो कह चुका और मैं यह भी तुम्होंसे
कहता हूं कि इसके पीछे तुम मनुष्यके पुत्रको सर्व्वशक्ति-
मानकी दहिनी ओर बैठे और आकाशके मेघोंपर आते
६५ देखोगे। तब महायाजकने अपने बस्त्र फाड़के कहा यह
ईश्वरकी निन्दा कर चुका है अब हमें साक्षियोंका और
क्या प्रयोजन. देखो तुमने अभी उसके मुखसे ईश्वरकी
६६ निन्दा सुनी है। तुम क्या बिचार करते हो. उन्होंने
६७ उत्तर दिया वह बधके योग्य है। तब उन्होंने उसके मुंह-
६८ पर थूका और उसे घूसे मारे। औरोंने थपेड़े मारके
कहा हे ख्रीष्ट हमसे भविष्यद्वाणी बोल किसने तुझे मारा।
६९ पितर बाहर अंगनेमें बैठा था और एक दासी उस
७० पास आके बोली तू भी यीशु गालीलीके संग था। उसने
सभोंके साम्हने मुकरके कहा मैं नहीं जानता तू क्या कहती

है। जब वह बाहर डेवढ़ीमें गया तब दूसरी दासीने उसे ७१
देखके जो लोग वहां थे उनसे कहा यह भी यीशु नास-
रीके संग था। उसने किरिया खाके फिर मुकरा कि मैं ७२
उस मनुष्यको नहीं जानता हूं। थोड़ी बेर पीछे जो लोग ७३
वहां खड़े थे उन्होंने पितरके पास आके उससे कहा तू
भी सचमुच उनमेंसे एक है क्योंकि तेरी बोली भी तुझे
प्रगट करती है। तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने ७४
लगा कि मैं उस मनुष्यको नहीं जानता हूं. और तुरन्त
मुर्ग बोला। तब पितरने यीशुका बचन जिसने उससे ७५
कहा था कि मुर्गके बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे
मुकरेगा स्मरण किया और बाहर निकलके बिलक
बिलक रोया।

## २७ सताईसवां पर्व्व।

१ यीशुका पिलातके हाथ सोंपा जाना। ३ यिहूदाका रुपैयोंको फेर देना और अपनेको फांसी देना। ११ पिलातका यीशुको बिचार करना और छोड़नेकी इच्छा करना। २४ उसका यीशुको निर्दोष ठहराना। २६ यीशुका घातकोंके हाथ सोंपा जाना और योद्धाओंसे निन्दित होना। ३३ उसका क्रूशपर चढ़ाया जाना। ३९ उसपर लोगोंका हंसना। ४५ उसका पुकारना और सिरका पीना। ५० उसका प्राण त्यागना और अद्भुत चिन्होंका प्रगट होना। ५५ स्त्रियोंका क्रूशके समीप रहना। ५७ यूसफका यीशुको कबरमें रखना। ६२ कबर-पर पहरुओंका बैठाया जाना।

जब भोर हुआ तब लोगोंके सब प्रधान याजकों और १
प्राचीनोंने आपसमें यीशुके बिरुद्ध बिचार किया कि उसे
घात करवावें। और उन्होंने उसे बांधा और ले जाके २
पन्तिय पिलात अध्यक्षको सोंप दिया।
जब उसके पकड़वानेहारे यिहूदाने देखा कि वह दंडके ३

योग्य ठहराया गया तब वह पछताके उन तीस रुपैयोंको
४ प्रधान याजकों और प्राचीनोंके पास फेर लाया। और
कहा मैंने निर्दाेषी लोहू पकड़वानेमें पाप किया है। वे बोले
५ हमें क्या तूही जान। तब वह उन रुपैयोंको मन्दिरमें
६ फेंकके चला गया और जाके अपनेको फांसी दिई। प्रधान
याजकोंने रुपैये लेके कहा इन्हें मन्दिरके भंडारमें डालना
७ उचित नहीं है क्योंकि यह लोहूका दाम है। सो उन्होंने
आपसमें बिचार कर उन रुपैयोंसे परदेशियोंको गाड़नेके
८ लिये कुम्हारका खेत मोल लिया। इससे वह खेत आज-
९ तक लोहूका खेत कहावता है। तब जो बचन यिरमियाह
भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा हुआ कि उन्होंने वे
तीस रुपैये हां इस्रायेलके सन्तानोंसे उस मुलाये हुएका
१० दाम जिसे उन्होंने मुलाया ले लिया। और जैसे परमेश्वरने
मुझको आज्ञा दिई तैसे उन्हें कुम्हारके खेतके दाममें दिया।
११ यीशु अध्यक्षके आगे खड़ा हुआ और अध्यक्षने उससे
पूछा क्या तू यिहूदियोंका राजा है। यीशुने उससे कहा
१२ आपही तो कहते हैं। जब प्रधान याजक और प्राचीन
लोग उसपर दोष लगाते थे तब उसने कुछ उत्तर नहीं
१३ दिया। तब पिलातने उससे कहा क्या तू नहीं सुनता कि
१४ ये लोग तेरे बिरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं। परन्तु उसने
एक बात भी उसको उत्तर न दिया यहांलों कि अध्यक्षने
१५ बहुत अचंभा किया। उस पर्ब्बमें अध्यक्षकी यह रीति
थी कि एक बन्धुवेको जिसे लोग चाहते थे उन्होंके लिये
१६ छोड़ देता था। उस समयमें उन्होंका एक प्रसिद्ध बन्धुवा
१७ था जिसका नाम बरब्बा था। सो जब वे एकट्ठे हुए तब

पिलातने उनसे कहा तुम किसको चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिये छोड़ देऊं बरब्बाको अथवा यीशुको जो
ख्रीष्ट कहावता है। क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने १८
उसको डाहसे पकड़वाया था। जब वह बिचार आसन- १९
पर बैठा था तब उसकी स्त्रीने उसे कहला भेजा कि आप
उस धर्म्मी मनुष्यसे कुछ काम न रखिये क्योंकि मैंने आज
स्वप्नमें उसके कारण बहुत दुःख पाया है। प्रधान याजकों २०
और प्राचीनोंने लोगोंको समझाया कि वे बरब्बाको मांग
लेवें और यीशुको नाश करवावें। अध्यक्षने उनको उत्तर २१
दिया कि इन दोनोंमेंसे तुम किसको चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिये छोड़ देऊं. वे बोले बरब्बाको। पिलातने २२
उनसे कहा तो मैं यीशुसे जो ख्रीष्ट कहावता है क्या करूं.
सभोंने उससे कहा वह क्रूशपर चढ़ाया जाय। अध्यक्षने २३
कहा क्यों उसने कौनसी बुराई किई है. परन्तु उन्होंने
अधिक पुकारके कहा वह क्रूशपर चढ़ाया जाय।

जब पिलातने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर और २४
भी हुल्लड़ होता है तब उसने जल लेके लोगोंके साम्हने
हाथ धोके कहा मैं इस धर्म्मी मनुष्यके लोहूसे निर्दोष हूं
तुमही जानो। सब लोगोंने उत्तर दिया कि उसका २५
लोहू हमपर और हमारे सन्तानोंपर होवे।

तब उसने बरब्बाको उन्होंके लिये छोड़ दिया और २६
यीशुको कोड़े मारके क्रूशपर चढ़ाये जानेको सौंप दिया।
तब अध्यक्षके योद्धाओंने यीशुको अध्यक्षभवनमें ले जाके २७
सारी पलटन उस पास एकट्ठी किई। और उन्होंने उसका २८
बस्त्र उतारके उसे लाल बागा पहिराया. और कांटों- २९

का मुकुट गून्थके उसके सिरपर रखा और उसके दहिने
हाथमें नरकट दिया और उसके आगे घुटने टेकके यह
कहके उससे ठट्ठा किया कि हे यिहूदियोंके राजा प्रणाम।
३० और उन्होंने उसपर थूका और उस नरकटको ले उसके
३१ सिरपर मारा। जब वे उससे ठट्ठा कर चुके तब उससे वह
बागा उतारके और उसीका बस्त्र उसको पहिराके उसे
३२ क्रूशपर चढ़ानेको ले गये। बाहर आते हुए उन्होंने शिमोन
नाम कुरीनी देशके एक मनुष्यको पाया और उसे बेगार
पकड़ा कि उसका क्रूश ले चले।
३३ जब वे एक स्थानपर जो गलगथा अर्थात खोपड़ीका
३४ स्थान कहावता है पहुंचे, तब उन्होंने सिरकेमें पित्त
मिलाके उसे पीनेको दिया परन्तु उसने चीखके पीने न
३५ चाहा। तब उन्होंने उसको क्रूशपर चढ़ाया और चिट्ठियां
डालके उसके बस्त्र बांट लिये कि जो बचन भविष्यद्वक्ताने
कहा था सो पूरा होवे कि उन्होंने मेरे कपड़े आपसमें
३६ बांट लिये और मेरे बस्त्रपर चिट्ठियां डालीं। तब उन्होंने
३७ वहां बैठके उसका पहरा दिया। और उन्होंने उसका
दोषपत्र उसके सिरसे ऊपर लगाया कि यह यिहूदियोंका
३८ राजा यीशु है। तब दो डाकू एक दहिनी ओर और
दूसरा बाईं ओर उसके संग क्रूशोंपर चढ़ाये गये।
३९ जो लोग उधरसे आते जाते थे उन्होंने अपने सिर हिला-
४० के और यह कहके उसकी निन्दा किई, कि हे मन्दिरके
ढानेहारे और तीन दिनमें बनानेहारे अपनेको बचा, जो
४१ तू ईश्वरका पुत्र है तो क्रूशपरसे उतर आ। इसी रीतिसे
प्रधान याजकोंने भी अध्यापकों और प्राचीनोंके संग ठट्ठा

कर कहा. उसने औरोंको बचाया अपनेको बचा नहीं ४२
सकता है. जो वह इस्रायेलका राजा है तो क्रूशपरसे
अब उतर आवे और हम उसका बिश्वास करेंगे। वह ४३
ईश्वरपर भरोसा रखता है. यदि ईश्वर उसे चाहता
है तो उसको अब बचावे क्योंकि उसने कहा मैं ईश्वरका
पुत्र हूं। जो डाकू उसके संग क्रूशोंपर चढ़ाये गये उन्होंने ४४
भी इसी रीतिसे उसकी निन्दा किई।

दो पहरसे तीसरे पहरलों सारे देशमें अंधकार हो ४५
गया। तीसरे पहरके निकट यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके ४६
कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात हे मेरे ईश्वर हे मेरे
ईश्वर तूने क्यों मुझे त्यागा है। जो लोग वहां खड़े थे उन- ४७
मेंसे कितनोंने यह सुनके कहा वह एलियाहको बुलाता
है। उनमेंसे एकने तुरन्त दौड़के इस्पंज लेके सिरकेमें ४८
भिंगाया और नलपर रखके उसे पीनेको दिया। औरोंने ४९
कहा रहने दे हम देखें कि एलियाह उसे बचानेको आता
है कि नहीं।

तब यीशुने फिर बड़े शब्दसे पुकारके प्राण त्यागा। ५०
और देखो मन्दिरका परदा ऊपरसे नीचेलों फटके दो भाग ५१
हो गया और धरती डोली और पर्ब्बत तड़क गये। और ५२
कबरें खुलीं और सोये हुए पवित्र लोगोंकी बहुत लोथें
उठीं। और यीशुके जी उठनेके पीछे वे कबरोंमेंसे निक- ५३
लके पवित्र नगरमें गये और बहुतेरोंको दिखाई दिये।
तब शतपति और वे लोग जो उसके संग यीशुका पहरा ५४
देते थे भुईंडोल और जो कुछ हुआ था सो देखके निपट
डर गये और बोले सचमुच यह ईश्वरका पुत्र था।

५५ वहां बहुतसी स्त्रियां जो यीशुकी सेवा करती हुई
गालीलसे उसके पीछे आई थीं दूरसे देखती रहीं।
५६ उन्हांमें मरियम मगदलीनी और याकूबकी औा योशीकी
माता मरियम और जबदीके पुत्रोंकी माता थीं।
५७ जब सांझ हुई तब यूसफ नाम अरिमथिया नगरका
एक धनवान मनुष्य जो आप भी यीशुका शिष्य था आया।
५८ उसने पिलातके पास जाके यीशुकी लोथ मांगी. तब
५९ पिलातने आज्ञा किई कि लोथ दिई जाय। यूसफने
६० लोथको ले उसे उजली चद्दरमें लपेटा. और उसे
अपनी नई कबरमें रखा जो उसने पत्थरमें खुदवाई थी
और कबरके द्वारपर बड़ा पत्थर लुढ़काके चला गया।
६१ और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां
कबरके साम्हने बैठी थीं।
६२ तैयारीके दिनके पीछे प्रधान याजक और फरीशी लोग
६३ अगले दिन पिलातके पास एकट्ठे हुए. और बोले हे
प्रभु हमें चेत है कि उस भरमानेहारेने अपने जीतेजी
६४ कहा कि तीन दिनके पीछे मैं जी उठूंगा। सो आज्ञा की-
जिये कि तीसरे दिनलों कबरकी रखवाली किई जाय न
हो कि उसके शिष्य रातको आके उसे चुरा ले जावें और
लोगोंसे कहें कि वह मृतकोंमेंसे जी उठा है. तब पिछली
६५ भूल पहिलीसे बुरी होगी। पिलातने उनसे कहा तुम्हारे
पास पहरुए हैं जाओ अपने जानतेभर रखवाली करो।
६६ सो उन्होंने जाके पत्थरपर छाप देके पहरुए बैठाके कबर-
की रखवाली किई।

## २८ अठाईसवां पर्व्व।

१ स्त्रियोंका दूतसे यीशुके जी उठनेका समाचार सुनना। ९ यीशुका उन्हें दर्शन देना। ११ प्रधान याजकोंका पहरुओंसे झूठ बुलवाना। १६ यीशुका एग्यारह शिष्योंको प्रेरण करना।

बिश्रामवारके पीछे अठवारेके पहिले दिन पह फटते १
मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कबरको देखने
आईं। और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ कि परमेश्वरका २
एक दूत स्वर्गसे उतरा और आके कबरके द्वारपरसे पत्थर
लुढ़काके उसपर बैठा। उसका रूप बिजलीसा और ३
उसका बस्त्र पालेकी नाईं उजला था। उसके डरके मारे ४
पहरुए कांप गये और मृतकोंके समान हुए। दूतने स्त्रि- ५
योंको उत्तर दिया कि तुम मत डरो मैं जानता हूं कि
तुम यीशुको जो क्रूशपर घात किया गया ढूंढ़ती हो। वह ६
यहां नहीं है जैसे उसने कहा वैसे जी उठा है. आओ
यह स्थान देखो जहां प्रभु पड़ा था। और शीघ्र जाके ७
उसके शिष्योंसे कहो कि वह मृतकोंमेंसे जी उठा है और
देखो वह तुम्हारे आगे गालीलको जाता है वहां उसे
देखोगे. देखो मैंने तुमसे कहा है। वे शीघ्र निकलके भय ८
और बड़े आनन्दसे उसके शिष्योंको सन्देश देनेको
कबरसे दौड़ीं।

जब वे उसके शिष्योंको सन्देश देनेको जाती थीं देखो ९
यीशु उनसे आ मिला और कहा कल्याण हो और
उन्होंने निकट आ उसके पांव पकड़के उसको प्रणाम
किया। तब यीशुने उनसे कहा मत डरो जाके मेरे भाइयोंसे १०
कह दो कि वे गालीलको जावें और वहां वे मुझे देखेंगे।

११ ज्यों स्त्रियां जाती थीं त्योंही देखो पहरुओंमेंसे कोई
कोई नगरमें आये और सब कुछ जो हुआ था प्रधान
१२ याजकोंसे कह दिया। तब उन्होंने प्राचीनोंके संग एकट्ठे
हो आपसमें बिचार कर योद्धाओंको बहुत रुपैये देके
१३ कहा. तुम यह कहो कि रातको जब हम सोये थे तब
१४ उसके शिष्य आके उसे चुरा ले गये। जो यह बात अध्य-
क्षके सुननेमें आवे तो हम उसको समझाके तुमको बचा
१५ लेंगे। सो उन्होंने रुपैये लेके जैसे सिखाये गये थे वैसाही
किया और यह बात यिहूदियोंमें आजलों चलित है।
१६ एग्यारह शिष्य गालीलमें उस पर्ब्बतपर गये जो यीशुने
१७ उनको बताया था। और उन्होंने उसे देखके उसको
१८ प्रणाम किया पर कितनोंको सन्देह हुआ। यीशुने उन
पास आ उनसे कहा स्वर्गमें और पृथिवीपर समस्त
१९ अधिकार मुझको दिया गया है। इसलिये तुम जाके सब
देशोंके लोगोंको शिष्य करो और उन्हें पिता औ पुत्र
२० औ पवित्र आत्माके नामसे डूब देओ. और उन्हें सब
बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा किई हैं पालन करनेको सिखाओ
और देखो मैं जगतके अन्तलों सब दिन तुम्हारे संग हूं।
आमीन॥

# मार्क रचित सुसमाचार।

## १ पहिला पर्ब्व।

१ योहन डूब देनेहारेका वृत्तान्त और भविष्यद्वाक्य। ९ यीशुका डूब लेना। १२ उसकी परीक्षा। १४ उसका उपदेश करना और कई एक शिष्योंको बुलाना। २१ एक भूतग्रस्त मनुष्यको चंगा करना। २९ पितरकी सासको चंगा करना। ३२ बहुत रोगियोंको चंगा करना। ३५ नगर नगरमें उपदेश करना। ४० एक कोढ़ीको चंगा करना।

ईश्वरके पुत्र यीशु ख्रीष्टके सुसमाचारका आरंभ। १
जैसे भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें लिखा है कि देख मैं २
अपने दूतको तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा
पन्थ बनावेगा। किसीका शब्द हुआ जो जंगलमें पुका- ३
रता है कि परमेश्वरका पन्थ बनाओ उसके राजमार्ग
सीधे करो। योहनने जंगलमें डूब दिया और पापमो- ४
चनके लिये पश्चात्तापके डूबका उपदेश किया। और सारे ५
यिहूदिया देशके और यिरूशलीम नगरके रहनेहारे
उस पास निकल आये और सभोंने अपने अपने पापों-
को मानके यर्दन नदीमें उससे डूब लिया। योहन ६
ऊंटके रोमका बस्त्र और अपनी कटिमें चमड़ेका पटुका
पहिनता था और टिड्डियां औ बन मधु खाया करता
था। उसने प्रचार कर कहा मेरे पीछे वह आता है जो ७
मुझसे अधिक शक्तिमान है मैं उसके जूतोंका बन्ध झुकके
खोलनेके योग्य नहीं हूं। मैंने तुम्हें जलमें डूब दिया है ८
परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मामें डूब देगा।

९ उन दिनोंमें यीशुने गालील देशके नासरत नगरसे
१० आके योहनसे यर्दनमें डूब लिया। और तुरन्त जलसे
ऊपर आते हुए उसने स्वर्गको खुले और आत्माको
११ कपोतकी नाईं अपने ऊपर उतरते देखा। और यह
आकाशबाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति
प्रसन्न हूं।

१२ तब आत्मा तुरन्त उसको जंगलमें ले गया। वहां
१३ जंगलमें चालीस दिन शैतानसे उसकी परीक्षा किई गई
और वह बन पशुओंके संग था और स्वर्गदूतोंने उसकी
सेवा किई।

१४ योहनके बन्दीगृहमें डाले जानेके पीछे यीशुने गालील-
१५ में आके ईश्वरके राज्यका सुसमाचार प्रचार किया. और
कहा समय पूरा हुआ है और ईश्वरका राज्य निकट
आया है पश्चात्ताप करो और सुसमाचारपर बिश्वास
१६ करो। गालीलके समुद्रके तीरपर फिरते हुए उसने
शिमोनको और उसके भाई अन्द्रियको समुद्रमें जाल
१७ डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे। यीशुने उनसे कहा मेरे
१८ पीछे आओ मैं तुमको मनुष्योंके मछुवे बनाऊंगा। वे
१९ तुरन्त अपने जाल छोड़के उसके पीछे हो लिये। वहांसे
थोड़ा आगे बढ़के उसने जबदीके पुत्र याकूब और उसके
भाई योहनको देखा कि वे नावपर जालोंको सुधारते थे।
२० उसने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता जबदीको
मजूरोंके संग नावपर छोड़के उसके पीछे हो लिये।

२१ वे कफर्नाहुम नगरमें आये और यीशुने तुरन्त
२२ बिश्रामके दिन सभाके घरमें जाके उपदेश किया। लोग

उसके उपदेशसे अचंभित हुए क्योंकि उसने अध्यापकों-
की रीतिसे नहीं परन्तु अधिकारीकी रीतिसे उन्हें उप-
देश दिया। उनकी सभाके घरमें एक मनुष्य था जिसे २३
अशुद्ध भूत लगा था। उसने चिल्लाके कहा हे यीशु २४
नासरी रहने दीजिये आपको हमसे क्या काम, क्या
आप हमें नाश करने आये हैं, मैं आपको जानता हूं
आप कौन हैं ईश्वरका पवित्र जन। यीशुने उसको डांटके २५
कहा चुप रह और उसमेंसे निकल आ। तब अशुद्ध भूत २६
उस मनुष्यको मरोड़के और बड़े शब्दसे चिल्लाके उसमेंसे
निकल आया। इसपर सब लोग ऐसे अचंभित हुए कि २७
आपसमें बिचार करके बोले यह क्या है, यह कौनसा
नया उपदेश है कि वह अधिकारीकी रीतिसे अशुद्ध
भूतोंको भी आज्ञा देता है और वे उसकी आज्ञा मानते
हैं। सो उसकी कीर्त्ति तुरन्त गालीलके आसपासके सारे २८
देशमें फैल गई।

सभाके घरसे निकलके वे तुरन्त याकूब और योहनके २९
संग शिमोन और अन्द्रियके घरमें आये। और शिमोन- ३०
की सास ज्वरसे पीड़ित पड़ी थी और उन्होंने तुरन्त
उसके विषयमें उससे कहा। तब उसने उस पास आ ३१
उसका हाथ पकड़के उसे उठाया और ज्वरने तुरन्त
उसको छोड़ा और वह उनकी सेवा करने लगी।

सांझको जब सूर्य्य डूबा तब लोग सब रोगियोंको और ३२
भूतग्रस्तोंको उस पास लाये। सारे नगरके लोग भी द्वार- ३३
पर एकट्ठे हुए। और उसने बहुतोंको जो नाना प्रकारके ३४
रोगोंसे दुःखी थे चंगा किया और बहुत भूतोंको नि-

काला परन्तु भूतोंको बोलने न दिया क्योंकि वे उसे
जानते थे ।
३५ भोरको कुछ रात रहते वह उठके निकला और जंगली
३६ स्थानमें जाके वहां प्रार्थना किई । तब शिमोन और जो
३७ उसके संग थे सो उसके पीछे हो लिये. और उसे पाके
३८ उससे बोले सब लोग आपको ढूंढ़ते हैं । उसने उनसे
कहा आओ हम आसपासके नगरोंमें जायें कि मैं वहां
भी उपदेश करूं क्योंकि मैं इसीलिये बाहर आया हूं ।
३९ सो उसने सारे गालीलमें उनकी सभाओंमें उपदेश किया
और भूतोंको निकाला ।
४० एक कोढ़ीने उस पास आ उससे बिन्ती किई और
उसके आगे घुटने टेकके उससे कहा जो आप चाहें तो
४१ मुझे शुद्ध कर सकते हैं । यीशुको दया आई और उसने
हाथ बढ़ा उसे छूके उससे कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध
४२ हो जा । उसके कहनेपर उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा
४३ और वह शुद्ध हुआ । तब उसने उसे चिताके तुरन्त
४४ बिदा किया. और उससे कहा देख किसीसे कुछ मत
कह परन्तु जा अपने तईं याजकको दिखा और अपने
शुद्ध होनेके विषयमें जो कुछ मूसाने ठहराया उसे
४५ लोगोंपर साक्षी होनेके लिये चढ़ा । परन्तु वह बाहर
जाके इस बातको बहुत सुनाने और प्रचार करने लगा
यहांलों कि यीशु फिर प्रगट होके नगरमें नहीं जा सका
परन्तु बाहर जंगली स्थानोंमें रहा और लोग चहुं ओरसे
उस पास आये ।

## २ दूसरा पर्ब्ब।

१ यीशुका एक अर्द्धांगीको चंगा करना और उसका पाप क्षमा करना। १३ लेवी अर्थात मत्तीको बुलाना और पापियोंके संग भोजन करना। १८ उपवास करनेका ब्योरा बताना। २३ बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना।

कई एक दिनके पीछे यीशुने फिर कफर्नाहुममें प्रवेश १
किया और सुना गया कि वह घरमें है। तुरन्त इतने २
बहुत लोग एकट्ठे हुए कि वे न घरमें न द्वारके आसपास
समा सके और उसने उन्हें बचन सुनाया। और लोग ३
एक अर्द्धांगीको चार मनुष्योंसे उठवाके उस पास ले
आये। परन्तु जब वे भीड़के कारण उसके निकट पहुंच ४
न सके तब जहां वह था वहां उन्होंने छत उधेड़के और
कुछ खोलके उस खाटको जिसपर अर्द्धांगी पड़ा था
लटका दिया। यीशुने उन्होंका बिश्वास देखके उस अर्द्धां- ५
गीसे कहा हे पुत्र तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। और ६
कितने अध्यापक वहां बैठे थे और अपने अपने मनमें
बिचार करते थे, कि यह मनुष्य क्यों इस रीतिसे ईश्वरकी ७
निन्दा करता है, ईश्वरको छोड़ कौन पापोंको क्षमा कर
सकता है। यीशुने तुरन्त अपने आत्मासे जाना कि वे ८
अपने अपने मनमें ऐसा बिचार करते हैं और उनसे
कहा तुम लोग अपने अपने मनमें यह बिचार क्यों करते
हो। कौन बात सहज है अर्द्धांगीसे यह कहना कि तेरे ९
पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ अपनी
खाट उठाके चल। परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्यके १०

पुत्रको पृथिवीपर पाप क्षमा करनेका अधिकार है.
११ (उसने उस अर्द्धांगीसे कहा) मैं तुझसे कहता हूं उठ
१२ अपनी खाट उठाके अपने घरको जा। वह तुरन्त उठके
खाट उठाके सभोंके साम्ने चला गया यहांलों कि वे सब
विस्मित हुए और ईश्वरकी स्तुति करके बोले हमने ऐसा
कभी नहीं देखा।
१३ यीशु फिर बाहर समुद्रके तीरपर गया और सब
लोग उस पास आये और उसने उन्हें उपदेश दिया।
१४ जाते हुए उसने अलफईके पुत्र लेवीको कर उगाहनेके
स्थानमें बैठे देखा और उससे कहा मेरे पीछे आ. तब
१५ वह उठके उसके पीछे हो लिया। जब यीशु उसके
घरमें भोजनपर बैठा तब बहुत कर उगाहनेहारे और
पापी लोग उसके और उसके शिष्योंके संग बैठ गये
१६ क्योंकि बहुत थे और वे उसके पीछे हो लिये। अध्यापकों
और फरीशियोंने उसको कर उगाहनेहारों और पापि-
योंके संग खाते देखके उसके शिष्योंसे कहा यह क्या है
कि वह कर उगाहनेहारों और पापियोंके संग खाता
१७ और पीता है। यीशुने यह सुनके उनसे कहा निरोगि-
योंको वैद्यका प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियोंको. मैं
धर्म्मियोंको नहीं परन्तु पापियोंको पश्चात्तापके लिये
बुलाने आया हूं।
१८ योहनके और फरीशियोंके शिष्य उपवास करते थे
और उन्होंने आ उससे कहा योहनके और फरीशियों-
के शिष्य क्यों उपवास करते हैं परन्तु आपके शिष्य उप-
१९ वास नहीं करते। यीशुने उनसे कहा जब दूल्हा सखाओं-

के संग है तब क्या वे उपवास कर सकते हैं. जबलों दूल्हा
उनके संग रहे तबलों वे उपवास नहीं कर सकते हैं। परन्तु २०
वे दिन आवेंगे जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया जायगा
तब वे उन दिनोंमें उपवास करेंगे। कोई मनुष्य कोरे २१
कपड़ेका टुकड़ा पुराने बस्त्रमें नहीं टांकता है नहीं तो
वह नया टुकड़ा पुराने कपड़ेसे कुछ और भी फाड़ लेता
है और उसका फटा बढ़ जाता है। और कोई मनुष्य २२
नया दाख रस पुराने कुप्पोंमें नहीं भरता है नहीं तो
नया दाख रस कुप्पोंको फाड़ता है और दाख रस बह
जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नया दाख रस
नये कुप्पोंमें भरा चाहिये।

बिश्रामके दिन यीशु खेतोंमें होके जाता था और २३
उसके शिष्य जाते हुए बालें तोड़ने लगे। तब फरीशियोंने २४
उससे कहा देखिये बिश्रामके दिनमें जो काम उचित
नहीं है सो ये लोग क्यों करते हैं। उसने उनसे कहा क्या २५
तुमने कभी नहीं पढ़ा कि जब दाऊदको प्रयोजन था
और वह और उसके संगी लोग भूखे हुए तब उसने क्या
किया। उसने क्योंकर अबियाथर महायाजकके समयमें २६
ईश्वरके घरमें जाके भेंटकी रोटियां खाईं जिन्हें खाना
और किसीको नहीं केवल याजकोंको उचित है और
अपने संगियोंको भी दिईं। और उसने उनसे कहा बि- २७
श्रामवार मनुष्यके लिये हुआ पर मनुष्य बिश्रामवारके
लिये नहीं। इसलिये मनुष्यका पुत्र बिश्रामवारका भी २८
प्रभु है।

## ३ तीसरा पर्व्व ।

१ यीशुका बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना । ६ बहुत रोगियोंको चंगा करना । १३ बारह प्रेरितोंको ठहराना । २० लोगोंके अपबादका खंडन । ३१ यीशुके कुटुंबका बर्णन ।

१ यीशु फिर सभाके घरमें गया और वहां एक मनुष्य
२ था जिसका हाथ सूख गया था । और लोग उसपर दोष
लगानेके लिये उसे ताकते थे कि वह बिश्रामके दिनमें
३ इसको चंगा करेगा कि नहीं । उसने सूखे हाथवाले
४ मनुष्यसे कहा बीचमें खड़ा हो । तब उसने उन्होंसे कहा
क्या बिश्रामके दिनोंमें भला करना अथवा बुरा करना
प्राणको बचाना अथवा घात करना उचित है, परन्तु
५ वे चुप रहे । और उसने उनके मनकी कठोरतासे
उदास हो उन्होंपर क्रोधसे चारों ओर दृष्टि किई और
उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ बढ़ा, उसने उसको
बढ़ाया और उसका हाथ फिर दूसरेकी नाईं भला
चंगा हो गया ।

६ तब फरीशियोंने बाहर जाके तुरन्त हेरोदियोंके संग
यीशुके बिरुद्ध आपसमें बिचार किया इसलिये कि उसे
७ नाश करें । यीशु अपने शिष्योंके संग समुद्रके निकट गया
और गालील और यिहूदिया और यिरूशलीम और
इदोमसे और यर्दनके उस पारसे बड़ी भीड़ उसके पीछे
८ हो लिई । सोर और सीदोनके आसपासके लोगोंने भी
जब सुना वह कैसे बड़े काम करता है तब उनमेंकी एक
९ बड़ी भीड़ उस पास आई । उसने अपने शिष्योंसे कहा

भीड़के कारण एक नाव मेरे लिये लगी रहे न हो कि
वे मुझे दबावें। क्योंकि उसने बहुतोंको चंगा किया यहांलों १०
कि जितने रोगी थे उसे छूनेको उसपर गिरे पड़ते थे।
अशुद्ध भूतोंने भी जब उसे देखा तब उसको दंडवत किई ११
और पुकारके बोले आप ईश्वरके पुत्र हैं। और उसने १२
उनको बहुत दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो।

फिर उसने पर्ब्बतपर चढ़के जिन्हें चाहा उन्हें अपने १३
पास बुलाया और वे उस पास गये। तब उसने बारह १४
जनोंको ठहराया कि वे उसके संग रहें॰ और कि वह १५
उन्हें उपदेश करनेको और रोगोंको चंगा करने और
भूतोंको निकालनेका अधिकार रखनेको भेजे॰ अर्थात १६
शिमोनको जिसका नाम उसने पितर रखा॰ और जब- १७
दीके पुत्र याकूब और याकूबके भाई योहनको जिनका
नाम उसने बनेरगश अर्थात गर्जनके पुत्र रखा॰ और १८
अन्द्रिय और फिलिप और बर्थलमई और मत्ती और
थोमाको और अलफईके पुत्र याकूबको और थद्दईको
और शिमोन कानानीको॰ और यिहूदा इस्करियोतीको १९
जिसने उसे पकड़वाया॰ और वे घरमें आये।

तब बहुत लोग फिर एकट्ठे हुए यहांलों कि वे रोटी २०
खाने भी न सके। और उसके कुटुम्ब यह सुनके उसे २१
पकड़नेको निकल आये क्योंकि उन्होंने कहा उसका चित्त
ठिकाने नहीं है। तब अध्यापक लोग जो यिरूशलीमसे २२
आये थे बोले कि उसे बालजिबूल लगा है और कि वह
भूतोंके प्रधानकी सहायतासे भूतोंको निकालता है। उसने २३
उन्हें अपने पास बुलाके दृष्टान्तोंमें उनसे कहा शैतान

२४ क्योंकर शैतानको निकाल सकता है। यदि किसी राज्यमें
२५ फूट पड़ी होय तो वह राज्य नहीं ठहर सकता है। और
यदि किसी घरानेमें फूट पड़ी होय तो वह घराना नहीं
२६ ठहर सकता है। और यदि शैतान अपने बिरोधमें
उठके अलग बिलग हुआ है तो वह नहीं ठहर सकता
२७ है पर उसका अन्त होता है। यदि बलवन्तको कोई
पहिले न बांधे तो उस बलवन्तके घरमें पैठके उसकी
सामग्री लूट नहीं सकता है. परन्तु उसे बांधके उसके
२८ घरको लूटेगा। मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि मनुष्योंके
सन्तानोंके सब पाप और सब निन्दा जिससे वे निन्दा
२९ करें क्षमा किई जायगी। परन्तु जो कोई पवित्र आत्माकी
निन्दा करे सो कभी नहीं क्षमा किया जायगा पर अनन्त
३० दंडके योग्य है। वे जो बोले कि उसे अशुद्ध भूत लगा है
इसोलिये योशुने यह बात कही।
३१ सो उसके भाई और उसकी माता आये और बाहर
३२ खड़े हो उसको बुलवा भेजा। बहुत लोग उसके आसपास
बैठे थे और उन्होंने उससे कहा देखिये आपकी माता
३३ और आपके भाई बाहर आपको ढूंढते हैं। उसने उनको
उत्तर दिया कि मेरी माता अथवा मेरे भाई कौन हैं।
३४ और जो लोग उसके आसपास बैठे थे उनपर चारों
ओर दृष्टि कर उसने कहा देखो मेरी माता और मेरे
३५ भाई। क्योंकि जो कोई ईश्वरकी इच्छापर चले वही मेरा
भाई और मेरी बहिन और माता है।

# ४ चैाथा पर्ब्ब।

१ बीज बोनेहारेका दृष्टान्त। १० दृष्टान्तोंसे उपदेश करनेका कारण।
१३ बोनेहारेके दृष्टान्तका अर्थ। २१ दीपकका दृष्टान्त और बचन सुन-
नेका उपदेश। २६ बीज बढ़नेका दृष्टान्त। ३० राईके दानेका दृष्टान्त।
३३ यीशुका और और दृष्टान्त कहना। ३५ आन्धीको थांभना।

यीशु फिर समुद्रके तीरपर उपदेश करने लगा और १
ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नावपर
चढ़के समुद्रपर बैठा और सब लोग समुद्रके निकट भूमि-
पर रहे। तब उसने उन्हें दृष्टान्तोंमें बहुतसी बातें सिखाईं २
और अपने उपदेशमें उनसे कहा। सुनो देखो एक बोने- ३
हारा बीज बोनेको निकला। बीज बोनेमें कुछ मार्गको ४
ओर गिरा और आकाशके पंछियोंने आके उसे चुग
लिया। कुछ पत्थरैली भूमिपर गिरा जहां उसको बहुत ५
मिट्टी न मिली और बहुत मिट्टी न मिलनेसे वह बेग
उगा। परन्तु सूर्य्य उदय होनेपर वह झुलस गया और ६
जड़ न पकड़नेसे सूख गया। कुछ कांटोंके बीचमें गिरा ७
और कांटोंने बढ़के उसको दबा डाला और उसने फल
न दिया। परन्तु कुछ अच्छी भूमिपर गिरा और फल ८
दिया जो उत्पन्न होके बढ़ता गया और कोई तीस गुणे
कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे फल फला। और उसने ९
उनसे कहा जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

जब वह एकान्तमें था तब जो लोग उसके समीप थे १०
उन्होंने बारह शिष्योंके साथ इस दृष्टान्तका अर्थ उससे
पूछा। उसने उनसे कहा तुमको ईश्वरके राज्यका भेद ११
जाननेका अधिकार दिया गया है परन्तु जो बाहर हैं

१२ उन्होंसे सब बातें दृष्टान्तोंमें होती हैं, इसलिये कि वे
देखते हुए देखें और उन्हें न सूझे और सुनते हुए सुनें
और न बूझें ऐसा न हो कि वे कभी फिर जावें और
उनके पाप क्षमा किये जायें ।
१३ फिर उसने उनसे कहा क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं
१४ समझते हो तो सब दृष्टान्त क्योंकर समझोगे। बोनेहारा
१५ वह है जो बचनको बोता है। मार्गकी ओरके जहां बचन
बोया जाता है वे हैं कि जब वे सुनते हैं तब शैतान तुरन्त
आके जो बचन उनके मनमें बोया गया था उसे छीन
१६ लेता है। वैसेही जिनमें बीज पत्थरैली भूमिपर बोया
जाता है सो वे हैं कि जब बचन सुनते हैं तब तुरन्त आ-
१७ नन्दसे उसको ग्रहण करते हैं। परन्तु उनमें जड़ न
बंधनेसे वे थोड़ी बेर ठहरते हैं तब बचनके कारण क्लेश
१८ अथवा उपद्रव होनेपर तुरन्त ठोकर खाते हैं। जिनमें
बीज कांटोंके बीचमें बोया जाता है सो वे हैं जो बचन
१९ सुनते हैं। पर इस संसारकी चिन्ता और धनकी माया
और और बस्तुओंका लोभ उनमें समाके बचनको दबाते
२० हैं और वह निष्फल होता है। पर जिनमें बीज अच्छी
भूमिपर बोया गया सो वे हैं जो बचन सुनके ग्रहण
करते हैं और फल फलते हैं कोई तीस गुणे कोई साठ
गुणे कोई सौ गुणे ।
२१ और उसने उनसे कहा क्या दीपकको लाते हैं कि
बर्त्तनके नीचे अथवा खाटके नीचे रखा जाय, क्या इस-
२२ लिये नहीं कि दीवटपर रखा जाय। कुछ गुप्त नहीं है
जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ छिपा था परन्तु

इसलिये कि प्रसिद्ध हो जावे। यदि किसीको सुननेके २३
कान हों तो सुने। फिर उसने उनसे कहा सचेत रहो २४
तुम क्या सुनते हो. जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे
तुम्हारे लिये नापा जायगा और तुमको जो सुनते हो
अधिक दिया जायगा। क्योंकि जो कोई रखता है उसको २५
और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उससे जो
कुछ उसके पास है सो भी ले लिया जायगा।

फिर उसने कहा ईश्वरका राज्य ऐसा है जैसा कि २६
मनुष्य भूमिमें बीज बोय. और रात दिन सोय और २७
उठे और वह बीज जन्मे और बढ़े पर किस रीतिसे वह
नहीं जानता है। क्योंकि पृथिवी आपसे आप फल फलती २८
है पहिले अंकुर तब बाल तब बालमें पक्का दाना। परन्तु २९
जब दाना पक चुका है तब वह तुरन्त हंसुआ लगाता है
क्योंकि कटनी आ पहुंची है।

फिर उसने कहा हम ईश्वरके राज्यकी उपमा किससे ३०
दें और किस दृष्टान्तसे उसे बर्णन करें। वह राईके एक ३१
दानेकी नाईं है कि जब भूमिमें बोया जाता तब भूमिमेंके
सब बीजोंसे छोटा है। परन्तु जब बोया जाता तब बढ़ता ३२
और सब साग पातसे बड़ा हो जाता है और उसकी
ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि आकाशके पंछी उसकी
छायामें बसेरा कर सकते हैं।

ऐसे ऐसे बहुत दृष्टान्तोंमें यीशुने लोगोंको जैसा वे सुन ३३
सकते थे वैसा बचन सुनाया। परन्तु बिना दृष्टान्तसे ३४
उसने उनको कुछ न कहा और एकान्तमें उसने अपने
शिष्योंको सब बातोंका अर्थ बताया।

३५ उसी दिन सांझको उसने उनसे कहा कि आओ हम
३६ उस पार चलें। सो उन्होंने लोगोंको बिदा कर उसे
नावपर जैसा था वैसा चढ़ा लिया और कितनी और नावें
३७ भी उसके संग थीं। और बड़ी आंधी उठी और लहरें
३८ नावपर ऐसी लगीं कि वह अब भर जाने लगी। परन्तु
यीशु नावकी पिछली ओर तकिया दिये हुए सोता था
और उन्होंने उसे जगाके उससे कहा हे गुरु क्या आपको
३९ सोच नहीं कि हम नष्ट होते हैं। तब उसने उठके
बयारको डांटा और समुद्रसे कहा चुप रह और थम
जा और बयार थम गई और बड़ा नीवा हो गया।
४० और उसने उनसे कहा तुम क्यों ऐसे डरते हो तुम्हें
४१ बिश्वास क्यों नहीं है। परन्तु वे बहुतही डर गये और
आपसमें बोले यह कौन है कि बयार और समुद्र भी
उसकी आज्ञा मानते हैं।

## ५ पांचवां पर्ब्ब।

१ यीशुका एक मनुष्यमेंसे बहुत भूतोंको निकालना। २१ एक कन्याको जिलाना और एक स्त्रीको चंगा करना।

१ वे समुद्रके उस पार गदेरियोंके देशमें पहुंचे। जब यीशु
२ नावपरसे उतरा तब एक मनुष्य जिसे अशुद्ध भूत लगा था
३ कबरस्थानमेंसे तुरन्त उससे आ मिला। उस मनुष्यका
बासा कबरस्थानमें था और कोई उसे जंजीरोंसे भी बांध
४ नहीं सकता था। क्योंकि वह बहुत बार बेड़ियों और
जंजीरोंसे बांधा गया था और उसने जंजीरें तोड़ डालीं
और बेड़ियां टुकड़े टुकड़े किईं और कोई उसे बशमें नहीं
५ कर सकता था। वह सदा रात दिन पहाड़ों और कब-

रोंमें रहता था और चिल्लाता और अपनेको पत्थरोंसे
काटता था। वह यीशुको दूरसे देखके दौड़ा और उसको ६
प्रणाम किया. और बड़े शब्दसे चिल्लाके कहा हे यीशु ७
सर्व्वप्रधान ईश्वरके पुत्र आपको मुझसे क्या काम. मैं आप-
को ईश्वरकी किरिया देता हूं कि मुझे पीड़ा न दीजिये।
क्योंकि यीशुने उससे कहा हे अशुद्ध भूत इस मनुष्यसे ८
निकल आ। और उसने उससे पूछा तेरा नाम क्या है. ९
उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम सेना है क्योंकि हम
बहुत हैं। और उसने यीशुसे बहुत बिन्ती किई कि हमें १०
इस देशसे बाहर न भेजिये। वहां पहाड़ोंके निकट सूअ- ११
रोंका बड़ा झुंड चरता था। सो सब भूतोंने उससे बिन्ती १२
कर कहा हमें सूअरोंमें भेजिये कि हम उनमें पैठें। यीशुने १३
तुरन्त उन्हें जाने दिया और अशुद्ध भूत निकलके सूअ-
रोंमें पैठे और झुंड जो दो सहस्रके अटकल थे कड़ाड़ेपरसे
समुद्रमें दौड़ गये और समुद्रमें डूब मरे। पर सूअरोंके १४
चरवाहे भागे और नगरमें और गांवोंमें इसका समा-
चार कहा और लोग बाहर निकले कि देखें क्या हुआ है।
और यीशु पास आके वे उस भूतग्रस्तको जिसे भूतोंको १५
सेना लगी थी बैठे और वस्त्र पहिने और सुबुद्धि देखके
डर गये। जिन लोगोंने देखा था उन्होंने उनसे कह दिया १६
कि भूतग्रस्त मनुष्यको और सूअरोंके विषयमें कैसा हुआ
था। तब वे यीशुसे बिन्ती करने लगे कि हमारे सिवा- १७
नोंसे निकल जाइये। जब वह नावपर चढ़ा तब जो १८
मनुष्य आगे भूतग्रस्त था उसने उससे बिन्ती किई कि मैं
आपके संग रहूं। पर यीशुने उसे नहीं रहने दिया १९

परन्तु उससे कहा अपने घरको अपने कुटुम्बोंके पास जाके
उन्होंसे कह दे कि परमेश्वरने तुझपर दया करके तेरे लिये
२० कैसे बड़े काम किये हैं । वह जाके दिकापलि देशमें
प्रचार करने लगा कि यीशुने उसके लिये कैसे बड़े काम
किये थे और सभोंने अचंभा किया ।
२१ जब यीशु नावपर फिर पार उतरा तब बहुत लोग
२२ उस पास एकट्ठे हुए और वह समुद्रके तीरपर था । और
देखो सभाके अध्यक्षोंमेंसे याईर नाम एक अध्यक्ष आया
२३ और उसे देखके उसके पांवों पड़ा. और उससे बहुत
बिन्ती कर कहा मेरी बेटी मरनेपर है आप आके उसपर
२४ हाथ रखिये कि वह चंगी हो जाय तो वह जीयेगी । तब
यीशु उसके संग गया और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो
लिई और उसे दबाती थी ।
२५ और एक स्त्री जिसे बारह बरससे लोहू बहनेका रोग
२६ था. जो बहुत वैद्योंसे बड़ा दुःख पाके अपना सब धन
उठा चुकी थी और कुछ लाभ नहीं पाया परन्तु अधिक
२७ रोगी हुई. तिसने यीशुका चर्चा सुनके उस भीड़में
२८ पीछेसे आ उसके बस्त्रको छूआ । क्योंकि उसने कहा यदि
मैं केवल उसके बस्त्रको छूओं तो चंगी हो जाऊंगी ।
२९ और उसके लोहूका सोता तुरन्त सूख गया और उसने
अपने देहमें जान लिया कि मैं उस रोगसे चंगी हुई हूं ।
३० यीशुने तुरन्त अपनेमें जाना कि मुझमेंसे शक्ति निकली
है और भीड़में पीछे फिरके कहा किसने मेरे बस्त्रको
३१ छूआ । उसके शिष्योंने उससे कहा आप देखते हैं कि
भीड़ आपको दबा रही है और आप कहते हैं किसने

मुझे छूआ। तब जिसने यह काम किया था उसे देखने- ३२
को यीशुने चारों ओर दृष्टि किई। तब वह स्त्री जो उस- ३३
पर हुआ था सो जानके डरती और कांपती हुई आई
और उसे दंडवत कर उससे सच सच सब कुछ कह दिया।
उसने उससे कहा हे पुत्री तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया ३४
है कुशलसे जा और अपने रोगसे चंगी रह।

वह बोलताही था कि लोगोंने सभाके अध्यक्षके घरसे ३५
आ कहा आपकी बेटी मर गई है आप गुरुको और दुःख
क्यों देते हैं। जो बचन कहा जाता था उसको सुनके ३६
यीशुने तुरन्त सभाके अध्यक्षसे कहा मत डर केवल बिश्वास
कर। और उसने पितर और याकूब और याकूबके भाई ३७
योहनको छोड़ और किसीको अपने संग जाने नहीं
दिया। सभाके अध्यक्षके घरपर पहुंचके उसने धूम धाम ३८
अर्थात लोगोंको बहुत रोते और चिल्लाते देखा। उसने ३९
भीतर जाके उनसे कहा क्यों धूम मचाते और रोते हो.
कन्या मरी नहीं पर सोती है। वे उसका उपहास करने ४०
लगे परन्तु उसने सभोंको बाहर किया और कन्याके माता
पिताको और अपने संगियोंको लेके जहां कन्या पड़ी थी
वहां पैठा। और उसने कन्याका हाथ पकड़के उससे कहा ४१
तालिथा कूमी अर्थात हे कन्या मैं तुझसे कहता हूं उठ।
और कन्या तुरन्त उठी और फिरने लगी क्योंकि वह ४२
बारह बरसकी थी. और वे अत्यन्त बिस्मित हुए। पर ४३
उसने उनको दृढ़ आज्ञा दिई कि यह बात कोई न जाने
और कहा कि कन्याको कुछ खानेको दिया जाय।

# ६ छठवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका अपने देशके लोगोंमें अपमान होना। ७ बारह प्रेरितोंको भेजना। १४ योहन डूब देनेहारेको मृत्यु। ३० यीशुका प्रेरितोंका समाचार सुनना और लोगोंको उपदेश देना। ३५ पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना। ४५ समुद्रपर चलना। ५३ गिनेसरतके रोगियोंको चंगा करना।

१ यीशु वहांसे जाके अपने देशमें आया और उसके शिष्य
२ उसके पीछे हो लिये। बिश्रामके दिन वह सभाके घरमें
उपदेश करने लगा और बहुत लोग सुनके अचंभित हो
बोले इसको यह बातें कहांसे हुईं और यह कौनसा
ज्ञान है जो उसको दिया गया है कि ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म
३ भी उसके हाथोंसे किये जाते हैं। यह क्या बढ़ई नहीं है
मरियमका पुत्र और याकूब और योशी और यिहूदा
और शिमोनका भाई और क्या उसकी बहिनें यहां
हमारे पास नहीं हैं. सो उन्होंने उसके विषयमें ठोकर
४ खाई। यीशुने उनसे कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और
अपने कुटुम्ब और अपना घर छोड़के और कहीं निरा-
५ दर नहीं होता है। और वह वहां कोई आश्चर्य्य कर्म्म
नहीं कर सका केवल थोड़े रोगियोंपर हाथ रखके उन्हें
६ चंगा किया। और उसने उनके अबिश्वाससे अचंभा
किया और चहुं ओरके गांवोंमें उपदेश करता फिरा।
७ और वह बारह शिष्योंको अपने पास बुलाके उन्हें दो
दो करके भेजने लगा और उनको अशुद्ध भूतोंपर अधि-
८ कार दिया। और उसने उन्हें आज्ञा दिई कि मार्गके
लिये लाठी छोड़के और कुछ मत लेओ न झोली न रोटी

न पटुकेमें पैसे। परन्तु जूते पहिनो और दो अंगे मत ९
पहिनो। और उसने उनसे कहा जहां कहीं तुम किसी १०
घरमें प्रवेश करो जबलों वहांसे न निकलो तबलों उसी
घरमें रहो। जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें और तुम्हारी ११
न सुनें वहांसे निकलते हुए उनपर साक्षी होनेके लिये
अपने पांवोंके नीचेकी धूल झाड़ डालो. मैं तुमसे सच
कहता हूं कि बिचारके दिनमें उस नगरकी दशासे सदोम
अथवा अमोराकी दशा सहने योग्य होगी। सो उन्होंने १२
निकलके पश्चात्ताप करनेको उपदेश किया. और बहु- १३
तेरे भूतोंको निकाला और बहुत रोगियोंपर तेल मलके
उन्हें चंगा किया।

हेरोद राजाने यीशुकी कीर्त्ति सुनी क्योंकि उसका नाम १४
प्रसिद्ध हुआ और उसने कहा योहन डूब देनेहारा मृत-
कोंमेंसे जी उठा है इसलिये आश्चर्य्य कर्म्म उससे प्रगट
होते हैं। औरोंने कहा यह एलियाह है औरोंने कहा १५
भविष्यद्वक्ता है अथवा भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एकके समान
है। परन्तु हेरोदने सुनके कहा जिस योहनका मैंने सिर १६
कटवाया सोई है वह मृतकोंमेंसे जी उठा है। क्योंकि १७
हेरोदने आप अपने भाई फिलिपकी स्त्री हेरोदियाके
कारण जिससे उसने बिवाह किया था लोगोंको भेजके
योहनको पकड़ा था और उसे बन्दीगृहमें बांधा था।
क्योंकि योहनने हेरोदसे कहा था कि अपने भाईकी १८
स्त्रीको रखना तुझको उचित नहीं है। हेरोदिया भी १९
उससे बैर रखती थी और उसे मार डालने चाहती थी
पर नहीं सकती थी। क्योंकि हेरोद योहनको धर्म्मी २०

और पवित्र पुरुष जानके उससे डरता था और उसकी
रक्षा करता था और उसकी सुनके बहुत बातोंपर चलता
२१ था और प्रसन्नतासे उसकी सुनता था। परन्तु जब
अवकाशका दिन हुआ कि हेरोदने अपने जन्म दिनमें
अपने प्रधानों और सहस्रपतिओं और गालीलके बड़े
२२ लोगोंके लिये बियारी बनाई. और जब हेरोदियाकी
पुत्रीने भीतर आ नाच कर हेरोदको और उसके संग
बैठनेहारोंको प्रसन्न किया तब राजाने कन्यासे कहा जो
कुछ तेरी इच्छा होय सो मुझसे मांग और मैं तुझे देऊं-
२३ गा। और उसने उससे किरिया खाई कि मेरे आधे
२४ राज्यलों जो कुछ तू मुझसे मांगे मैं तुझे देऊंगा। उसने
बाहर जा अपनी मातासे कहा मैं क्या मांगूंगी. वह
२५ बोली योहन डूब देनेहारेका सिर। उसने तुरन्त उता-
वलीसे राजाके पास भीतर आ बिन्ती कर कहा मैं चाहती
हूं कि आप योहन डूब देनेहारेका सिर थालमें अभी
२६ मुझे दीजिये। तब राजा अति उदास हुआ परन्तु उस
किरियाके और अपने संग बैठनेहारोंके कारण उसे
२७ टालने नहीं चाहा। और राजाने तुरन्त पहरुएको भेज-
२८ कर योहनका सिर लानेकी आज्ञा किई। उसने जाके
बन्दीगृहमें उसका सिर काटा और उसका सिर थालमें
लाके कन्याको दिया और कन्याने उसे अपनी मांको
२९ दिया। उसके शिष्य यह सुनके आये और उसकी लोथ-
को उठाके कबरमें रखा।

३० प्रेरितोंने यीशु पास एकट्ठे हो उससे सब कुछ कह दिया
३१ उन्होंने क्या क्या किया और क्या क्या सिखाया था। उसने

उनसे कहा तुम आप एकान्तमें किसी जंगली स्थानमें आके
थोड़ा बिश्राम करो. क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे और
उन्हें खानेको भी अवकाश न मिला। सो वे नावपर ३२
चढ़के जंगली स्थानमें एकान्तमें गये। और लोगोंने उन- ३३
को जाते देखा और बहुतोंने उसे चीन्हा और पैदल सब
नगरोंमेंसे उधर दौड़े और उनके आगे बढ़के उस पास
एकट्ठे हुए। यीशुने निकलके बड़ी भीड़को देखा और ३४
उसको उनपर दया आई क्योंकि वे बिन रखवालेकी
भेड़ोंकी नाईं थे और वह उन्हें बहुतसा उपदेश देने
लगा।

जब अबेर हो गई तब उसके शिष्योंने उस पास आ ३५
कहा यह तो जंगली स्थान है और अबेर हुई है। लोगों- ३६
को बिदा कीजिये कि वे चारों ओरके गांवों और बस्ति-
योंमें जाके अपने लिये रोटी मोल लेवें क्योंकि उनके
पास कुछ खानेको नहीं है। उसने उनको उत्तर दिया ३७
कि तुम उन्हें खानेको देओ. उन्होंने उससे कहा क्या
हम जाके दो सौ सूकियोंकी रोटी मोल लेवें और उन्हें
खानेको देवें। उसने उनसे कहा तुम्हारे पास कितनी ३८
रोटियां हैं जाके देखो. उन्होंने बूझके कहा पांच और दो
मछली। तब उसने सब लोगोंको हरी घासपर पांति ३९
पांति बैठानेकी आज्ञा उन्हें दिई। वे सौ सौ और पचास ४०
पचास करके पांति पांति बैठ गये। और उसने उन पांच ४१
रोटियों और दो मछलियोंको ले स्वर्गकी ओर देखके
धन्यबाद किया और रोटियां तोड़के अपने शिष्योंको दिईं
कि लोगोंके आगे रखें और उन दो मछलियोंको भी

४२ सभोंमें बांट दिया। सो सब खाके तृप्त हुए। और उन्होंने
४३ रोटियोंके टुकड़ोंकी और मछलियोंकी बारह टोकरी
४४ भरी उठाईं। जिन्होंने रोटी खाई सो पांच सहस्र पुरुषों-
के अटकल थे।

४५ तब यीशुने तुरन्त अपने शिष्योंको दृढ़ आज्ञा दिई
कि जबलों मैं लोगोंको बिदा करूं तुम नावपर चढ़के मेरे
४६ आगे उस पार बैतसैदा नगरको जाओ। वह उन्हें बिदा
४७ कर प्रार्थना करनेको पर्ब्बतपर गया। सांझको नाव समु-
४८ द्रके बीचमें थी और यीशु भूमिपर अकेला था। और
उसने शिष्योंको खेवनेमें व्याकुल देखा क्योंकि बयार उनके
सन्मुखकी थी और रातके चौथे पहरके निकट वह समु-
द्रपर चलते हुए उनके पास आया और उनके पाससे
४९ होके निकला चाहता था। पर उन्होंने उसे समुद्रपर
चलते देखके समझा कि प्रेत है और चिल्लाये क्योंकि वे
५० सब उसे देखके घबरा गये। वह तुरन्त उनसे बात करने
५१ लगा और उनसे कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत। तब
वह उन पास नावपर चढ़ा और बयार थम गई और वे
अपने अपने मनमें अत्यन्त बिस्मित और अचंभित हुए।
५२ क्योंकि उन्होंका मन कठोर था इसलिये उन रोटियोंके
आश्चर्य्य कर्म्मसे उन्हें ज्ञान न हुआ।

५३ वे पार उतरके गिनेसरत देशमें पहुंचे और लगान
५४ किया। जब वे नावपरसे उतरे तब लोगोंने तुरन्त यीशु-
५५ को चीन्हा. और आसपासके सारे देशमें दौड़के जहां
सुना कि वह वहां है तहां रोगियोंको खाटोंपर ले जाने
५६ लगे। और जहां जहां उसने बस्तियों अथवा नगरों

अथवा गांवोंमें प्रवेश किया तहां उन्होंने रोगियोंको
बाजारोंमें रखके उससे बिन्ती किई कि वे उसके बस्त्रके
आंचलको भी छूवें और जितनोंने उसे छूआ सब चंगे
हुए।

## ७ सातवां पर्व्व।

१ यीशुका फरीशियोंको उनके व्यवहारोंके विषयमें दपटना। १४ अपवित्रताके हेतुका बर्णन करना। २४ एक अन्यदेशी स्त्रीकी बेटीको चंगा करना। ३१ एक बहिरे और तोतलेको चंगा करना।

तब फरीशी लोग और कितने अध्यापक जो यिरूश- १
लीमसे आये थे यीशु पास एकट्ठे हुए। उन्होंने उसके २
कितने शिष्योंको अशुद्ध अर्थात बिन धोये हाथोंसे रोटी
खाते देखके दोष दिया। क्योंकि फरीशी और सब यिहूदी ३
लोग प्राचीनोंके व्यवहार धारण कर जबलों यत्नसे हाथ
न धोवें तबलों नहीं खाते हैं। और बाजारसे आके ४
जबलों डुबकी न लेवें तबलों नहीं खाते हैं और बहुत और
बातें हैं जो उन्होंने माननेको ग्रहण किई हैं जैसे कटोरों
और बर्त्तनों और थालियों और खाटोंको डुबकी देना।
सो उन फरीशियों और अध्यापकोंने उससे पूछा कि ५
आपके शिष्य लोग क्यों प्राचीनोंके व्यवहारोंपर नहीं चलते
परन्तु बिन धोये हाथोंसे रोटी खाते हैं। उसने उनको ६
उत्तर दिया कि यिशैयाहने तुम कपटियोंके विषयमें
भविष्यद्वाणी अच्छी कही जैसा लिखा है कि ये लोग
होंठोंसे मेरा आदर करते हैं परन्तु उनका मन मुझसे दूर
रहता है। पर वे वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि ७
मनुष्योंकी आज्ञाओंको धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं।

८ क्योंकि तुम ईश्वरकी आज्ञाको छोड़के मनुष्योंके व्यवहार
धारण करते हो जैसे बर्त्तनों और कटोरोंको डुबकी देना।
९ और ऐसे ऐसे बहुत और काम भी करते हो। और उसने
उनसे कहा तुम अपने व्यवहार पालन करनेको ईश्वरकी
१० आज्ञा भली रीतिसे टाल देते हो। क्योंकि मूसाने कहा
अपनी माता और अपने पिताका आदर कर और जो
कोई माता अथवा पिताकी निन्दा करे सो मार डाला
११ जाय। परन्तु तुम कहते हो यदि मनुष्य अपने माता
अथवा पितासे कहे कि जो कुछ तुझको मुझसे लाभ होता
१२ सो कुर्बान अर्थात संकल्प किया गया है तो बस। और
तुम उसको उसकी माता अथवा उसके पिताके लिये और
१३ कुछ करने नहीं देते हो। सो तुम अपने व्यवहारोंसे
जिन्हें तुमने ठहराया है ईश्वरके बचनको उठा देते हो
और ऐसे ऐसे बहुत काम करते हो।
१४ और उसने सब लोगोंको अपने पास बुलाके उनसे
१५ कहा तुम सब मेरी सुनो और बूझो। मनुष्यके बाहरसे
जो उसमें समावे ऐसा कुछ नहीं है जो उसको अपवित्र कर
सकता है परन्तु जो कुछ उसमेंसे निकलता है सोई है
१६ जो मनुष्यको अपवित्र करता है। यदि किसीको सुननेके
१७ कान हों तो सुने। जब वह लोगोंके पाससे घरमें आया
तब उसके शिष्योंने इस दृष्टान्तके विषयमें उससे पूछा।
१८ उसने उनसे कहा तुम भी क्या ऐसे निर्बुद्धि हो। क्या तुम
नहीं बूझते हो कि जो कुछ बाहरसे मनुष्यमें समाता है
१९ सो उसको अपवित्र नहीं कर सकता है। क्योंकि वह
उसके मनमें नहीं परन्तु पेटमें समाता है और संडासमें

गिरता है जिससे सब भोजन शुद्ध होता है। फिर उसने २०
कहा जो मनुष्यमेंसे निकलता है सोई मनुष्यको अपवित्र
करता है। क्योंकि भीतरसे मनुष्योंके मनसे नाना भांतिकी २१
बुरी चिन्ता परस्त्रीगमन व्यभिचार नरहिंसा. चोरी लोभ २२
श्रो दुष्टता और छल लुचपन कुदृष्टि ईश्वरकी निन्दा
अभिमान और अज्ञानता निकलती हैं। यह सब बुरी २३
बातें भीतरसे निकलती हैं और मनुष्यको अपवित्र
करती हैं।

यीशु वहांसे उठके सोर और सीदोनके सिवानोंमें गया २४
और किसी घरमें प्रवेश करके चाहा कि कोई न जाने
परन्तु वह छिप न सका। क्योंकि सुरोफैनीकिया देशकी २५
एक यूनानीय मत माननेवाली स्त्री जिसकी बेटीको अशुद्ध
भूत लगा था उसका चर्चा सुनके आई और उसके पांवों
पड़ी. और उससे बिन्ती किई कि आप मेरी बेटीसे भूत २६
निकालिये। यीशुने उससे कहा लड़कोंको पहिले तृप्त २७
होने दे क्योंकि लड़कोंकी रोटी लेके कुत्तोंके आगे फेंकना
अच्छा नहीं है। स्त्रीने उसको उत्तर दिया कि सच हे प्रभु २८
तौभी कुत्ते मेजके नीचे बालकोंके चूरचार खाते हैं। उसने २९
उससे कहा इस बातके कारण चली जा भूत तेरी बेटीसे
निकल गया है। सो उसने अपने घर जाके भूतको निक- ३०
ले हुए और अपनी बेटीको खाटपर लेटी हुई पाई।

फिर वह सोर और सीदोनके सिवानोंसे निकलके ३१
दिकापलिके सिवानोंके बीचमें होके गालीलके समुद्रके
निकट आया। और लोगोंने एक बहिरे तोतले मनुष्यको ३२
उस पास लाके उससे बिन्ती किई कि आप इसपर हाथ

३३ रखिये। उसने उसको भीड़मेंसे एकान्त ले जाके अपनी
उंगलियां उसके कानोंमें डालीं और थूकके उसकी जीभ
३४ छूई, और स्वर्गकी ओर देखके लंबो सांस भरके उससे
३५ कहा इफ्फातह अर्थात खुल जा। और तुरन्त उसके कान
खुल गये और उसकी जीभका बंधन भी खुल गया और
३६ वह शुद्ध रीतिसे बोलने लगा। तब योशुने उन्हें चिताया
कि किसीसे मत कहो परन्तु जितना उसने उन्हें चिताया
३७ उतना उन्होंने बहुत अधिक प्रचार किया। और वे अत्यन्त
अचंभित हो बोले उसने सब कुछ अच्छा किया है वह
बहिरोंको सुनने और गूंगोंको बोलनेकी शक्ति देता है।

## ८ आठवां पर्ब्ब।

१ यीशुका चार सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना। १० चिन्ह मांगनेहारोंको डांटना। १४ अपने शिष्योंको फरीशियोंकी शिक्षाके विषयमें चिताना। २२ एक अन्धेके नेत्र खोलना। २७ यीशुके विषयमें लोगोंका और शिष्योंका बिचार। ३१ उसका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना और पितरको डांटना। ३४ शिष्य होनेकी विधि।

१ उन दिनोंमें जब बड़ी भीड़ हुई और उनके पास कुछ
खानेको नहीं था तब योशुने अपने शिष्योंको अपने पास
२ बुलाके उनसे कहा, मुझे इन लोगोंपर दया आती है
क्योंकि वे तीन दिनसे मेरे संग रहे हैं और उनके पास
३ कुछ खानेको नहीं है। जो मैं उन्हें भोजन बिना अपने
अपने घर जानेको बिदा करूं तो मार्गमें उनका बल घट
४ जायगा क्योंकि उनमेंसे कोई कोई दूरसे आये हैं। उसके
शिष्योंने उसको उत्तर दिया कि यहां जंगलमें कहांसे
५ कोई इन लोगोंको रोटीसे तृप्त कर सके। उसने उनसे

पूछा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं. उन्होंने कहा सात।
तब उसने लोगोंको भूमिपर बैठनेकी आज्ञा दिई और ६
उन सात रोटियोंको लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने
शिष्योंको दिया कि उनके आगे रखें और शिष्योंने लो-
गोंके आगे रखा। उनके पास थोड़ीसी छोटी मछलियां ७
भी थीं और उसने धन्यबाद कर उन्हें भी लोगोंके आगे
रखनेकी आज्ञा किई। सो वे खाके तृप्त हुए और जो ८
टुकड़े बच रहे उन्होंने उनके सात टोकरे उठाये। जिन्होंने ९
खाया सो चार सहस्र पुरुषोंके अटकल थे और उसने
उनको बिदा किया।

तब वह तुरन्त अपने शिष्योंके संग नावपर चढ़के दल- १०
मनूथा नगरके सिवानोंमें आया। और फरीशी लोग ११
निकल आये और उससे बिबाद करने लगे और उसकी
परीक्षा करनेको उससे आकाशका एक चिन्ह मांगा।
उसने अपने आत्मामें हाय मारके कहा इस समयके लोग १२
क्यों चिन्ह ढूंढ़ते हैं. मैं तुमसे सच कहता हूं कि इस
समयके लोगोंको कोई चिन्ह नहीं दिया जायगा। और १३
वह उन्हें छोड़के नावपर फिर चढ़के उस पार चला गया।

शिष्य लोग रोटी लेना भूल गये और नावपर उनके १४
साथ एक रोटीसे अधिक न थी। और उसने उन्हें १५
चिताया कि देखो फरीशियोंके खमीरसे और हेरोदके
खमीरसे चौकस रहो। वे आपसमें बिचार करने लगे १६
यह इसलिये है कि हमारे पास रोटी नहीं है। यह १७
जानके यीशुने उनसे कहा तुम्हारे पास रोटी न होनेके
कारण तुम क्यों आपसमें बिचार करते हो. क्या तुम

अबलों नहीं बूझते और नहीं समझते हो. क्या तुम्हारा
१८ मन अबलों कठोर है। आंखें रहते हुए क्या नहीं देखते
हो और कान रहते हुए क्या नहीं सुनते हो और क्या
१९ स्मरण नहीं करते हो। जब मैंने पांच सहस्रके लिये
पांच रोटी तोड़ीं तब तुमने टुकड़ोंकी कितनी टोकरियां
२० भरी उठाईं. उन्होंने उससे कहा बारह। और जब चार
सहस्रके लिये सात रोटी तब तुमने टुकड़ोंके कितने टोकरे
२१ भरे उठाये. वे बोले सात। उसने उनसे कहा तुम क्यों
नहीं समझते हो।

२२ तब वह बैतसैदामें आया और लोगोंने एक अन्धेको
२३ उस पास ला उससे बिन्ती किई कि उसको छूवे। वह उस
अन्धेका हाथ पकड़के उसे नगरके बाहर ले गया और
उसके नेत्रोंपर थूकके उसपर हाथ रखके उससे पूछा क्या
२४ तू कुछ देखता है। उसने नेत्र उठाके कहा मैं वृक्षोंकी
२५ नाईं मनुष्योंको फिरते देखता हूं। तब उसने फिर उसके
नेत्रोंपर हाथ रखके उससे नेत्र उठवाये और वह चंगा
२६ हो गया और सभोंको फरछाईसे देखने लगा। और
उसने उसे यह कहके घर भेजा कि नगरमें मत जा और
नगरमें किसीसे मत कह।

२७ यीशु और उसके शिष्य कैसरिया फिलिपीके गांवोंमें
निकल गये और मार्गमें उसने अपने शिष्योंसे पूछा कि
२८ लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं। उन्होंने उत्तर दिया कि
वे आपको योहन डूब देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने
एलियाह कहते हैं और कितने भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एक
२९ कहते हैं। उसने उनसे कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन

हूं. पितरने उसको उत्तर दिया कि आप खीष्ट हैं। तब ३०
उसने उन्हें दृढ़ आज्ञा दिई कि मेरे विषयमें किसीसे
मत कहो।

और वह उन्हें बताने लगा कि मनुष्यके पुचको अवश्य ३१
है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान
याजकों और अध्यापकोंसे तुच्छ किया जाय और मार
डाला जाय और तीन दिनके पीछे जी उठे। उसने यह ३२
बात खोलके कही और पितर उसे लेके उसको डांटने
लगा। उसने मुंह फेरके और अपने शिष्योंपर दृष्टि करके ३३
पितरको डांटा कि हे शैतान मेरे साम्हनेसे दूर हो क्योंकि
तुझे ईश्वरकी बातोंका नहीं परन्तु मनुष्योंकी बातोंका
सोच रहता है।

उसने अपने शिष्योंके संग लोगोंको अपने पास बुलाके ३४
उनसे कहा जो कोई मेरे पीछे आने चाहे सो अपनी
इच्छाको मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे।
क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा ३५
परन्तु जो कोई मेरे और सुसमाचारके लिये अपना
प्राण खोवे सो उसे बचावेगा। यदि मनुष्य सारे जगतको ३६
प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उसको क्या लाभ
होगा। अथवा मनुष्य अपने प्राणको सन्ती क्या देगा। ३७
जो कोई इस समयके व्यभिचारी और पापी लोगोंके ३८
बीचमें मुझसे और मेरी बातोंसे लजावे मनुष्यका पुच भी
जब वह पविच दूतोंके संग अपने पिताके ऐश्वर्य्यमें आ-
वेगा तब उससे लजावेगा।

## ९ नवां पर्व्व ।

१ ईश्वरके राज्यके आनेकी भविष्यद्वाणी । २ यीशुका शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना । ११ एलियाहके आनेका अर्थ उन्हें बताना । १४ एक भूतग्रस्त लड़केको चंगा करना । ३० अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना । ३३ नम्र होनेका उपदेश । ३८ दूसरे उपदेशकको बर्जनेका और ठोकर खानेका निषेध ।

१ यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो
यहां खड़े हैं उनमेंसे कोई कोई हैं कि जबलों ईश्वरका
राज्य पराक्रमसे आया हुआ न देखें तबलों मृत्युका स्वाद
न चीखेंगे ।
२ छः दिनके पीछे यीशु पितर और याकूब और योहन-
को लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्व्वतपर एकान्तमें ले गया और
३ उनके आगे उसका रूप बदल गया । और उसका बस्त्र
चमकने लगा और पालेकी नाईं अति उजला हुआ जैसा
४ कोई धोबी धरतीपर उजला नहीं कर सकता है । और
मूसाके संग एलियाह उनको दिखाई दिया और वे
५ यीशुके संग बात करते थे । इसपर पितरने यीशुसे कहा
हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है, हम तीन डेरे
बनावें एक आपके लिये एक मूसाके लिये और एक एलि-
६ याहके लिये । वह नहीं जानता था कि क्या कहे क्योंकि
७ वे बहुत डरते थे । तब एक मेघने उन्हें छा लिया और
उस मेघसे यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है
८ उसकी सुनो । और उन्होंने अचानक चारों ओर दृष्टि
कर यीशुको छोड़के अपने संग और किसीको न देखा ।
९ जब वे उस पर्व्वतसे उतरते थे तब उसने उनको आज्ञा

दिई कि जबलों मनुष्यका पुच मृतकोंमेंसे नहीं जी उठे
तबलों जो तुमने देखा है सो किसीसे मत कहो। उन्होंने १०
यह बात अपनेहीमें रखके आपसमें बिचार किया कि
मृतकोंमेंसे जी उठनेका अर्थ क्या है।

और उन्होंने उससे पूछा अध्यापक लोग क्यों कहते हैं ११
कि एलियाहको पहिले आना होगा। उसने उनको १२
उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके सब कुछ
सुधारेगा. और मनुष्यके पुचके विषयमें क्योंकर लिखा है
कि वह बहुत दुःख उठावेगा और तुच्छ किया जायगा।
परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि एलियाह भी आ चुका है १३
और जैसा उसके विषयमें लिखा है तैसा उन्होंने उस-
से जो कुछ चाहा सो किया है।

उसने शिष्योंके पास आ बहुत लोगोंको उनकी चारों १४
ओर और अध्यापकोंको उनसे बिबाद करते हुए देखा।
सब लोग उसे देखतेही बिस्मित हुए और उसकी ओर १५
दौड़के उसे प्रणाम किया। उसने अध्यापकोंसे पूछा तुम १६
इनसे किस बातका बिबाद करते हो। भीड़मेंसे एकने १७
उत्तर दिया कि हे गुरु मैं अपने पुचको जिसे गूंगा भूत
लगा है आपके पास लाया हूं। भूत उसे जहां पकड़ता १८
है तहां पटकता है और वह मुंहसे फेन बहाता और
अपने दांत पीसता है और सूख जाता है और मैंने
आपके शिष्योंसे कहा कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके।
यीशुने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी लोगो मैं कबलों १९
तुम्हारे संग रहूंगा और कबलों तुम्हारी सहूंगा. उसको
मेरे पास लाओ। वे उसको उस पास लाये और जब २०

उसने उसे देखा तब भूतने तुरन्त उसको मरोड़ा और
वह भूमिपर गिरा और मुंहसे फेन बहाते हुए लोटने
२१ लगा। यीशुने उसके पितासे पूछा यह उसको कितने
२२ दिनोंसे हुआ. उसने कहा बालकपनसे। भूतने उसे
नाश करनेको बारबार आगमें और पानीमें भी गिराया
है परन्तु जो आप कुछ कर सकें तो हमपर दया करके
२३ हमारा उपकार कीजिये। यीशुने उससे कहा जो तू
बिश्वास कर सके तो बिश्वास करनेहारेके लिये सब कुछ
२४ हो सकता है। तब बालकके पिताने तुरन्त पुकारके रो
रोके कहा हे प्रभु मैं बिश्वास करता हूं मेरे अबिश्वासका
२५ उपकार कीजिये। जब यीशुने देखा कि बहुत लोग एकट्ठे
दौड़े आते हैं तब उसने अशुद्ध भूतको डांटके उससे कहा
हे गूंगे बहिरे भूत मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि उसमेंसे
२६ निकल आ और उसमें फिर कभी मत पैठ। तब भूत
चिल्लाके और बालकको बहुत मरोड़के निकल आया
और बालक मृतकके समान हो गया यहांलों कि बहुतोंने
२७ कहा वह तो मर गया है। परन्तु यीशुने उसका हाथ
२८ पकड़के उसे उठाया और वह खड़ा हुआ। जब यीशु
घरमें आया तब उसके शिष्योंने निरालेमें उससे पूछा
२९ हम उस भूतको क्यों नहीं निकाल सके। उसने उनसे
कहा कि जो इस प्रकारके हैं सो प्रार्थना और उपवास
बिना और किसी उपायसे निकाले नहीं जा सकते हैं।
३० 　वे वहांसे निकलके गालीलमें होके गये और वह नहीं
३१ चाहता था कि कोई जाने। क्योंकि उसने अपने शिष्योंको
उपदेश दे उनसे कहा मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके हाथमें

पकड़वाया जायगा और वे उसको मार डालेंगे और वह
मरके तीसरे दिन जी उठेगा। परन्तु उन्होंने यह बात ३२
नहीं समझी और उससे पूछनेको डरते थे।
वह कफर्नाहुममें आया और घरमें पहुंचके शिष्योंसे ३३
पूछा मार्गमें तुम आपसमें किस बातका बिचार करते
थे। वे चुप रहे क्योंकि मार्गमें उन्होंने आपसमें इसीका ३४
बिचार किया था कि हममेंसे बड़ा कौन है। तब उसने ३५
बैठके बारह शिष्योंको बुलाके उनसे कहा यदि कोई
प्रधान हुआ चाहे तो सभोंसे छोटा और सभोंका सेवक
होगा। और उसने एक बालकको लेके उनके बीचमें ३६
खड़ा किया और उसे गोदीमें ले उनसे कहा, जो कोई ३७
मेरे नामसे ऐसे बालकोंमेंसे एकको ग्रहण करे वह मुझे
ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मुझे
नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेको ग्रहण करता है।
तब योहनने उसको उत्तर दिया कि हे गुरु हमने ३८
किसी मनुष्यको जो हमारे पीछे नहीं आता है आपके
नामसे भूतोंको निकालते देखा और हमने उसे बर्जा
क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं आता है। यीशुने कहा ३९
उसको मत बर्जो क्योंकि कोई नहीं है जो मेरे नामसे
आश्चर्य्य कर्म्म करेगा और शीघ्र मेरी निन्दा कर सकेगा।
जो हमारे बिरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है। जो कोई ४०
मेरे नामसे एक कटोरा पानी तुमको इसलिये पिलावे कि ४१
ख्रीष्टके हो मैं तुमसे सच कहता हूं वह किसी रीतिसे अप-
ना फल न खोवेगा। परन्तु जो कोई उन छोटोंमेंसे जो ४२
मुझपर बिश्वास करते हैं एकको ठोकर खिलावे उसके लिये

भला होता कि चक्कीका पाट उसके गलेमें बांधा जाता
४३ और वह समुद्रमें डाला जाता। जो तेरा हाथ तुझे ठोकर
खिलावे तो उसे काट डाल. टुंडा होके जीवनमें प्रवेश
करना तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए
४४ तू नरकमें अर्थात न बुझनेहारी आगमें जाय. जहां
४५ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। और
जो तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल.
लंगड़ा होके जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला
है कि दो पांव रहते हुए तू नरकमें अर्थात न बुझनेहारी
४६ आगमें डाला जाय. जहां उनका कीड़ा नहीं मरता
४७ और आग नहीं बुझती। और जो तेरी आंख तुझे ठोकर
खिलावे तो उसे निकाल डाल. काना होके ईश्वरके
राज्यमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो
४८ आंखें रहते हुए तू नरककी आगमें डाला जाय. जहां
उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।
४९ क्योंकि हर एक जन आगसे लोणा किया जायगा और
५० हर एक बलि लोणसे लोणा किया जायगा। लोण अच्छा
है परन्तु यदि लोण अलोणा हो जाय तो किससे उसको
स्वादित करोगे. अपनेमें लोण रखो और आपसमें
मिले रहो।

## १० दसवां पर्ब्ब।

१ पत्नीको त्यागनेका निषेध। १३ यीशुका बालकोंको आशीस देना। १७ एक धनवान जवानसे उसकी बातचीत। २३ धनी लोगोंकी दशाका बर्णन। २८ शिष्योंके फलकी प्रतिज्ञा। ३२ यीशुका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना। ३५ दो शिष्योंकी बिन्तीका उत्तर देना। ४१ दीन होनेका उपदेश। ४६ यीशुका एक अंधेके नेत्र खोलना।

यीशु वहांसे उठके यर्दनके उस पारसे देके यिहूदिया- १
के सिवानोंमें आया और बहुत लोग फिर उस पास
एकट्ठे आये और उसने अपनी रीतिपर उन्होंको फिर
उपदेश दिया। तब फरीशियोंने उस पास आ उसकी २
परीक्षा करनेको उससे पूछा क्या अपनी स्त्रीको त्यागना
मनुष्यको उचित है कि नहीं। उसने उनको उत्तर दिया ३
कि मूसाने तुमको क्या आज्ञा दिई। उन्होंने कहा मूसाने ४
त्यागपत्र लिखने और स्त्रीको त्यागने दिया। यीशुने उन्हें ५
उत्तर दिया कि तुम्हारे मनकी कठोरताके कारण उसने
यह आज्ञा तुमको लिख दिई। परन्तु सृष्टिके आरंभसे ६
ईश्वरने नर और नारी करके मनुष्योंको उत्पन्न किया।
इस हेतुसे मनुष्य अपने माता पिताको छोड़के अपनी ७
स्त्रीसे मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे। सो वे ८
आगे दो नहीं पर एक तन हैं। इसलिये जो कुछ ईश्व- ९
रने जोड़ा है उसको मनुष्य अलग न करे। घरमें उसके १०
शिष्योंने फिर इस बातके विषयमें उससे पूछा। उसने ११
उनसे कहा जो कोई अपनी स्त्रीको त्यागके दूसरीसे बि-
वाह करे सो उसके बिरुद्ध परस्त्रीगमन करता है। और १२
यदि स्त्री अपने स्वामीको त्यागके दूसरेसे बिवाह करे तो
वह व्यभिचार करती है।

तब लोग कितने बालकोंको यीशु पास लाये कि वह १३
उन्हें छूवे परन्तु शिष्योंने लानेहारोंको डांटा। यीशुने यह १४
देखके अप्रसन्न हो उनसे कहा बालकोंको मेरे पास आने
दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वरका राज्य ऐसोंका
है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वरके राज्य- १५

को बालककी नाईं ग्रहण न करे वह उसमें प्रवेश करने
१६ न पावेगा। तब उसने उन्हें गोदीमें लेके उनपर हाथ
रखके उन्हें आशीस दिई।
१७ जब वह मार्गमें जाता था तब एक मनुष्य उसकी ओर
दौड़ा और उसके आगे घुटने टेकके उससे पूछा हे उत्तम
गुरु अनन्त जीवनका अधिकारी होनेको मैं क्या करूं।
१८ यीशुने उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई
१९ उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर। तू आज्ञाओंको
जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर
चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे ठगाई मत कर अपने
२० माता पिताका आदर कर। उसने उसको उत्तर दिया
कि हे गुरु इन सभोंको मैंने अपने लड़कपनसे पालन
२१ किया है। यीशुने उसपर दृष्टि कर उसे प्यार किया और
उससे कहा तुझे एक बातकी घटी है. जा जो कुछ तेरा
है सो बेचके कंगालोंको दे और तू स्वर्गमें धन पावेगा
२२ और आ क्रूश उठाके मेरे पीछे हो ले। वह इस बातसे
अप्रसन्न हो उदास चला गया क्योंकि उसको बहुत धन था।
२३ यीशुने चारों ओर दृष्टि कर अपने शिष्योंसे कहा धन-
वानोंको ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा कठिन होगा।
२४ शिष्य लोग उसकी बातोंसे अचंभित हुए परन्तु यीशुने
फिर उनको उत्तर दिया कि हे बालको जो धनपर भरो-
सा रखते हैं उन्होंको ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा
२५ कठिन है। ईश्वरके राज्यमें धनवानके प्रवेश करनेसे
२६ ऊंटका सूईके नाकेमेंसे जाना सहज है। वे अत्यन्त
अचंभित हो आपसमें बोले तब तो किसका त्राण हो

सकता है। यीशुने उनपर दृष्टि कर कहा मनुष्योंसे यह २७
अन्होना है परन्तु ईश्वरसे नहीं क्योंकि ईश्वरसे सब कुछ
हो सकता है।

पितर उससे कहने लगा कि देखिये हम लोग सब कुछ २८
छोड़के आपके पीछे हो लिये हैं। यीशुने उत्तर दिया मैं २९
तुमसे सच कहता हूं कि जिसने मेरे और सुसमाचारके
लिये घर वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा
स्त्री वा लड़कों वा भूमिको त्यागा हो. ऐसा कोई नहीं ३०
है जो अब इस समयमें उपद्रव सहित सौ गुणे घरों और
भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़कों और
भूमिको और परलोकमें अनन्त जीवन न पावेगा। परन्तु ३१
बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं
अगले होंगे।

वे यिरूशलीमको जाते हुए मार्गमें थे और यीशु उनके ३२
आगे आगे चलता था और वे अचंभित हुए और उसके
पीछे चलते हुए डरते थे और वह फिर बारह शिष्यों-
को लेके जो कुछ उसपर होन्हार था सो उनसे कहने
लगा. कि देखो हम यिरूशलीमको जाते हैं और मनु- ३३
ष्यका पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकोंके हाथ पकड़-
वाया जायगा और वे उसको बधके योग्य ठहराके अन्य-
देशियोंके हाथ सौंपेंगे। और वे उससे ठट्ठा करेंगे और ३४
कोड़े मारेंगे और उसपर थूकेंगे और उसे घात करेंगे
और वह तीसरे दिन जी उठेगा।

तब जबदीके पुत्र याकूब और योहनने यीशु पास आ ३५
कहा हे गुरु हम चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगें सो

३६ आप हमारे लिये करें। उसने उनसे कहा तुम क्या
३७ चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं। वे उससे बोले हमें
यह दीजिये कि आपके ऐश्वर्य्यमें हममेंसे एक आपकी
३८ दहिनी ओर और दूसरा आपकी बाईं ओर बैठे। यी-
शुने उनसे कहा तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो.
जिस कटोरेसे मैं पीता हूं क्या तुम उससे पी सकते हो
और जो डूब मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो।
३९ उन्होंने उससे कहा हम सकते हैं. यीशुने उनसे कहा
जिस कटोरेसे मैं पीता हूं उससे तुम तो पीओगे और
४० जो डूब मैं लेता हूं उसे लेओगे। परन्तु जिन्होंके लिये
तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसीको अपनी
दहिनी और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार
नहीं है।

४१ यह सुनके दसों शिष्य याकूब और योहनपर रिसि-
४२ याने लगे। यीशुने उनको अपने पास बुलाके उनसे कहा
तुम जानते हो कि जो अन्यदेशियोंके अध्यक्ष समझे जाते
सो उन्होंपर प्रभुता करते हैं और उनमेंके बड़े लोग
४३ उन्होंपर अधिकार रखते हैं। परन्तु तुम्होंमें ऐसा नहीं
होगा पर जो कोई तुम्होंमें बड़ा हुआ चाहे सो तुम्हारा
४४ सेवक होगा। और जो कोई तुम्हारा प्रधान हुआ चाहे
४५ सो सभोंका दास होगा। क्योंकि मनुष्यका पुत्र भी सेवा
करवानेको नहीं परन्तु सेवा करनेको और बहुतोंके
उद्धारके दाममें अपना प्राण देनेको आया है।

४६ वे यिरीहो नगरमें आये और जब वह और उसके
शिष्य और बहुत लोग यिरीहोसे निकलते थे तब तीम-

ईका पुत्र बर्तीमई एक अंधा मनुष्य मार्गकी ओर बैठा
भीख मांगता था। वह यह सुनके कि यीशु नासरी है ४७
पुकारने और कहने लगा कि हे दाऊदके सन्तान यीशु
मुझपर दया कीजिये। बहुत लोगोंने उसे डांटा कि वह ४८
चुप रहे परन्तु उसने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊदके
सन्तान मुझपर दया कीजिये। तब यीशु खड़ा रहा और ४९
उसे बुलानेको कहा और लोगोंने उस अंधेको बुलाके
उससे कहा ढाढ़स कर उठ वह तुझे बुलाता है। वह ५०
अपना कपड़ा फेंकके उठा और यीशु पास आया। इस- ५१
पर यीशुने उससे कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये
करूं. अंधा उससे बोला हे गुरु मैं अपनी दृष्टि पाऊं।
यीशुने उससे कहा चला जा तेरे बिश्वासने तुझे चंगा ५२
किया है. और वह तुरन्त देखने लगा और मार्गमें
यीशुके पीछे हो लिया।

## ११ एग्यारहवां पर्ब्ब।

१ यीशुका यिरूशलीममें जाना। १२ गूलरके वृक्षको स्राप देना। १५ ब्योपारियोंको मन्दिरसे निकालना। २० बिश्वासके गुणका बखान और क्षमा करनेका उपदेश। २७ यीशुका प्रधान याजकोंको निरुत्तर करना।

जब वे यिरूशलीमके निकट अर्थात जैतून पर्ब्बतके १
समीप बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचे तब
उसने अपने शिष्योंमेंसे दोको यह कहके भेजा. कि जो २
गांव तुम्हारे सन्मुख है उसमें जाओ और उसमें प्रवेश
करतेही तुम एक गधीके बच्चेको जिसपर कभी कोई मनुष्य
नहीं चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ। जो तुम- ३
से कोई कहे तुम यह क्यों करते हो तो कहो कि प्रभुको

इसका प्रयोजन है तब वह उसे तुरन्त यहां भेजेगा।
४ उन्होंने जाके उस बच्चेको दो बाटोंके सिरेपर द्वारके पास
५ बाहर बंधे हुए पाया और उसको खोलने लगे। तब जो
लोग वहां खड़े थे उनमेंसे कितनोंने उनसे कहा तुम क्या
६ करते हो कि बच्चेको खोलते हो। उन्होंने जैसा यीशुने
आज्ञा किई वैसा उनसे कहा तब उन्होंने उन्हें जाने
७ दिया। और उन्होंने बच्चेको यीशु पास लाके उसपर
८ अपने कपड़े डाले और वह उसपर बैठा। और बहुत
लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें बिछाये और औरोंने
९ वृक्षोंसे डालियां काटके मार्गमें बिछाईं। और जो लोग
आगे पीछे चलते थे उन्होंने पुकारके कहा जय जय धन्य
१० वह जो परमेश्वरके नामसे आता है। धन्य हमारे पिता
दाऊदका राज्य जो परमेश्वरके नामसे आता है. सबसे
११ ऊंचे स्थानमें जयजयकार होवे। यीशुने यिरूशलीममें आ
मन्दिरमें प्रवेश किया और जब उसने चारों ओर सब
बस्तुओंपर दृष्टि किई और संध्याकाल आ चुका तब वह
बारह शिष्योंके संग बैथनियाको निकल गया।
१२ दूसरे दिन जब वे बैथनियासे निकलते थे तब उसको
१३ भूख लगी। और वह पत्ते लगे हुए एक गूलरका वृक्ष
दूरसे देखके आया कि क्या जाने उसमें कुछ पावे परन्तु
उस पास आके और कुछ न पाया केवल पत्ते. गूलरके
१४ पकनेका समय नहीं था। इसपर यीशुने उस वृक्षको
कहा कोई मनुष्य फिर कभी तुझसे फल न खावे. और
उसके शिष्योंने यह बात सुनी।
१५ वे यिरूशलीममें आये और यीशु मन्दिरमें जाके जो

लोग मन्दिरमें बेचते ओ मोल लेते थे उन्हें निकालने
लगा और सर्राफोंके पीढ़ोंको और कपोतोंके बेचनेहा-
रोंकी चौकियोंको उलट दिया. और किसीको मन्दिरके १६
बीचसे कोई पात्र ले जाने न दिया। और उसने उपदेश १७
कर उनसे कहा क्या नहीं लिखा है कि मेरा घर सब
देशोंके लोगोंके लिये प्रार्थनाका घर कहावेगा. परन्तु
तुमने उसे डाकूओंका खोह बनाया है। यह सुनके १८
अध्यापकों और प्रधान याजकोंने खोज किया कि उसे
किस रीतिसे नाश करें क्योंकि वे उससे डरते थे इसलिये
कि सब लोग उसके उपदेशसे अचंभित होते थे। जब १९
सांझ हुई तब वह नगरसे बाहर निकला।

भोरको जब वे उधरसे जाते थे तब उन्होंने वह गूलरका २०
वृक्ष जड़से सूखा हुआ देखा। पितरने स्मरण कर यीशुसे २१
कहा हे गुरु देखिये यह गूलरका वृक्ष जिसे आपने स्राप
दिया सूख गया है। यीशुने उनको उत्तर दिया कि ईश्वर- २२
पर बिश्वास रखो। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं जो २३
कोई इस पहाड़से कहे कि उठ समुद्रमें गिर पड़ और
अपने मनमें सन्देह न रखे परन्तु बिश्वास करे कि जो मैं
कहता हूं सो हो जायगा उसके लिये जो कुछ वह कहेगा
सो हो जायगा। इसलिये मैं तुमसे कहता हूं जो कुछ २४
तुम प्रार्थना करके मांगो बिश्वास करो कि हम पावेंगे तो
तुम्हें मिलेगा। और जब तुम प्रार्थना करनेको खड़े हो २५
तब यदि तुम्हारे मनमें किसीकी ओर कुछ होय तो क्षमा
करो इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गबासी पिता भी तुम्हारे
अपराध क्षमा करे। परन्तु जो तुम क्षमा न करो तो २६

तुम्हारा स्वर्गबासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा
न करेगा ।
२७ वे फिर यिरूशलीममें आये और जब यीशु मन्दिरमें
फिरता था तब प्रधान याजक और अध्यापक और प्राचीन
२८ लोग उस पास आये. और उससे बोले तुझे ये काम
करनेका कैसा अधिकार है और ये काम करनेको किसने
२९ तुझको यह अधिकार दिया। यीशुने उनको उत्तर दिया
कि मैं भी तुमसे एक बात पूछूंगा. तुम मुझे उत्तर देओ
तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करनेका कैसा अधि-
३० कार है। योहनका डूब देना क्या स्वर्गकी अथवा मनुष्यों-
३१ की ओरसे हुआ मुझे उत्तर देओ। तब वे आपसमें
बिचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्गकी ओरसे तो वह
३२ कहेगा फिर तुमने उसका बिश्वास क्यों नहीं किया। परन्तु
जो हम कहें मनुष्योंकी ओरसे. तब उन्हें लोगोंका डर
लगा क्योंकि सब लोग योहनको जानते थे कि निश्चय वह
३३ भविष्यद्वक्ता था। सो उन्होंने यीशुको उत्तर दिया कि
हम नहीं जानते. यीशुने उन्हें उत्तर दिया तो मैं भी
तुमको नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करनेका कैसा
अधिकार है।

## १२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ दुष्ट मालियोंका दृष्टान्त। १३ यीशुका कर देनेके विषयमें फरीशियों-
को निरुत्तर करना। १८ जी उठनेके विषयमें सदूकियोंको निरुत्तर
करना। २८ श्रेष्ठ आज्ञाके विषयमें अध्यापकको उत्तर देना। ३५
अपनी पदवीके विषयमें अध्यापकोंको निरुत्तर करना। ३८ अध्याप-
कोंके दोष प्रगट करना। ४१ एक बिधवाके दानकी प्रशंसा।

१ यीशु दृष्टान्तोंमें उनसे कहने लगा कि किसी मनुष्यने

दाखकी बारी लगाई ओर चहुं ओर बेड़ दिया ओर रस-
का कुंड खोदा ओर गढ़ बनाया ओर मालियोंको उसका
ठीका दे परदेशको चला गया। समयमें उसने मालियोंके २
पास एक दासको भेजा कि मालियोंसे दाखकी बारीका कुछ
फल लेवे। परन्तु उन्होंने उसे लेके मारा ओर छूछे हाथ ३
फेर दिया। फिर उसने दूसरे दासको उनके पास भेजा ४
ओर उन्होंनें उसे पत्थरवाह कर उसका सिर फोड़ा ओर
उसे अपमान करके फेर दिया। फिर उसने तीसरेको भेजा ५
ओर उन्होंने उसे मार डाला ओर बहुत ओरोंसे उन्होंनें
वैसाही किया कितनोंको मारा ओर कितनोंको घात किया।
फिर उसको एकही पुत्र था जो उसका प्रिय था सो सबके ६
पीछे उसने यह कहके उसे भी उनके पास भेजा कि वे मेरे
पुत्रका आदर करेंगे। परन्तु उन मालियोंने आपसमें कहा ७
यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें तब अधि-
कार हमारा होगा। ओर उन्होंने उसे लेके मार डाला ८
ओर दाखकी बारीके बाहर फेंक दिया। इसलियें दाखकी ९
बारीका स्वामी क्या करेगा. वह आके उन मालियोंको
नाश करेगा ओर दाखकी बारी दूसरोंके हाथ देगा। क्या १०
तुमनें धर्म्मपुस्तकका यह बचन नहीं पढ़ा है कि जिस पत्थ-
रको थवइयोंने निकम्मा जाना वही कोनेका सिरा हुआ
है. यह परमेश्वरका कार्य्य है ओर हमारी दृष्टिमें अद्भुत ११
है। तब उन्होंने उसे पकड़ने चाहा क्योंकि जानते थे कि १२
उसने हमारे बिरुद्ध यह दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगोंसे
डरे ओर उसे छोड़के चले गये।

तब उन्होंने उसे बातमें फंसानेको कई एक फरीशियों १३

१४ और हेरोदियोंको उस पास भेजा। वे आके उससे बोले
हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और किसीका
खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्योंका मुंह देखके
बात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वरका मार्ग सत्यतासे बताते
हैं. क्या कैसरको कर देना उचित है अथवा नहीं. हम
१५ देवें अथवा न देवें। उसने उनका कपट जानके उनसे
कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो. एक सूकी मेरे पास
१६ लाओ कि मैं देखूं। वे लाये और उसने उनसे कहा यह
मूर्त्ति और छाप किसकी है. वे उससे बोले कैसरकी।
१७ यीशुने उनको उत्तर दिया कि जो कैसरका है सो कैस-
रको देओ और जो ईश्वरका है सो ईश्वरको देओ. तब
वे उससे अचंभित हुए।
१८ सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकोंका जी उठना
१९ नहीं होगा उस पास आये और उससे पूछा. कि हे
गुरु मूसाने हमारे लिये लिखा कि यदि किसीका भाई
मर जाय और स्त्रीको छोड़े और उसको सन्तान न हों
तो उसका भाई उसकी स्त्रीसे बिवाह करे और अपने
२० भाईके लिये बंश खड़ा करे। सो सात भाई थे. पहिला
२१ भाई बिवाह कर निःसन्तान मर गया। तब दूसरे भाईने
उस स्त्रीसे बिवाह किया और मर गया और उसको भी
२२ सन्तान न हुआ. और वैसेही तीसरेने भी। सातोंने
उससे बिवाह किया पर किसीको सन्तान न हुआ. सबके
२३ पीछे स्त्री भी मर गई। सो मृतकोंके जी उठनेपर जब वे
सब उठेंगे तब वह उनमेंसे किसकी स्त्री होगी क्योंकि सा-
२४ तोंने उससे बिवाह किया। यीशुने उनको उत्तर दिया

क्या तुम इसी कारण भूलमें न पड़े हो कि धर्म्मपुस्तक
और ईश्वरकी शक्ति नहीं बूझते हो। क्योंकि जब वे मृत- २५
कोंमेंसे जी उठें तब न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते
हैं परन्तु स्वर्गमें दूतोंके समान हैं। मृतकोंके जी उठनेके २६
विषयमें क्या तुमने मूसाके पुस्तकमें झाड़ीकी कथामें नहीं
पढ़ा है कि ईश्वरने उससे कहा मैं इब्राहीमका ईश्वर और
इसहाकका ईश्वर और याकूबका ईश्वर हूं। ईश्वर २७
मृतकोंका नहीं परन्तु जीवतोंका ईश्वर है सो तुम बड़ी
भूलमें पड़े हो।

अध्यापकोंमेंसे एकने आ उन्हें बिबाद करते सुना २८
और यह जानके कि यीशुने उन्हें अच्छी रीतिसे उत्तर
दिया उससे पूछा सबसे बड़ी आज्ञा कौन है। यीशुने २९
उसे उत्तर दिया सब आज्ञाओंमेंसे यही बड़ी है कि हे
इस्रायेल सुनो परमेश्वर हमारा ईश्वर एकही परमेश्वर है।
और तू परमेश्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे ३०
और अपने सारे प्राणसे और अपनी सारी बुद्धिसे और
अपनी सारी शक्तिसे प्रेम कर. यही सबसे बड़ी आज्ञा
है। और दूसरी उसके समान है सो यह है कि तू अपने ३१
पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर. इनसे और कोई
आज्ञा बड़ी नहीं। उस अध्यापकने उससे कहा अच्छा ३२
हे गुरु आपने सत्य कहा है कि एकही ईश्वर है और
उसे छोड़ कोई दूसरा नहीं है। और उसको सारे ३३
मनसे और सारी बुद्धिसे और सारे प्राणसे और सारी
शक्तिसे प्रेम करना और पड़ोसीको अपने समान प्रेम
करना सारे होमोंसे और बलिदानोंसे अधिक है। जब ३४

यीशुने देखा कि उसने बुद्धिसे उत्तर दिया था तब
उससे कहा तू ईश्वरके राज्यसे दूर नहीं है. और किसी-
को फिर उससे कुछ पूछनेका साहस न हुआ ।
३५ इसपर यीशुने मन्दिरमें उपदेश करते हुए कहा
अध्यापक लोग क्योंकर कहते हैं कि ख्रीष्ट दाऊदका पुत्र
३६ है । दाऊद आपही पवित्र आत्माकी शिक्षासे बोला कि
परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा जबलों मैं तेरे शत्रुओंको तेरे
चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी ओर
३७ बैठ । दाऊद तो आपही उसे प्रभु कहता है फिर वह
उसका पुत्र कहांसे है. भीड़के अधिक लोग प्रसन्नतासे
उसकी सुनते थे ।
३८ उसने अपने उपदेशमें उनसे कहा अध्यापकोंसे चौक-
३९ स रहो जो लंबे बस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं. और
बाजारोंमें नमस्कार और सभाके घरोंमें ऊंचे आसन
४० और जेवनारोंमें ऊंचे स्थान भी चाहते हैं। वे बिधवा-
ओंके घर खा जाते हैं और बहानाके लिये बड़ी बेरलों
प्रार्थना करते हैं. वे अधिक दंड पावेंगे ।
४१ यीशु भंडारके साम्हने बैठके देखता था कि लोग क्यों-
कर भंडारमें रोकड़ डालते हैं और बहुत धनवानोंने
४२ बहुत कुछ डाला। और एक कंगाल बिधवाने आके दो
४३ छदाम अर्थात आध पैसा डाला। तब उसने अपने
शिष्योंको अपने पास बुलाके उनसे कहा मैं तुमसे सच
कहता हूं कि जिन्होंने भंडारमें डाला है उन सभोंसे
४४ इस कंगाल बिधवाने अधिक डाला है। क्योंकि सभोंने
अपनी बढ़तीमेंसे कुछ कुछ डाला है परन्तु इसने अपनी

घटतीमेंसे जो कुछ उसका था अर्थात अपनी सारी जीवि-
का डाली है।

## १३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ मन्दिरके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी। ३ उस समयके चिन्ह। ६ शिष्यों-पर उपद्रव होगा। १४ यिहूदी लोग बड़ा कष्ट पावेंगे। २१ झूठे खीष्ट प्रगट होंगे। २४ मनुष्यके पुत्रके आनेका बर्णन। २८ गूलरके वृक्षका दृष्टान्त। ३२ सचेत रहनेका उपदेश और दासोंका दृष्टान्त।

जब यीशु मन्दिरमेंसे निकलता था तब उसके शिष्यों- १
मेंसे एकने उससे कहा हे गुरु देखिये कैसे पत्थर और
कैसी रचना है। यीशुने उसे उत्तर दिया क्या तू यह २
बड़ी बड़ी रचना देखता है. पत्थरपर पत्थर भी न छोड़ा
जायगा जो गिराया न जाय।
जब वह जैतून पर्ब्बतपर मन्दिरके साम्ने बैठा था तब ३
पितर और याकूब और योहन और अन्द्रियने निरालेमें
उससे पूछा. कि हमोंसे कहिये यह कब होगा और यह ४
सब बातें जिस समयमें पूरी होंगीं उस समयका क्या चिन्ह
होगा। यीशु उन्हें उत्तर दे कहने लगा चौकस रहो कि ५
कोई तुम्हें न भरमावे। क्योंकि बहुत लोग मेरे नामसे ६
आके कहेंगे मैं वही हूं और बहुतोंको भरमावेंगे। जब ७
तुम लड़ाइयां और लड़ाइयोंकी चर्चा सुनो तब मत घब-
राओ क्योंकि इनका होना अवश्य है परन्तु अन्त उस
समयमें नहीं होगा। क्योंकि देश देशके और राज्य ८
राज्यके विरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानोंमें भुईंडोल होंगे
और अकाल और हुल्लड़ होंगे. यह तो दुःखोंका आरंभ
होगा।

९ तुम अपने विषयमें चैाकस रहो क्योंकि लोग तुम्हें
पंचायतोंमें सोंपेंगे और तुम सभाओंमें मारे जाओगे
और मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओंके आगे उनपर
१० साक्षी होनेके लिये खड़े किये जाओगे। परन्तु अवश्य है
कि पहिले सुसमाचार सब देशोंके लोगोंमें सुनाया जाय।
११ जब वे तुम्हें ले जाके सोंप देवें तब क्या कहोगे इसकी चिन्ता
आगेसे मत करो और न सोच करो परन्तु जो कुछ तुम्हें
उसी घड़ी दिया जाय सोई कहो क्योंकि तुम नहीं परन्तु
१२ पवित्र आत्मा बोलनेहारा होगा। भाई भाईको और
पिता पुत्रको बध किये जानेको सोंपेंगे और लड़के माता
१३ पिताके बिरुद्ध उठके उन्हें घात करवावेंगे। और मेरे
नामके कारण सब लोग तुमसे बैर करेंगे पर जो अन्तलों
स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा।

१४ जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित बस्तुको जिसकी
बात दानियेल भविष्यद्वक्ताने कही जहां उचित नहीं तहां
खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) तब जो यिहूदियामें हों
१५ सो पहाड़ोंपर भागें। जो कोठेपर हो सो न घरमें उतरे
१६ और न अपने घरमेंसे कुछ लेनेको उसमें पैठे। और जो
१७ खेतमें हो सो अपना बस्त्र लेनेको पीछे न फिरे। उन
दिनोंमें हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां।
१८ परन्तु प्रार्थना करो कि तुमको जाड़ेमें भागना न होवे।
१९ क्योंकि उन दिनोंमें ऐसा क्लेश होगा जैसा उस सृष्टिके
आरंभसे जो ईश्वरने सृजी अबतक न हुआ और कभी
२० न होगा। यदि परमेश्वर उन दिनोंको न घटाता तो
कोई प्राणी न बचता परन्तु उन चुने हुए लोगोंके कारण

जिनको उसने चुना है उसने उन दिनोंको घटाया है।
तब यदि कोई तुमसे कहे देखो खीष्ट यहां है अथवा २१
देखो वहां है तो प्रतीति मत करो। क्योंकि झूठे खीष्ट २२
और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके चिन्ह और अद्भुत
काम दिखावेंगे इसलिये कि जो हो सके तो चुने हुए
लोगोंको भी भरमावें। पर तुम चौकस रहो देखो मैंने २३
आगेसे तुम्हें सब बातें कह दिई हैं।

उन दिनोंमें उस क्लेशके पीछे सूर्य्य अंधियारा हो जा- २४
यगा और चांद अपनी ज्योति न देगा। आकाशके तारे २५
गिर पड़ेंगे और आकाशमेंकी सेना डिग जायगी। तब २६
लोग मनुष्यके पुत्रको बड़े पराक्रम और ऐश्वर्य्यसे मेघोंपर
आते देखेंगे। और तब वह अपने दूतोंको भेजेगा और २७
पृथिवीके इस सिवानेसे आकाशके उस सिवानेतक चहुं
दिशासे अपने चुने हुए लोगोंको एकट्ठे करेगा।

गूलरके वृक्षसे दृष्टान्त सीखो। जब उसकी डाली को- २८
मल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते हो
कि धूपकाला निकट है। इस रीतिसे जब तुम यह बातें २९
होते देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वारपर है।
मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलों यह सब बातें पूरी न ३०
हो जायें तबलों इस समयके लोग नहीं जाते रहेंगे। आ- ३१
काश औ पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न
टलेंगीं।

उस दिन और उस घड़ीके विषयमें न कोई मनुष्य ३२
जानता है न स्वर्गवासी दूतगण और न पुत्र परन्तु केवल
पिता। देखो जागते रहो और प्रार्थना करो क्योंकि तुम ३३

३४ नहीं जानते हो वह समय कब होगा। वह ऐसा है जैसे
परदेश जानेवाले एक मनुष्यने अपना घर छोड़ा और
अपने दासोंको अधिकार और हर एकको उसका काम
दिया और द्वारपालको जागते रहनेकी आज्ञा दिई।
३५ इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो घरका
स्वामी कब आवेगा सांझको अथवा आधी रातको अथवा
३६ मुर्ग बोलनेके समयमें अथवा भोरको। ऐसा न हो कि
३७ वह अचांचक आके तुम्हें सोते पावे। और जो मैं तुमसे
कहता हूं सो सभोंसे कहता हूं जागते रहो।

## १४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ यीशुको बध करनेका परामर्श। ३ एक स्त्रीका उसके सिरपर सुगन्ध तेल ढालना। १० यिहूदाका बिश्वासघात करना। १२ शिष्योंका निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाना। १७ उनके संग यीशुका भोजन करना और यिहूदाके विषयमें भविष्यद्वाक्य कहना। २२ प्रभु भोजका निरूपण। २७ पितरके यीशुसे मुकर जानेकी भविष्यद्वाणी। ३२ बारीमें यीशुका महा शोक। ४३ उसका पकड़ा जाना। ५३ उसको महायाजकके पास ले जाना और बधके योग्य ठहराके अपमान करना। ६६ पितरका उससे मुकर जाना।

१ निस्तार पर्ब्ब और अखमीरी रोटीका पर्ब्ब दो दिनके
पीछे होनेवाला था और प्रधान याजक और अध्यापक
लोग खोज करते थे कि यीशुको क्योंकर छलसे पकड़के
२ मार डालें। परन्तु उन्होंने कहा पर्ब्बमें नहीं न हो कि
लोगोंका हुल्लड़ होवे।
३ जब वह बैथनियामें शिमोन कोढ़ीके घरमें था और
भोजनपर बैठा तब एक स्त्री उजले पत्थरके पात्रमें जटा-
मांसीका बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके आई और पात्र

तोड़के उसके सिरपर ढाला। कोई कोई अपने मनमें ४
रिसियाते थे और बोले सुगन्ध तेलका यह क्षय क्यों हुआ।
क्योंकि वह तीन सौ सूकियोंसे अधिक दाममें बिक सकता ५
और कंगालोंको दिया जा सकता. और वे उस स्त्रीपर
कुड़कुड़ाये। यीशुने कहा उसको रहने दो क्यों उसको ६
दुःख देते हो. उसने अच्छा काम मुझसे किया है। कं- ७
गाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं और तुम जब
चाहो तब उनसे भलाई कर सकते हो परन्तु मैं तुम्हारे
संग सदा नहीं रहूंगा। जो कुछ वह कर सकी सो किया ८
है. उसने मेरे गाड़े जानेके लिये आगेसे मेरे देहपर
सुगन्ध तेल लगाया है। मैं तुमसे सत्य कहता हूं सारे ९
जगतमें जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां
यह भी जो इसने किया है उसके स्मरणके लिये कहा
जायगा।

तब यिहूदा इस्करियोती जो बारह शिष्योंमेंसे एक था १०
प्रधान याजकोंके पास गया इसलिये कि यीशुको उन्होंके
हाथ पकड़वाय। वे यह सुनके आनन्दित हुए और उस- ११
को रुपैये देनेकी प्रतिज्ञा किई और वह खोज करने लगा
कि उसे क्योंकर अवसर पाके पकड़वाय।

अखमीरी रोटीके पर्व्वके पहिले दिन जिसमें वे निस्तार १२
पर्व्वका मेम्ना मारते थे यीशुके शिष्य लोग उससे बोले
आप कहां चाहते हैं कि हम जाके तैयार करें कि आप
निस्तार पर्व्वका भोजन खावें। उसने अपने शिष्योंमेंसे १३
दोको यह कहके भेजा कि नगरमें जाओ और एक मनुष्य
जलका घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा उसके पीछे हो

१४ लेओ। जिस घरमें वह पैठे उस घरके स्वामीसे कहो गुरु
कहता है कि पाहुनशाला कहां है जिसमें मैं अपने शि-
१५ ष्योंके संग निस्तार पर्ब्बका भोजन खाऊं। वह तुम्हें एक
सजी हुई और तैयार किई हुई बड़ी उपरौठी कोठरी
१६ दिखावेगा वहां हमारे लिये तैयार करो। तब उसके
शिष्य लोग चले और नगरमें आके जैसा उसने उन्होंसे
कहा तैसा पाया और निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाया।
१७
१८ सांझको यीशु बारह शिष्योंके संग आया। जब वे भोजन-
पर बैठके खाते थे तब यीशुने कहा मैं तुमसे सच कहता
हूं कि तुममेंसे एक जो मेरे संग खाता है मुझे पकड़वा-
१९ यगा। इसपर वे उदास होने और एक एक करके उससे
कहने लगे वह क्या मैं हूं और दूसरेने कहा क्या मैं हूं।
२० उसने उनको उत्तर दिया कि बारहोंमेंसे एक जो मेरे
२१ संग थालीमें हाथ डालता है सोई है। मनुष्यका पुत्र जैसा
उसके विषयमें लिखा है वैसाही जाता है परन्तु हाय
वह मनुष्य जिससे मनुष्यका पुत्र पकड़वाया जाता है.
जो उस मनुष्यका जन्म न होता तो उसके लिये
भला होता।

२२ जब वे खाते थे तब यीशुने रोटी लेके धन्यबाद किया
और उसे तोड़के उनको दिया और कहा लेओ खाओ
२३ यह मेरा देह है। और उसने कटोरा ले धन्य मानके
२४ उन्हें दिया और सभोंने उससे पिया। और उसने उनसे
कहा यह मेरा लोहू अर्थात नये नियमका लोहू है जो
२५ बहुतोंके लिये बहाया जाता है। मैं तुमसे सच कहता
हूं कि जिस दिनलों मैं ईश्वरके राज्यमें उसे नया न पीऊं

उस दिनलों मैं दाख रस फिर कभी न पीऊंगा। और वे २६
भजन गाके जैतून पर्ब्बतपर गये।
तब यीशुने उनसे कहा तुम सब इसी रात मेरे विष- २७
यमें ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरियेको
मारूंगा और भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं। परन्तु मैं २८
अपने जी उठनेके पीछे तुम्हारे आगे गालीलको जाऊंगा।
पितरने उससे कहा यदि सब ठोकर खावें तौभी मैं २९
नहीं ठोकर खाऊंगा। यीशुने उससे कहा मैं तुझे सत्य ३०
कहता हूं कि आज इसी रात मुर्गके दो बार बोलनेसे
आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा। उसने और भी दृढ़- ३१
तासे कहा जो आपके संग मुझे मरना हो तौभी मैं आ-
पसे कभी न मुकरूंगा; सभोंने भी वैसाही कहा।
वे गेतशिमनी नाम स्थानमें आये और यीशुने अपने ३२
शिष्योंसे कहा जबलों मैं प्रार्थना करूं तबलों तुम यहां
बैठो। और वह पितर और याकूब और योहनको अप- ३३
ने संग ले गया और व्याकुल और बहुत उदास होने लगा।
और उसने उनसे कहा मेरा मन यहांलों अति उदास ३४
है कि मैं मरनेपर हूं, तुम यहां ठहरो और जागते
रहो। और थोड़ा आगे बढ़के वह भूमिपर गिरा और ३५
प्रार्थना किई कि जो हो सके तो वह घड़ी उससे टल
जाय। उसने कहा हे अब्बा हे पिता तुझसे सब कुछ हो ३६
सकता है यह कटोरा मेरे पाससे टाल दे तौभी जो मैं
चाहता हूं सो न होय पर जो तू चाहता है। तब उसने ३७
आ उन्हें सोते पाया और पितरसे कहा हे शिमोन सो
तू सोता है क्या तू एक घड़ी नहीं जाग सका। जागते रहो ३८

और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो. मन तो
३९ तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। उसने फिर जाके वही
४० बात कहके प्रार्थना किई। तब उसने लौटके उन्हें फिर
सोते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींदसे भरी थीं. और
४१ वे नहीं जानते थे कि उसको क्या उत्तर देवें। और उसने
तीसरी बेर आ उनसे कहा सो तुम सोते रहते और
बिश्राम करते हो. बहुत है घड़ी आ पहुंची है देखो
मनुष्यका पुत्र पापियोंके हाथमें पकड़वाया जाता है।
४२ उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है।
४३ वह बोलताही था कि यिहूदा जो बारह शिष्योंमेंसे
एक था तुरन्त आ पहुंचा और प्रधान याजकों और
अध्यापकों और प्राचीनोंकी ओरसे बहुत लोग खड्ग और
४४ लाठियां लिये हुए उसके संग। यीशुके पकड़वानेहारेने
उन्हें यह पता दिया था कि जिसको मैं चूमूं वही है उस-
४५ को पकड़के यत्नसे ले जाओ। और वह आया और तुरन्त
यीशु पास जाके कहा हे गुरु हे गुरु और उसको चूमा।
४६ तब उन्होंने उसपर अपने हाथ डालके उसे पकड़ा।
४७ जो लोग निकट खड़े थे उनमेंसे एकने खड्ग खींचके महा-
याजकके दासको मारा और उसका कान उड़ा दिया।
४८ इसपर यीशुने लोगोंसे कहा क्या तुम मुझे पकड़नेको जैसे
४९ डाकूपर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो। मैं मन्दिर-
में उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग था और
तुमने मुझे नहीं पकड़ा. परन्तु यह इसलिये है कि धर्म्म-
५० पुस्तककी बातें पूरी होवें। तब सब शिष्य उसे छोड़के
भागे।

और एक जवान जो देहपर चद्दर ओढ़े हुए था उसके ५१
पीछे हो लिया और प्यादोंने उसे पकड़ा। वह चद्दर ५२
छोड़के उनसे नंगा भागा।

वे यीशुको महायाजकके पास ले गये और सब प्रधान ५३
याजक और प्राचीन और अध्यापक लोग उस पास एकट्ठे
हुए। पितर दूर दूर उसके पीछे महायाजकके अंगनेके ५४
भीतरलों चला गया और प्यादोंके संग बैठके आग तापने
लगा। प्रधान याजकोंने और न्याइयोंकी सारी सभाने ५५
यीशुको घात करवानेके लिये उसपर साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न
पाई। क्योंकि बहुतोंने उसपर झूठी साक्षी दिई परन्तु ५६
उनकी साक्षी एकसमान न थी। तब कितनोंने खड़े हो ५७
उसपर यह झूठी साक्षी दिई, कि हमोंने इसको कहते ५८
सुना कि मैं यह हाथका बनाया हुआ मन्दिर गिराऊंगा
और तीन दिनमें दूसरा बिन हाथका बनाया हुआ
मन्दिर उठाऊंगा। पर यूं भी उनकी साक्षी एकसमान न ५९
थी। तब महायाजकने बीचमें खड़ा हो यीशुसे पूछा क्या ६०
तू कुछ उत्तर नहीं देता है. ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या साक्षी
देते हैं। परन्तु वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया. ६१
महायाजकने उससे फिर पूछा और उससे कहा क्या तू
उस परमधन्यका पुत्र ख्रीष्ट है। यीशुने कहा मैं हूं और ६२
तुम मनुष्यके पुत्रको सर्व्वशक्तिमानकी दहिनी ओर बैठे
और आकाशके मेघोंपर आते देखोगे। तब महायाजकने ६३
अपने बस्त्र फाड़के कहा अब हमें साक्षियोंका और क्या
प्रयोजन। ईश्वरकी यह निन्दा तुमने सुनी है तुम्हें क्या ६४
समझ पड़ता है, सभोंने उसको बधके योग्य ठहराया।

६५ तब कोई कोई उसपर थूकने लगे और उसका मुंह ढां-
पके उसे घूसे मारके उससे कहने लगे कि भविष्यद्वाणी
बोल, प्यादोंने भी उसे थपेड़े मारे ।
६६ जब पितर नीचे अंगनेमें था तब महायाजककी दा-
६७ सियोंमेंसे एक आई, और पितरको आग तापते देखके
उसपर दृष्टि करके बोली तू भी यीशु नासरीके संग था।
६८ उसने मुकरके कहा मैं नहीं जानता और नहीं बूझ-
ता तू क्या कहती है, तब वह बाहर डेवढ़ीमें गया
६९ और मुर्ग बोला। दासी उसे फिर देखके जो लोग
निकट खड़े थे उनसे कहने लगी कि यह उनमेंसे एक
७० है, वह फिर मुकर गया। फिर थोड़ी बेर पीछे जो लोग
निकट खड़े थे उन्होंने पितरसे कहा तू सचमुच उनमेंसे
एक है क्योंकि तू गालीली भी है और तेरी बोली
७१ वैसीही है। तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा
कि मैं उस मनुष्यको जिसके विषयमें बोलते हो नहीं
७२ जानता हूं। तब मुर्ग दूसरी बार बोला और जो बात
यीशुने उससे कही थी कि मुर्गके दो बार बोलनेसे आगे
तू तीन बार मुझसे मुकरेगा उस बातको पितरने स्मरण
किया और सोच करते हुए रोने लगा ।

## १५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका पिलातके हाथ सोंपा जाना और पिलातका उसे बिचार करना और छोड़नेकी इच्छा करना। १५ यीशुका घातकोंके हाथ सोंपा जाना और योद्धाओंसे निन्दित होना। २२ उसका क्रूशपर चढ़ाया जाना। २९ उसपर लोगोंका हंसना। ३३ उसका पुकारना और सिरका पीना। ३७ उसका प्राण त्यागना और अद्भुत चिन्होंका प्रगट होना। ४० स्त्रियोंका क्रूशके समीप रहना। ४२ यूसफका यीशुको कबरमें रखना।

भोरके प्रधान याजकोंने प्राचीनों ग्रोर ग्रध्यापकोंके १
संग बरन न्याइयोंकी सारी सभाने तुरन्त ग्रापसमें बि-
चार कर योशुको बांधा ग्रोर उसे ले जाके पिलातको
सोंप दिया। पिलातने उससे पूछा क्या तू यिहूदियोंका २
राजा है. उसने उसको उत्तर दिया कि ग्रापही तो कह-
ते हैं। ग्रोर प्रधान याजकोंने उसपर बहुतसे दोष लगा- ३
ये। तब पिलातने उससे फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर ४
नहीं देता. देख वे तेरे बिरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं।
परन्तु योशुने ग्रोर कुछ उत्तर नहीं दिया यहांलों कि ५
पिलातनें ग्रचंभा किया। उस पर्व्बमें वह एक बन्धुवेको ६
जिसे लोग मांगते थे उन्होंके लिये छोड़ देता था। बरब्बा ७
नाम एक मनुष्य ग्रपने संगी राजद्रोहियोंके साथ जिन्हों-
ने बलवेमें नरहिंसा किई थी बंधा हुग्रा था। ग्रोर ८
लोग पुकारके पिलातसे मांगने लगे कि जैसा उन्होंके
लिये सदा करता था तैसा करे। पिलातने उनको उत्तर ९
दिया क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहूदि-
योंके राजाको छोड़ देऊं। क्योंकि वह जानता था कि १०
प्रधान याजकोंने उसको डाहसे पकड़वाया था। परन्तु ११
प्रधान याजकोंने लोगोंको उस्काया इसलिये कि वह
बरब्बाहीको उनके लिये छोड़ देवे। पिलातने उत्तर देके १२
उनसे फिर कहा तुम क्या चाहते हो जिसे तुम यिहूदि-
योंका राजा कहते हो उससे मैं क्या करूं। उन्होंने फिर १३
पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये। पिलातने उनसे कहा १४
क्यों उसने कैानसी बुराई किई है. परन्तु उन्होंने बहुत
ग्रधिक पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये।

१५ तब पिलातने लोगोंको सन्तुष्ट करनेकी इच्छा कर
बरब्बाको उन्होंके लिये छोड़ दिया और यीशुको कोड़े
१६ मारके क्रूशपर चढ़ाये जानेको सोंप दिया। तब योद्धा-
ओंने उसे घरके अर्थात अध्यक्षभवनके भीतर ले जाके
१७ सारी पलटनको एकट्ठे बुलाया। और उन्होंने उसे बैजनी
बस्त्र पहिराया और कांटोंका मुकुट गून्थके उसके सिर-
१८ पर रखा, और उसे नमस्कार करने लगे कि हे यिहू-
१९ दियोंके राजा प्रणाम। और उन्होंने नरकटसे उसके
सिरपर मारा और उसपर थूका और घुटने टेकके
२० उसको प्रणाम किया। जब वे उससे ठट्ठा कर चुके तब
उससे वह बैजनी बस्त्र उतारके और उसका निज
बस्त्र उसको पहिराके उसे क्रूशपर चढ़ानेको बाहर ले
२१ गये। और उन्होंने कुरीनी देशके एक मनुष्यको अर्थात
सिकन्दर और रूफके पिता शिमोनको जो गांवसे आते
हुए उधरसे जाता था बेगार पकड़ा कि उसका क्रूश
ले चले।

२२ तब वे उसे गलगथा स्थानपर लाये जिसका अर्थ यह
२३ है खोपड़ीका स्थान। और उन्होंने दाख रसमें मुर मिलाके
२४ उसे पीनेको दिया परन्तु उसने न लिया। तब उन्होंने
उसको क्रूशपर चढ़ाया और उसके कपड़ोंपर चिट्ठियां
२५ डालके कि कौन किसको लेगा उन्हें बांट लिया। एक
पहर दिन चढ़ा था कि उन्होंने उसको क्रूशपर चढ़ाया।
२६ और उसका यह दोषपत्र ऊपर लिखा गया कि यिहू-
२७ दियोंका राजा। उन्होंने उसके संग दो डाकूओंको एकको
उसकी दहिनी ओर और दूसरेको बाईं ओर क्रूशोंपर

चढ़ाया। तब धर्म्मपुस्तकका यह बचन पूरा हुआ कि वह २८
कुकर्म्मियोंके संग गिना गया।
जो लोग उधरसे आते जाते थे उन्होंने अपने सिर २९
हिलाके और यह कहके उसकी निन्दा किई. कि हा ३०
मन्दिरके ढानेहारे और तीन दिनमें बनानेहारे अपनेको
बचा और क्रूशपरसे उतर आ। इसी रीतिसे प्रधान ३१
याजकोंने भी अध्यापकोंके संग आपसमें ठट्ठा कर कहा
उसने औरोंको बचाया अपनेको बचा नहीं सकता है।
इस्रायेलका राजा ख्रीष्ट क्रूशपरसे अब उतर आवे कि हम ३२
देखके बिश्वास करें. जो उसके संग क्रूशोंपर चढ़ाये गये
उन्होंने भी उसकी निन्दा किई।
जब दो पहर हुआ तब सारे देशमें तीसरे पहरलों ३३
अंधकार हो गया। तीसरे पहर यीशुने बड़े शब्दसे पुका- ३४
रके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात हे मेरे ईश्वर हे
मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे त्यागा है। जो लोग निकट खड़े ३५
थे उनमेंसे कितनोंने यह सुनके कहा देखो वह एलिया-
हको बुलाता है। और एकने दौड़के इस्पंजको सिरकेमें ३६
भिंगाया और नलपर रखके उसे पीनेको दिया और कहा
रहने दो हम देखें कि एलियाह उसे उतारनेको आता
है कि नहीं।
तब यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके प्राण त्यागा। और ३७ ३८
मन्दिरका परदा ऊपरसे नीचेलों फटके दो भाग हो गया।
जो शतपति उसके सन्मुख खड़ा था उसने जब उसे यूं ३९
पुकारके प्राण त्यागते देखा तब कहा सचमुच यह मनुष्य
ईश्वरका पुत्र था।

४० कितनी स्त्रियां भी दूरसे देखती रहीं जिन्होंमें मरि-
यम मगदलीनी और छोटे याकूबकी और योशीकी माता
४१ मरियम और शालोमी थीं। जब यीशु गालीलमें था तब
ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवा करती
थीं. बहुतसी और स्त्रियां भी जो उसके संग यिरूशली-
ममें आईं वहां थीं।
४२ यह दिन तैयारीका दिन था जो बिश्रामवारके एक
४३ दिन आगे है. इसलिये जब सांझ हुई तब अरिमथिया
नगरका यूसफ एक आदरवन्त मन्त्री जो आप भी ईश्वरके
राज्यकी बाट जोहता था आया और साहससे पिलातके
४४ पास जाके यीशुकी लोथ मांगी। पिलातने अचंभा किया
कि वह क्या मर गया है और शतपतिको अपने पास
४५ बुलाके उससे पूछा क्या उसको मरे कुछ बेर हुई। शत-
४६ पतिसे जानके उसने यूसफको लोथ दिई। यूसफने एक
चद्दर मोल लेके यीशुको उतारके उस चद्दरमें लपेटा
और उसे एक कबरमें जो पत्थरमें खोदी हुई थी रखा
४७ और कबरके द्वारपर पत्थर लुढ़का दिया। मरियम मग-
दलीनी और योशीकी माता मरियमने वह स्थान देखा
जहां वह रखा गया।

## १६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ स्त्रियोंका दूतसे यीशुके जी उठनेका समाचार सुनना। ९ यीशुका मरि-
यम मगदलीनीको दर्शन देना। १२ दो शिष्योंको दर्शन देना। १४ एग्या-
रह शिष्योंको दर्शन देना और उन्हें प्रेरण करना। १९ स्वर्गमें जाना।

१ जब बिश्रामवार बीत गया तब मरियम मगदलीनी
और याकूबकी माता मरियम और शालोमीने सुगन्ध

मोल लिया कि आके यीशुको मलें। और अठवारेके २
पहिले दिन बड़ी भोर सूर्य्य उदय होते हुए वे कबरपर
आईं। और वे आपसमें बोलीं कौन हमारे लिये कब- ३
रके द्वारपरसे पत्थर लुढ़कावेगा। परन्तु उन्होंने दृष्टि कर ४
देखा कि पत्थर लुढ़काया गया है. और वह बहुत बड़ा
था। कबरके भीतर जाके उन्होंने उजले लंबे बस्त्र पहिने ५
हुए एक जवानको दहिनी ओर बैठे देखा और चकित
हुईं। उसने उनसे कहा चकित मत होओ तुम यीशु ६
नासरीको जो क्रूशपर घात किया गया ढूंढती हो. वह
जी उठा है वह यहां नहीं है. देखो यही स्थान है जहां
उन्होंने उसे रखा। परन्तु जाके उसके शिष्योंसे और ७
पितरसे कहो कि वह तुम्हारे आगे गालीलको जाता है.
जैसे उसने तुमसे कहा वैसे तुम उसे वहां देखोगे। वे ८
शीघ्र निकलके कबरसे भाग गईं और कम्पित और बिस्मि-
त हुईं और किसीसे कुछ न बोलीं क्योंकि वे डरती थीं।

यीशुने अठवारेके पहिले दिन भोरको जी उठके पहिले ९
मरियम मगदलीनीको जिसमेंसे उसने सात भूत निकाले
थे दर्शन दिया। उसने जाके उसके संगियोंको जो शोक १०
करते और रोते थे कह दिया। उन्होंने जब सुना कि ११
वह जीता है और मरियमसे देखा गया है तब प्रतीति
न किई।

इसके पीछे उसने उनमेंसे दोको जो मार्गमें चलते और १२
किसी गांवको जाते थे दूसरे रूपमें दर्शन दिया। उन्हों- १३
ने भी जाके औरोंसे कह दिया परन्तु उन्होंने उनकी भी
प्रतीति न किई।

१४ पीछे उसने एग्यारह शिष्योंको जब वे भोजनपर बैठे थे
दर्शन दिया और उनके अबिश्वास और मनकी कठोर-
तापर उलहना दिया इसलिये कि जिन्होंने उसे जी उठे
१५ हुए देखा था उन लोगोंकी उन्होंने प्रतीति न किई। और
उसने उनसे कहा तुम सारे जगतमें जाके हर एक मनु-
१६ ष्यको सुसमाचार सुनाओ। जो बिश्वास करे और डूब
लेवे सो चाण पावेगा परन्तु जो बिश्वास न करे सो
१७ दंडके योग्य ठहराया जायगा। और ये चिन्ह बिश्वास
करनेहारोंके संग प्रगट होंगे. वे मेरे नामसे भूतोंको
१८ निकालेंगे वे नई नई भाषा बोलेंगे। वे सांपोंको उठा
लेंगे और जो वे कुछ बिष पीवें तो उससे उनकी कुछ
हानि न होगी. वे रोगियोंपर हाथ रखेंगे और वे चंगे
हो जायेंगे।

१९ सो प्रभु उन्होंसे बोलनेके पीछे स्वर्गपर उठा लिया गया
२० और ईश्वरकी दहिनी ओर बैठा। और उन्होंने निकलके
सर्ब्बच उपदेश किया और प्रभुने उनके संग कार्य्य किया
और जो चिन्ह साथमें प्रगट होते थे उन्होंसे बचनको
दृढ़ किया। आमीन॥

---

# लूक रचित सुसमाचार।

## १ पहिला पर्ब्ब।

१ सुसमाचार लिखनेका प्रयोजन।५ इलीशिबाको गर्भ रहनेका बर्णन। २६ मरियमको गर्भ रहनेका बर्णन। ३९ मरियम और इलीशिबाकी भेंट। ४६ मरियमकी गीत। ५७ योहनके जन्मका बर्णन। ६७ जिखरियाहकी भविष्यद्वाणी। ८० योहनका जंगलमें रहना।

हे महामहिमन थियोफिल जो बातें हम लोगोंमें १
अति प्रमाण हैं उन बातोंका वृत्तान्त जिस रीतिसे उन्होंने
जो आरंभसे साक्षी और बचनके सेवक थे हम लोगोंको
सोंपा. उसी रीतिसे लिखनेको बहुतोंने हाथ लगाया २
है. इसलिये मुझे भी जिसने सब बातोंको आदिसे ठीक ३
करके जांचा है अच्छा लगा कि एक ओरसे आपके पास
लिखूं. इसलिये कि जिन बातोंका उपदेश आपको दिया ४
गया है आप उन बातोंकी दृढ़ता जानें।

यिहूदिया देशके हेरोद राजाके दिनोंमें अबियाहकी ५
पारीमें जिखरियाह नाम एक याजक था और उसकी
स्त्री जिसका नाम इलीशिबा था हारोनके बंशकी थी।
वे दोनों ईश्वरके सन्मुख धर्म्मी थे और परमेश्वरकी समस्त ६
आज्ञाओं और बिधियोंपर निर्दोष चलते थे। उनको कोई ७
लड़का न था क्योंकि इलीशिबा बांझ थी और वे दोनों
बूढ़े थे। जब जिखरियाह अपनी पारीकी रीतिपर ईश्वरके ८
आगे याजकका काम करता था. तब चिट्ठियां डालनेसे ९

उसको याजकीय व्यवहारके अनुसार परमेश्वरके मन्दि-
१० रमें जाके धूप जलाना पड़ा। धूप जलानेके समय लोगोंकी
११ सारी मंडली बाहर प्रार्थना करती थी। तब परमेश्वरका
एक दूत धूपकी बेदीकी दहिनी ओर खड़ा हुआ उसको
१२ दिखाई दिया। जिखरियाह उसे देखके घबरा गया और
१३ उसे डर लगा। दूतने उससे कहा हे जिखरियाह मत डर
क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरी स्त्री इलीशिबा
१४ पुत्र जनेगी और तू उसका नाम योहन रखना। तुझे
आनन्द और आह्लाद होगा और बहुत लोग उसके
१५ जन्मनेसे आनन्दित होंगे। क्योंकि वह परमेश्वरके सन्मुख
बड़ा होगा और न दाख रस न मद्य पीयेगा और अपनी
१६ माताके गर्भहीसे पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होगा। और वह
इस्रायेलके सन्तानोंमेंसे बहुतोंको परमेश्वर उनके ईश्वरकी
१७ ओर फिरावेगा। वह उसके आगे एलियाहके आत्मा
और सामर्थ्यसे जायगा इसलियें कि पितरोंका मन
लड़कोंकी ओर फेर दे और आज्ञा लंघन करनेहारोंको
धर्म्मियोंके मतपर लावे और प्रभुके लिये एक सजे हुए
१८ लोगको तैयार करे। तब जिखरियाहने दूतसे कहा यह
मैं किस रीतिसे जानूं क्योंकि मैं बूढ़ा हूं और मेरी
१९ स्त्री भी बूढ़ी है। दूतने उसको उत्तर दिया कि मैं जब्रा-
येल हूं जो ईश्वरके साम्ने खड़ा रहता हूं और मैं तुझसे
बात करने और तुझे यह सुसमाचार सुनानेको भेजा
२० गया हूं। और देख जिस दिनलों यह सब पूरा न हो
जाय उस दिनलों तू गूंगा हो रहेगा और बोल न
सकेगा क्योंकि तूने मेरी बातोंपर जो अपने समयमें पूरी

किई जायेंगीं बिश्वास नहीं किया। लोग जिखरियाहको २१
बाट देखते थे और अचंभा करते थे कि उसने मन्दिरमें
बिलंब किया। जब वह बाहर आया तब उन्होंसे बोल २२
न सका और उन्होंने जाना कि उसने मन्दिरमें कोई
दर्शन पाया था और वह उन्होंसे सैन करने लगा और
गूंगा रह गया। जब उसकी सेवाके दिन पूरे हुए तब २३
वह अपने घर गया। इन दिनोंके पीछे उसकी स्त्री इली- २४
शिबा गर्भवती हुई और अपनेको पांच मास यह कहके
छिपाया, कि मनुष्योंमें मेरा अपमान मिटानेको पर- २५
मेश्वरने इन दिनोंमें कृपादृष्टि कर मुझसे ऐसा व्यवहार
किया है।

छठवें मासमें ईश्वरने जब्रायेल दूतको गालील देशके २६
एक नगरमें जो नासरत कहावता है किसी कुंवारीके
पास भेजा, जिसकी मंगनी यूसफ नाम दाऊदके घरा- २७
नेके एक पुरुषसे हुई थी, उस कुंवारीका नाम मरियम
था। दूतने घरमें प्रवेश कर उससे कहा हे अनुग्रहीत २८
कल्याण परमेश्वर तेरे संग है स्त्रियोंमें तू धन्य है। मरि- २९
यम उसे देखके उसके बचनसे घबरा गई और सोचने
लगी कि यह कैसा नमस्कार है। तब दूतने उससे कहा ३०
हे मरियम मत डर क्योंकि ईश्वरका अनुग्रह तुझपर
हुआ है। देख तू गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और ३१
उसका नाम तू यीशु रखना। वह महान होगा और ३२
सर्ब्बप्रधानका पुत्र कहावेगा और परमेश्वर ईश्वर उसके
पिता दाऊदका सिंहासन उसको देगा। और वह या- ३३
कूबके घरानेपर सदा राज्य करेगा और उसके राज्यका

३४ अन्त न होगा। तब मरियमने दूतसे कहा यह किस
३५ रीतिसे होगा क्योंकि मैं पुरुषको नहीं जानती हूं। दूतने
उसको उत्तर दिया कि पवित्र आत्मा तुझपर आवेगा
और सर्व्वप्रधानकी शक्ति तुझपर छाया करेगी इसलिये
३६ वह पवित्र बालक ईश्वरका पुत्र कहावेगा। और देख
तेरी कुटुंबिनी इलीशिबाको भी बुढ़ापेमें पुत्रका गर्भ रहा
है और जो बांझ कहावती थी उसका यह छठवां मास है।
३७ क्योंकि कोई बात ईश्वरसे असाध्य नहीं है। मरियमने
३८ कहा देखिये मैं परमेश्वरकी दासी मुझे आपके बचनके
अनुसार होय. तब दूत उसके पाससे चला गया।
३९ उन दिनोंमें मरियम उठके शीघ्रसे पर्व्वतीय देशमें
४० यिहूदाके एक नगरको गई. और जिखरियाहके घरमें
४१ प्रवेश कर इलीशिबाको नमस्कार किया। ज्योंही इलीशि-
बाने मरियमका नमस्कार सुना त्योंही बालक उसके गर्भमें
उछला और इलीशिबा पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुई।
४२ और उसने बड़े शब्दसे बोलते हुए कहा तू स्त्रियोंमें
४३ धन्य है और तेरे गर्भका फल धन्य है। और यह मुझे
४४ कहांसे हुआ कि मेरे प्रभुकी माता मेरे पास आवे। देख
ज्योंही तेरे नमस्कारका शब्द मेरे कानोंमें पड़ा त्योंही
४५ बालक मेरे गर्भमें आनन्दसे उछला। और धन्य बिश्वास
करनेहारी कि परमेश्वरकी ओरसे जो बातें तुझसे कही
गई हैं सो पूरी किई जायेंगीं।
४६ तब मरियमने कहा मेरा प्राण परमेश्वरकी महिमा
४७ करता है. और मेरा आत्मा मेरे त्राणकर्त्ता ईश्वरसे
४८ आनन्दित हुआ है। क्योंकि उसने अपनी दासीकी दीन-

ताईपर दृष्टि किई है देखो अबसे सब समयोंके लोग
मुझे धन्य कहेंगे। क्योंकि सर्ब्बशक्तिमानने मेरे लिये ४९
महाकार्य्योंको किया है और उसका नाम पवित्र है।
उसकी दया उन्होंपर जो उससे डरते हैं पीढ़ीसे पीढ़ीलों ५०
नित्य रहती है। उसने अपनी भुजाका बल दिखाया ५१
है उसने अभिमानियोंको उनके मनके परामर्शमें छिन्न
भिन्न किया है। उसने बलवानोंको सिंहासनोंसे उतारा ५२
और दीनोंको ऊंचा किया है। उसने भूखोंको उत्तम ५३
बस्तुओंसे तृप्त किया और धनवानोंको छूछे हाथ फेर
दिया है। उसने जैसे हमारे पितरोंसे कहा, तैसे सर्ब्बदा ५४ ५५
इब्राहीम और उसके बंशपर अपनी दया स्मरण करनेके
कारण अपने सेवक इस्रायेलका उपकार किया है। मरि- ५६
यम तीन मासके अटकल इलीशिबाके संग रही तब
अपने घरको लौटी।

तब इलीशिबाके जननेका समय पूरा हुआ और वह ५७
पुत्र जनी। उसके पड़ोसियों और कुटुंबोंने सुना कि ५८
परमेश्वरने उसपर बड़ी दया किई है और उन्होंने उसके
संग आनन्द किया। आठवें दिन वे बालकका खतना ५९
करनेको आये और उसके पिताके नामपर उसका नाम
जिखरियाह रखने लगे। इसपर उसकी माताने कहा सो ६०
नहीं परन्तु उसका नाम योहन रखा जायगा। उन्होंने ६१
उससे कहा आपके कुटुंबोंमेंसे कोई नहीं है जो इस
नामसे कहावता है। तब उन्होंने उसके पितासे सैन ६२
किया कि आप क्या चाहते हैं कि इसका नाम रखा
जाय। उसने पटिया मंगाके यह लिखा कि उसका नाम ६३

६४ योहन है। इससे वे सब अचंभित हुए। तब उसका मुंह
और उसकी जीभ तुरन्त खुल गये और वह बोलने
६५ और ईश्वरका धन्यबाद करने लगा। और उन्होंके आ-
सपासके सब रहनेहारोंको भय हुआ और इन सब
बातोंकी चर्चा यिहूदियाके सारे पर्ब्बतीय देशमें होने
६६ लगी। और सब सुननेहारोंने अपने अपने मनमें सोच
कर कहा यह कैसा बालक होगा। और परमेश्वरका
हाथ उसके संग था।

६७ तब उसका पिता जिखरियाह पवित्र आत्मासे परिपूर्ण
६८ हुआ और यह भविष्यद्वाणी बोला। कि परमेश्वर इस्रा-
येलका ईश्वर धन्य होवे कि उसने अपने लोगोंपर दृष्टि
६९ कर उन्होंका उद्धार किया है। और जैसे उसने अपने
पवित्र भविष्यद्वक्ताओंके मुखसे जो आदिसे होते आये
७० हैं कहा। तैसे हमारे लिये अपने सेवक दाऊदके घरानेमें
७१ एक त्राणके सींगको। अर्थात हमारे शत्रुओंसे और हमारे
सब वैरियोंके हाथसे एक बचानेहारेको प्रगट किया है।
७२ इसलिये कि वह हमारे पितरोंके संग दयाका ब्यवहार
७३ करे और अपना पवित्र नियम स्मरण करे। अर्थात वह
७४ किरिया जो उसने हमारे पिता इब्राहीमसे खाई। कि
७५ हमें यह देवे कि हम अपने शत्रुओंके हाथसे बचके। निर्भय
जीवन भर प्रतिदिन उसके सन्मुख पवित्रताई और धर्म्म-
७६ से उसकी सेवा करें। और तू हे बालक सर्ब्बप्रधानका
भविष्यद्वक्ता कहावेगा क्योंकि तू परमेश्वरके आगे जायगा
७७ कि उसके पंथ बनावे। अर्थात हमारे ईश्वरकी महा
करुणासे उसके लोगोंको उन्होंके पापमोचनके द्वारासे

निस्तारका ज्ञान देवे। उसी करुणासे सूर्य्यका उदय रूप- ७८
रसे हमोंपर प्रकाशित हुआ है. कि अंधकारमें और ७९
मृत्युकी छायामें बैठनेहारोंको ज्योति देवे और हमारे
पांव कुशलके मार्गपर सीधे चलावे।
और वह बालक बढ़ा और आत्मामें बलवन्त होता गया ८०
और इस्रायेली लोगोंपर प्रगट होनेके दिनलों जंगली
स्थानोंमें रहा।

## २ दूसरा पर्ब्ब।

१ यूसफका बैतलहममें जाना और यीशुका जन्म। ८ स्वर्गदूतोंका गड़ेरियोंको यीशुके जन्मका सन्देश देना। २१ यीशुको खतना करना और ईश्वरके आगे धरना। २५ शिमियोन और हन्नाका उसे चीन्हना और उसका नासरतको लौटना। ४१ बारह बरसके बयसमें उपदेशकोंके संग उसकी बातचीत।

उन दिनोंमें अगस्त कैसर महाराजाकी ओरसे आज्ञा १
हुई कि उसके राज्यके सब लोगोंके नाम लिखे जावें।
कुरीनियके सुरिया देशके अध्यक्ष होनेके पहिले यह नाम २
लिखाई हुई। और सब लोग नाम लिखानेको अपने ३
अपने नगरको गये। यूसफ भी इसलिये कि वह दाऊदके ४
घराने औ बंशका था. मरियम स्त्रीके संग जिससे ५
उसकी मंगनी हुई थी नाम लिखानेको गालील देशके
नासरत नगरसे यिहूदियामें बैतलहम नाम दाऊदके
नगरको गया. उस समय मरियम गर्भवती थी। उनके ६
वहां रहते उसके जननेके दिन पूरे हुए। और वह ७
अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसको कपड़ेमें लपेटके
चरनीमें रखा क्योंकि उनके लिये सरायमें जगह न थी।

८ उस देशमें कितने गड़ेरिये थे जो खेतमें रहते थे और
९ रातको अपने झुंडका पहरा देते थे। और देखो परमेश्व-
रका एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ और परमेश्व-
रका तेज उनकी चारों ओर चमका और वे बहुत डर
१० गये। दूतने उनसे कहा मत डरो क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े
आनन्दका सुसमाचार सुनाता हूं जिससे सब लोगोंको
११ आनन्द होगा. कि आज दाऊदके नगरमें तुम्हारे लिये
१२ एक त्राणकर्त्ता अर्थात ख्रीष्ट प्रभु जन्मा है। और तुम्हारे
लिये यह पता होगा कि तुम एक बालकको कपड़ेमें ल-
१३ पेटे हुए और चरनीमें पड़े हुए पाओगे। तब अचांचक
स्वर्गीय सेनामेंसे बहुतेरे उस दूतके संग प्रगट हुए और
१४ ईश्वरकी स्तुति करते हुए बोले. सबसे ऊंचे स्थानमें
ईश्वरका गुणानुबाद और पृथिवीपर शांति होय. मनु-
१५ ष्योंपर प्रसन्नता है। ज्योंही दूतगण उन्होंके पाससे स्वर्गको
गये त्योंही गड़ेरियोंने आपसमें कहा आओ हम बैतल-
हमलों जाके यह बात जो हुई है जिसे परमेश्वरने हमोंको
१६ बताया है देखें। और उन्होंने शीघ्र जाके मरियम और
१७ यूसफको और बालकको चरनीमें पड़े हुए पाया। इन्हें
देखके उन्होंने वह बात जो इस बालकके विषयमें उन्होंसे
१८ कही गई थी प्रचार किई। और सब सुननेहारे उन
१९ बातोंसे जो गड़ेरियोंने उनसे कहीं अचंभित हुए। परन्तु
मरियमने इन सब बातोंको अपने मनमें रखा और उन्हें
२० सोचती रही। तब गड़ेरिये जैसा उन्होंसे कहा गया था
तैसाही सब बातें सुनके और देखके उन बातोंके लिये
ईश्वरका गुणानुबाद और स्तुति करते हुए लौट गये।

जब आठ दिन पूरे होनेसे बालकका खतना करना २१
हुआ तब उसका नाम यीशु रखा गया कि वही नाम
उसके गर्भमें पड़नेके आगे दूतसे रखा गया था। और २२
जब मूसाकी व्यवस्थाके अनुसार उनके शुद्ध होनेके दिन
पूरे हुए तब वे बालकको यिरूशलीममें ले गये. कि जैसा २३
परमेश्वरकी व्यवस्थामें लिखा है कि हर एक पहिलौठा
नर परमेश्वरके लिये पवित्र कहावेगा तैसा उसे परमेश्व-
रके आगे धरें. और परमेश्वरकी व्यवस्थाकी बातके अ- २४
नुसार पंडुकोंकी जोड़ी अथवा कपोतके दो बच्चे बलिदान
करें।

तब देखो यिरूशलीममें शिमियोन नाम एक मनुष्य था. २५
वह मनुष्य धर्म्मी और भक्त था और इस्रायेलकी शांति-
की बाट जोहता था और पवित्र आत्मा उसपर था।
पवित्र आत्मासे उसको प्रतिज्ञा दिई गई थी कि जबलों २६
तू परमेश्वरके अभिषिक्त जनको न देखे तबलों मृत्युको
न देखेगा। और वह आत्माकी शिक्षासे मन्दिरमें आया २७
और जब उस बालक अर्थात यीशुके माता पिता उस-
के विषयमें व्यवस्थाके व्यवहारके अनुसार करनेको उसे
भीतर लाये. तब शिमियोनने उसको अपनी गोदीमें २८
लेके ईश्वरका धन्यबाद कर कहा. हे प्रभु अभी तू अपने २९
बचनके अनुसार अपने दासको कुशलसे बिदा करता
है. क्योंकि मेरी आंखोंने तेरे त्राणकर्त्ताको देखा है. जिसे ३० ३१
तूने सब देशोंके लोगोंके सन्मुख तैयार किया है. कि वह ३२
अन्यदेशियोंको प्रकाश करनेको ज्योति और तेरे इस्रा-
येली लोगका तेज होवे। यूसफ और यीशुकी माता इन ३३

बातोंसे जो उसके विषयमें कही गई अचंभा करते
३४ थे। तब शिमियोननें उनको आशीस देके उसकी माता
मरियमसे कहा देख यह तो इस्रायेलमें बहुतोंके गिरने
और फिर उठनेका कारण होगा और एक चिन्ह जिसके
३५ बिरुद्धमें बातें किई जायेंगीं॰ हां तेरा निज प्राण भी
खड्गसे वारपार छिदेगा॰ इससे बहुत हृदयोंके बिचार
प्रगट किये जायेंगे।
३६ और हन्ना नाम एक भविष्यद्वक्ती थी जो आशेरके
कुलके पनूएलकी पुत्री थी॰ वह बहुत बूढ़ी थी और अपने
३७ कुंवारपनसे सात बरस स्वामीके संग रही थी। और
वह बरस चौरासी एककी बिधवा थी जो मन्दिरसे बाहर
न जाती थी परन्तु उपवास औ प्रार्थनासे रात दिन सेवा
३८ करती थी। उसने भी उसी घड़ी निकट आके परमेश्वरका
धन्य माना और यिरूशलीममें जो लोग उद्धारकी बाट
देखते थे उन सभोंसे यीशुके विषयमें बात किई।
३९ जब वे परमेश्वरकी व्यवस्थाके अनुसार सब कुछ कर
४० चुके तब गालीलको अपने नगर नासरतको लौटे। और
बालक बढ़ा और आत्मामें बलवन्त और बुद्धिसे परि-
पूर्ण होता गया और ईश्वरका अनुग्रह उसपर था।
४१ उसके माता पिता बरस बरस निस्तार पर्ब्बमें यिरू-
४२ शलीमको जाते थे। जब वह बारह बरसका हुआ तब
४३ वे पर्ब्बकी रीतिपर यिरूशलीमको गये। और जब वे
पर्ब्बके दिनोंको पूरा करके लौटने लगे तब वह लड़का
यीशु यिरूशलीममें रह गया परन्तु यूसफ और उसकी
४४ माता नहीं जानते थे। वे यह समझके कि वह संग-

वाले पथिकोंके बीचमें है एक दिनकी बाट गये और
अपने कुटुंबों और चिन्हारोंके बीचमें उसको ढूंढ़ने
लगे। परन्तु जब उन्होंने उसको न पाया तब उसे ढूंढ़ते ४५
हुए यिरूशलीमको फिर गये। तीन दिनके पीछे उन्होंने ४६
उसे मन्दिरमें पाया कि उपदेशकोंके बीचमें बैठा हुआ
उनकी सुनता और उनसे प्रश्न करता था। और जो ४७
लोग उसकी सुनते थे सो सब उसकी बुद्धि और उसके
उत्तरोंसे बिस्मित हुए। और वे उसे देखके अचंभित ४८
हुए और उसकी माताने उससे कहा हे पुत्र हमसे क्यों
ऐसा किया॰ देख तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे
ढूंढ़ते थे। उसने उनसे कहा तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते थे॰ क्या ४९
नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिताके विषयोंमें लगा
रहना अवश्य है। परन्तु उन्होंने यह बात जो उसने ५०
उनसे कही न समझी। तब वह उनके संग चला और ५१
नासरतमें आया और उनके बशमें रहा और उसकी
माताने इन सब बातोंको अपने मनमें रखा। और ५२
यीशुकी बुद्धि और डील और उसपर ईश्वरका और मनु-
ष्योंका अनुग्रह बढ़ता गया।

## ३ तीसरा पर्व्व।

१ योहन डूब देनेहारेका वृत्तान्त। ७ उसका उपदेश और भविष्यद्वाक्य। १९ उसका बन्दीगृहमें डाला जाना। २१ यीशुका डूब लेना। २३ उसकी बंशावलि।

तिबरिय कैसरके राज्यके पन्द्रहवें बरसमें जब पन्तिय १
पिलात यिहूदियाका अध्यक्ष था और हेरोद एक
चौथाई अर्थात गालीलका राजा और उसका भाई

फिलिप एक चौथाई अर्थात इतूरिया और चाखोनीतिया
देशोंका राजा और लुसानिय एक चौथाई अर्थात अबि-
२ लीनी देशका राजा था. और जब हन्नस और कियाफा
महायाजक थे तब ईश्वरका बचन जंगलमें जिखरियाहके
३ पुत्र योहन पास आया। और वह यर्दन नदीके आस-
पासके सारे देशमें आके पापमोचनके लिये पश्चात्तापके
४ डूबका उपदेश करने लगा। जैसे यिशैयाह भविष्यद्वक्ताके
कहे हुए पुस्तकमें लिखा है कि किसीका शब्द हुआ
जो जंगलमें पुकारता है कि परमेश्वरका पन्थ बनाओ
५ उसके राजमार्ग सीधे करो। हर एक नाला भरा जायगा
और हर एक पर्ब्बत और टीला नीचा किया जायगा और
टेढ़े पन्थ सीधे और ऊंचनीच मार्ग चौरस बन जायेंगे।
६ और सब प्राणी ईश्वरके त्राणको देखेंगे।
७ तब बहुत लोग जो उससे डूब लेनेको निकल आये
उन्होंसे योहनने कहा हे सांपोंके बंश किसने तुम्हें
८ आनेवाले क्रोधसे भागनेको चिताया है। पश्चात्तापके
योग्य फल लाओ और अपने अपने मनमें मत कहने
लगो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुमसे
कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरोंसे इब्राहीमके लिये सन्तान
९ उत्पन्न कर सकता है। और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ोंकी
जड़पर लगी है इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं
फलता है सो काटा जाता और आगमें डाला जाता
१०
११ है। तब लोगोंने उससे पूछा तो हम क्या करें। उसने
उन्हें उत्तर दिया कि जिस पास दो अंगे हों सो जिस पास
न हो उसके साथ बांट लेवे और जिस पास भोजन होय

सो भी वैसाही करे। कर उगाहनेहारे भी डूब लेनेको १२
आये और उससे बोले हे गुरु हम क्या करें। उसने उनसे १३
कहा जो तुम्हें ठहराया गया है उससे अधिक मत ले लो।
योद्धाओंने भी उससे पूछा हम क्या करें. उसने उनसे १४
कहा किसीपर उपद्रव मत करो और न झूठे दोष लगाओ
और अपने वेतनसे सन्तुष्ट रहो।

जब लोग आस देखते थे और सब अपने अपने मनमें १५
योहनके विषयमें बिचार करते थे कि होय न होय
यही ख्रीष्ट है. तब योहननें सभोंको उत्तर दिया कि मैं तो १६
तुम्हें जलमें डूब देता हूं परन्तु वह आता है जो मुझसे
अधिक शक्तिमान है मैं उसके जूतोंका बंध खोलनेके योग्य
नहीं हूं वह तुम्हें पवित्र आत्मामें और आगमें डूब देगा।
उसका सूप उसके हाथमें है और वह अपना सारा ख- १७
लिहान शुद्ध करेगा और गेहूंको अपने खत्तेमें एकट्ठा
करेगा परन्तु भूसीको उस आगसे जो नहीं बुझती है ज-
लावेगा। उसने बहुत और बातोंका भी उपदेश करके १८
लोगोंको सुसमाचार सुनाया।

पर उसने चैाथाईके राजा हेरोदको उसके भाई १९
फिलिपकी स्त्री हेरोदियाके विषयमें और सब कुकर्म्मोंके
विषयमें जो उसने किये थे उलहना दिया। इसलिये २०
हेरोदनें उन सभोंके उपरांत यह कुकर्म्म भी किया कि
योहनको बन्दीगृहमें मूंद रखा।

सब लोगोंके डूब लेनेके पीछे जब यीशुने भी डूब लिया २१
था और प्रार्थना करता था तब स्वर्ग खुल गया। और २२
पवित्र आत्मा देही रूपमें कपोतकी नाईं उसपर उतरा

और यह आकाशबाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुच है मैं
तुझसे अति प्रसन्न हूं ।
२३ और यीशु आप तीस बरसके अटकल होने लगा
२४ और लोगोंकी समझमें यूसफका पुच था । यूसफ एली-
का पुच था वह मत्तातका पुच वह लेवीका वह मलकि-
२५ का वह यान्नाका वह यूसफका. वह मत्तथियाहका वह
आमोसका वह नहूमका वह इसलिका वह नग्गईका.
२६ वह माटका वह मत्तथियाहका वह शिमिईका वह यूसफका
२७ वह यिहूदाका. वह योहानाका वह रीसाका वह जिरु-
२८ बाबुलका वह शलतियेलका वह नेरिका. वह मलकिका
वह अद्दीका वह कोसमका वह इलमोददका वह एरका.
२९ वह योशीका वह इलियेजरका वह योरीमका वह म-
३० त्तातका वह लेवीका. वह शिमियोनका वह यिहूदाका
३१ वह यूसफका वह योननका वह इलियाकीमका. वह
मिलेयाका वह मैननका वह मत्तथका वह नाथनका वह
३२ दाऊदका. वह यिशीका वह ओबेदका वह बोअसका
३३ वह सलमोनका वह नहशोनका. वह अम्मीनादबका
वह अरामका वह हिस्रोनका वह पेरसका वह यिहू-
३४ दाका. वह याकूबका वह इसहाकका वह इब्राहीमका
३५ वह तेराहका वह नाहोरका. वह सिरूगका वह रियूका
३६ वह पेलगका वह एबरका वह शेलहका. वह कैननका
वह अर्फकसदका वह शेमका वह नूहका वह लमकका.
३७ वह मियूशलहका वह हनोकका वह येरदका वह महलले-
३८ लका वह कैननका. वह इनोशका वह शेतका वह आ-
दमका वह ईश्वरका ।

## ४ चौथा पर्व्व।

१ यीशुकी परीक्षा। १४ उसका उपदेश करना। १६ नासरतके लोगोंको कथा सुनाना। ३१ एक भूतग्रस्त मनुष्यको चंगा करना। ३८ पितरकी सासको चंगा करना। ४० बहुत रोगियोंको चंगा करना। ४२ नगर नगरमें उपदेश करना।

यीशु पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हो यर्दनसे फिरा और १
आत्माकी शिक्षासे जंगलमें गया। और चालीस दिन २
शैतानसे उसकी परीक्षा किई गई और उन दिनोंमें उ-
सने कुछ नहीं खाया पर पीछे उनके पूरे होनेपर भूखा
हुआ। तब शैतानने उससे कहा जो तू ईश्वरका पुत्र है ३
तो इस पत्थरसे कह दे कि रोटी बन जाय। यीशुने उस- ४
को उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटीसे नहीं
परन्तु ईश्वरकी हर एक बातसे जीयेगा। तब शैतानने उसे ५
एक ऊंचे पर्व्वतपर ले जाके उसको पल भरमें जगतके सब
राज्य दिखाये। और शैतानने उससे कहा मैं यह सब ६
अधिकार और इन्होंका बिभव तुझे देऊंगा क्योंकि वह
मुझे सोंपा गया है और मैं उसे जिसको चाहता हूं
उसको देता हूं। इसलिये जो तू मुझे प्रणाम करे तो सब ७
तेरा होगा। यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे शैतान ८
मेरे साम्हनेसे दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर
अपने ईश्वरको प्रणाम कर और केवल उसीकी सेवा
कर। तब उसने उसको यिरूशलीममें ले जाके मन्दिरके ९
कलशपर खड़ा किया और उससे कहा जो तू ईश्वरका
पुत्र है तो अपनेको यहांसे नीचे गिरा. क्योंकि लिखा है १०

कि वह तेरे विषयमें अपने दूतोंको आज्ञा देगा कि वे
११ तेरी रक्षा करें. और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो
१२ कि तेरे पांवमें पत्थरपर चोट लगे। यीशुने उसको उत्तर
दिया यह भी कहा गया है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर-
१३ को परीक्षा मत कर। जब शैतान सब परीक्षा कर चुका
तब कुछ समयके लिये उसके पाससे चला गया।
१४ यीशु आत्माकी शक्तिसे गालीलको फिर गया और
१५ उसकी कीर्त्ति आसपासके सारे देशमें फैल गई। और
उसने उनकी सभाओंमें उपदेश किया और सभोंने उ-
सकी बड़ाई किई।
१६ तब वह नासरतको आया जहां पाला गया था और
अपनी रीतिपर बिश्रामके दिन सभाके घरमें जाके पढ़ने-
१७ को खड़ा हुआ। यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका पुस्तक उसको
दिया गया और उसने पुस्तक खोलके वह स्थान पाया
१८ जिसमें लिखा था. कि परमेश्वरका आत्मा मुझपर है
इसलिये कि उसने मुझे अभिषेक किया है कि कंगालोंको
१९ सुसमाचार सुनाऊं. उसने मुझे भेजा है कि जिनके मन
चूर हैं उन्हें चंगा करूं और बंधुओंको छूटनेकी और
अंधोंको दृष्टि पानेकी बार्त्ता सुनाऊं और पेरे हुओंका
निस्तार करूं और परमेश्वरके ग्राह्य बरसका प्रचार
२० करूं। तब वह पुस्तक लपेटके सेवकके हाथमें देके बैठ
गया और सभामें सब लोगोंकी आंखें उसे तक रहीं।
२१ तब वह उन्होंसे कहने लगा कि आजही धर्म्मपुस्तकका
२२ यह बचन तुम्हारे सुननेमें पूरा हुआ है। और सभोंने
उसको सराहा और जो अनुग्रहकी बातें उसके मुखसे

निकलीं उनसे अचंभा किया और कहा क्या यह यूसफ-
का पुत्र नहीं है। उसने उन्होंसे कहा तुम अवश्य मुझसे २३
यह दृष्टान्त कहोगे कि हे वैद्य अपनेको चंगा कर. जो
कुछ हमोंने सुना है कि कफर्नाहुममें किया गया सो
यहां अपने देशमें भी कर। और उसने कहा मैं तुमसे २४
सच कहता हूं कोई भविष्यद्वक्ता अपने देशमें ग्राह्य नहीं
होता है। और मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि एलियाहके २५
दिनोंमें जब आकाश साढ़े तीन बरस बन्द रहा यहांलों
कि सारे देशमें बड़ा अकाल पड़ा तब इस्रायेलमें बहुत
बिधवा थीं। परन्तु एलियाह उन्होंमेंसे किसीके पास नहीं २६
भेजा गया केवल सीदोन देशके सारिफत नगरमें एक
बिधवाके पास। और इलीशा भविष्यद्वक्ताके समयमें २७
इस्रायेलमें बहुत कोढ़ी थे परन्तु उन्होंमेंसे कोई शुद्ध नहीं
किया गया केवल सुरिया देशका नामान। यह बातें २८
सुनके सब लोग सभामें क्रोधसे भर गये. और उठके २९
उसको नगरसे बाहर निकालके जिस पर्ब्बतपर उनका
नगर बना हुआ था उसकी चोटीपर ले चले कि उसको
नीचे गिरा देवें। परन्तु वह उन्होंके बीचमेंसे होके निक- ३०
ला और चला गया।

और उसने गालीलके कफर्नाहुम नगरमें जाके बिश्रा- ३१
मके दिन लोगोंको उपदेश दिया। वे उसके उपदेशसे ३२
अचंभित हुए क्योंकि उसका बचन अधिकार सहित था।
सभाके घरमें एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूतका आत्मा ३३
लगा था। उसने बड़े शब्दसे चिल्लाके कहा हे यीशु ३४
नासरी रहने दीजिये आपको हमसे क्या काम. क्या आप

हमें नाश करने आये हैं. मैं आपको जानता हूं आप कौन
३५ हैं ईश्वरके पवित्र जन। यीशुने उसको डांटके कहा चुप रह
और उसमेंसे निकल आ. तब भूत उस मनुष्यको बीचमें
गिराके उसमेंसे निकल आया और उसकी कुछ हानि न
३६ किई। इसपर सभोंको अचंभा हुआ और वे आपसमें बात
करके बोले यह कौनसी बात है कि वह प्रभाव और परा-
क्रमसे अशुद्ध भूतोंको आज्ञा देता है और वे निकल आते
३७ हैं। सो उसकी कीर्त्ति आसपासके देशमें सर्व्वत्र फैल गई।
३८ सभाके घरमेंसे उठके उसने शिमोनके घरमें प्रवेश
किया और शिमोनकी सास बड़े ज्वरसे पीड़ित थी और
३९ उन्होंने उसके लिये उससे बिन्ती किई। उसने उसके
निकट खड़ा हो ज्वरको डांटा और वह उसे छोड़ गया
और वह तुरन्त उठके उनकी सेवा करने लगी।
४० सूर्य्य डूबते हुए जिन्होंके पास दुःखी लोग नाना प्रका-
रके रोगोंमें पड़े थे वे सब उन्हें उस पास लाये और
४१ उसने एक एकपर हाथ रखके उन्हें चंगा किया। भूत भी
चिल्लाते और यह कहते हुए कि आप ईश्वरके पुत्र ख्रीष्ट
हैं बहुतोंमेंसे निकले परन्तु उसने उन्हें डांटा और बोलने
न दिया क्योंकि वे जानते थे कि वह ख्रीष्ट है।
४२ बिहान हुए वह निकलके जंगली स्थानमें गया और
लोगोंने उसको ढूंढा और उस पास आके उसे रोकने
४३ लगे कि वह उनके पाससे न जाय। परन्तु उसने उन्होंसे
कहा मुझे और और नगरोंमें भी ईश्वरके राज्यका सुसमा-
४४ चार सुनाना होगा क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूं। सो
उसने गालीलकी सभाओंमें उपदेश किया।

## ५ पांचवां पर्व्व।

१ यीशुका अद्भुत रीतिसे बहुत मछलियोंको पकड़वाना और शिमोनको बुलाना। १२ एक कोढ़ीको चंगा करना। १७ एक अर्द्धांगीको चंगा करना और उसका पाप क्षमा करना। २७ लेवी अर्थात मत्तीको बुलाना और पापियोंके संग भोजन करना। ३३ उपवास करनेका ब्योरा बताना।

एक दिन बहुत लोग ईश्वरका बचन सुननेको यीशुपर १
गिरे पड़ते थे और वह गिनेसरतकी झीलके पास खड़ा
था। और उसने दो नाव झीलके तीरपर लगी देखीं २
और मछुवे उनपरसे उतरके जालोंको धोते थे। उन ३
नावोंमेंसे एकपर जो शिमोनकी थी चढ़के उसने उससे
बिन्ती किई कि तीरसे थोड़ी दूर ले जाय और उसने
बैठके नावपरसे लोगोंको उपदेश दिया। जब वह बात ४
कर चुका तब शिमोनसे कहा गहिरेमें ले जा और
मछलियां पकड़नेको अपने जालोंको डालो। शिमोनने ५
उसको उत्तर दिया कि हे गुरु हमने सारी रात परिश्रम
किया और कुछ नहीं पकड़ा तौभी आपकी बातपर
मैं जाल डालूंगा। जब उन्होंने ऐसा किया तब बहुत ६
मछलियां बझाईं और उनका जाल फटने लगा। इसपर ७
उन्होंने अपने साझियोंको जो दूसरी नावपर थे सैन
किया कि वे आके उनकी सहायता करें और उन्होंने
आके दोनों नाव ऐसी भरीं कि वे डूबने लगीं। यह ८
देखके शिमोन पितर यीशुके गोड़ोंपर गिरा और कहा
हे प्रभु मेरे पाससे जाइये मैं पापी मनुष्य हूं। क्योंकि वह ९
और उसके सब संगी लोग इन मछलियोंके बझ जानेसे

१० जो उन्होंने पकड़ी थीं बिस्मित हुए। और वैसेही जब-
दीके पुत्र याकूब और योहन भी जो शिमोनके साझी थे
बिस्मित हुए. तब यीशुने शिमोनसे कहा मत डर अबसे
११ तू मनुष्योंको पकड़ेगा। और वे नावोंको तीरपर लाके
सब कुछ छोड़के उसके पीछे हो लिये।
१२ जब वह एक नगरमें था तब देखो एक मनुष्य कोढ़से
भरा हुआ वहां था और वह यीशुको देखके मुंहके बल
गिरा और उससे बिन्ती किई कि हे प्रभु जो आप चाहें
१३ तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं। उसने हाथ बढ़ा उसे छूके
कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा. और उसका कोढ़
१४ तुरन्त जाता रहा। तब उसने उसे आज्ञा दिई कि कि-
सीसे मत कह परन्तु जाके अपने तईं याजकको दिखा
और अपने शुद्ध होनेके विषयमेंका चढ़ावा जैसा मूसाने
आज्ञा दिई तैसा लोगोंपर साक्षी होनेके लिये चढ़ा।
१५ परन्तु यीशुकी कीर्त्ति अधिक फैल गई और बहुतेरे लोग
सुननेको और उससे अपने रोगोंसे चंगे किये जानेको
१६ एकट्ठे हुए। और उसने जंगली स्थानोंमें अलग जाके
प्रार्थना किई।
१७ एक दिन वह उपदेश करता था और फरीशी और
व्यवस्थापक लोग जो गालील और यिहूदियाके हर एक
गांवसे और यिरूशलीमसे आये थे वहां बैठे थे और
१८ उन्हें चंगा करनेको प्रभुका सामर्थ्य प्रगट हुआ। और
देखो लोग एक मनुष्यको जो अर्द्धांगी था खाटपर लाये
और वे उसको भीतर ले जाने और यीशुके आगे रखने
१९ चाहते थे। परन्तु जब भीड़के कारण उसे भीतर ले

जानेका कोई उपाय उन्हें न मिला तब उन्होंने कोठेपर
चढ़के उसको खाट समेत छतमेंसे बीचमें यीशुके आगे
उतार दिया। उसने उन्होंका बिश्वास देखके उससे कहा २०
हे मनुष्य तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। तब अध्यापक २१
और फरीशी लोग बिचार करने लगे कि यह कौन है
जो ईश्वरकी निन्दा करता है. ईश्वरको छोड़ कौन पापों-
को क्षमा कर सकता है। यीशुने उनके मनकी बातें २२
जानके उनको उत्तर दिया कि तुम लोग अपने अपने
मनमें क्या क्या बिचार करते हो। कौन बात सहज है २३
यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह
कहना कि उठ और चल। परन्तु जिस्तें तुम जानो कि २४
मनुष्यके पुत्रको पृथिवीपर पाप क्षमा करनेका अधिकार
है (उसने उस अर्द्धांगीसे कहा) मैं तुझसे कहता हूं उठ
अपनी खाट उठाके अपने घरको जा। वह तुरन्त उन्होंके २५
साम्ने उठके जिसपर वह पड़ा था उसको उठाके ईश्वरकी
स्तुति करता हुआ अपने घरको चला गया। तब सब २६
लोग बिस्मित हुए और ईश्वरकी स्तुति करने लगे और
अति भयमान होके बोले हमने आज अनोखी बातें
देखी हैं।

इसके पीछे यीशुने बाहर जाके लेवी नाम एक कर २७
उगाहनेहारेको कर उगाहनेके स्थानमें बैठे देखा और
उससे कहा मेरे पीछे आ। वह सब कुछ छोड़के उठा २८
और उसके पीछे हो लिया। और लेवीने अपने घरमें २९
उसके लिये बड़ा भोज बनाया और बहुत कर उगाहने-
हारे और बहुतसे और लोग थे जो उनके संग भोजनपर

३० बैठे। तब उन्होंके अध्यापक और फरीशी उसके शिष्योंपर
कुड़कुड़ाके बोले तुम कर उगाहनेहारों और पापियोंके
३१ संग क्यों खाते और पीते हो। योशुने उनको उत्तर
दिया कि निरोगियोंको वैद्यका प्रयोजन नहीं है परन्तु
३२ रोगियोंको। मैं धर्म्मियोंको नहीं परन्तु पापियोंको पश्चा-
त्तापके लिये बुलाने आया हूं।
३३ और उन्होंने उससे कहा योहनके शिष्य क्यों बार बार
उपवास और प्रार्थना करते हैं और वैसेही फरीशियोंके
३४ शिष्य भी परन्तु आपके शिष्य खाते और पीते हैं। उसने
उनसे कहा जब दूल्हा सखाओंके संग है तब क्या तुम
३५ उनसे उपवास करवा सकते हो। परन्तु वे दिन आवेंगे
जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया जायगा तब वे उन
३६ दिनोंमें उपवास करेंगे। उसने एक दृष्टान्त भी उनसे
कहा कि कोई मनुष्य नये कपड़ेका टुकड़ा पुराने बस्त्रमें
नहीं लगाता है नहीं तो नया कपड़ा उसे फाड़ता है
और नये कपड़ेका टुकड़ा पुरानेमें मिलता भी नहीं।
३७ और कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पोंमें नहीं
भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पोंको फाड़ेगा और
३८ वह आप बह जायगा और कुप्पे नष्ट होंगे। परन्तु नया
दाख रस नये कुप्पोंमें भरा चाहिये तब दोनोंकी रक्षा
३९ होती है। कोई मनुष्य पुराना दाख रस पीके तुरन्त
नया नहीं चाहता है क्योंकि वह कहता है पुराना ही
अच्छा है।

## ६ छठवां पर्व्व।

१ यीशुका बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना। १२ बारह प्रेरितोंको ठहराना। १७ बक्षत रोगियोंको चंगा करना। २० धन्य कौन हैं इसके विषयमें यीशुका उपदेश। २७ शत्रुओंको प्रेम करनेका उपदेश और लड़ाई करनेका निषेध। ३७ दूसरोंपर दोष लगानेका निषेध और झूठे उपदेशकोंका निर्णय। ४३ मनके स्वभावका दृष्टान्त। ४६ घरकी नेव डालनेका दृष्टान्त।

पर्व्वके दूसरे दिनके पीछे बिश्रामके दिन यीशु खेतोंमें १
होके जाता था और उसके शिष्य बालें तोड़के हाथोंमें
मल मलके खाने लगे। तब कई एक फरीशियोंने उनसे २
कहा जो काम बिश्रामके दिनमें करना उचित नहीं है
सो क्यों करते हो। यीशुने उनको उत्तर दिया क्या तुमने ३
यह नहीं पढ़ा है कि दाऊदने जब वह और उसके संगी
लोग भूखे हुए तब क्या किया, उसने क्योंकर ईश्वरके ४
घरमें जाके भेंटकी रोटियां लेके खाईं जिन्हें खाना और
किसीको नहीं केवल याजकोंको उचित है और अपने
संगियोंको भी दिईं। और उसने उनसे कहा मनुष्यका ५
पुत्र बिश्रामवारका भी प्रभु है।

दूसरे बिश्रामवारको भी वह सभाके घरमें जाके उप- ६
देश करने लगा और वहां एक मनुष्य था जिसका दहिना
हाथ सूख गया था। अध्यापक और फरीशी लोग उसमें ७
दोष ठहरानेके लिये उसे ताकते थे कि वह बिश्रामके
दिनमें चंगा करेगा कि नहीं। पर वह उनके मनकी ८
बातें जानता था और सूखे हाथवाले मनुष्यसे कहा उठ
बीचमें खड़ा हो, वह उठके खड़ा हुआ। तब यीशुने ९

उन्होंसे कहा मैं तुमसे एक बात पूछूंगा क्या बिश्रामके
दिनोंमें भला करना अथवा बुरा करना प्राणको बचाना
१० अथवा नाश करना उचित है। और उसने उन सभोंपर
चारों ओर दृष्टि कर उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ
बढ़ा. उसने ऐसा किया और उसका हाथ फिर दूसरेकी
११ नाईं भला चंगा हो गया। पर वे बड़े क्रोधसे भर गये
और आपसमें बोले हम यीशुको क्या करें।
१२ उन दिनोंमें वह प्रार्थना करनेको पर्व्वतपर गया और
१३ ईश्वरसे प्रार्थना करनेमें सारी रात बिताई। जब बिहान
हुआ तब उसने अपने शिष्योंको अपने पास बुलाके उन-
मेंसे बारह जनोंको चुना जिनका नाम उसने प्रेरित भी
१४ रखा. अर्थात शिमोनको जिसका नाम उसने पितर भी
रखा औ उसके भाई अन्द्रियको और याकूब औ योह-
१५ नको और फिलिप औ बर्थलमईको. और मत्ती औ
थोमाको और अलफईके पुत्र याकूबको औ शिमोनको
१६ जो उद्योगी कहावता है. और याकूबके भाई यिहूदाको
औ यिहूदा इस्करियोतीको जो बिश्वासघातक हुआ।
१७ तब वह उनके संग उतरके चौरस स्थानमें खड़ा हुआ
और उसके बहुत शिष्य भी थे और लोगोंकी बड़ी भीड़
सारे यिहूदियासे और यिरूशलीमसे और सोर औ
सीदोनके समुद्रके तीरसे जो उसकी सुननेको और अपने
१८ रोगोंसे चंगे किये जानेको आये थे. और अशुद्ध भूतोंके
१९ सताये हुए लोग भी. और वे चंगे किये जाते थे। और
सब लोग उसे छूने चाहते थे क्योंकि शक्ति उससे निकलती
थी और सभोंको चंगा करती थी।

तब उसने अपने शिष्योंकी ओर दृष्टि कर कहा धन्य २०
तुम जो दीन हो क्योंकि ईश्वरका राज्य तुम्हारा है। धन्य २१
तुम जो अब भूखे हो क्योंकि तुम तृप्त किये जाओगे.
धन्य तुम जो अब रोते हो क्योंकि तुम हंसोगे। धन्य तुम २२
हो जब मनुष्य तुमसे बैर करें और जब वे मनुष्यके
पुत्रके लिये तुम्हें अलग करें और तुम्हारी निन्दा करें
और तुम्हारा नाम दुष्टसा दूर करें। उस दिन आनन्दित २३
हो और उछलो क्योंकि देखो तुम स्वर्गमें बहुत फल
पाओगे. उनके पितरोंने भविष्यद्वक्ताओंसे वैसाही
किया। परन्तु हाय तुम जो धनवान हो क्योंकि तुम २४
अपनी शांति पा चुके हो। हाय तुम जो भरपूर हो २५
क्योंकि तुम भूखे होगे. हाय तुम जो अब हंसते हो क्योंकि
तुम शोक करोगे और रोओगे। हाय तुम लोग जब सब २६
मनुष्य तुम्हारे विषयमें भला कहें. उनके पितरोंने झूठे
भविष्यद्वक्ताओंसे वैसाही किया।

और भी मैं तुम्होंसे जो सुनते हो कहता हूं कि अपने २७
शत्रुओंको प्यार करो. जो तुमसे बैर करें उनसे भलाई
करो। जो तुम्हें स्राप देवें उनको आशीस देओ और जो २८
तुम्हारा अपमान करें उनके लिये प्रार्थना करो। जो २९
तुझे एक गालपर मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे
और जो तेरा दोहर छीन लेवे उसको अंगा भी लेनेसे
मत बर्ज। जो कोई तुझसे मांगे उसको दे और जो तेरी ३०
बस्तु छीन लेवे उससे फिर मत मांग। और जैसा तुम ३१
चाहते हो कि मनुष्य तुमसे करें तुम भी उनसे वैसाही
करो। जो तुम उनसे प्रेम करो जो तुमसे प्रेम करते हैं ३२

तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी अपने प्रेम
३३ करनेहारोंसे प्रेम करते हैं। और जो तुम उनसे भलाई
करो जो तुमसे भलाई करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई
३४ क्योंकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। और जो तुम उन्हें
ऋण देओ जिनसे फिर पानेकी आशा रखते हो तो
तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी पापियोंको ऋण
३५ देते हैं कि उतना फिर पावें। परन्तु अपने शत्रुओंको
प्यार करो औ भलाई करो और फिर पानेकी आशा
न रखके ऋण देओ और तुम बहुत फल पाओगे और
सर्व्वप्रधानके सन्तान होगे क्योंकि वह उन्होंपर जो धन्य
३६ नहीं मानते हैं और दुष्टोंपर कृपाल है। सो जैसा
तुम्हारा पिता दयावन्त है तैसे तुम भी दयावन्त होओ।
३७ दूसरोंका बिचार मत करो तो तुम्हारा बिचार न
किया जायगा, दोषी मत ठहराओ तो तुम दोषी न
ठहराये जाओगे, क्षमा करो तो तुम्हारी क्षमा किई
३८ जायगी। देओ तो तुमको दिया जायगा, लोग पूरा नाप
दबाया और हिलाया हुआ और उभरता हुआ तुम्हारी
गोदमें देंगे क्योंकि जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे
३९ तुम्हारे लिये भी नापा जायगा। फिर उसने उनसे एक
दृष्टान्त कहा क्या अन्धा अन्धेको मार्ग बता सकता है, क्या
४० दोनों गढ़ेमें नहीं गिरेंगे। शिष्य अपने गुरुसे बड़ा नहीं
है परन्तु जो कोई सिद्ध होवे सो अपने गुरुके समान
४१ होगा। जो तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है उसे तू क्यों
देखता है और जो लट्ठा तेरेही नेत्रमें है सो तुझे नहीं
४२ सूझता। अथवा तू जो आप अपने नेत्रमेंका लट्ठा नहीं

देखता है क्योंकर अपने भाईसे कह सकता है कि हे
भाई रहिये मैं यह तिनका जो तेरे नेत्रमें है निकालूं.
हे कपटी पहिले अपने नेत्रसे लट्ठा निकाल दे तब जो
तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है उसे निकालनेको तू अच्छी
रीतिसे देखेगा।

कोई अच्छा पेड़ नहीं है जो निकम्मा फल फले और ४३
कोई निकम्मा पेड़ नहीं है जो अच्छा फल फले। हर एक ४४
पेड़ अपनेही फलसे पहचाना जाता है क्योंकि लोग
कांटोंके पेड़से गूलर नहीं तोड़ते और न कटैले झूड़से
दाख तोड़ते हैं। भला मनुष्य अपने मनके भले भंडारसे ४५
भली बात निकालता है और बुरा मनुष्य अपने मनके
बुरे भंडारसे बुरी बात निकालता है क्योंकि जो मनमें
भरा है सोई उसका मुंह बोलता है।

तुम मुझे हे प्रभु हे प्रभु क्यों पुकारते हो और जो मैं ४६
कहता हूं सो नहीं करते। जो कोई मेरे पास आके मेरी ४७
बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं तुम्हें बताऊंगा वह किसके
समान है। वह एक मनुष्यके समान है जो घर बनाता ४८
था और उसने गहरे खोदके पत्थरपर नेव डाली और
जब बाढ़ आई तब धारा उस घरपर लगी पर उसे
हिला न सकी क्योंकि उसकी नेव पत्थरपर डाली गई
थी। परन्तु जो सुनके पालन न करे सो एक मनुष्यके ४९
समान है जिसने मिट्टीपर बिना नेवका घर बनाया
जिसपर धारा लगी और वह तुरन्त गिर पड़ा और
उस घरका बड़ा बिनाश हुआ।

# ७ सातवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका एक शतपतिके दासको चंगा करना । ११ नाइन नगरकी बिध-
वाके पुत्रको जिलाना । १८ योहनके शिष्योंको उत्तर देना । २४ यो-
हनके विषयमें उसकी साक्षी । ३१ उस समयके लोगोंकी उपमा । ३६
एक पापिनीके विषयमें शिमोन फरीशीसे उसकी बातचीत ।

१ जब यीशु लोगोंको अपनी सब बातें सुना चुका तब
२ कफर्नाहुममें प्रवेश किया । और किसी शतपतिका एक
३ दास जो उसका प्रिय था रोगी हो मरनेपर था । शत-
पतिने यीशुका चर्चा सुनके यिहूदियोंके कई एक
प्राचीनोंको उससे यह बिन्ती करनेको उस पास भेजा
४ कि आके मेरे दासको चंगा कीजिये । उन्होंने यीशु पास
आके उससे बड़े यत्नसे बिन्ती किई और कहा आप
५ जिसके लिये यह काम करेंगे सो इसके योग्य है । क्योंकि
वह हमारे लोगसे प्रेम करता है और उसीने सभाका
६ घर हमारे लिये बनाया । तब यीशु उनके संग गया और
वह घरसे दूर न था कि शतपतिने उस पास मित्रोंको
भेजके उससे कहा हे प्रभु दुःख न उठाइये क्योंकि मैं इस
७ योग्य नहीं कि आप मेरे घरमें आवें । इसलिये मैंने
अपनेको आपके पास जानेके भी योग्य नहीं समझा
परन्तु बचन कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा ।
८ क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे बशमें हैं
और मैं एकको कहता हूं जा तो वह जाता है और
दूसरेको आ तो वह आता है और अपने दासको यह
९ कर तो वह करता है । यह सुनके यीशुने उस मनुष्यपर

अचंभा किया और मुंह फेरके जो बहुत लोग उसके
पीछेसे आते थे उन्होंसे कहा मैं तुमसे कहता हूं कि मैंने
इस्रायेली लोगोंमें भी ऐसा बड़ा बिश्वास नहीं पाया
है। और जो लोग भेजे गये उन्होंने जब घरको लौटे तब १०
उस रोगी दासको चंगा पाया।

दूसरे दिन यीशु नाइन नाम एक नगरको जाता था ११
और उसके अनेक शिष्य और बहुतेरे लोग उसके संग
जाते थे। ज्योंही वह नगरके फाटकके पास पहुंचा त्योंही १२
देखो लोग एक मृतकको बाहर ले जाते थे जो अपनी
मांका एकलौता पुत्र था और वह बिधवा थी और नगरके
बहुत लोग उसके संग थे। प्रभुने उसको देखके उसपर १३
दया किई और उससे कहा मत रो। तब उसने निकट १४
आके अर्थीको छूआ और उठानेहारे खड़े हुए और
उसने कहा हे जवान मैं तुझसे कहता हूं उठ। तब मृतक १५
उठ बैठा और बोलने लगा और यीशुने उसे उसकी
मांको सोंप दिया। इससे सभोंको भय हुआ और वे १६
ईश्वरकी स्तुति करके बोले कि हमारे बीचमें बड़ा भवि-
ष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है और कि ईश्वरने अपने लोगोंपर
दृष्टि किई है। और उसके विषयमें यह बात सारे १७
यिहूदियामें और आसपासके सारे देशमें फैल गई।

योहनके शिष्योंने इन सब बातोंके विषयमें योहनसे १८
कहा। तब उसने अपने शिष्योंमेंसे दो जनोंको बुलाके १९
यीशु पास यह कहनेको भेजा कि जो आनेवाला था सो
क्या आपही हैं अथवा हम दूसरेकी बाट जोहें। उन २०
मनुष्योंने उस पास आ कहा योहन डूब देनेहारेने हमें

आपके पास यह कहनेको भेजा है कि जो आनेवाला था
२१ सो क्या आपही हैं अथवा हम दूसरेकी बाट जोहें। उसी
घड़ी यीशुने बहुतोंको जो रोगों और पीड़ाओं और दुष्ट
भूतोंसे दुःखी थे चंगा किया और बहुतसे अन्धोंको
२२ नेत्र दिये। और उसने उन्होंको उत्तर दिया कि जो कुछ
तुमने देखा और सुना है सो जाके योहनसे कहो कि
अन्धे देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं
बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालोंको
२३ सुसमाचार सुनाया जाता है। और जो कोई मेरे विष-
यमें ठोकर न खावे सो धन्य है।
२४ जब योहनके दूत लोग चले गये तब यीशु योहनके
विषयमें लोगोंसे कहने लगा तुम जंगलमें क्या देखनेको
२५ निकले क्या पवनसे हिलते हुए नरकटको। फिर तुम
क्या देखनेको निकले क्या सूक्ष्म वस्त्र पहिने हुए मनुष्य-
को. देखो जो भड़कीला वस्त्र पहिनते और सुखसे रहते
२६ हैं सो राजभवनोंमें हैं। फिर तुम क्या देखनेको निकले
क्या भविष्यद्वक्ताको. हां मैं तुमसे कहता हूं एक मनुष्यको
२७ जो भविष्यद्वक्तासे भी अधिक है। यह वही है जिसके
विषयमें लिखा है कि देख मैं अपने दूतको तेरे आगे
२८ भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा। मैं तुमसे
कहता हूं कि जो स्त्रियोंसे जन्मे हैं उनमेंसे योहन डूब
देनेहारेसे बड़ा भविष्यद्वक्ता कोई नहीं है परन्तु जो
२९ ईश्वरके राज्यमें अति छोटा है सो उससे बड़ा है। और
सब लोगोंने जिन्होंने सुना और कर उगाहनेहारोंने
३० योहनसे डूब लेके ईश्वरको निर्दोष ठहराया। परन्तु

फरीशियों और व्यवस्थापकोंने उससे डूब न लेके ईश्वरके
अभिप्रायको अपने विषयमें टाल दिया।
तब प्रभुने कहा मैं इस समयके लोगोंकी उपमा ३१
किससे देऊंगा वे किसके समान हैं। वे बालकोंके समान ३२
हैं जो बाजारमें बैठके एक दूसरेको पुकारके कहते हैं
हमने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे
हमने तुम्हारे लिये बिलाप किया और तुम न रोये।
क्योंकि योहन डूब देनेहारा न रोटी खाता न दाख रस ३३
पीता आया है और तुम कहते हो उसे भूत लगा है।
मनुष्यका पुत्र खाता और पीता आया है और तुम कहते ३४
हो देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और
पापियोंका मित्र। परन्तु ज्ञान अपने सब सन्तानोंसे नि- ३५
र्दोष ठहराया गया है।
फरीशियोंमेंसे एकने यीशुसे बिन्ती किई कि मेरे संग ३६
भोजन कीजिये और वह फरीशीके घरमें जाके भोजनपर
बैठा। और देखो उस नगरकी एक स्त्री जो पापिनी थी ३७
जब उसने जाना कि वह फरीशीके घरमें भोजनपर बैठा
है तब उजले पत्थरके पात्रमें सुगन्ध तेल लाई. और ३८
पीछेसे उसके पांवों पास खड़ी हो रोते रोते उसके चर-
णोंको आंसुओंसे भिंगाने लगी और अपने सिरके बालोंसे
पोंछा और उसके पांव चूमके उनपर सुगन्ध तेल मला।
यह देखके फरीशी जिसने यीशुको बुलाया था अपने ३९
मनमें कहने लगा यह यदि भविष्यद्वक्ता होता तो जानता
कि यह स्त्री जो उसको छूती है कौन और कैसी है क्योंकि
वह पापिनी है। यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे ४०

शिमोन मैं तुझसे कुछ कहा चाहता हूं. वह बोला हे
४१ गुरु कहिये। किसी महाजनके दो ऋणी थे एक पांच सौ
४२ सूकी धारता था और दूसरा पचास। जब कि भर देनेको
उन्होंके पास कुछ न था उसने दोनोंको क्षमा किया सो
४३ कहिये उनमेंसे कौन उसको अधिक प्यार करेगा। शिमो-
नने उत्तर दिया मैं समझता हूं कि वह जिसका उसने
अधिक क्षमा किया. यीशुने उससे कहा तूने ठीक बिचार
४४ किया है। और स्त्रीकी ओर फिरके उसने शिमोनसे
कहा तू इस स्त्रीको देखता है. मैं तेरे घरमें आया तूने
मेरे पांवोंपर जल नहीं दिया परन्तु इसने मेरे चरणोंको
आंसूओंसे भिंगाया और अपने सिरके बालोंसे पोंछा
४५ है। तूने मेरा चूमा नहीं लिया परन्तु यह जबसे मैं
४६ आया तबसे मेरे पांवोंको चूम रही है। तूने मेरे सिरपर
तेल नहीं लगाया परन्तु इसने मेरे पांवोंपर सुगन्ध तेल
४७ मला है। इसलिये मैं तुझसे कहता हूं कि उसके पाप जो
बहुत हैं क्षमा किये गये हैं. कि उसने तो बहुत प्रेम
किया है परन्तु जिसका थोड़ा क्षमा किया जाता है वह
४८ थोड़ा प्रेम करता है। और उसने स्त्रीसे कहा तेरे पाप
४९ क्षमा किये गये हैं। तब जो लोग उसके संग भोजनपर
बैठे थे सो अपने अपने मनमें कहने लगे यह कौन है जो
५० पापोंको भी क्षमा करता है। परन्तु उसने स्त्रीसे कहा तेरे
बिश्वासने तुझे बचाया है कुशलसे चली जा।

## ८ आठवां पर्व्व ।

१ यीशुका नगर नगरमें फिरना। ४ बीज बोनेहारेका दृष्टान्त। ९ दृष्टा-
न्तोंसे उपदेश करनेका कारण और इस दृष्टान्तका अर्थ। १६ दीपकका

दृष्टान्त और बचन सुननेके विषयमें उपदेश। १९ यीशुके कुटुंबका बर्णन। २२ उसका आंधीको थांभना। २६ एक मनुष्यमेंसे बहुत भूतोंको निकालना। ४० एक कन्याको जिलाना और एक स्त्रीको चंगा करना।

इस पीछे यीशु नगर नगर और गांव गांव उपदेश १
करता हुआ और ईश्वरके राज्यका सुसमाचार सुनाता
हुआ फिरा किया। और बारहों शिष्य उसके संग थे और २
कितनी स्त्रियां भी जो दुष्ट भूतोंसे और रोगोंसे चंगी
किई गई थीं अर्थात मरियम जो मगद्लीनी कहावती है
जिसमेंसे सात भूत निकल गये थे. और हेरोद्के भंडारी ३
कूजाकी स्त्री योहाना और सोसन्ना और बहुतसी और
स्त्रियां. ये तो अपनी सम्पत्तिसे उसकी सेवा करती थीं।

जब बड़ी भीड़ एकट्ठी होती थी और नगर नगरके ४
लोग उस पास आते थे तब उसने दृष्टान्तमें कहा. एक ५
बोनेहारा अपना बीज बोनेको निकला. बीज बोनेमें कुछ
मार्गकी ओर गिरा और पांवोंसे रौंदा गया और आ-
काशके पंछियोंने उसे चुग लिया। कुछ पत्थरपर गिरा ६
और उपजा परन्तु तरावट न पानेसे सूख गया। कुछ ७
कांटोंके बीचमें गिरा और कांटोंने एक संग बढ़के उसको
दबा डाला। परन्तु कुछ अच्छी भूमिपर गिरा और ८
उपजा और सौ गुणे फल फला. यह बातें कहके उसने
ऊंचे शब्दसे कहा जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

तब उसके शिष्योंने उससे पूछा इस दृष्टान्तका अर्थ ९
क्या है। उसने कहा तुमको ईश्वरके राज्यके भेद जानने- १०
का अधिकार दिया गया है परन्तु और लोगोंसे दृष्टा-
न्तोंमें बात होती है इसलिये कि वे देखते हुए न देखें

११ और सुनते हुए न बूझें। इस दृष्टान्तका अर्थ यह है. बीज
१२ तो ईश्वरका बचन है। मार्गकी ओरके वे हैं जो सुनते हैं
तब शैतान आके उनके मनमेंसे बचन छीन लेता है ऐसा
१३ न हो कि वे बिश्वास करके चाण पावें। पत्थरपरके वे हैं
कि जब सुनते हैं तब आनन्दसे बचनको ग्रहण करते हैं
परन्तु उनमें जड़ न बंधनेसे वे थोड़ी बेरलों बिश्वास करते
१४ हैं और परीक्षाके समयमें बहक जाते हैं। जो कांटोंके बीचमें
गिरा सो वे हैं जो सुनते हैं पर अनेक चिन्ता और धन
और जीवनके सुख बिलाससे दबते दबते दबाये जाते
१५ और पक्के फल नहीं फलते हैं। परन्तु अच्छी भूमिमेंका
बीज वे हैं जो बचन सुनके भले और उत्तम मनमें रखते
हैं और धीरजसे फल फलते हैं।

१६ कोई मनुष्य दीपकको बारके बर्त्तनसे नहीं ढांपता और
न खाटके नीचे रखता है परन्तु दीवटपर रखता है कि
१७ जो भीतर आवें सो उजियाला देखें। कुछ गुप्त नहीं है
जो प्रगट न होगा और न कुछ छिपा है जो जाना न
१८ जायगा और प्रसिद्ध न होगा। इसलिये सचेत रहो तुम
किस रीतिसे सुनते हो क्योंकि जो कोई रखता है उसको
और दिया जायगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उससे
जो कुछ वह समझता कि मेरे पास है सो भी ले लिया
जायगा।

१९ यीशुकी माता और उसके भाई उस पास आये परन्तु
२० भीड़के कारण उससे भेंट नहीं कर सके। और कितनोंने
उससे कह दिया कि आपकी माता और आपके भाई
२१ बाहर खड़े हुए आपको देखने चाहते हैं। उसने उनको

उत्तर दिया कि मेरी माता और मेरे भाई येही लोग हैं
जो ईश्वरका बचन सुनके पालन करते हैं।
एक दिन वह और उसके शिष्य नावपर चढ़े और २२
उसने उनसे कहा कि आओ हम झीलके उस पार चलें.
सो उन्होंने खोल दिई। ज्यों वे जाते थे त्यों वह सो गया २३
और झीलपर आंधी उठी और उनकी नाव भर जाने
लगी और वे जोखिममें थे। तब उन्होंने उस पास आके २४
उसे जगाके कहा हे गुरु हे गुरु हम नष्ट होते हैं. तब
उसने उठके बयारको और जलके हिलकोरेको डांटा और
वे थम गये और नीवा हो गया। और उसने उनसे कहा २५
तुम्हारा बिश्वास कहां है. परन्तु वे भयमान और अचं-
भित हो आपसमें बोले यह कौन है जो बयार और जल-
को भी आज्ञा देता है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं।
वे गदेरियोंके देशमें जो गालीलके साम्ने उस पार है २६
पहुंचे। जब यीशु तीरपर उतरा तब नगरका एक मनुष्य २७
उससे आ मिला जिसको बहुत दिनोंसे भूत लगे थे और
जो बस्त्र नहीं पहिनता न घरमें रहता था परन्तु कबर-
स्थानमें रहता था। वह यीशुको देखके चिल्लाया और २८
उसको दंडवत कर बड़े शब्दसे कहा हे यीशु सर्व्वप्रधान
ईश्वरके पुत्र आपको मुझसे क्या काम. मैं आपसे बिन्ती
करता हूं कि मुझे पीड़ा न दीजिये। क्योंकि यीशुने २९
अशुद्ध भूतको उस मनुष्यसे निकलनेकी आज्ञा दिई थी.
उस भूतने बहुत बार उसे पकड़ा था और वह जंजीरों
और बेड़ियोंसे बंधा हुआ रखा जाता था परन्तु बंधनोंको
तोड़ देता था और भूत उसे जंगलमें खदेड़ता था। यीशुने ३०

उससे पूछा तेरा नाम क्या है. उसने कहा सेना. क्योंकि
३१ बहुत भूत उसमें पैठ गये थे। और उन्होंने उससे बिन्ती
किई कि हमें अथाह कुंडमें जानेकी आज्ञा न दीजिये।
३२ वहां बहुत सूअरोंका जो पहाड़पर चरते थे एक झुंड था
सो उन्होंने उससे बिन्ती किई कि हमें उन्होंमें पैठने
३३ दीजिये और उसने उन्हें जाने दिया। तब भूत उस
मनुष्यसे निकलके सूअरोंमें पैठे और वह झुंड कड़ाड़े-
३४ परसे झीलमें दौड़ गया और डूब मरा। यह जो हुआ
था सो देखके चरवाहे भागे और जाके नगरमें और
३५ गांवोंमें उसका समाचार कहा। और लोग यह जो हुआ
था देखनेको बाहर निकले और यीशु पास आके जिस
मनुष्यसे भूत निकले थे उसको यीशुके चरणोंके पास
३६ बस्त्र पहिने और सुबुद्धि बैठे हुए पाके डर गये। जिन
लोगोंने देखा था उन्होंने उनसे कह दिया कि वह भूत-
३७ ग्रस्त मनुष्य क्योंकर चंगा हो गया था। तब गदेराके
आसपासके सारे लोगोंने यीशुसे बिन्ती किई कि हमारे
यहांसे चले जाइये क्योंकि उन्हें बड़ा डर लगा. सो वह
३८ नावपर चढ़के लौट गया। जिस मनुष्यसे भूत निकले थे
उसने उससे बिन्ती किई कि मैं आपके संग रहूं पर
३९ यीशुने उसे बिदा किया. और कहा अपने घरको फिर
जा और कह दे कि ईश्वरने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये
हैं. उसने जाके सारे नगरमें प्रचार किया कि यीशुने
उसके लिये कैसे बड़े काम किये थे।
४०　जब यीशु लौट गया तब लोगोंने उसे ग्रहण किया
४१ क्योंकि वे सब उसकी बाट जोहते थे। और देखो याईर

नाम एक मनुष्य जो सभाका अध्यक्ष भी था आया और
यीशुके पांवों पड़के उससे बिन्ती किई कि वह उसके घर
जाय। क्योंकि उसको बारह बरसकी एकलौती बेटी थी ४२
और वह मरनेपर थी. जब यीशु जाता था तब भीड़
उसे दबाती थी।

और एक स्त्री जिसे बारह बरससे लोहू बहनेका रोग ४३
था जो अपनी सारी जीविका वैद्योंके पीछे उठाके किसी-
से चंगी न हो सकी. तिसने पीछेसे आ उसके बस्त्रके ४४
आंचलको छूआ और उसके लोहूका बहना तुरन्त थम
गया। यीशुने कहा किसने मुझे छूआ. जब सब मुकर ४५
गये तब पितरने और उसके संगियोंने कहा हे गुरु लोग
आपपर भीड़ लगाते और आपको दबाते हैं और आप
कहते हैं किसने मुझे छूआ। यीशुने कहा किसीने मुझे ४६
छूआ क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझमेंसे शक्ति निकली है।
जब स्त्रीने देखा कि मैं छिपी नहीं हूं तब कांपती हुई ४७
आई और उसे दंडवत कर सब लोगोंके साम्ने उसको
बताया कि उसने किस कारणसे उसको छूआ था और
क्योंकर तुरन्त चंगी हुई थी। उसने उससे कहा हे पुत्री ४८
ढाढ़स कर तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया है कुशलसे
चली जा।

वह बोलताही था कि किसीने सभाके अध्यक्षके घरसे ४९
आ उससे कहा आपकी बेटी मर गई है गुरुको दुःख न
दीजिये। यीशुने यह सुनके उसको उत्तर दिया कि मत ५०
डर केवल बिश्वास कर तो वह चंगी हो जायगी। घरमें ५१
आके उसने पितर और याकूब और योहन और कन्याके

माता पिताको छोड़ और किसीको भीतर जाने न
५२ दिया। सब लोग कन्याके लिये रोते और छाती पीटते
थे परन्तु उसने कहा मत रोओ वह मरी नहीं पर सोती
५३ है। वे यह जानके कि मर गई है उसका उपहास करने
५४ लगे। परन्तु उसने सभोंको बाहर निकाला और कन्याका
५५ हाथ पकड़के ऊंचे शब्दसे कहा हे कन्या उठ। तब उसका
प्राण फिर आया और वह तुरन्त उठी और उसने आज्ञा
५६ किई कि उसे कुछ खानेको दिया जाय। उसके माता पिता
बिस्मित हुए पर उसने उनको आज्ञा दिई कि यह जो
हुआ है किसीसे मत कहो।

## ९ नवां पर्ब्ब।

१ यीशुका बारह प्रेरितोंको भेजना। ७ उसके विषयमें हेरोदकी चिन्ता। १० यीशुका प्रेरितोंका समाचार सुनना और लोगोंका उपदेश देना। १२ पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना। १८ यीशुके विषयमें लोगोंका और शिष्योंका बिचार और उसका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना। २३ शिष्य होनेकी विधि। २८ यीशुका शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना। ३७ एक भूतग्रस्त लड़केको चंगा करना। ४४ अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना। ४६ नम्र होनेका उपदेश। ४९ दूसरे उपदेशकको बर्जनेका निषेध। ५१ शोमिरोनियोंकी ओर जिन्होंने उसको ग्रहण न किया यीशुकी नम्रता। ५७ शिष्य होनेके विषयमें यीशुकी कथा।

१ यीशुने अपने बारह शिष्योंको एकट्ठे बुलाके उन्हें सब
भूतोंको निकालनेका और रोगोंको चंगा करनेका सा-
२ मर्थ्य और अधिकार दिया। और उन्हें ईश्वरके राज्यकी
३ कथा सुनाने और रोगियोंको चंगा करनेको भेजा। और
उसने उनसे कहा मार्गके लिये कुछ मत लेओ न लाठी

न झोली न रोटी न रुपैये और दो दो अंगे तुम्हारे पास
न होवें। जिस किसी घरमें तुम प्रवेश करो उसीमें रहो ४
और वहींसे निकल जाओ। जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें ५
उस नगरसे निकलते हुए उनपर साक्षी होनेके लिये
अपने पांवोंकी धूल भी झाड़ डालो। सो वे निकलके ६
सर्व्वच सुसमाचार सुनाते और लोगोंको चंगा करते हुए
गांव गांव फिरे।

चौथाईका राजा हेरोद सब कुछ जो यीशु करता था ७
सुनके दुबधामें पड़ा क्योंकि कितनोंने कहा योहन मृत-
कोंमेंसे जी उठा है. और कितनोंने कि एलियाह दिखाई ८
दिया है और औरोंने कि अगले भविष्यद्वक्ताओंमेंसे
एक जी उठा है। और हेरोदने कहा योहनको तो मैंने ९
सिर कटवाया परन्तु यह कौन है जिसके विषयमें मैं
ऐसी बातें सुनता हूं. और उसने उसे देखने चाहा।

प्रेरितोंने फिर आके जो कुछ उन्होंने किया था सो १०
यीशुको सुनाया और वह उन्हें संग लेके बैतसैदा नाम
एक नगरके किसी जंगली स्थानमें एकांतमें गया। लोग ११
यह जानके उसके पीछे हो लिये और उसने उन्हें ग्रहण
कर ईश्वरके राज्यके विषयमें उनसे बातें किईं और जिन्हों-
को चंगा किये जानेका प्रयोजन था उन्हें चंगा किया।

जब दिन ढलने लगा तब बारह शिष्योंने आ उससे १२
कहा लोगोंको बिदा कीजिये कि वे चारों ओरकी बस्तियों
और गांवोंमें जाके टिकें और भोजन पावें क्योंकि हम
यहां जंगली स्थानमें हैं। उसने उनसे कहा तुम उन्हें १३
खानेको देओ. वे बोले हमारे पास पांच रोटियां और

दो मछलियोंसे अधिक कुछ नहीं है पर हां हम जाके
१४ इन सब लोगोंके लिये भोजन मोल लेवें तो होय। वे लोग
पांच सहस्र पुरुषोंके अटकल थे. उसने अपने शिष्योंसे कहा
१५ उन्हें पचास पचास करके पांति पांति बैठाओ। उन्होंने
१६ ऐसा किया और सभोंको बैठाया। तब उसने उन
पांच रोटियों और दो मछलियोंको ले स्वर्गकी ओर
देखके उनपर आशीस दिई और उन्हें तोड़के शिष्योंको
१७ दिया कि लोगोंके आगे रखें। सो सब खाके तृप्त हुए
और जो टुकड़े उन्होंसे बच रहे उनकी बारह टोकरी
उठाई गईं।

१८ जब वह एकांतमें प्रार्थना करता था और शिष्य लोग
उसके संग थे तब उसने उनसे पूछा कि लोग क्या कहते
१९ हैं मैं कौन हूं। उन्होंने उत्तर दिया कि वे आपको योहन
डूब देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं
और कितने कहते हैं कि अगले भविष्यद्वक्ताओंमेंसे कोई
२० जी उठा है। उसने उनसे कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन
हूं. पितरने उत्तर दिया कि ईश्वरका अभिषिक्त जन।
२१ तब उसने उन्हें दृढ़तासे आज्ञा दिई कि यह बात किसीसे
२२ मत कहो। और उसने कहा मनुष्यके पुत्रको अवश्य है
कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों
और अध्यापकोंसे तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय
और तीसरे दिन जी उठे।

२३ उसने सभोंसे कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे
तो अपनी इच्छाको मारे और प्रतिदिन अपना क्रूश
२४ उठाके मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण

बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये
अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा। जो मनुष्य सारे २५
जगतको प्राप्त करे और अपनेको नाश करे अथवा गंवावे
उसको क्या लाभ होगा। जो कोई मुझसे और मेरी २६
बातोंसे लजावे मनुष्यका पुत्र जब अपने और पिताके
और पवित्र दूतोंके ऐश्वर्य्यमें आवेगा तब उससे लजावेगा।
मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उनमेंसे कोई २७
कोई हैं कि जबलों ईश्वरका राज्य न देखें तबलों मृत्युका
स्वाद न चीखेंगे।

इन बातोंसे दिन आठ एकके पीछे यीशु पितर और २८
योहन और याकूबको संग ले प्रार्थना करनेको पर्ब्बतपर
चढ़ गया। जब वह प्रार्थना करता था तब उसके मुंहका २९
रूप औरही हो गया और उसका बस्त्र उजला हुआ
और चमकने लगा। और देखो दो मनुष्य अर्थात मूसा ३०
और एलियाह उसके संग बात करते थे। वे तेजोमय ३१
दिखाई दिये और उसकी मृत्युकी जिसे वह यिरूशली-
ममें पूरी करनेपर था बात करते थे। पितर और उसके ३२
संगियोंकी आंखें नींदसे भरी थीं परन्तु वे जागते रहे
और उसका ऐश्वर्य्य और उन दो मनुष्योंको जो उसके संग
खड़े थे देखा। जब वे उसके पाससे जाने लगे तब पितरने ३३
यीशुसे कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है, हम
तीन डेरे बनावें एक आपके लिये एक मूसाके लिये और
एक एलियाहके लिये, वह नहीं जानता था कि क्या
कहता था। उसके यह कहते हुए एक मेघने आ उन्हें ३४
छा लिया और जब उन दोनोंने उस मेघमें प्रवेश किया

३५ तब वे डर गये। और उस मेघसे यह शब्द हुआ कि यह
३६ मेरा प्रिय पुत्र है उसकी सुनो। यह शब्द होनेके पीछे यीशु
अकेला पाया गया और उन्होंने इसको गुप्त रखा और जो
देखा था उसकी कोई बात उन दिनोंमें किसीसे न कही।
३७ दूसरे दिन जब वे उस पर्व्वतसे उतरे तब बहुत लोग
३८ उससे आ मिले। और देखो भीड़मेंसे एक मनुष्यने
पुकारके कहा हे गुरु मैं आपसे बिन्ती करता हूं कि मेरे
३९ पुत्रपर दृष्टि कीजिये क्योंकि वह मेरा एकलौता है। और
देखिये एक भूत उसे पकड़ता है और वह अचांचक
चिल्लाता है और भूत उसे ऐसा मरोड़ता कि वह मुंहसे
फेन बहाता है और उसे चूर कर कठिनसे छोड़ता है।
४० और मैंने आपके शिष्योंसे बिन्ती किई कि उसे निकालें
४१ परन्तु वे नहीं सके। यीशुने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी
और हठीले लोगो मैं कबलों तुम्हारे संग रहूंगा और तु-
४२ म्हारी सहूंगा. अपने पुत्रको यहां ले आ। वह आताही था
कि भूतने उसे पटकके मरोड़ा परन्तु यीशुने अशुद्ध भूतको
डांटके लड़केको चंगा किया और उसे उसके पिताको सोंप
४३ दिया। तब सब लोग ईश्वरकी महाशक्तिसे अचंभित हुए।
४४ जब समस्त लोग सब कामोंसे जो यीशुने किये अचंभा
करते थे तब उसने अपने शिष्योंसे कहा तुम इन बातोंको
अपने कानोंमें रखो क्योंकि मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके
४५ हाथमें पकड़वाया जायगा। परन्तु उन्होंने यह बात न
समझी और वह उनसे छिपी थी कि उन्हें बूझ न पड़े
और वे इस बातके विषयमें उससे पूछनेको डरते थे।
४६ उन्होंमें यह बिचार होने लगा कि हममेंसे बड़ा कौन

है। यीशुने उनके मनका बिचार जानके एक बालकको लेके ४७
अपने पास खड़ा किया. और उनसे कहा जो कोई मेरे ४८
नामसे इस बालकको ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है
और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मेरे भेजनेहारेको ग्रहण
करता है. जो तुम सभोंमें अति छोटा है वही बड़ा होगा।

तब योहनने उत्तर दिया कि हे गुरु हमने किसी ४९
मनुष्यको आपके नामसे भूतोंको निकालते देखा और
हमने उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे संग नहीं चलता है।
यीशुने उससे कहा मत बर्जो क्योंकि जो हमारे बिरुद्ध ५०
नहीं है सो हमारी ओर है।

जब उसके उठाये जानेके दिन पहुंचे तब उसने यिरू- ५१
शलीम जानेको अपना मन दृढ़ किया। और उसने ५२
दूतोंको अपने आगे भेजा और उन्होंने जाके उसके लिये
तैयारी करनेको शोमिरोनियोंके एक गांवमें प्रवेश किया।
परन्तु उन लोगोंने उसे ग्रहण न किया क्योंकि वह ५३
यिरूशलीमकी ओर जानेका मुंह किये था। यह देखके ५४
उसके शिष्य याकूब और योहन बोले हे प्रभु आपकी
इच्छा होय तो हम आगको आकाशसे गिरने और उन्हें
नाश करनेकी आज्ञा देवें जैसा एलियाहने भी किया।
परन्तु उसने पीछे फिरके उन्हें डांटके कहा क्या तुम नहीं ५५
जानते हो तुम कैसे आत्माके हो। मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके ५६
प्राण नाश करनेको नहीं परन्तु बचानेको आया है. तब
वे दूसरे गांवको चले गये।

जब वे मार्गमें जाते थे तब किसी मनुष्यने यीशुसे कहा ५७
हे प्रभु जहां जहां आप जायें तहां मैं आपके पीछे चलूंगा।

५८ यीशुने उससे कहा लोमड़ियोंको मांदें और आकाशके
पंछियोंको बसेरे हैं परन्तु मनुष्यके पुत्रको सिर रखनेको
५९ स्थान नहीं है। उसने दूसरेसे कहा मेरे पीछे आ.
उसने कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिताको
६० गाड़ने दीजिये। यीशुने उससे कहा मृतकोंको अपने
मृतकोंको गाड़ने दे परन्तु तू जाके ईश्वरके राज्यकी कथा
६१ सुना। दूसरेने भी कहा हे प्रभु मैं आपके पीछे चलूंगा
परन्तु पहिले मुझे अपने घरके लोगोंसे बिदा होने दीजिये।
६२ यीशुने उससे कहा अपना हाथ हलपर रखके जो कोई
पीछे देखे सो ईश्वरके राज्यके योग्य नहीं है।

## १० दसवां पर्ब्ब।

१ यीशुका सत्तर शिष्योंको ठहराके भेजना। १३ कई एक नगरोंके अबिश्वासपर उलहना। १७ सत्तर शिष्योंके संग यीशुकी बातचीत और उसका अपने पिताका धन्य मानना। २५ व्यवस्थापकका उत्तर देना और दयावन्त शोमिरोनीका दृष्टान्त। ३८ मर्था और मरियमसे यीशुकी बातचीत।

१ इसके पीछे प्रभुने सत्तर और शिष्योंको भी ठहराके
उन्हें दो दो करके हर एक नगर और स्थानको जहां वह
२ आप जानेपर था अपने आगे भेजा। और उसने उनसे
कहा कटनी बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं इसलिये
कटनीके स्वामीसे बिन्ती करो कि वह अपनी कटनीमें
३ बनिहारोंको भेजे। जाओ देखो मैं तुम्हें मेम्नोंकी नाईं
४ हुंड़ारोंके बीचमें भेजता हूं। न थैली न झोली न जूते
ले जाओ और मार्गमें किसीको नमस्कार मत करो।
५ जिस किसी घरमें तुम प्रवेश करो पहिले कहो इस घरका

कल्याण होय। यदि वहां कोई कल्याणके योग्य हो तो ६
तुम्हारा कल्याण उसपर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे पास
फिर आवेगा। जो कुछ उन्होंके यहां मिले सोई खाते ७
और पीते हुए उसी घरमें रहो क्योंकि बनिहार अपनी
बनिके योग्य है. घर घर मत फिरो। जिस किसी नगरमें ८
तुम प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण करें वहां जो कुछ
तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ। और उसमेंके ९
रोगियोंको चंगा करो और लोगोंसे कहो कि ईश्वरका
राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है। परन्तु जिस किसी नगर- १०
में प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण न करें उसकी
सड़कोंपर जाके कहो. तुम्हारे नगरकी धूल भी जो ११
हमोंपर लगी है हम तुम्हारे आगे पोंछ डालते हैं तौभी
यह जानो कि ईश्वरका राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है।
मैं तुमसे कहता हूं कि उस दिनमें उस नगरकी दशासे १२
सदोमकी दशा सहने योग्य होगी।

हाय तू कोराजीन. हाय तू बैतसैदा. जो आश्चर्य्य १३
कर्म्म तुम्होंमें किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोनमें
किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिने
राखमें बैठके पश्चात्ताप करते। परन्तु बिचारके दिनमें १४
तुम्हारी दशासे सोर और सीदोनकी दशा सहने योग्य
होगी। और हे कफर्नाहुम जो स्वर्गलों ऊंचा किया १५
गया है तू नरकलों नीचा किया जायगा। जो तुम्हारी १६
सुनता है सो मेरी सुनता है और जो तुम्हें तुच्छ जानता
है सो मुझे तुच्छ जानता है और जो मुझे तुच्छ जानता
है सो मेरे भेजनेहारेको तुच्छ जानता है।

१७　तब वे सत्तर शिष्य आनन्दसे फिर आके बोले हे प्रभु
१८ आपके नामसे भूत भी हमारे बशमें हैं। उसने उनसे
कहा मैंने शैतानको बिजलीकी नाईं स्वर्गसे गिरते देखा।
१९ देखो मैं तुम्हें सांपों और बिच्छूओंको रौंदनेका और
शत्रुके सारे पराक्रमपर सामर्थ्य देता हूं और किसी
२० वस्तुसे तुम्हें कुछ हानि न होगी। तौभी इससें आनन्द
मत करो कि भूत तुम्हारे बशमें हैं परन्तु इसीसें आनन्द
२१ करो कि तुम्हारे नाम स्वर्गमें लिखे हुए हैं। उसी घड़ी
यीशु आत्मामें आनन्दित हुआ और कहा हे पिता स्वर्ग
और पृथिवीके प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तूने इन
बातोंको ज्ञानवानों और बुद्धिमानोंसे गुप्त रखा है और
उन्हें बालकोंपर प्रगट किया है. हां हे पिता क्योंकि तेरी
२२ दृष्टिमें यही अच्छा लगा। मेरे पिताने मुझे सब कुछ
सोंपा है और पुत्र कौन है सो कोई नहीं जानता केवल
पिता और पिता कौन है सो कोई नहीं जानता केवल
२३ पुत्र और वही जिसपर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे। तब
उसने अपने शिष्योंकी ओर फिरके निरालेमें कहा जो
२४ तुम देखते हो उसे जो नेत्र देखें सो धन्य हैं। क्योंकि मैं
तुमसे कहता हूं कि जो तुम देखते हो उसको बहुतेरे
भविष्यद्वक्ताओं और राजाओंने देखने चाहा पर न
देखा और जो तुम सुनते हो उसको सुननें चाहा पर
न सुना।
२५　देखो किसी व्यवस्थापकने उठके उसकी परीक्षा करनेको
कहा हे गुरु कौन काम करनेसे मैं अनन्त जीवनका
२६ अधिकारी होंगा। उसने उससे कहा व्यवस्थामें क्या लिखा

है. तू कैसे पढ़ता है। उसने उत्तर दिया कि तू परमे- २७
श्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे और अपने सारे
प्राणसे और अपनी सारी शक्तिसे और अपनी सारी
बुद्धिसे प्रेम कर और अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम
कर। यीशुने उससे कहा तूने ठीक उत्तर दिया है. यह २८
कर तो तू जीयेगा। परन्तु उसने अपने तईं धर्म्मी २९
ठहरानेकी इच्छा कर यीशुसे कहा मेरा पड़ोसी कौन है।
यीशुने उत्तर दिया कि एक मनुष्य यिरूशलीमसे यिरी- ३०
होको जाते हुए डाकूओंके हाथमें पड़ा जिन्होंने उसके
बस्त्र उतार लिये और उसे घायल कर अधमूआ छोड़के
चले गये। संयोगसे कोई याजक उस मार्गसे जाता था ३१
परन्तु उसे देखके साम्हनेसे होके चला गया। इसी ३२
रीतिसे एक लेवीय भी जब उस स्थानपर पहुंचा तब
आके उसे देखा और साम्हनेसे होके चला गया। परन्तु ३३
एक शोमिरोनी पथिक उस स्थानपर आया और उसे
देखके दया किई. और उस पास जाके उसके घावोंपर ३४
तेल और दाख रस ढालके पट्टियां बांधीं और उसे
अपनेही पशुपर बैठाके सरायमें लाके उसकी सेवा किई।
बिहान हुए उसने बाहर आ दो सूकी निकालके भठि- ३५
यारेको दिईं और उससे कहा उस मनुष्यकी सेवा कर
और जो कुछ तेरा और लगेगा सो मैं जब फिर आऊंगा
तब तुझे भर देऊंगा। सो तू क्या समझता है जो डाकू- ३६
ओंके हाथमें पड़ा उसका पड़ोसी इन तीनोंमेंसे कौन
था। व्यवस्थापकने कहा वह जिसने उसपर दया किई. ३७
तब यीशुने उससे कहा जा तू भी वैसाही कर।

३८ उन्होंके जाते हुए उसने किसी गांवमें प्रवेश किया
और मर्था नाम एक स्त्रीने अपने घरमें उसकी पहुनई
३९ किई। उसको मरियम नाम एक बहिन थी जो यीशुके
४० चरणोंके पास बैठके उसका बचन सुनती थी। परन्तु
मर्था बहुत सेवकाईमें बझी हुई थी और वह निकट आके
बोली हे प्रभु क्या आपको सोच नहीं है कि मेरी बहिनने
मुझे अकेली सेवा करनेको छोड़ी है. इसलिये उसको
४१ आज्ञा दीजिये कि मेरी सहायता करे। यीशुने उसको
उत्तर दिया हे मर्था हे मर्था तू बहुत बातोंके लिये चिन्ता
४२ करती और घबराती है। परन्तु एक बात आवश्यक है.
और मरियमने उस उत्तम भागको चुना है जो उससे
नहीं लिया जायगा।

## ११ एग्यारहवां पर्ब्ब।

१ प्रार्थनाके विषयमें यीशुका उपदेश। १४ लोगोंके अपबादका खंडन। २४ यिहूदियोंकी बुरी दशा। २७ धन्य कौन हैं उसका बर्णन। २९ यिहूदियोंके दोषका प्रमाण। ३३ दीपकका दृष्टान्त। ३७ यीशुका फरीशियोंको उलहना देना। ४५ व्यवस्थापकोंको उलहना देना।

१ जब यीशु एक स्थानमें प्रार्थना करता था ज्यों उसने
समाप्ति किई त्यों उसके शिष्योंमेंसे एकने उससे कहा
हे प्रभु जैसे योहनने अपने शिष्योंको सिखाया तैसे आप
२ हमें प्रार्थना करनेको सिखाइये। उसने उनसे कहा जब
तुम प्रार्थना करो तब कहो हे हमारे स्वर्गबासी पिता
तेरा नाम पवित्र किया जाय तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा
३ जैसे स्वर्गमें वैसे पृथिवीपर पूरी होय. हमारी दिनभरकी
४ रोटी प्रतिदिन हमें दे. और हमारे पापोंको क्षमा कर

क्योंकि हम भी अपने हर एक ऋणीको क्षमा करते हैं
और हमें परीक्षामें मत डाल परन्तु दुष्टसे बचा।

और उसने उनसे कहा तुममेंसे कौन है कि उसका ५
एक मित्र होय और वह आधी रातको उस पास जाके
उससे कहे कि हे मित्र मुझे तीन रोटी उधार दीजिये.
क्योंकि एक पथिक मेरा मित्र मुझ पास आया है और ६
उसके आगे रखनेको मेरे पास कुछ नहीं है. और वह ७
भीतरसे उत्तर देवे कि मुझे दुःख न देना अब तो द्वार मूंदा
गया है और मेरे बालक मेरे संग सोये हुए हैं मैं उठके
तुझे नहीं दे सकता हूं। मैं तुमसे कहता हूं जो वह ८
इसलिये नहीं उसे उठके देगा कि उसका मित्र है तौभी
उसके लाज छोड़के मांगनेके कारण उठके उसको जितना
कुछ आवश्यक हो उतना देगा। और मैं तुम्हांसे कहता ९
हूं कि मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढो तो तुम पाओगे
खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। क्योंकि जो १०
कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढता है सो पाता
है और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जायगा।
तुममेंसे कौन पिता होगा जिससे पुत्र रोटी मांगे क्या वह ११
उसको पत्थर देगा. और जो वह मछली मांगे तो क्या
वह मछलीकी सन्ती उसको सांप देगा। अथवा जो वह १२
अंडा मांगे तो क्या वह उसको बिच्छू देगा। सो यदि तुम १३
बुरे होके अपने लड़कोंको अच्छे दान देने जानते हो तो
कितना अधिक करके स्वर्गीय पिता उन्होंको जो उससे
मांगते हैं पवित्र आत्मा देगा।

यीशु एक भूतको जो गूंगा था निकालता था. जब १४

भूत निकल गया तब वह गूंगा बोलने लगा और लोगोंने
१५ अचंभा किया। परन्तु उनमेंसे कोई कोई बोले यह तो
बालजिबूल नाम भूतोंके प्रधानकी सहायतासे भूतोंको
१६ निकालता है। औरोंने उसकी परीक्षा करनेको उससे
१७ आकाशका एक चिन्ह मांगा। पर उसने उनके मनकी
बातें जानके उनसे कहा जिस जिस राज्यमें फूट पड़ी
है वह राज्य उजड़ जाता है और घरसे घर जो बिगड़ता
१८ है सो नाश होता है। और यदि शैतानमें भी फूट पड़ी
है तो उसका राज्य क्योंकर ठहरेगा, तुम लोग तो कहते
हो कि मैं बालजिबूलकी सहायतासे भूतोंको निकालता
१९ हूं। पर यदि मैं बालजिबूलकी सहायतासे भूतोंको निका-
लता हूं तो तुम्हारे सन्तान किसकी सहायतासे निका-
२० लते हैं, इसलिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे होंगे। परन्तु
जो मैं ईश्वरकी उंगलीसे भूतोंको निकालता हूं तो अवश्य
२१ ईश्वरका राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है। जब हथियार
बांधे हुए बलवन्त अपने घरकी रखवाली करता है तब
२२ उसकी सम्पत्ति कुशलसे रहती है। परन्तु जब वह जो
उससे अधिक बलवन्त है उसपर आ पहुंचकर उसे
जीतता है तब उसके सम्पूर्ण हथियार जिनपर वह
भरोसा रखता था छीन लेता और उसका लूटा हुआ
२३ धन बांटता है। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिरुद्ध है
और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है।
२४ जब अशुद्ध भूत मनुष्यसे निकल जाता है तब सूखे
स्थानोंमें बिश्राम ढूंढता फिरता है परन्तु जब नहीं पाता
तब कहता है कि मैं अपने घरमें जहांसे निकला फिर

जाऊंगा। और वह आके उसे झाड़ा बुहारा सुथरा पाता २५
है। तब वह जाके अपनेसे अधिक दुष्ट सात और भूतोंको २६
ले आता है और वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं और
उस मनुष्यकी पिछली दशा पहिलीसे बुरी होती है।

वह यह बातें कहताही था कि भीड़मेंसे किसी स्त्रीने २७
ऊंचे शब्दसे उससे कहा धन्य वह गर्भ जिसने तुझे धारण
किया और वे स्तन जो तूने पिये। उसने कहा हां पर २८
वेही धन्य हैं जो ईश्वरका बचन सुनके पालन करते हैं।

जब बहुत लोगोंकी भीड़ एकट्ठी होने लगी तब वह २९
कहने लगा कि इस समयके लोग दुष्ट हैं. वे चिन्ह ढूंढते
हैं परन्तु कोई चिन्ह उनको नहीं दिया जायगा केवल
यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह। जैसा यूनस निनिवीय लोगोंके ३०
लिये चिन्ह था वैसाही मनुष्यका पुत्र इस समयके लोगोंके
लिये होगा। दक्षिणकी राणी बिचारके दिनमें इस सम- ३१
यके मनुष्योंके संग उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि
वह सुलेमानका ज्ञान सुननेको पृथिवीके अन्तसे आई
और देखो यहां एक है जो सुलेमानसे भी बड़ा है। निनि- ३२
वीके लोग बिचारके दिनमें इस समयके लोगोंके संग खड़े
हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्होंने यूनसका उपदेश
सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनस-
से भी बड़ा है।

कोई मनुष्य दीपकको बारके गुप्तमें अथवा बर्त्तनके ३३
नीचे नहीं रखता है परन्तु दीवटपर कि जो भीतर आवें
सो उजियाला देखें। शरीरका दीपक आंख है इसलिये ३४
जब तेरी आंख निर्मल है तब तेरा सकल शरीर भी

उजियाला है परन्तु जब वह बुरी है तब तेरा शरीर भी
३५ अंधियारा है। सो देख लो कि जो ज्योति तुझमें है सो
३६ अंधकार न होवे। यदि तेरा सकल शरीर उजियाला
हो और उसका कोई अंश अंधियारा न हो तो जैसा कि
जब दीपक अपनी चमकसे तुझे ज्योति देवे तैसाही वह
सब प्रकाशमान होगा।
३७ जब यीशु बात करता था तब किसी फरीशीने उससे
बिन्ती किई कि मेरे यहां भोजन कीजिये और वह भीतर
३८ जाके भोजनपर बैठा। फरीशीने जब देखा कि उसने
३९ भोजनके पहिले डुबकी न लिई तब अचंभा किया। प्रभुने
उससे कहा अब तुम फरीशी लोग कटोरे और थालको
बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु तुम्हारा अन्तर अन्धेर
४० और दुष्टतासे भरा है। हे निर्बुद्धि लोगो जिसने बाहर-
४१ को बनाया क्या उसने भीतरको भी नहीं बनाया। परन्तु
भीतरवाली बस्तुओंको दान करो तो देखो तुम्हारे
४२ लिये सब कुछ शुद्ध है। परन्तु हाय तुम फरीशियो तुम
पोदीने और आरूदेका और सब भांतिके साग पातका
दसवां अंश देते हो परन्तु न्यायको और ईश्वरके प्रेमको
उल्लंघन करते हो. इन्हें करना और उन्हें न छोड़ना
४३ उचित था। हाय तुम फरीशियो तुम्हें सभाके घरोंमें
ऊंचे आसन और बाजारोंमें नमस्कार प्रिय लगते
४४ हैं। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम
उन कबरोंके समान हो जो दिखाई नहीं देतीं
और मनुष्य जो उनके ऊपरसे चलते हैं नहीं
जानते हैं।

तब व्यवस्थापकोंमेंसे किसीने उसको उत्तर दिया कि ४५
हे गुरु यह बातें कहनेसे आप हमोंकी भी निन्दा करते
हैं। उसने कहा हाय तुम व्यवस्थापको भी तुम बोझे ४६
जिनको उठाना कठिन है मनुष्योंपर लादते हो परन्तु
तुम आप उन बोझोंको अपनी एक उंगलीसे नहीं छूते
हो। हाय तुम लोग तुम भविष्यद्वक्ताओंकी कबरें बनाते ४७
हो जिन्हें तुम्हारे पितरोंने मार डाला। सो तुम अपने ४८
पितरोंके कामोंपर साक्षी देते हो और उनमें सम्मति
देते हो क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला और तुम
उनकी कबरें बनाते हो। इसलिये ईश्वरके ज्ञानने कहा ४९
है कि मैं उन्होंके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितोंको
भेजूंगा और वे उनमेंसे कितनोंको मार डालेंगे और
सतावेंगे. कि हाबिलके लोहूसे लेके जिखरियाहके लोहू- ५०
तक जो वेदी और मन्दिरके बीचमें घात किया गया
जितने भविष्यद्वक्ताओंका लोहू जगतकी उत्पत्तिसे बहाया
जाता है सबका लेखा इस समयके लोगोंसे लिया जाय।
हां मैं तुमसे कहता हूं उसका लेखा इसी समयके लोगोंसे ५१
लिया जायगा। हाय तुम व्यवस्थापको तुमने ज्ञानकी कुंजी ५२
ले लिई है. तुमने आपही प्रवेश नहीं किया है और
प्रवेश करनेहारोंको बर्जा है।

जब वह उन्होंसे यह बातें कहता था तब अध्यापक ५३
और फरीशी लोग निपट बैर करने और बहुत बातोंके
विषयमें उसे कहवाने लगे. और दांव ताकते हुए उसके ५४
मुंहसे कुछ पकड़ने चाहते थे कि उसपर दोष लगावें।

## १२ बारहवां पर्व्व।

१ यीशुका अपने शिष्योंको अनेक बातोंके विषयमें चिताना। १३ निर्बुद्धि धनवानका दृष्टान्त। २२ संसारमें मन लगानेका निषेध। ३५ सचेत रहनेका उपदेश और दासोंका दृष्टान्त। ४९ अवैये दुःखोंका भविष्यद्वाक्य। ५४ कपटियोंपर उलहना।

१ उस समयमें सहस्रों लोग एकट्ठे हुए यहांलों कि एक
दूसरेपर गिरे पड़ते थे इसपर यीशु अपने शिष्योंसे पहिले
कहने लगा कि फरीशियोंके खमीरसे अर्थात कपटसे
२ चैाकस रहो। कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया
जायगा और न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा।
३ इसलिये जो कुछ तुमने अंधियारेमें कहा है सो उजिया-
लेमें सुना जायगा और जो तुमने कोठरियोंमें कानोंमें
४ कहा है सो कोठोंपरसे प्रचार किया जायगा। मैं तुम्होंसे
जो मेरे मित्र हो कहता हूं कि जो शरीरको मार डालते
हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते हैं
५ उनसे मत डरो। मैं तुम्हें बताऊंगा तुम किससे डरो.
घात करनेके पीछे नरकमें डालनेका जिसको अधिकार
है उसीसे डरो. हां मैं तुमसे कहता हूं उसीसे डरो।
६ क्या दो पैसेमें पांच गौरैया नहीं बिकतीं तौभी ईश्वर
७ उनमेंसे एकको भी नहीं भूलता है। परन्तु तुम्हारे सिरके
बाल भी सब गिने हुए हैं इसलिये मत डरो तुम बहुत
८ गौरैयाओंसे अधिक मोलके हो। मैं तुमसे कहता हूं जो
कोई मनुष्योंके आगे मुझे मान लेवे उसे मनुष्यका पुत्र
९ भी ईश्वरके दूतोंके आगे मान लेगा। परन्तु जो मनुष्योंके
आगे मुझे नकारे सो ईश्वरके दूतोंके आगे नकारा

जायगा। जो कोई मनुष्यके पुत्रके बिरोधमें बात कहे वह १०
उसके लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो पवित्र आत्माकी
निन्दा करे वह उसके लिये नहीं क्षमा किई जायगी। जब ११
लोग तुम्हें सभाओं और अध्यक्षों और अधिकारियोंके आगे
ले जावें तब किस रीतिसे अथवा क्या उत्तर देओगे अथवा
क्या कहोगे इसकी चिन्ता मत करो। क्योंकि जो कुछ कहना १२
उचित होगा सो पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखावेगा।
भीड़मेंसे किसीने उससे कहा हे गुरु मेरे भाईसे कहिये १३
कि पिताका धन मेरे संग बांट लेवे। उसने उससे कहा १४
हे मनुष्य किसने मुझे तुम्होंपर न्यायी अथवा बांटनेहारा
ठहराया। और उसने लोगोंसे कहा देखो लोभसे बचे १५
रहो क्योंकि किसीको धन बहुत होय तौभी उसका जीवन
उसके धनसे नहीं है। उसने उन्होंसे एक दृष्टान्त भी कहा १६
कि किसी धनवान मनुष्यकी भूमिमें बहुत कुछ उपजा।
तब वह अपने मनमें बिचार करने लगा कि मैं क्या करूं १७
क्योंकि मुझको अपना अन्न रखनेका स्थान नहीं है।
और उसने कहा मैं यही करूंगा मैं अपनी बखारियां १८
तोड़के बड़ी बड़ी बनाऊंगा और वहां अपना सब अन्न
और अपनी सम्पत्ति रखूंगा। और मैं अपने मनसे कहूंगा १९
हे मन तेरे पास बहुत बरसोंके लिये बहुत सम्पत्ति रखी
हुई है बिश्राम कर खा पी सुखसे रह। परन्तु ईश्वरने २०
उससे कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझसे ले लिया
जायगा तब जो कुछ तूने एकट्ठा किया है सो किसका
होगा। जो अपने लिये धन बटोरता है और ईश्वरकी २१
ओर धनी नहीं है सो ऐसाही है।

२२ फिर उसने अपने शिष्योंसे कहा इसलिये मैं तुमसे
कहता हूं अपने प्राणके लिये चिन्ता मत करो कि हम
२३ क्या खायेंगे न शरीरके लिये कि क्या पहिरेंगे। भोजनसे
२४ प्राण और बस्त्रसे शरीर बड़ा है। कौवोंको देख लो.
वे न बोते हैं न लवते हैं उनको न भंडार न खत्ता है
तौभी ईश्वर उनको पालता है. तुम पंछियोंसे कितने
२५ बड़े हो। तुममेंसे कौन मनुष्य चिन्ता करनेसे अपनी
२६ आयुकी दौड़को एक हाथ भी बढ़ा सकता है। सो यदि
तुम अति छोटा काम भी नहीं कर सकते हो तो और
२७ बातोंके लिये क्यों चिन्ता करते हो। सोसन फूलोंको
देख लो वे कैसे बढ़ते हैं. वे न परिश्रम करते हैं न
कातते हैं परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि सुलेमान भी
अपने सारे बिभवमें उनमेंसे एकके तुल्य बिभूषित न था।
२८ यदि ईश्वर घासको जो आज खेतमें है और कल चूल्हेमें
झोंकी जायगी ऐसी बिभूषित करता है तो हे अल्पबिश्वा-
२९ सियो कितना अधिक करके वह तुम्हें पहिरावेगा। तुम यह
खोज मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे
३० और न सन्देह करो। जगतके देवपूजक लोग इन सब
बस्तुओंको खोज करते हैं और तुम्हारा पिता जानता है
३१ कि तुम्हें इन बस्तुओंका प्रयोजन है। परन्तु ईश्वरके
राज्यको खोज करो तब यह सब बस्तु भी तुम्हें दिई
३२ जायेंगीं। हे छोटे झुंड मत डरो क्योंकि तुम्हारे पिताको
३३ तुम्हें राज्य देनेमें प्रसन्नता है। अपनी सम्पत्ति बेचके दान
करो. अजर थैलियां और अक्षय धन अपने लिये स्वर्गमें
एकट्ठा करो जहां चोर नहीं पहुंचता है और न कीड़ा

बिगाड़ता है। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा ३४
मन भी लगा रहेगा।

तुम्हारी कमरें बंधी और दीपक जलते रहें। ३५
और तुम उन मनुष्योंके समान होओ जो अपने स्वामीकी ३६
बाट देखते हैं कि वह बिवाहसे कब लौटेगा इसलिये
कि जब वह आके द्वार खटखटावे तब वे उसके लिये
तुरन्त खोलें। वे दास धन्य हैं जिन्हें स्वामी आके जागते ३७
पावे. मैं तुमसे सच कहता हूं वह कमर बांधके उन्हें
भोजनपर बैठावेगा और आके उनकी सेवा करेगा। जो ३८
वह दूसरे पहर आवे अथवा तीसरे पहर आवे और
ऐसाही पावे तो वे दास धन्य हैं। तुम यह जानते हो ३९
कि यदि घरका स्वामी जानता चोर किस घड़ी आवेगा
तो वह जागता रहता और अपने घरमें सेंध पड़ने न
देता। इसलिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ीका ४०
अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्यका पुत्र
आवेगा। तब पितरने उससे कहा हे प्रभु क्या आप हमोंसे ४१
अथवा सब लोगोंसे भी यह दृष्टान्त कहते हैं। प्रभुने ४२
कहा वह बिश्वासयोग्य और बुद्धिमान भंडारी कौन है
जिसे स्वामी अपने परिवारपर प्रधान करेगा कि समयमें
उन्हें सीधा देवे। वह दास धन्य है जिसे उसका स्वामी ४३
आके ऐसा करते पावे। मैं तुमसे सच कहता हूं वह उसे ४४
अपनी सब सम्पत्तिपर प्रधान करेगा। परन्तु जो वह दास ४५
अपने मनमें कहे कि मेरा स्वामी आनेमें बिलंब करता
है और दासों और दासियोंको मारने लगे और खाने
पीने और मतवाला होने लगे. तो जिस दिन वह बाट ४६

जोहता न रहे ग्रोर जिस घड़ीका वह अनुमान न
करे उसीमें उस दासका स्वामी आवेगा ग्रोर उसको
बड़ी ताड़ना देके अबिश्वासियोंके संग उसका अंश देगा।
४७ वह दास जो अपने स्वामीकी इच्छा जानता था परन्तु
तैयार न रहा ग्रोर उसकी इच्छाके समान न किया
बहुतसी मार खायगा परन्तु जो नहीं जानता था ग्रोर
मार खानेके योग्य काम किया सो थोड़ीसी मार खायगा।
४८ ग्रोर जिस किसीको बहुत दिया गया है उससे बहुत
मांगा जायगा ग्रोर जिसको लोगोंने बहुत सोंपा है उससे
वे अधिक मांगेंगे।
४९ मैं पृथिवीपर आग लगाने आया हूं ग्रोर मैं क्या
५० चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती। मुझे एक
डूब लेना है ग्रोर जबलों वह सम्पूर्ण न होय तबलों मैं
५१ कैसे सकेतेमें हूं। क्या तुम समझते हो कि मैं पृथिवीपर
मिलाप करवाने आया हूं. मैं तुमसे कहता हूं सो नहीं
५२ परन्तु फूट। क्योंकि अबसे एक घरमें पांच जन अलग
अलग होंगे तीन दोके बिरुद्ध ग्रोर दो तीनके बिरुद्ध।
५३ पिता पुत्रके बिरुद्ध ग्रोर पुत्र पिताके बिरुद्ध मां बेटीके
बिरुद्ध ग्रोर बेटी मांके बिरुद्ध सास अपनी पतोहके बिरुद्ध
ग्रोर पतोह अपनी सासके बिरुद्ध अलग अलग होंगे।
५४ ग्रोर भी उसने लोगोंसे कहा जब तुम मेघको पश्चिम-
से उठते देखते हो तब तुरन्त कहते हो कि झड़ी आती
५५ है ग्रोर ऐसा होता है। ग्रोर जब दक्षिणकी बयार चलते
देखते हो तब कहते हो कि घाम होगा ग्रोर वह भी
५६ होता है। हे कपटियो तुम धरती ग्रोर आकाशका रूप

चीन्ह सकते हो परन्तु इस समयको क्योंकर नहीं चीन्हते
हो। और जो उचित है उसको तुम आपहीसे क्यों नहीं ५७
बिचार करते हो। जब तू अपने मुद्दईके संग अध्यक्षके ५८
पास जाता है मार्गहीमें उससे छूटनेका यत्न कर ऐसा
न हो कि वह तुझे न्यायीके पास खींच ले जाय और
न्यायी तुझे प्यादेको सोंपे और प्यादा तुझे बन्दीगृहमें
डाले। मैं तुझसे कहता हूं कि जबलों तू कौड़ी कौड़ी ५९
भर न देवे तबलों वहांसे छूटने न पावेगा।

## १३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ पश्चात्ताप करनेकी आवश्यकता। ६ निष्फल गूलर वृक्षका दृष्टान्त। १० यीशुका एक कुबड़ी स्त्रीको चंगा करना और बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना। १८ राईके दाने और खमीरके दृष्टान्त। २२ सकेत फाटकसे पैठनेका उपदेश। ३१ हेरोदपर उलहना और यिरूशलीमके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी।

उस समयमें कितने लोग आ पहुंचे और उन गाली- १
लियोंके विषयमें जिनका लोहू पिलातने उनके बलिदानों-
के संग मिलाया था यीशुसे बात करने लगे। उसने उन्हें २
उत्तर दिया क्या तुम समझते हो कि ये गालीली लोग
सब गालीलियोंसे अधिक पापी थे कि उन्होंपर ऐसी
बिपत्ति पड़ी। मैं तुमसे कहता हूं सो नहीं परन्तु जो ३
तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीतिसे नष्ट
होगे। अथवा क्या तुम समझते हो कि वे अठारह जन ४
जिन्होंपर शीलोहमें गुम्मट गिर पड़ा और उन्हें नाश
किया सब मनुष्योंसे जो यिरूशलीममें रहते थे अधिक
अपराधी थे। मैं तुमसे कहता हूं सो नहीं परन्तु जो ५

तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीतिसे नष्ट
होगे।
६ उसने यह दृष्टान्त भी कहा कि किसी मनुष्यकी दाखकी
बारीमें एक गूलरका वृक्ष लगाया गया था और उसने
७ आके उसमें फल ढूंढा पर न पाया। तब उसने मालीसे
कहा देख मैं तीन बरससे आके इस गूलरके वृक्षमें फल
ढूंढता हूं पर नहीं पाता हूं. उसे काट डाल वह भूमिको
८ क्यों निकम्मी करता है। मालीने उसको उत्तर दिया
कि हे स्वामी उसको इस बरस भी रहने दीजिये जबलों
९ मैं उसका थाला खोदके खाद भरूं। तब जो उसमें फल
लगे तो भला. नहीं तो पीछे उसे कटवा डालिये।
१० बिश्रामके दिन यीशु एक सभाके घरमें उपदेश करता
११ था। और देखो एक स्त्री थी जिसे अठारह बरससे एक
दुर्बल करनेवाला भूत लगा था और वह कुबड़ी थी
और किसी रीतिसे अपनेको सीधी न कर सकती थी।
१२ यीशुने उसे देखके अपने पास बुलाया और उससे कहा
१३ हे नारी तू अपनी दुर्बलतासे छुड़ाई गई है। तब उसने
उसपर हाथ रखा और वह तुरन्त सीधी हुई और
१४ ईश्वरकी स्तुति करने लगी। परन्तु यीशुने बिश्रामके
दिनमें चंगा किया इससे सभाका अध्यक्ष रिसियाने
लगा और उत्तर दे लोगोंसे कहा छः दिन हैं जिनमें
काम करना उचित है सो उन दिनोंमें आके चंगे किये
१५ जाओ और बिश्रामके दिनमें नहीं। प्रभुने उसको उत्तर
दिया कि हे कपटी क्या बिश्रामके दिन तुम्होंमेंसे हर एक
अपने बैल अथवा गधेको थानसे खोलके जल पिलानेको

नहीं ले जाता। और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो १६
इब्राहीमकी पुत्री है जिसे शैतानने देखे अठारह बरससे
बांध रखा था बिश्रामके दिनमें इस बंधनसे खोली जाय।
जब उसने यह बातें कहीं तब उसके सब बिरोधी लज्जित १७
हुए और समस्त लोग सब प्रतापके कर्म्मोंके लिये जो वह
करता था आनन्दित हुए।
फिर उसने कहा ईश्वरका राज्य किसके समान है १८
और मैं उसकी उपमा किससे देऊंगा। वह राईके एक १९
दानेकी नाईं है जिसे किसी मनुष्यने लेके अपनी बारीमें
बोया और वह बढ़ा और बड़ा पेड़ हो गया और
आकाशके पंछियोंने उसकी डालियोंपर बसेरा किया।
उसने फिर कहा मैं ईश्वरके राज्यकी उपमा किससे देऊं- २०
गा। वह खमीरकी नाईं है जिसको किसी स्त्रीने लेके तीन २१
पसेरी आटेमें छिपा रखा यहांलों कि सब खमीर हो गया।
वह उपदेश करता हुआ नगर नगर और गांव गांव २२
होके यिरूशलीमकी ओर जाता था। तब किसीने उससे २३
कहा हे प्रभु क्या त्राण पानेहारे थोड़े हैं। उसने उन्होंसे २४
कहा सकेत फाटकसे प्रवेश करनेको साहस करो क्योंकि
मैं तुमसे कहता हूं कि बहुत लोग प्रवेश करने चाहेंगे
और नहीं सकेंगे। जब घरका स्वामी उठके द्वार मूंद चुके- २५
गा और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाने लगोगे
और कहोगे हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये और
वह तुम्हें उत्तर देगा मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहांके
हो. तब तुम कहने लगोगे कि हम लोग आपके साम्ने २६
खाते औ पीते थे और आपने हमारी सड़कोंमें उपदेश

२७ किया। परन्तु वह कहेगा मैं तुमसे कहता हूं मैं तुम्हें
नहीं जानता हूं तुम कहांके हो. हे कुकर्म्म करनेहारो
२८ तुम सब मुझसे दूर होओ। वहां रोना ओ दांत पीसना
होगा कि उस समय तुम इब्राहीम ओर इसहाक ओर
याकूब ओर सब भविष्यद्वक्ताओंको ईश्वरके राज्यमें बैठे
२९ हुए ओर अपनेको बाहर निकाले हुए देखोगे। ओर
लोग पूर्ब्ब ओर पश्चिम ओर उत्तर ओर दक्षिणसे आके
३० ईश्वरके राज्यमें बैठेंगे। ओर देखो कितने पिछले हैं जो
अगले होंगे ओर कितने अगले हैं जो पिछले होंगे।
३१ उसी दिन कितने फरीशियोंने आके उससे कहा
यहांसे निकलके चला जा क्योंकि हेरोद तुझे मार डालने
३२ चाहता है। उसने उनसे कहा जाके उस लोमड़ीसे कहो
कि देखो मैं आज ओर कल भूतोंको निकालता ओर
रोगियोंको चंगा करता हूं ओर तीसरे दिन सिद्ध होंगा।
३३ तौभी आज ओर कल ओर परसों फिरना मुझे अवश्य
है क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यिरूश-
३४ लीमके बाहर नाश किया जाय। हे यिरूशलीम यिरू-
शलीम जो भविष्यद्वक्ताओंको मार डालती है ओर जो
तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे मुर्गी
अपने बच्चोंको पंखोंके नीचे एकट्ठे करती है वैसेही मैंने
कितनी बेर तेरे बालकोंको एकट्ठे करनेकी इच्छा किई
३५ परन्तु तुमने न चाहा। देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये
उजाड़ छोड़ा जाता है ओर मैं तुमसे सच कहता हूं जिस
समयमें तुम कहोगे धन्य वह जो परमेश्वरके नामसे आता
है वह समय जबलों न आवे तबलों तुम मुझे फिर न देखोगे।

# १४ चैादहवां पर्ब्ब।

१ यीशुका बिश्रामके दिनमें एक जलंधरीको चंगा करना। ७ नेवतहरियोंके दृष्टान्तसे नम्र होनेका उपदेश। १२ नेवता करनेके दृष्टान्तसे परोपकारका उपदेश। १५ बियारीका दृष्टान्त। २५ यीशुके शिष्य होनेमें जो दुःख सहना होगा उसे आगेसे सोचनेका उपदेश।

जब यीशु बिश्रामके दिन प्रधान फरीशियोंमेंसे किसीके १
घरमें रोटी खानेको गया तब वे उसको ताकते थे। और २
देखो एक मनुष्य उसके साम्हने था जिसे जलंधर रोग
था। इसपर यीशुने व्यवस्थापकों और फरीशियोंसे कहा ३
क्या बिश्रामके दिनमें चंगा करना उचित है. परन्तु वे
चुप रहे। तब उसने उस मनुष्यको लेके चंगा करके बिदा ४
किया. और उन्हें उत्तर दिया कि तुममेंसे किसका गधा ५
अथवा बैल कूंएमें गिरेगा और वह तुरन्त बिश्रामके
दिनमें उसे न निकालेगा। वे उसको इन बातोंका उत्तर ६
नहीं दे सके।

जब उसने देखा कि नेवतहरी लोग क्योंकर ऊंचे ऊंचे ७
स्थान चुन लेते हैं तब एक दृष्टान्त दे उन्होंसे कहा. जब ८
कोई तुझे बिवाहके भोजमें बुलावे तब ऊंचे स्थानमें मत बैठ
ऐसा न हो कि उसने तुझसे अधिक आदरके योग्य किसी-
को बुलाया हो. और जिसने तुझे और उसे नेवता दिया ९
सो आके तुझसे कहे कि इस मनुष्यको स्थान दीजिये
और तब तू लज्जित हो सबसे नीचा स्थान लेने लगे।
परन्तु जब तू बुलाया जाय तब सबसे नीचे स्थानमें जाके १०
बैठ इसलिये कि जब वह जिसने तुझे नेवता दिया है
आवे तब तुझसे कहे हे मित्र और ऊपर आइये. तब

११ तेरे संग बैठनेहारोंके साम्ने तेरा आदर होगा। क्योंकि
जो कोई अपनेको ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा
और जो अपनेको नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा।
१२ तब जिसने उसे नेवता दिया था उसने उससे भी
कहा जब तू दिनका अथवा रातका भोजन बनावे तब
अपने मित्रों वा अपने भाइयों वा अपने कुटुंबों वा धनवान
पड़ोसियोंको मत बुला ऐसा न हो कि वे भी इसके बदले
१३ तुझे नेवता देवें और यही तेरा प्रतिफल होय। परन्तु
जब तू भोज करे तब कंगालों टुंडों लंगड़ों और अन्धोंको
१४ बुला। और तू धन्य होगा क्योंकि वे तुझे प्रतिफल नहीं
दे सकते हैं परन्तु धर्म्मियोंके जी उठनेपर प्रतिफल
तुझको दिया जायगा।
१५ उसके संग बैठनेहारोंमेंसे एकने यह बातें सुनके उससे
कहा धन्य वह जो ईश्वरके राज्यमें रोटी खायगा।
१६ उसने उससे कहा किसी मनुष्यने बड़ी बियारी बनाई
१७ और बहुतोंको बुलाया। बियारीके समयमें उसने अपने
दासके हाथ नेवतहरियोंको कहला भेजा कि आओ
१८ सब कुछ अब तैयार है। परन्तु वे सब एक मत होके
क्षमा मांगने लगे. पहिलेने उस दाससे कहा मैंने कुछ
भूमि मोल लिई है और उसे जाके देखना मुझे अवश्य
१९ है मैं तुझसे बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा। दूसरेने
कहा मैंने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें
परखनेको जाता हूं मैं तुझसे बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा
२० करवा। तीसरेने कहा मैंने बिवाह किया है इसलिये मैं
२१ नहीं आ सकता हूं। उस दासने आके अपने स्वामीको

यह बातें सुनाईं तब घरके स्वामीने क्रोध कर अपने दास-
से कहा नगरकी सड़कों और गलियोंमें शीघ्र जाके कंगालों
औ टुंडों औ लंगड़ों और अन्धोंको यहां ले आ। दासने २२
फिर कहा हे स्वामी जैसे आपने आज्ञा दिई तैसे किया
गया है और अब भी जगह है। स्वामीने दाससे कहा २३
राजपथोंमें और गाछोंके नीचे जाके लोगोंको बिन लानेसे
मत छोड़ कि मेरा घर भर जावे। क्योंकि मैं तुमसे २४
कहता हूं कि उन नेवते हुए मनुष्योंमेंसे कोई मेरी
बियारी न चीखेगा।

बड़ी भीड़ यीशुके संग जाती थी और उसने पीछे २५
फिरके उन्होंसे कहा. यदि कोई मेरे पास आवे और २६
अपनी माता और पिता और स्त्री और लड़कों और
भाइयों और बहिनोंको हां और अपने प्राणको भी अप्रिय
न जाने तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। और २७
जो कोई अपना क्रूश उठाये हुए मेरे पीछे न आवे वह
मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। तुममेंसे कौन है कि गढ़ २८
बनाने चाहता हो और पहिले बैठके खर्च न जोड़े कि
समाप्ति करनेकी बिसात मुझे है कि नहीं। ऐसा न हो २९
कि जब वह नेव डालके समाप्ति न कर सके तब सब
देखनेहारे उसे ठट्ठेमें उड़ाने लगें. और कहें यह मनुष्य ३०
बनाने लगा परन्तु समाप्ति नहीं कर सका। अथवा कौन ३१
राजा है कि दूसरे राजासे लड़ाई करनेको जाता हो और
पहिले बैठके बिचार न करे कि जो बीस सहस्र लेके मेरे
बिरुद्ध आता है मैं दस सहस्र लेके उसका साम्हना कर
सकता हूं कि नहीं। और जो नहीं तो उसके दूर रहतेही ३२

३३ वह दूतोंको भेजके मिलाप चाहता है। इसी रीतिसे
तुम्होंमेंसे जो कोई अपना सर्वस्व त्यागन न करे वह मेरा
३४ शिष्य नहीं हो सकता है। लोण अच्छा है परन्तु यदि
लोणका स्वाद बिगड़ जाय तो वह किससे स्वादित किया
३५ जायगा। वह न भूमिके न खादके लिये काम आता है.
लोग उसे बाहर फेंकते हैं. जिसको सुननेके कान हों
सो सुने।

## १५ पन्द्रहवां पर्व्व।

१ खोई ऊई भेड़ और खोई ऊई सूकीके दृष्टान्त। ११ उड़ाऊ पुत्रका दृष्टान्त।

१ कर उगाहनेहारे और पापी लोग सब यीशु पास
२ आते थे कि उसकी सुनें। और फरीशी और अध्यापक
कुड़कुड़ाके कहने लगे यह तो पापियोंको ग्रहण करता
३ और उनके संग खाता है। तब उसने उन्होंसे यह दृष्टान्त
४ कहा. तुममेंसे कौन मनुष्य है कि उसकी सौ भेड़ हों
और उसने उनमेंसे एकको खोया हो और वह निन्नानवे-
को जंगलमें न छोड़े और जबलों उस खोई हुईको न
५ पावे तबलों उसके खोजमें न जाय। और वह उसे पाके
६ आनन्दसे अपने कांधोंपर रखता है. और घरमें आके
मित्रों औ पड़ोसियोंको एकट्ठे बुलाके उन्होंसे कहता है
मेरे संग आनन्द करो कि मैंने अपनी खोई हुई भेड़
७ पाई है। मैं तुमसे कहता हूं कि इसी रीतिसे जिन्हें
पश्चात्ताप करनेका प्रयोजन न होय ऐसे निन्नानवे
धर्म्मियोंसे अधिक एक पापीके लिये जो पश्चात्ताप करे
स्वर्गमें आनन्द होगा।
८ अथवा कौन स्त्री है कि उसकी दस सूकी हों और वह

जो एक सूकी खोवे तो दीपक बारके ग्रो घर बुहारके उसे
जबलों न पावे तबलों यत्नसे न ढूंढे। ग्रोर वह उसे पाके ९
सखियों ग्रो पड़ोसिनियोंको एकट्ठी बुलाके कहती है मेरे
संग ग्रानन्द करो कि मैंने जो सूकी खोई थी सो पाई है।
मैं तुमसे कहता हूं कि इसी रीतिसे एक पापीके लिये १०
जो पश्चात्ताप करता है ईश्वरके दूतोंमें ग्रानन्द होता है।
फिर उसने कहा किसी मनुष्यके दो पुत्र थे। उनमेंसे ११ १२
छुटकेने पितासे कहा हे पिता सम्पत्तिमेंसे जो मेरा ग्रंश
होय सो मुझे दीजिये. तब उसने उनको ग्रपनी सम्पत्ति
बांट दिई। बहुत दिन नहीं बीते कि छुटका पुत्र सब १३
कुछ एकट्ठा करके दूर देश चला गया ग्रोर वहां लुचपन-
में दिन बिताते हुए ग्रपनी सम्पत्ति उड़ा दिई। जब १४
वह सब कुछ उठा चुका तब उस देशमें बड़ा ग्रकाल पड़ा
ग्रोर वह कंगाल हो गया। ग्रोर वह जाके उस १५
देशके निवासियोंमेंसे एकके यहां रहने लगा जिसने उसे
ग्रपने खेतोंमें सूग्रर चरानेको भेजा। ग्रोर वह उन १६
छीमियोंसे जिन्हें सूग्रर खाते थे ग्रपना पेट भरने चाहता
था ग्रोर कोई नहीं उसको कुछ देता था। तब उसे चेत १७
हुग्रा ग्रोर उसने कहा मेरे पिताके कितने मजूरोंको
भोजनसे ग्रधिक रोटी होती है ग्रोर मैं भूखसे मरता
हूं। मैं उठके ग्रपने पिता पास जाऊंगा ग्रोर उससे १८
कहूंगा हे पिता मैंने स्वर्गके बिरुद्ध ग्रोर ग्रापके साम्ने पाप
किया है। मैं फिर ग्रापका पुत्र कहावनेके योग्य नहीं १९
हूं मुझे ग्रपने मजूरोंमेंसे एकके समान कोजिये। तब वह २०
उठके ग्रपने पिता पास चला पर वह दूर हो था कि

उसके पिताने उसे देखके दया किई और दौड़के उसके
२१ गलेमें लिपटके उसे चूमा। पुत्रने उससे कहा हे पिता
मैंने स्वर्गके बिरुद्ध और आपके साम्ने पाप किया है और
२२ फिर आपका पुत्र कहावनेके योग्य नहीं हूं। परन्तु
पिताने अपने दासोंसे कहा सबसे उत्तम बस्त्र निकालके
उसे पहिनाओ। और उसके हाथमें अंगूठी और पांवोंमें
२३ जूते पहिनाओ। और मोटा बछड़ू लाके मारो और हम
२४ खावें और आनन्द करें। क्योंकि यह मेरा पुत्र मूआ था
फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है. तब वे
२५ आनन्द करने लगे। उसका जेठा पुत्र खेतमें था और
जब वह आते हुए घरके निकट पहुंचा तब बाजा और
२६ नाचका शब्द सुना। और उसने अपने सेवकोंमेंसे एकको
२७ अपने पास बुलाके पूछा यह क्या है। उसने उससे कहा
आपका भाई आया है और आपके पिताने मोटा बछड़ू
२८ मारा है इसलिये कि उसे भला चंगा पाया है। परन्तु
उसने क्रोध किया और भीतर जाने न चाहा इसलिये
२९ उसका पिता बाहर आ उसे मनाने लगा। उसने पिताको
उत्तर दिया कि देखिये मैं इतने बरसोंसे आपकी सेवा
करता हूं और कभी आपकी आज्ञाको उल्लंघन न किया
और आपने मुझे कभी एक मेम्ना भी न दिया कि मैं अपने
३० मित्रोंके संग आनन्द करता। परन्तु आपका यह पुत्र जो
वेश्याओंके संग आपकी सम्पत्ति खा गया है ज्योंही
आया त्योंही आपने उसके लिये मोटा बछड़ू मारा है।
३१ पिताने उससे कहा हे पुत्र तू सदा मेरे संग है और
३२ जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है। परन्तु आनन्द

करना और हर्षित होना उचित था क्योंकि यह तेरा
भाई मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है।

## १६ सोलहवां पर्व्व।

१ चतुर भंडारीका दृष्टान्त। १० अनेक बातोंका उपदेश। १९ धनवान और भिखारीका दृष्टान्त।

यीशुने अपने शिष्योंसे भी कहा कोई धनवान मनुष्य १
था जिसका एक भंडारी था और यह दोष उसके आगे
भंडारीपर लगाया गया कि वह आपकी सम्पत्ति उड़ा
देता है। उसने उसे बुलाके उससे कहा यह क्या है जो २
मैं तेरे विषयमें सुनता हूं. अपने भंडारपनका लेखा दे
क्योंकि तू आगेको भंडारी नहीं रह सकेगा। तब भंडारीने ३
अपने मनमें कहा मैं क्या करूं कि मेरा स्वामी भंडारीका
काम मुझसे छीन लेता है. मैं कोड़ नहीं सकता हूं
और भीख मांगनेसे मुझे लाज आती है। मैं जानता हूं ४
मैं क्या करूंगा इसलिये कि जब मैं भंडारपनसे छुड़ाया
जाऊं तब लोग मुझे अपने घरोंमें ग्रहण करें। और उसने ५
अपने स्वामीके ऋणियोंमेंसे एक एकको अपने पास बुलाके
पहिलेसे कहा तू मेरे स्वामीका कितना धारता है। उसने ६
कहा सौ मन तेल. वह उससे बोला अपना पत्र ले
और बैठके शीघ्र पचास मन लिख। फिर दूसरेसे कहा ७
तू कितना धारता है. उसने कहा सौ मन गेहूं. वह
उससे बोला अपना पत्र ले और अस्सी मन लिख। स्वामी- ८
ने उस अधर्म्मी भंडारीको सराहा कि इसने बुद्धिका काम
किया है. क्योंकि इस संसारके सन्तान अपने समयके
लोगोंके विषयमें ज्योतिके सन्तानोंसे अधिक बुद्धिमान हैं।

९ और मैं तुम्होंसे कहता हूं कि अधर्म्मके धनके द्वारा अपने
लिये मित्र कर लो कि जब तुम छूट जावो तब वे तुम्हें
अनन्त निवासोंमें ग्रहण करें।
१० जो अति थोड़ेमें बिश्वासयोग्य है सो बहुतमें भी
बिश्वासयोग्य है और जो अति थोड़ेमें अधर्म्मी है सो
११ बहुतमें भी अधर्म्मी है। इसलिये जो तुम अधर्म्मके धनमें
बिश्वासयोग्य न हुए हो तो सच्चा धन तुम्हें कैान सोंपेगा।
१२ और जो तुम पराये धनमें बिश्वासयोग्य न हुए हो तो
१३ तुम्हारा धन तुम्हें कैान देगा। कोई सेवक दे स्वामियोंकी
सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एकसे बैर करेगा
और दूसरेको प्यार करेगा अथवा एकसे लगा रहेगा
और दूसरेको तुच्छ जानेगा. तुम ईश्वर और धन दोनों-
की सेवा नहीं कर सकते हो।
१४ फरीशियोंने भी जो लोभी थे यह सब बातें सुनीं
१५ और उसका ठट्ठा किया। उसने उन्होंसे कहा तुम तो
मनुष्योंके आगे अपनेको धर्म्मी ठहराते हो परन्तु ईश्वर
तुम्हारे मनको जानता है. जो मनुष्योंके लेखे महान है सो
१६ ईश्वरके आगे घिनित है। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग
योहनलों थे तबसे ईश्वरके राज्यका सुसमाचार सुनाया
जाता है और सब कोई उसमें बरियाईसे प्रवेश करते हैं।
१७ व्यवस्थाके एक बिन्दुके लोप होनेसे आकाश औा पृथिवीका
१८ टल जाना सहज है। जो कोई अपनी स्त्रीको त्यागके
दूसरीसे बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है और जो
स्त्री अपने स्वामीसे त्यागी गई है उससे जो कोई बिवाह
करे सो परस्त्रीगमन करता है।

एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी बस्त्र और मलमल १९
पहिनता और प्रतिदिन बिभव और सुखसे रहता था।
और इलियाजर नाम एक कंगाल उसकी डेवढ़ीपर २०
डाला गया था जो घावोंसे भरा हुआ था. और उन २१
चूरचारोंसे जो धनवानकी मेजसे गिरते थे पेट भरने
चाहता था और कुत्ते भी आके उसके घावोंको चाटते
थे। वह कंगाल मर गया और दूतोंने उसको इब्राहीमकी २२
गोदमें पहुंचाया और वह धनवान भी मरा और गाड़ा
गया। और परलोकमें उसने पीड़ामें पड़े हुए अपनी २३
आंखें उठाईं और दूरसे इब्राहीमको और उसकी गोदमें
इलियाजरको देखा। तब वह पुकारके बोला हे पिता २४
इब्राहीम मुझपर दया करके इलियाजरको भेजिये कि
अपनी उंगलीका छोर पानीमें डुबोके मेरी जीभको ठंढी
करे क्योंकि मैं इस ज्वालामें कलपता हूं। परन्तु इब्राही- २५
मने कहा हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीतेजी अपनी
सम्पत्ति पा चुका है और वैसाही इलियाजर बिपत्ति
परन्तु अब वह शांति पाता है और तू कलपता है।
और भी हमारे और तुम्हारे बीचमें बड़ा अन्तर ठहराया २६
गया है कि जो लोग इधरसे उस पार तुम्हारे पास जाया
चाहें सो नहीं जा सकें और न उधरके लोग इस पार
हमारे पास आवें। उसने कहा तब हे पिता मैं आपसे २७
बिन्ती करता हूं उसे मेरे पिताके घर भेजिये. क्योंकि मेरे २८
पांच भाई हैं वह उन्हें साक्षी देवे ऐसा न हो कि वे भी
इस पीड़ाके स्थानमें आवें। इब्राहीमने उससे कहा मूसा २९
और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तक उनके पास हैं वे उनकी

३० सुनें। वह बाेला हे पिता इब्राहीम साे नहीं परन्तु यदि
मृतकाेंमेंसे काेई उनके पास जाय ताे वे पश्चात्ताप करेंगे।
३१ उसने उससे कहा जाे वे मूसा और भविष्यद्वक्ताआेंकी
नहीं सुनते हैं ताे यदि मृतकाेंमेंसे काेई जी उठे तौभी
नहीं मानेंगे।

## १७ सत्तहवां पर्ब्ब ।

१ ठाेकर खिलानेका निषेध। ३ क्षमा करनेका उपदेश और बिश्वासके गुणका बखान। ७ दासके दृष्टान्तसे अभिमानका निषेध। ११ यीशुका दस काेढ़ियाेंकाे चंगा करना। २० ईश्वरके राज्यके आनेका बर्णन। २२ मनुष्यके पुत्रके आनेका बर्णन और जलप्रलयसे और सदाेमके बिनाशसे उस समयकी उपमा।

१ यीशुने शिष्याेंसे कहा ठाेकराेंका न लगना अन्हाेना है
परन्तु हाय वह मनुष्य जिसके द्वारासे वे लगती हैं।
२ इन छाेटाेंमेंसे एककाे ठाेकर खिलानेसे उसके लिये भला
हाेता कि चक्कीका पाट उसके गलेमें बांधा जाता और
वह समुद्रमें डाला जाता।
३ अपने विषयमें सचेत रहाे. यदि तेरा भाई तेरा
अपराध करे ताे उसकाे समझा दे और यदि पछतावे
४ ताे उसे क्षमा कर। जाे वह दिनभरमें सात बेर तेरा
अपराध करे और सात बेर दिनभरमें तेरी आेर फिरके
५ कहे मैं पछताता हूं ताे उसे क्षमा कर। तब प्रेरिताेंने
६ प्रभुसे कहा हमारा बिश्वास बढ़ाइये। प्रभुने कहा यदि
तुमकाे राईके एक दानेके तुल्य बिश्वास हाेता ताे तुम
इस गूलरके वृक्षसे जाे कहते कि उखड़ जा और समुद्रमें
लग जा वह तुम्हारी आज्ञा मानता।

तुममेंसे कौन है कि उसका दास हल जोतता अथवा ७
चरवाही करता हो और ज्योंही वह खेतसे आवे त्योंही
उससे कहेगा तुरन्त आ भोजनपर बैठ। क्या वह उससे ८
न कहेगा मेरी बियारी बनाके जबलों मैं खाऊं और पीऊं
तबलों कमर बांधके मेरी सेवा कर और इसके पीछे तू
खायगा और पीयगा। क्या उस दासका उसपर कुछ ९
निहोरा हुआ कि उसने वह काम किया जिसकी आज्ञा
उसको दिई गई. मैं ऐसा नहीं समझता हूं। इस रीतिसे १०
तुम भी जब सब काम कर चुको जिसकी आज्ञा तुम्हें दिई
गई है तब कहो हम निकम्मे दास हैं कि जो हमें करना
उचित था सोई भर किया है।

यीशु यिरूशलीमको जाते हुए शोमिरोन और गालील- ११
के बीचमेंसे होके जाता था। जब वह किसी गांवमें प्रवेश १२
करता था तब दस कोढ़ी उसके सन्मुख आ दूर खड़े हुए।
और वे ऊंचे शब्दसे बोले हे यीशु गुरु हमपर दया १३
कीजिये। यह देखके उसने उन्होंसे कहा जाके अपने तईं १४
याजकोंको दिखाओ. जाते हुए वे शुद्ध किये गये। तब १५
उनमेंसे एकने जब देखा कि मैं चंगा हुआ हूं बड़े
शब्दसे ईश्वरकी स्तुति करता हुआ फिर आया. और १६
यीशुका धन्य मानते हुए उसके चरणोंपर मुंहके बल
गिरा. और वह शोमिरोनी था। इसपर यीशुने कहा १७
क्या दसों शुद्ध न किये गये तो नौ कहां हैं। क्या इस १८
अन्यदेशीको छोड़ कोई नहीं ठहरे जो ईश्वरकी स्तुति
करनेको फिर आवें। तब उसने उससे कहा उठ चला १९
जा तेरे बिश्वासने तुझे बचाया है।

२० जब फरीशियोंने उससे पूछा कि ईश्वरका राज्य कब
आवेगा तब उसने उन्होंको उत्तर दिया कि ईश्वरका
२१ राज्य प्रत्यक्ष रूपसे नहीं आता है. और न लोग कहेंगे
देखो यहां है अथवा देखो वहां है क्योंकि देखो ईश्वरका
राज्य तुम्होंमें है।

२२ उसने शिष्योंसे कहा वे दिन आवेंगे जिनमें तुम मनु-
ष्यके पुचके दिनोंमेंसे एक दिन देखने चाहोगे पर न
२३ देखोगे। लोग तुम्होंसे कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो
वहां है पर तुम मत जाओ और न उनके पीछे हो
२४ लेओ। क्योंकि जैसे बिजली जो आकाशकी एक ओरसे
चमकती है आकाशको दूसरी ओरतक ज्योति देती है
२५ वैसाही मनुष्यका पुच भी अपने दिनमें होगा। परन्तु
पहिले उसको अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और इस
२६ समयके लोगोंसे तुच्छ किया जाय। जैसा नूहके दिनोंमें
२७ हुआ वैसाही मनुष्यके पुचके दिनोंमें भी होगा। जिस
दिनलों नूह जहाजपर न चढ़ा उस दिनलों लोग खाते
पीते बिवाह करते औ बिवाह दिये जाते थे. तब उस
२८ दिन जलप्रलयने आके उन सभोंको नाश किया। और
जिस रीतिसे लूतके दिनोंमें हुआ कि लोग खाते पीते
२९ मोल लेते बेचते बोते औ घर बनाते थे. परन्तु जिस दिन
लूत सदोमसे निकला उस दिन आग और गन्धक
३० आकाशसे बरसी और उन सभोंको नाश किया. उसी
३१ रीतिसे मनुष्यके पुचके प्रगट होनेके दिनमें होगा। उस
दिनमें जो कोठेपर हो और उसकी सामग्री घरमें
होय सो उसे लेनेको न उतरे और वैसेही जो खेतमें

हो सो पीछे न फिरे। लूतकी स्त्रीको स्मरण करो। ३२
जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा और ३३
जो कोई उसे खोवे सो उसकी रक्षा करेगा। मैं तुमसे ३४
कहता हूं उस रातमें दो मनुष्य एक खाटपर होंगे एक
लिया जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा। दो स्त्रियां ३५
एक संग चक्की पीसती रहेंगीं एक लिई जायगी और
दूसरी छोड़ी जायगी। दो जन खेतमें होंगे एक लिया ३६
जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा। उन्होंने उसको उत्तर ३७
दिया हे प्रभु कहां. उसने उनसे कहा जहां लोथ होय
तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे।

## १८ अठारहवां पर्ब्ब।

१ अधर्म्मी बिचारकर्त्ताके पास बिधवाकी प्रार्थनाका दृष्टान्त। ९ फरीशी और कर उगाहनेहारेका दृष्टान्त। १५ यीशुका बालकोंको आशीस देना। १८ एक धनवान जवानसे उसकी बातचीत। २४ धनी लोगोंकी दशाका बर्णन। २८ शिष्योंके फलकी प्रतिज्ञा। ३१ यीशुका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना। ३५ एक अंधेके नेत्र खोलना।

नित्य प्रार्थना करनें और साहस न छोड़नेकी आव- १
श्यकताके विषयमें यीशुने उन्होंसे एक दृष्टान्त कहा. कि २
किसी नगरमें एक बिचारकर्त्ता था जो न ईश्वरसे डरता
न मनुष्यको मानता था। और उसी नगरमें एक बिधवा ३
थी जिसने उस पास आ कहा मेरे मुद्दईसे मेरा पलटा
लीजिये। उसने कितनी बेरलों न माना परन्तु पीछे अपने ४
मनमें कहा यद्यपि मैं न ईश्वरसे डरता न मनुष्यको
मानता हूं. तौभी यह बिधवा मुझे दुःख देती है इस ५
कारण मैं उसका पलटा लेऊंगा ऐसा न हो कि नित्य

६ नित्य आनेसे वह मेरे मुंहमें कालिख लगावे। तब प्रभुने
७ कहा सुनो यह अधर्म्मी बिचारकर्त्ता क्या कहता है। और
ईश्वर यद्यपि अपने चुने हुए लोगोंके विषयमें जो रात
दिन उस पास पुकारते हैं धीरज धरे तौभी क्या उनका
८ पलटा न लेगा। मैं तुमसे कहता हूं वह शीघ्र उनका
पलटा लेगा तौभी मनुष्यका पुत्र जब आवेगा तब क्या
पृथिवीपर बिश्वास पावेगा।

९ और उसने कितनोंसे जो अपनेपर भरोसा रखते थे
कि हम धर्म्मी हैं और औरोंको तुच्छ जानते थे यह दृष्टान्त
१० कहा। दो मनुष्य मन्दिरमें प्रार्थना करनेको गये एक
११ फरीशी और दूसरा कर उगाहनेहारा। फरीशीने अलग
खड़ा हो यह प्रार्थना किई कि हे ईश्वर मैं तेरा धन्य
मानता हूं कि मैं और मनुष्योंके समान नहीं हूं जो
उपद्रवी अन्यायी और परस्त्रीगामी हैं और न इस कर
१२ उगाहनेहारेके समान। मैं अठवारेमें दो बार उपवास
करता हूं मैं अपनी सब कमाईका दसवां अंश देता हूं।
१३ कर उगाहनेहारेने दूर खड़ा हो स्वर्गकी ओर आंखें
उठाने भी न चाहा परन्तु अपनी छाती पीटके कहा हे
१४ ईश्वर मुझ पापीपर दया कर। मैं तुमसे कहता हूं कि
वह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धर्म्मी ठहराया हुआ
अपने घरको गया क्योंकि जो कोई अपनेको ऊंचा करे
सो नीचा किया जायगा और जो अपनेको नीचा करे
सो ऊंचा किया जायगा।

१५ लोग कितने बालकोंको भी यीशु पास लाये कि वह
१६ उन्हें छूवे परन्तु शिष्योंने यह देखके उन्हें डांटा। यीशुने

बालकोंको अपने पास बुलाके कहा बालकोंको मेरे पास
आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वरका राज्य
ऐसोंका है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वर- १७
के राज्यको बालककी नाईं ग्रहण न करे वह उसमें प्रवेश
करने न पावेगा।

किसी प्रधानने उससे पूछा हे उत्तम गुरु कौन काम १८
करनेसे मैं अनन्त जीवनका अधिकारी होंगा। यीशुने १९
उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई उत्तम
नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर। तू आज्ञाओंको जानता २०
है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत
कर झूठी साक्षी मत दे अपनी माता और अपने पिताका
आदर कर। उसने कहा इन सभोंको मैंने अपने लड़क- २१
पनसे पालन किया है। यीशुने यह सुनके उससे कहा तुझे २२
अब भी एक बातकी घटी है. जो कुछ तेरा है सो बेचके
कंगालोंको बांट दे और तू स्वर्गमें धन पावेगा और आ
मेरे पीछे हो ले। वह यह सुनके अति उदास हुआ २३
क्योंकि वह बड़ा धनी था।

यीशुने उसे अति उदास देखके कहा धनवानोंको २४
ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा कठिन होगा। ईश्वरके २५
राज्यमें धनवानके प्रवेश करनेसे ऊंटका सूईके नाकेमेंसे
जाना सहज है। सुननेहारोंने कहा तब तो किसका त्राण २६
हो सकता है। उसने कहा जो बातें मनुष्योंसे अन्होनी २७
हैं सो ईश्वरसे हो सकती हैं।

पितरने कहा देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आपके २८
पीछे हो लिये हैं। उसने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता २९

हूं कि जिसने ईश्वरके राज्यके लिये घर वा माता पिता
३० वा भाइयों वा स्त्री वा लड़कोंको त्यागा हो। ऐसा कोई
नहीं है जो इस समयमें बहुत गुण अधिक और परलोक-
में अनन्त जीवन न पावेगा।
३१ यीशुने बारह शिष्योंको लेके उनसे कहा देखो हम
यिरूशलीमको जाते हैं और जो कुछ मनुष्यके पुत्रके वि-
षयमें भविष्यद्वक्ताओंसे लिखा गया है सो सब पूरा किया
३२ जायगा। वह अन्यदेशियोंके हाथ सोंपा जायगा और
उससे ठट्ठा और अपमान किया जायगा और वे उसपर
३३ थूकेंगे। और उसे कोड़े मारके घात करेंगे और वह तीसरे
३४ दिन जी उठेगा। उन्होंने इन बातोंमेंसे कोई बात न
समझी और यह बात उनसे गुप्त रही और जो कहा
जाता था सो वे नहीं बूझते थे।
३५ जब वह यिरीहो नगरके निकट आता था तब एक अन्धा
३६ मनुष्य मार्गकी ओर बैठा भीख मांगता था। जब उसने
सुना कि बहुत लोग सामेसे जाते हैं तब पूछा यह क्या
३७ है। लोगोंने उसको बताया कि यीशु नासरी जाता है।
३८ तब उसने पुकारके कहा हे यीशु दाऊदके सन्तान मुझपर
३९ दया कीजिये। जो लोग आगे जाते थे उन्होंने उसे डांटा
कि वह चुप रहे परन्तु उसने बहुत अधिक पुकारा हे
४० दाऊदके सन्तान मुझपर दया कीजिये। तब यीशु खड़ा
रहा और उसे अपने पास लानेकी आज्ञा किई और
४१ जब वह निकट आया तब उससे पूछा। तू क्या चाहता
है कि मैं तेरे लिये करूं। वह बोला हे प्रभु मैं अपनी
४२ दृष्टि पाऊं। यीशुने उससे कहा अपनी दृष्टि पा तेरे

बिश्वासने तुझे चंगा किया है। और वह तुरन्त देखने ४३
लगा और ईश्वरकी स्तुति करता हुआ यीशुके पीछे हो
लिया और सब लोगोंने देखके ईश्वरका धन्यबाद किया।

## १९ उनीसवां पर्ब्ब।

१ जक्काई नाम कर उगाहनेहारेका वृत्तान्त। ११ दस मोहरका दृष्टान्त। २८ यीशुका यिरूशलीममें जाना। ४१ उसपर आनेवाली बिपत्तिका भविष्यद्वाक्य कहना। ४५ ब्योपारियोंको मन्दिरसे निकालना और उपदेश वहां करना।

यीशु यिरीहोमें प्रवेश करके उसके बीचसे होके जाता १
था। और देखो जक्कई नाम एक मनुष्य था जो कर २
उगाहनेहारोंका प्रधान था और वह धनवान था।
वह यीशुको देखने चाहता था कि वह कैसा मनुष्य है ३
परन्तु भीड़के कारण नहीं सका क्योंकि नाटा था। तब ४
जिस मार्गसे यीशु जानेपर था उसमें वह आगे दौड़के
उसे देखनेको एक गूलरके वृक्षपर चढ़ा। जब यीशु उस ५
स्थानपर पहुंचा तब ऊपर दृष्टि कर उसे देखा और
उससे कहा हे जक्कई शीघ्र उतर आ क्योंकि आज मुझे
तेरे घरमें रहना होगा। उसने शीघ्र उतरके आनन्दसे ६
उसकी पहुनई किई। यह देखके सब लोग कुड़कुड़ाके ७
बोले वह तो पापी मनुष्यके यहां पाहुन होने गया है।
जक्कईने खड़ा हो प्रभुसे कहा हे प्रभु देखिये मैं अपना ८
आधा धन कंगालोंको देता हूं और यदि झूठे दोष लगाके
किसीसे कुछ ले लिया है तो चौगुणा फेर देता हूं। तब ९
यीशुने उसको कहा आज इस घरानेका त्राण हुआ है
इसलिये कि यह भी इब्राहीमका सन्तान है। क्योंकि १०

मनुष्यका पुत्र खोये हुएको ढूंढ़ने और बचाने आया है।
११ जब लोग यह सुनते थे तब वह एक दृष्टान्त भी कहने
लगा इसलिये कि वह यिरूशलीमके निकट था और
वे समझते थे कि ईश्वरका राज्य तुरन्त प्रगट होगा।
१२ उसने कहा एक कुलीन मनुष्य दूर देशको जाता था
१३ कि राजपद पाके फिर आवे। और उसने अपने दासोंमें-
से दसको बुलाके उन्हें दस मोहर देके उनसे कहा जबलों
१४ मैं न आऊं तबलों ब्योपार करो। परन्तु उसके नगरके
निवासी उससे बैर रखते थे और उसके पीछे यह
सन्देश भेजा कि हम नहीं चाहते हैं कि यह हमोंपर
१५ राज्य करे। जब वह राजपद पाके फिर आया तब उसने
उन दासोंको जिन्हें रोकड़ दिई थी अपने पास बुलानेकी
आज्ञा किई जिस्तें वह जाने कि किसने कौनसा ब्योपार
१६ किया है। तब पहिलेने आके कहा हे प्रभु आपकी मोहर-
१७ से दस मोहर लाभ हुई। उसने उससे कहा धन्य हे
उत्तम दास तू अति थोड़ेमें बिश्वासयोग्य हुआ तू दस
१८ नगरोंपर अधिकारी हो। दूसरेने आके कहा हे प्रभु
१९ आपकी मोहरसे पांच मोहर लाभ हुई। उसने उससे
२० भी कहा तू भी पांच नगरोंका प्रधान हो। तीसरेने आके
कहा हे प्रभु देखिये आपकी मोहर जिसे मैंने अंगोछेमें
२१ धर रखा। क्योंकि मैं आपसे डरता था इसलिये कि आप
कठोर मनुष्य हैं जो आपने नहीं धरा सो उठा लेते हैं
२२ और जो आपने नहीं बोया सो लवते हैं। उसने उससे
कहा हे दुष्ट दास मैं तेरेही मुंहसे तुझे दोषी ठहराऊंगा.
तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूं जो मैंने नहीं धरा

सो उठा लेता हूं और जो मैंने नहीं बोया सो लवता
हूं। तो तूने मेरी रोकड़ कोठीमें क्यों नहीं दिई और २३
मैं आके उसे ब्याज समेत ले लेता। तब जो लोग निकट २४
खड़े थे उसने उन्होंसे कहा वह मोहर उससे लेओ और
जिस पास दस मोहर हैं उसको देओ। उन्होंने उससे २५
कहा हे प्रभु उस पास दस मोहर हैं। मैं तुमसे कहता २६
हूं जो कोई रखता है उसको और दिया जायगा परन्तु
जो नहीं रखता है उससे जो कुछ उस पास है सो भी
ले लिया जायगा। परन्तु मेरे उन बैरियोंको जो नहीं २७
चाहते थे कि मैं उन्होंपर राज्य करूं यहां लाके मेरे
साम्हने बध करो।

जब यीशु यह बातें कह चुका तब यिरूशलीमको जाते २८
हुए आगे बढ़ा। और जब वह जैतून नाम पर्व्वतके २९
निकट बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचा तब
उसने अपने शिष्योंमेंसे दोको यह कहके भेजा, कि जो ३०
गांव सन्मुख है उसमें जाओ और उसमें प्रवेश करते हुए
तुम एक गधीके बच्चेको जिसपर कभी कोई मनुष्य नहीं
चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ। जो तुमसे ३१
कोई पूछे तुम उसे क्यों खोलते हो तो उससे यूं कहो
प्रभुको इसका प्रयोजन है। जो भेजे गये थे उन्होंने जाके ३२
जैसा उसने उनसे कहा वैसा पाया। जब वे बच्चेको ३३
खोलते थे तब उसके स्वामियोंने उनसे कहा तुम बच्चेको
क्यों खोलते हो। उन्होंने कहा प्रभुको इसका प्रयोजन ३४
है। सो वे बच्चेको यीशु पास लाये और अपने कपड़े ३५
उसपर डालके यीशुको बैठाया। ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ा ३६

३७ त्यों त्यों लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें बिछाये। जब
वह निकट आया अर्थात जैतून पर्ब्बतके उतारलों पहुंचा तब
शिष्योंकी सारी मंडली आनन्दित हो सब आश्चर्य्य कर्म्मोंके
लिये जो उन्होंने देखे थे बड़े शब्दसे ईश्वरकी स्तुति करने
३८ लगी. कि धन्य वह राजा जो परमेश्वरके नामसे आता
है. स्वर्गमें शांति और सबसे ऊंचे स्थानमें गुणानुबाद
३९ होय। तब भीड़मेंसे कितने फरीशी लोग उससे बोले हे
४० गुरु अपने शिष्योंको डांटिये। उसने उन्हें उत्तर दिया कि
मैं तुमसे कहता हूं जो ये लोग चुप रहें तो पत्थर
पुकार उठेंगे।

४१ जब वह निकट आया तब नगरको देखके उसपर
४२ रोया. और कहा तू भी अपने कुशलकी बातें हां अपने
इस दिनमें भी जो जानता. परन्तु अब वे तेरे नेत्रोंसे
४३ छिपी हैं। वे दिन तुझपर आवेंगे कि तेरे शत्रु तुझपर
मोर्चा बांधेंगे और तुझे घेरेंगे और चारों ओर रोक
४४ रखेंगे. और तुझको औ तुझमें तेरे बालकोंको मिट्टीमें
मिलावेंगे और तुझमें पत्थरपर पत्थर न छोड़ेंगे क्योंकि
तूने वह समय जिसमें तुझपर दृष्टि किई गई न जाना।

४५ तब वह मन्दिरमें जाके जो लोग उसमें बेचते औ मोल
४६ लेते थे उन्हें निकालने लगा. और उनसे बोला लिखा है
कि मेरा घर प्रार्थनाका घर है. परन्तु तुमने उसे डाकूओं-
४७ का खोह बनाया है। वह मन्दिरमें प्रतिदिन उपदेश करता
था और प्रधान याजक और अध्यापक और लोगोंके
४८ प्रधान उसे नाश करने चाहते थे. परन्तु नहीं जानते थे
कि क्या करें क्योंकि सब लोग उसकी सुननेको लौलीन थे।

## २० बीसवां पर्ब्ब।

१ यीशुका प्रधान याजकोंको निरुत्तर करना। ९ दुष्ट मालियोंका दृष्टान्त। २० यीशुका कर देनेके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना। २७ जी उठनेके विषयमें सदूकियोंको निरुत्तर करना। ४१ अपनी पदवीके विषयमें लोगोंको निरुत्तर करना। ४५ अध्यापकोंके दोष प्रगट करना।

उन दिनोंमेंसे एक दिन जब यीशु मन्दिरमें लोगोंको १
उपदेश देता और सुसमाचार सुनाता था तब प्रधान
याजक और अध्यापक लोग प्राचीनोंके संग निकट आये.
और उससे बोले हमसे कह तुझे ये काम करनेका कैसा २
अधिकार है अथवा कौन है जिसने तुझको यह अधिकार
दिया। उसने उनको उत्तर दिया कि मैं भी तुमसे एक ३
बात पूछूंगा मुझे उत्तर देओ। योहनका डूब देना क्या ४
स्वर्गकी अथवा मनुष्योंकी ओरसे हुआ। तब उन्होंने ५
आपसमें बिचार किया कि जो हम कहें स्वर्गकी ओरसे
तो वह कहेगा फिर तुमने उसका बिश्वास क्यों नहीं किया।
और जो हम कहें मनुष्योंकी ओरसे तो सब लोग हमें ६
पत्थरवाह करेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं कि योहन
भविष्यद्वक्ता था। सो उन्होंने उत्तर दिया कि हम नहीं ७
जानते वह कहांसे हुआ। यीशुने उनसे कहा तो मैं ८
भी तुमको नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करनेका
कैसा अधिकार है।

तब वह लोगोंसे यह दृष्टान्त कहने लगा कि किसी ९
मनुष्यने दाखकी बारी लगाई और मालियोंको उसका
ठीका दे बहुत दिनलों परदेशको चला गया। समयमें उसने १०
मालियोंके पास एक दासको भेजा कि वे दाखकी बारीका

कुछ फल उसको देवें परन्तु मालियोंने उसे मारके छूछे
११ हाथ फेर दिया। फिर उसने दूसरे दासको भेजा और
उन्होंने उसे भी मारके और अपमान करके छूछे हाथ
१२ फेर दिया। फिर उसने तीसरेको भेजा और उन्होंने
१३ उसे भी घायल करके निकाल दिया। तब दाखकी
बारीके स्वामीने कहा मैं क्या करूं. मैं अपने प्रिय पुचको
भेजूंगा क्या जाने वे उसे देखके उसका आदर करेंगे।
१४ परन्तु माली लोग उसे देखके आपसमें बिचार करने
लगे कि यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें
१५ कि अधिकार हमारा हो जाय। और उन्होंने उसे
दाखकी बारीसे बाहर निकालके मार डाला. इसलिये
१६ दाखकी बारीका स्वामी उन्होंसे क्या करेगा। वह आके
इन मालियोंको नाश करेगा और दाखकी बारी दूसरोंके
हाथ देगा. यह सुनके उन्होंने कहा ऐसा न होवे।
१७ उसने उन्होंपर दृष्टि कर कहा तो धर्म्मपुस्तकके इस
बचनका अर्थ क्या है कि जिस पत्थरको थवइयोंने
१८ निकम्मा जाना वही कोनेका सिरा हुआ है। जो कोई
उस पत्थरपर गिरेगा सो चूर हो जायगा और जिस
१९ किसीपर वह गिरेगा उसको पीस डालेगा। प्रधान
याजकों और अध्यापकोंने उसी घड़ी उसपर हाथ बढ़ाने
चाहा क्योंकि जानते थे कि उसने हमारे बिरुद्ध यह
दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगोंसे डरे।
२० तब उन्होंने दांव ताकके भेदियोंको भेजा जो छलसे
अपनेको धर्म्मी दिखावें इसलिये कि उसका बचन पकड़ें
और उसे देशाध्यक्षके न्याय और अधिकारमें सोंप देवें।

उन्होंने उससे पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप २१
यथार्थ कहते और सिखाते हैं और पक्षपात नहीं करते
हैं परन्तु ईश्वरका मार्ग सत्यतासे बताते हैं। क्या कैसरको २२
कर देना हमें उचित है अथवा नहीं। उसने उनकी २३
चतुराई बूझके उनसे कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो।
एक सूकी मुझे दिखाओ. इसपर किसकी मूर्त्ति और २४
छाप है. उन्होंने उत्तर दिया कैसरकी। उसने उनसे २५
कहा तो जो कैसरका है सो कैसरको देओ और
जो ईश्वरका है सो ईश्वरको देओ। वे लोगोंके साम्ने २६
उसकी बात पकड़ न सके और उसके उत्तरसे अचंभित
हो चुप रहे।

सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकोंका जी उठना २७
नहीं होगा उन्होंमेंसे कितने उस पास आये और उससे
पूछा. कि हे गुरु मूसाने हमारे लिये लिखा कि यदि २८
किसीका भाई अपनी स्त्रीके रहते हुए निःसन्तान मर
जाय तो उसका भाई उस स्त्रीसे बिवाह करे और अपने
भाईके लिये बंश खड़ा करे। सो सात भाई थे. पहिला २९
भाई बिवाह कर निःसन्तान मर गया। तब दूसरे भाईने ३०
उस स्त्रीसे बिवाह किया और वह भी निःसन्तान मर
गया। तब तीसरेने उससे बिवाह किया और वैसाही ३१
सातों भाइयोंने. पर वे सब निःसन्तान मर गये। सबके ३२
पीछे स्त्री भी मर गई। सो मृतकोंके जी उठनेपर वह ३३
उनमेंसे किसकी स्त्री होगी क्योंकि सातोंने उससे बिवाह
किया। यीशुने उनको उत्तर दिया कि इस लोकके सन्तान ३४
बिवाह करते और बिवाह दिये जाते हैं। परन्तु जो ३५

लोग उस लोकमें पहुंचने और मृतकोंमेंसे जी उठनेके
योग्य गिने जाते वे न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते
३६ हैं। और न वे फिर मर सकते हैं क्योंकि वे स्वर्गदूतोंके
समान हैं और जी उठनेके सन्तान होनेसे ईश्वरके सन्तान
३७ हैं। और मृतक लोग जो जी उठते हैं यह बात मूसाने
भी झाड़ीकी कथामें प्रगट किई है कि वह परमेश्वरको
इब्राहीमका ईश्वर और इसहाकका ईश्वर और याकूबका
३८ ईश्वर कहता है। ईश्वर मृतकोंका नहीं परन्तु जीवतोंका
३९ ईश्वर है क्योंकि उसके लिये सब जीते हैं। अध्यापकोंमेंसे
कितनोंने उत्तर दिया कि हे गुरु आपने अच्छा कहा है।
४० और उन्हें फिर उससे कुछ पूछनेका साहस न हुआ।
४१ तब उसने उनसे कहा लोग क्योंकर कहते हैं कि
४२ ख्रीष्ट दाऊदका पुत्र है। दाऊद आपही गीतोंके पुस्तकमें
४३ कहता है कि परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा, जबलों मैं
तेरे शत्रुओंको तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू
४४ मेरी दहिनी ओर बैठ। दाऊद तो उसे प्रभु कहता है
फिर वह उसका पुत्र क्योंकर है।

४५ जब सब लोग सुनते थे तब उसने अपने शिष्योंसे
४६ कहा, अध्यापकोंसे चौकस रहो जो लंबे बस्त्र पहिने
हुए फिरने चाहते हैं और जिनको बाजारोंमें नमस्कार
और सभाके घरोंमें ऊंचे आसन और जेवनारोंमें ऊंचे
४७ स्थान प्रिय लगते हैं। वे बिधवाओंके घर खा जाते हैं
और बहानाके लिये बड़ी बेरलों प्रार्थना करते हैं, वे
अधिक दंड पावेंगे।

## २१ एकईसवां पर्ब्ब।

१ एक बिधवाके दानकी प्रशंसा। ५ मन्दिरके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी। ७ उस समयके चिन्ह। १२ शिष्योंपर उपद्रव होगा। २० यिहूदी लोग बड़ा कष्ट पावेंगे। २५ मनुष्यके पुत्रके आनेका बर्णन। २९ गूलरके वृक्षका दृष्टान्त। ३४ सचेत रहनेका उपदेश।

यीशुने आंख उठाके धनवानोंको अपने अपने दान १
भंडारमें डालते देखा। और उसने एक कंगाल बिधवाको २
भी उसमें दो छदाम डालते देखा। तब उसने कहा मैं ३
तुमसे सच कहता हूं कि इस कंगाल बिधवाने सभोंसे
अधिक डाला है। क्योंकि इन सभोंने अपनी बढ़तीमेंसे ४
ईश्वरको चढ़ाई हुई बस्तुओंमें कुछ कुछ डाला है परन्तु
इसने अपनी घटतीमेंसे अपनी सारी जीविका डाली है।
जब कितने लोग मन्दिरके विषयमें बोलते थे कि वह ५
सुन्दर पत्थरोंसे और चढ़ाई हुई बस्तुओंसे संवारा गया
है तब उसने कहा. यह सब जो तुम देखते हो वे दिन ६
आवेंगे जिन्होंमें पत्थरपर पत्थर भी न छोड़ा जायगा
जो गिराया न जायगा।
उन्होंने उससे पूछा हे गुरु यह कब होगा और यह ७
बातें जिस समयमें हो जायेंगीं उस समयका क्या चिन्ह
होगा। उसने कहा चौकस रहो कि भरमाये न जावो ८
क्योंकि बहुत लोग मेरे नामसे आके कहेंगे मैं वही हूं
और समय निकट आया है. सो तुम उनके पीछे मत
जाओ। जब तुम लड़ाइयों और हुल्लड़ोंकी चर्चा सुनो ९
तब मत घबराओ क्योंकि इनका पहिले होना अवश्य
है पर अन्त तुरन्त नहीं होगा। तब उसने उन्होंसे १०

कहा देश देशके और राज्य राज्यके बिरुद्ध उठेंगे।
११ और अनेक स्थानोंमें बड़े भुईंडोल और अकाल और
मरियां होंगीं और भयंकर लक्षण और आकाशसे बड़े
बड़े चिन्ह प्रगट होंगे।
१२ परन्तु इन सभोंके पहिले लोग तुमपर अपने हाथ
बढ़ावेंगे और तुम्हें सतावेंगे और मेरे नामके कारण
सभाके घरों और बन्दीगृहोंमें रखवावेंगे और राजाओं
१३ और अध्यक्षोंके आगे ले जावेंगे। पर इससे तुम्हारे लिये
१४ साक्षी हो जायगी। सो अपने अपने मनमें ठहरा रखो
कि हम उत्तर देनेके लिये आगेसे चिन्ता न करेंगे।
१५ क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बचन और ज्ञान देऊंगा कि तुम्हारे
सब बिरोधी उसका खंडन अथवा साम्हना नहीं कर
१६ सकेंगे। तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुंब और
मित्र लोग तुम्हें पकड़वायेंगे और तुममेंसे कितनोंको घात
१७ करवायेंगे। और मेरे नामके कारण सब लोग तुमसे बैर
१८ करेंगे। परन्तु तुम्हारे सिरका एक बाल भी नष्ट न होगा।
१९ अपनी धीरतासे अपने प्राणोंकी रक्षा करो।
२० जब तुम यिरूशलीमको सेनाओंसे घेरे हुए देखो
तब जानो कि उसका उजड़ जाना निकट आया है।
२१ तब जो यिहूदियामें हों सो पहाड़ोंपर भागें. जो यिरू-
शलीमके बीचमें हों सो निकल जावें और जो गांवोंमें
२२ हों सो उसमें प्रवेश न करें। क्योंकि येही दंड देनेके
दिन होंगे कि धर्म्मपुस्तककी सब बातें पूरी होवें।
२३ उन दिनोंमें हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलाने-
वालियां क्योंकि देशमें बड़ा क्लेश और इन लोगोंपर क्रोध

होगा। वे खड्गकी धारसे मारे पड़ेंगे और सब देशोंके २४
लोगोंमें बंधुवे किये जायेंगे और जबलों अन्यदेशियोंका
समय पूरा न होवे तबलों यिरूशलीम अन्यदेशियोंसे
रौंदा जायगा।

सूर्य्य और चांद और तारोंमें चिन्ह दिखाई देंगे २५
और पृथिवीपर देश देशके लोगोंको संकट औ घबराहट
होगी और समुद्र औ लहरोंका गर्जना होगा। और २६
संसारपर आनेहारी बातोंके भयसे और बाट देखनेसे
मनुष्य मृतकके ऐसे हो जायेंगे क्योंकि आकाशकी सेना
डिग जायगी। तब वे मनुष्यके पुत्रको पराक्रम और बड़े २७
ऐश्वर्य्यसे मेघपर आते देखेंगे। जब इन बातोंका आरंभ २८
होगा तब तुम सीधे होके अपने सिर उठाओ क्योंकि
तुम्हारा उद्धार निकट आता है।

उसने उन्होंसे एक दृष्टान्त भी कहा कि गूलरका वृक्ष २९
और सब वृक्षोंको देखो। जब उनकी कोंपलें निकलती ३०
हैं तब तुम देखकर आपही जानते हो कि धूपकाला अब
निकट है। इस रीतिसे जब तुम यह बातें होते देखो ३१
तब जानो कि ईश्वरका राज्य निकट है। मैं तुमसे सच ३२
कहता हूं कि जबलों सब बातें पूरी न हो जायें तबलों
इस समयके लोग नहीं जाते रहेंगे। आकाश और पृथिवी ३३
टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं।

अपने विषयमें सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे ३४
मन अफराई और मतवालपन और सांसारिक चिन्ता-
ओंसे भारी हो जावें और वह दिन तुमपर अचांचक
आ पहुंचे। क्योंकि वह फंदेकी नाईं सारी पृथिवीके ३५

३६ सब रहनेहारोंपर आवेगा। इसलिये जागते रहो और
नित्य प्रार्थना करो कि तुम इन सब आनेहारी बातों-
से बचनेके और मनुष्यके पुत्रके सन्मुख खड़े होनेके योग्य
गिने जावो।

३७ यीशु दिनको मन्दिरमें उपदेश करता था और रात-
३८ को बाहर जाके जैतून नाम पर्ब्बतपर टिकता था। और
तड़के सब लोग उसकी सुननेको मन्दिरमें उस पास
आते थे।

## २२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ यीशुको बध करनेका परामर्श। ३ यिहूदाका बिश्वासघात करना। ७ शिष्योंका निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाना। १४ उनके संग यीशुका भोजन करना। १९ प्रभु भोजका निरूपण। २१ यिहूदाके विषयमें यीशुका भविष्यद्वाक्य। २४ दीन होनेका उपदेश। ३१ पितरके यीशुसे मुकर जानेकी भविष्यद्वाणी। ३५ शिष्योंके साहस करनेका उपदेश। ३९ बारीमें यीशुका महा शोक। ४७ उसका पकड़ा जाना। ५४ उसको महायाजकके पास ले जाना और पितरका उससे मुकर जाना। ६३ उसको अपमान करना और बधके योग्य ठहराना।

१ अखमीरी रोटीका पर्ब्ब जो निस्तार पर्ब्ब कहावता
२ है निकट आया। और प्रधान याजक और अध्यापक
लोग खोज करते थे कि यीशुको क्योंकर मार डालें क्योंकि
वे लोगोंसे डरते थे।

३ तब शैतानने यिहूदामें जो इस्करियोती कहावता
है और बारह शिष्योंमें गिना जाता था प्रवेश किया।
४ उसने जाके प्रधान याजकों और पहरुओंके अध्यक्षोंके
संग बातचीत किई कि यीशुको क्योंकर उन्होंके हाथ
५ पकड़वावे। वे आनन्दित हुए और रुपैये देनेको उससे

नियम बांधा। वह अंगीकार करके उसे बिना हुल्लड़के ६
उन्होंके हाथ पकड़वानेका अवसर ढूंढने लगा।
तब अखमीरी रोटीके पर्व्वका दिन जिसमें निस्तार ७
पर्व्वका मेम्ना मारना उचित था आ पहुंचा। और यीशुने ८
पितर और योहनको यह कहके भेजा कि जाके हमारे
लिये निस्तार पर्व्वका भोजन बनाओ कि हम खायें। वे ९
उससे बोले आप कहां चाहते हैं कि हम बनावें। उसने १०
उनसे कहा देखो जब तुम नगरमें प्रवेश करो तब एक
मनुष्य जलका घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा. जिस घरमें
वह पैठे तुम उसके पीछे उस घरमें जाओ। और उस घरके ११
स्वामीसे कहो गुरु तुझसे कहता है कि पाहुनशाला कहां
है जिसमें मैं अपने शिष्योंके संग निस्तार पर्व्वका भोजन
खाऊं। वह तुम्हें एक सजी हुई बड़ी उपरौठी कोठरी दिखा- १२
वेगा वहां तैयार करो। उन्होंने जाके जैसा उसने उन्होंसे १३
कहा तैसा पाया और निस्तार पर्व्वका भोजन बनाया।
जब वह घड़ी पहुंची तब यीशु और बारहों प्रेरित १४
उसके संग भोजनपर बैठे। और उसने उनसे कहा मैंने १५
यह निस्तार पर्व्वका भोजन दुःख भोगनेके पहिले तुम्हारे
संग खानेकी बड़ी लालसा किई। क्योंकि मैं तुमसे कहता १६
हूं कि जबलों वह ईश्वरके राज्यमें पूरा न होवे तबलों
मैं उसे फिर कभी न खाऊंगा। तब उसने कटोरा ले १७
धन्य मानके कहा इसको लेओ और आपसमें बांटो।
क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जबलों ईश्वरका राज्य न १८
आवे तबलों मैं दाख रस कभी न पीऊंगा।
फिर उसने रोटी लेके धन्य माना और उसे तोड़के १९

उनको दिया और कहा यह मेरा देह है जो तुम्हारे
लिये दिया जाता है. मेरे स्मरणके लिये यह किया करो।
२० इसी रीतिसे उसने बियारीके पीछे कटोरा भी देके कहा
यह कटोरा मेरे लोहूपर जो तुम्हारे लिये बहाया जाता
है नया नियम है।
२१ परन्तु देखो मेरे पकड़वानेहारेका हाथ मेरे संग मेज-
२२ पर है। मनुष्यका पुच जैसा ठहराया गया है वैसाही
जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिससे वह पकड़वाया
२३ जाता है। तब वे आपसमें बिचार करने लगे कि हममेंसे
कौन है जो यह काम करेगा।
२४ उन्होंमें यह बिबाद भी हुआ कि उनमेंसे कौन बड़ा
२५ समझा जाय। यीशुने उनसे कहा अन्यदेशियोंके राजा
उन्होंपर प्रभुता करते हैं और उन्होंके अधिकारी लोग
२६ परोपकारी कहावते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होओ पर
जो तुम्होंमें बड़ा है सो छोटेकी नाईं होवे और जो
२७ प्रधान है सो सेवककी नाईं होवे। कौन बड़ा है भोजनपर
बैठनेहारा अथवा सेवक. क्या भोजनपर बैठनेहारा बड़ा
नहीं है. परन्तु मैं तुम्हारे बीचमें सेवककी नाईं हूं।
२८ तुमही हो जो मेरी परीक्षाओंमें मेरे संग रहे हो।
२९ और जैसे मेरे पिताने मेरे लिये राज्य ठहराया है तैसा
३० मैं तुम्हारे लिये ठहराता हूं. कि तुम मेरे राज्यमें मेरी
मेजपर खावो और पीवो और सिंहासनोंपर बैठके इस्रा-
येलके बारह कुलोंका न्याय करो।
३१ और प्रभुने कहा हे शिमोन हे शिमोन देख शैतानने
तुम्हें मांग लिया है इसलिये कि गेहूंकी नाईं तुम्हें फटके।

परन्तु मैंने तेरे लिये प्रार्थना किई है कि तेरा बिश्वास ३२
घट न जाय और जब तू फिरे तब अपने भाइयोंको स्थिर
कर। उसने उससे कहा हे प्रभु मैं आपके संग बंदीगृहमें ३३
जानेको और मरनेको तैयार हूं। उसने कहा हे पितर ३४
मैं तुझसे कहता हूं कि आजही जबलों तू तीन बार मुझे
नकारके न कहे कि मैं उसे नहीं जानता हूं तबलों मुर्ग
न बोलेगा।

और उसने उनसे कहा जब मैंने तुम्हें बिन थैली ३५
औ बिन झोली औ बिन जूते भेजा तब क्या तुमको
किसी बस्तुकी घटी हुई, वे बोले किसकी नहीं। उसने ३६
उनसे कहा परन्तु अब जिस पास थैली हो सो उसे
ले ले और वैसेही झोली भी और जिस पास खड्ग न
होय सो अपना बस्त्र बेचके एकको मोल लेवे। क्योंकि ३७
मैं तुमसे कहता हूं अवश्य है कि धर्म्मपुस्तकका यह
बचन भी कि वह कुकर्म्मियोंके संग गिना गया मुझपर
पूरा किया जाय क्योंकि मेरे विषयमेंकी बातें सम्पूर्ण
होनेपर हैं। तब वे बोले हे प्रभु देखिये यहां दो खड्ग ३८
हैं. उसने उनसे कहा बहुत है।

तब यीशु बाहर निकलके अपनी रीतिके अनुसार ३९
जैतून पर्व्वतपर गया और उसके शिष्य भी उसके पीछे
हो लिये। उस स्थानमें पहुंचके उसने उनसे कहा ४०
प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो। और वह आप ४१
ढेला फेंकनेके टप्पेभर उनसे अलग गया और घुटने
टेकके प्रार्थना किई, कि हे पिता जो तेरी इच्छा होय ४२
तो इस कटोरेको मेरे पाससे टाल दे तौभी मेरी नहीं

४३ पर तेरी इच्छा पूरी हो जाय। तब एक दूत उसे सामर्थ्य
४४ देनेको स्वर्गसे उसको दिखाई दिया। और उसने बड़े
संकटमें होके अधिक दृढ़तासे प्रार्थना किई और उसका
पसीना ऐसा हुआ जैसे लोहूके थक्के जो भूमिपर गिरें।
४५ तब वह प्रार्थनासे उठा और अपने शिष्योंके पास आ उन्हें
४६ शोकके मारे सोते पाया. और उनसे कहा क्यों सोते हो
उठो प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो।
४७ वह बोलताही था कि देखो बहुत लोग आये और
बारह शिष्योंमेंसे एक शिष्य जिसका नाम यिहूदा था
उनके आगे आगे चलता था और यीशुको चूमा लेनेको
४८ उस पास आया। यीशुने उससे कहा हे यिहूदा क्या तू
४९ मनुष्यके पुत्रको चूमा लेके पकड़वाता है। यीशुके संगियोंने
जब देखा कि क्या होनेवाला है तब उससे कहा हे प्रभु
५० क्या हम खड्गसे मारें। और उनमेंसे एकने महायाजकके
दासको मारा और उसका दहिना कान उड़ा दिया।
५१ इसपर यीशुने कहा यहांतक रहने दो. और उस दास-
५२ का कान छूके उसे चंगा किया। तब यीशुने प्रधान याज-
कों और मन्दिरके पहरुओंके अध्यक्षों और प्राचीनोंसे
जो उस पास आये थे कहा क्या तुम जैसे डाकूपर खड्ग
५३ और लाठियां लेके निकले हो। जब मैं मन्दिरमें प्रति-
दिन तुम्हारे संग था तब तुम्होंने मुझपर हाथ न बढ़ाये
परन्तु यही तुम्हारी घड़ी और अंधकारका पराक्रम है।
५४ वे उसे पकड़के ले चले और महायाजकके घरमें लाये
५५ और पितर दूर दूर उसके पीछे हो लिया। जब वे
अंगनेमें आग सुलगाके एकट्ठे बैठे तब पितर उन्होंके

बीचमें बैठ गया। और एक दासी उसे आगके पास बैठे ५६
देखके उसकी ओर ताकके बोली यह भी उसके संग था।
उसने उसे नकारके कहा हे नारी मैं उसे नहीं जानता ५७
हूं। थोडी बेर पीछे दूसरेने उसे देखके कहा तू भी ५८
उनमेंसे एक है, पितरने कहा हे मनुष्य मैं नहीं हूं।
घड़ी एक बीते दूसरेने दृढ़तासे कहा यह भी सचमुच ५९
उसके संग था क्योंकि वह गालीली भी है। पितरने ६०
कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता तू क्या कहता है, और
तुरन्त ज्यों वह कह रहा त्यों मुर्ग बोला। तब प्रभुने मुंह ६१
फेरके पितरपर दृष्टि किई और पितरने प्रभुका बचन
स्मरण किया कि उसने उससे कहा था मुर्गके बोलनेसे
आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा। तब पितर बाहर ६२
निकलके बिलक बिलक रोया।

जो मनुष्य यीशुको धरे हुए थे वे उसे मारके ठट्ठा ६३
करने लगे, और उसकी आंखें ढांपके उसके मुंहपर ६४
थपेड़े मारके उससे पूछा कि भविष्यद्वाणी बोल किसने
तुझे मारा। और उन्होंने बहुतसी और निन्दाकी बातें ६५
उसके बिरुद्धमें कहीं। ज्योंही बिहान हुआ त्योंही लो- ६६
गोंके प्राचीन और प्रधान याजक और अध्यापक लोग
एकट्ठे हुए और उसे अपनी न्यायसभामें लाये और
बोले जो तू ख्रीष्ट है तो हमसे कह। उसने उनसे कहा ६७
जो मैं तुमसे कहूं तो तुम प्रतीति नहीं करोगे। और ६८
जो मैं कुछ पूछूं तो तुम न उत्तर देओगे न मुझे छोड़ोगे।
अबसे मनुष्यका पुत्र सर्व्वशक्तिमान ईश्वरकी दहिनी ६९
ओर बैठेगा। सभोंने कहा तो क्या तू ईश्वरका पुत्र है, ७०

७१ उसने उन्होंसे कहा तुम तो कहते हो कि मैं हूं। तब
उन्होंने कहा अब हमें साक्षीका और क्या प्रयोजन क्योंकि
हमने आपही उसके मुखसे सुना है।

## २३ तेईसवां पर्ब्ब।

१ यीशुका पिलातके हाथ सोंपा जाना और पिलातका उसे बिचार करना। ६ पिलातका उसे हेरोदके पास भेजना। १३ उसको छोड़नेकी युक्ति करनेके पीछे घातकोंके हाथ सोंपना। २७ बिलाप करनेहारी स्त्रियोंसे यीशुकी कथा। ३३ उसका क्रूशपर चढ़ाया जाना। ३५ उस-पर लोगोंका हंसना। ३९ क्रूशपर चढ़ाये हुए डाकूओंका वृत्तान्त। ४४ यीशुका पुकारना और प्राण त्यागना और लोगोंका अचंभा करना। ५० यूसफका उसको कबरमें रखना।

१ तब सारा समाज उठके यीशुको पिलातके पास ले
२ गया, और उसपर यह कहके दोष लगाने लगा कि
हमने यही पाया है कि यह मनुष्य लोगोंको बहकाता है
और अपनेको ख्रीष्ट राजा कहके कैसरको कर देना बर्जता
३ है। पिलातने उससे पूछा क्या तू यिहूदियोंका राजा है,
उसने उसको उत्तर दिया कि आपही तो कहते हैं।
४ तब पिलातने प्रधान याजकों और लोगोंसे कहा मैं इस
५ मनुष्यमें कुछ दोष नहीं पाता हूं। परन्तु उन्होंने अधिक
दृढ़ताईसे कहा वह गालीलसे लेके यहांलों सारे यिहू-
दियामें उपदेश करके लोगोंको उसकाता है।
६ पिलातने गालीलका नाम सुनके पूछा क्या यह मनुष्य
७ गालीली है। जब उसने जाना कि वह हेरोदके राज्य-
मेंका है तब उसे हेरोदके पास भेजा कि वह भी उन
८ दिनोंमें यिरूशलीममें था। हेरोद यीशुको देखके अति

आनन्दित हुआ क्योंकि वह बहुत दिनसे उसको देखने
चाहता था इसलिये कि उसके विषयमें बहुत बातें सुनी
थीं और उसका कुछ आश्चर्य्य कर्म्म देखनेकी उसको
आशा हुई। उसने उससे बहुत बातें पूछीं परन्तु उसने ९
उसको कुछ उत्तर न दिया। और प्रधान याजकों और १०
अध्यापकोंने खड़े हुए बड़ी धुनसे उसपर दोष लगाये।
तब हेरोदने अपनी सेनाके संग उसे तुच्छ जानके ठट्ठा ११
किया और भड़कीला बस्त्र पहिराके उसे पिलातके पास
फेर भेजा। उसी दिन पिलात और हेरोद जिन्होंके १२
बीचमें आगेसे शत्रुता थी आपसमें मित्र हो गये।

पिलातने प्रधान याजकों और अध्यक्षों और लो- १३
गोंको एकट्ठे बुलाके उन्होंसे कहा, तुम इस मनुष्यको १४
लोगोंका बहकानेहारा कहके मेरे पास लाये हो और
देखो मैंने तुम्हारे साम्हने बिचार किया है परन्तु जिन
बातोंमें तुम इस मनुष्यपर दोष लगाते हो उन बातोंके
विषयमें मैंने उसमें कुछ दोष नहीं पाया है। न हेरोद- १५
ने पाया है क्योंकि मैंने तुम्हें उस पास भेजा और देखो
बधके योग्य कोई काम उससे नहीं किया गया है। सो १६
मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा। पिलातको अवश्य भी १७
था कि उस पर्ब्बमें एक मनुष्यको लोगोंके लिये छोड़
देवे। तब लोग सब मिलके चिल्लाये कि इसको ले जाइये १८
और हमारे लिये बरब्बाको छोड़ दीजिये। यही बरब्बा १९
किसी बलवेके कारण जो नगरमें हुआ था और नर-
हिंसाके कारण बन्दीगृहमें डाला गया था। पिलात यीशु- २०
को छोड़नेकी इच्छा कर लोगोंसे फिर बोला। परन्तु २१

उन्होंने पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये क्रूशपर चढ़ाइये।
२२ उसने तीसरी बेर उनसे कहा क्यों उसने कौनसी बुराई
किई है. मैंने उसमें बधके योग्य कोई दोष नहीं पाया है
२३ इसलिये मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा। परन्तु वे ऊंचे
ऊंचे शब्दसे यत्न करके मांगने लगे कि वह क्रूशपर चढ़ाया
जाय और उन्होंके और प्रधान याजकोंके शब्द प्रबल ठहरे।
२४ सो पिलातने आज्ञा दिई कि उनकी बिन्तीके अनुसार किया
२५ जाय। और उसने उस मनुष्यको जो बलवे और नरहिं-
साके कारण बन्दीगृहमें डाला गया था जिसे वे मांगते थे
उनके लिये छोड़ दिया और यीशुको उनकी इच्छापर सौंप
२६ दिया। जब वे उसे ले जाते थे तब उन्होंने शिमोन नाम
कुरीनी देशके एक मनुष्यको जो गांवसे आता था पकड़के
उसपर क्रूश धर दिया कि उसे यीशुके पीछे ले चले।
२७ लोगोंकी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिई और बहुतेरी
स्त्रियां भी जो उसके लिये छाती पीटती और बिलाप करती
२८ थीं। यीशुने उन्होंकी ओर फिरके कहा हे यिरूशलीमकी
पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ परन्तु अपने लिये और अपने
२९ बालकोंके लिये रोओ। क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जि-
न्होंमें लोग कहेंगे धन्य वे स्त्रियां जो बांझ हैं और वे गर्भ
जिन्होंने लड़के न जन्माये और वे स्तन जिन्होंने दूध न
३० पिलाया है। तब वे पर्व्वतोंसे कहने लगेंगे कि हमोंपर गिरो
३१ और टीलोंसे कि हमें ढांपो। क्योंकि जो वे हरे पेड़से यह
३२ करते हैं तो सूखेसे क्या किया जायगा। वे और दो मनुष्यों-
को भी जो कुकर्म्मी थे यीशुके संग घात करनेको ले चले।
३३ जब वे उस स्थानपर जो खोपड़ी कहावता है पहुंचे तब

उन्होंने वहां उसको और उन कुकर्म्मियोंको एकको दहिनी
ओर और दूसरेको बाईं ओर क्रूशोंपर चढ़ाया। तब यीशुने ३४
कहा हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते क्या करते
हैं. और उन्होंने चिट्ठियां डालके उसके कपड़े बांट लिये।
लोग खड़े हुए देखते रहे और अध्यक्षोंने भी उनके संग ३५
ठट्ठा कर कहा उसने औरोंको बचाया जो वह ईश्वरका चुना
हुआ जन ख्रीष्ट है तो अपनेको बचावे। योद्धाओंने भी उससे ३६
ठट्ठा करनेको निकट आके उसे सिरका दिया. और कहा ३७
जो तू यिहूदियोंका राजा है तो अपनेको बचा। और उसके ३८
ऊपरमें एक पत्र भी था जो यूनानीय औ रोमीय औ इब्रीय
अक्षरोंमें लिखा हुआ था कि यह यिहूदियोंका राजा है।
जो कुकर्म्मी लटकाये गये थे उनमेंसे एकने उसकी ३९
निन्दा कर कहा जो तू ख्रीष्ट है तो अपनेको और हमोंको
बचा। इसपर दूसरेने उसे डांटके कहा क्या तू ईश्वरसे ४०
कुछ डरता भी नहीं. तुझपर तो वैसाही दंड दिया
जाता है। और हमोंपर न्यायकी रीतिसे दिया जाता ४१
क्योंकि हम अपने कर्म्मोंके योग्य फल भोगते हैं परन्तु
इसने कोई अनुचित काम नहीं किया है। तब उसने यीशु- ४२
से कहा हे प्रभु जब आप अपने राज्यमें आवें तब मेरी
सुध लीजिये। यीशुने उससे कहा मैं तुझसे सच कहता ४३
हूं कि आजही तू मेरे संग स्वर्गलोकमें होगा।
जब दो पहरके निकट हुआ तब सारे देशमें तीसरे ४४
पहरलों अंधकार हो गया। सूर्य्य अंधियारा हो गया ४५
और मन्दिरका परदा बीचसे फट गया। और यीशुने बड़े ४६
शब्दसे पुकारके कहा हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे

४७ हाथमें सोंपता हूं ओर यह कहके प्राण त्यागा। जो
हुआ था सो देखके शतपतिने ईश्वरका गुणानुबाद कर
४८ कहा निश्चय यह मनुष्य धर्म्मी था। ओर सब लोग जो
यह देखनेको एकट्ठे हुए थे जो कुछ हुआ था सो देखके
४९ अपनी अपनी छाती पीटते हुए फिर गये। ओर यीशुके
सब चिन्हार ओर वे स्त्रियां जो गालीलसे उसके संग
आई थीं दूर खड़े हो यह सब देखते रहे।
५० ओर देखो यूसफ नाम यिहूदियोंके अरिमथिया नग-
रका एक मनुष्य था जो मन्त्री था ओर उत्तम ओर धर्म्मी
पुरुष होके दूसरे मन्त्रियोंके बिचार ओर काममें नहीं
५१ मिला था। ओर वह आप भी ईश्वरके राज्यकी बाट जो-
५२ हता था। उसने पिलातके पास जाके यीशुकी लोथ मांग
५३ लिई। तब उसने उसे उतारके चद्दरमें लपेटा ओर एक
कबरमें रखा जो पत्थरमें खोदी हुई थी जिसमें कोई
५४ कभी नहीं रखा गया था। वह दिन तैयारीका दिन था
५५ ओर बिश्रामवार समीप था। वे स्त्रियां भी जो गालीलसे
उसके संग आई थीं पीछे हो लिईं ओर कबरको ओर
५६ उसकी लोथ क्योंकर रखी गई उसको देख लिया। ओर
उन्होंने लैाटके सुगन्ध द्रब्य ओर सुगन्ध तेल तैयार किया
ओर आज्ञाके अनुसार बिश्रामके दिनमें बिश्राम किया।

## २४ चैाबीसवां पर्ब्ब।

१ स्त्रियोंका दूतसे यीशुके जी उठनेका समाचार सुनना ओर शिष्योंको कह देना। १३ यीशुका इम्माऊको जाते हुए दो शिष्योंको दर्शन देना ओर उनसे बातचीत करना। ३६ यिरूशलीममें शिष्योंको दर्शन देना ओर उन्हें प्रेरण करना। ५० स्वर्गमें जाना।

तब अठवारेके पहिले दिन बड़ी भोर ये स्त्रियां और उन- १
के संग कई एक और स्त्रियां वह सुगन्ध जो उन्होंने तैयार
किया था लेके कबरपर आईं। परन्तु उन्होंने पत्थरको २
कबरके साम्हनेसे लुढ़काया हुआ पाया. और भीतर ३
जाके प्रभु योशुकी लोथ न पाई। जब वे इस बातके विष- ४
यमें दुबधा कर रहीं तब देखो दो पुरुष चमकते बस्त्र
पहिने हुए उनके निकट खड़े हो गये। जब वे डर गईं ५
और धरतीकी ओर मुंह झुकाये रहीं तब वे उनसे बोले
तुम जीवतेको मृतकोंके बीचमें क्यों ढूंढती हो। वह यहां ६
नहीं है परन्तु जी उठा है. स्मरण करो कि उसने गाली-
लमें रहते हुए तुमसे कहा. अवश्य है कि मनुष्यका पुत्र ७
पापी लोगोंके हाथमें पकड़वाया जाय और क्रूशपर घात
किया जाय और तीसरे दिन जी उठे। तब उन्होंने उसकी ८
बातोंको स्मरण किया। और कबरसे लौटके उन्होंने ९
ग्यारह शिष्योंको और और सभोंको यह सब बातें सुनाईं।
मरियम मगदलीनी और योहाना और याकूबकी माता १०
मरियम और उनके संगकी और स्त्रियां थीं जिन्होंने प्रेरि-
तोंसे यह बातें कहीं। परन्तु उनकी बातें उन्होंके आगे ११
कहानीसी समझ पड़ीं और उन्होंने उनकी प्रतीति न
किई। तब पितर उठके कबरपर दौड़ गया और झुकके १२
केवल चद्दर पड़ी हुई देखी और जो हुआ था उससे
अपने मनमें अचंभा करता हुआ चला गया।

देखो उसी दिन उनमेंसे दो जन इम्माऊ नाम एक १३
गांवको जो यिरूशलीमसे कोश चार एक पर था जाते
थे। और वे इन सब बातोंपर जो हुई थीं आपसमें बात- १४

१५ चीत करते थे। ज्यों वे बातचीत और बिचार कर रहे
त्यों यीशु आपही निकट आके उनके संग हो लिया।
१६ परन्तु उनकी दृष्टि ऐसी रोकी गई कि उन्होंने उसको
१७ नहीं चीन्हा। उसने उनसे कहा यह क्या बातें हैं जिन-
पर तुम चलते हुए आपसमें बातचीत करते और उदास
१८ होते हो। तब एक जनने जिसका नाम क्लियोपा था
उत्तर देके उससे कहा क्या केवल तूही यिरूशलीममें
डेरा करके वे बातें जो उसमें इन दिनोंमें हुई हैं नहीं
१९ जानता है। उसने उनसे कहा कौनसी बातें. उन्होंने
उससे कहा यीशु नासरीके विषयमें जो भविष्यद्वक्ता
और ईश्वरके और सब लोगोंके आगे काममें और बचन-
२० में शक्तिमान पुरुष था। क्योंकर हमारे प्रधान याजकों
और अध्यक्षोंने उसे सोंप दिया कि उसपर बध किये
जानेकी आज्ञा दिई जाय और उसे क्रूशपर घात किया
२१ है। परन्तु हमें आशा थी कि वही है जो इस्रायेलका
उद्धार करेगा. और भी जबसे यह हुआ तबसे आज
२२ उसको तीसरा दिन है। और हमोंमेंसे कितनी स्त्रियोंने
भी हमें बिस्मित किया है कि वे भोरको कबरपर गईं.
२३ पर उसकी लोथ न पाके फिर आके बोलीं कि हमने
स्वर्गदूतोंका दर्शन भी पाया है जो कहते हैं कि वह जीता
२४ है। तब हमारे संगियोंमेंसे कितने जन कबरपर गये और
जैसा स्त्रियोंने कहा तैसाही पाया परन्तु उसको न देखा।
२५ तब यीशुने उनसे कहा हे निर्बुद्धि और भविष्यद्वक्ताओंकी
२६ सब बातोंपर बिश्वास करनेमें मन्दमति लोगो. क्या अवश्य
न था कि ख्रीष्ट यह दुःख उठाके अपने ऐश्वर्य्यमें प्रवेश

करे। तब उसने मूसासे और सब भविष्यद्वक्ताओंसे २७
आरंभ कर सारे धर्म्मपुस्तकमें अपने विषयमेंकी बातोंका
अर्थ उन्होंको बताया। इतनेमें वे उस गांवके पास पहुंचे २८
जहां वे जाते थे और उसने ऐसा किया जैसा कि आगे
जाता है। परन्तु उन्होंने यह कहके उसको रोका कि २९
हमारे संग रहिये क्योंकि सांझ हो चली और दिन ढल
गया है, तब वह उनके संग रहनेको भीतर गया। जब ३०
वह उनके संग भोजनपर बैठा तब उसने रोटी लेके धन्य-
बाद किया और उसे तोड़के उनको दिया। तब उनकी ३१
दृष्टि खुल गई और उन्होंने उसको चीन्हा और वह
उनसे अन्तर्द्धान हो गया। और उन्होंने आपसमें कहा ३२
जब वह मार्गमें हमसे बात करता था और धर्म्मपुस्तकका
अर्थ हमें बताता था तब क्या हमारा मन हममें न तपता
था। वे उसी घड़ी उठके यिरूशलीमको लौट गये और ३३
ग्यारह शिष्योंको और उनके संगियोंको एकट्ठे हुए और
यह कहते हुए पाया, कि निश्चय प्रभु जी उठा है और ३४
शिमोनको दिखाई दिया है। तब उन दोनोंने कह सुना- ३५
या कि मार्गमें क्या हुआ था और यीशु क्योंकर रोटी
तोड़नेमें उनसे पहचाना गया।

वे यह कहतेही थे कि यीशु आपही उनके बीचमें ३६
खड़ा हो उनसे बोला तुम्हारा कल्याण होय। परन्तु वे ३७
व्याकुल और भयमान हुए और समझा कि हम प्रेतको
देखते हैं। उसने उनसे कहा क्यों व्याकुल हो और ३८
तुम्हारे मनमें सन्देह क्यों उत्पन्न होता है। मेरे हाथ ३९
और मेरे पांव देखो कि मैं आपही हूं, मुझे टोओ और

देख लो क्योंकि जैसे तुम मुझमें देखते हो तैसे प्रेतको
४० हाड़ मांस नहीं होते हैं। यह कहके उसने अपने हाथ
४१ पांव उन्हें दिखाये। ज्यों वे मारे आनन्दके प्रतीति न
करते थे और अचंभित हो रहे त्यों उसने उनसे कहा
४२ क्या तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है। उन्होंने उसको
४३ कुछ भूनी मछली और मधुका छत्ता दिया। उसने लेके
४४ उनके साम्हने खाया। और उसने उनसे कहा यही वे
बातें हैं जो मैंने तुम्हारे संग रहते हुए तुमसे कहीं कि
जो कुछ मेरे विषयमें मूसाकी व्यवस्थामें और भविष्यद्व-
क्ताओं और गीतोंके पुस्तकोंमें लिखा है सबका पूरा
४५ होना अवश्य है। तब उसने धर्म्मपुस्तक समझनेको उन-
४६ का ज्ञान खोला, और उनसे कहा यूं लिखा है और इसी
रीतिसे अवश्य था कि खीष्ट दुःख उठावे और तीसरे
४७ दिन मृतकोंमेंसे जी उठे, और यिरूशलीमसे आरंभ
कर सब देशोंके लोगोंमें उसके नामसे पश्चात्तापकी और
४८ पाप मोचनकी कथा सुनाई जावे। तुम इन बातोंके
४९ साक्षी हो। देखो मेरे पिताने जिसकी प्रतिज्ञा किई उसको
मैं तुम्होंपर भेजता हूं और तुम जबलों ऊपरसे शक्ति न
पावो तबलों यिरूशलीम नगरमें रहो।

५० तब वह उन्हें बैथनियालों बाहर ले गया और अपने
५१ हाथ उठाके उन्हें आशीस दिई। उन्हें आशीस देते हुए
वह उनसे अलग हो गया और स्वर्गपर उठा लिया गया।
५२ और वे उसको प्रणाम कर बड़े आनन्दसे यिरूशलीमको
५३ लौट गये, और नित्य मन्दिरमें ईश्वरकी स्तुति और
धन्यबाद किया करते थे। आमीन ॥

# योहन रचित सुसमाचार।

## १ पहिला पर्व्व।

१ यीशु ख्रीष्टके ईश्वरत्वका बर्णन। ६ योहनका ईश्वरकी ओरसे भेजा जाना और यीशुका अवतार लेना। १९ उसके विषयमें योहनकी साक्षी। ३५ अन्द्रिय और शिमोन और एक और शिष्यका बुलाया जाना। ४३ फिलिप और नथनेलका बुलाया जाना।

आदिमें बचन था और बचन ईश्वरके संग था और १
बचन ईश्वर था। वह आदिमें ईश्वरके संग था। २
सब कुछ उसके द्वारा सृजा गया और जो सृजा गया है ३
कुछ भी उस बिना नहीं सृजा गया। उसमें जीवन था ४
और वह जीवन मनुष्योंका उजियाला था। और वह ५
उजियाला अंधकारमें चमकता है और अंधकारने उसको
ग्रहण न किया।

एक मनुष्य ईश्वरकी ओरसे भेजा गया जिसका नाम ६
योहन था। वह साक्षीके लिये आया कि उस उजिया- ७
लेके विषयमें साक्षी देवे इसलिये कि सब लोग उसके
द्वारासे बिश्वास करें। वह आप तो वह उजियाला न था ८
परन्तु उस उजियालेके विषयमें साक्षी देनेको आया।
सच्चा उजियाला जो हर एक मनुष्यको उजियाला देता ९
है जगतमें आनेवाला था। वह जगतमें था और जगत १०
उसके द्वारा सृजा गया परन्तु जगतने उसको नहीं
जाना। वह अपने निज देशमें आया और उसके निज ११
लोगोंने उसे ग्रहण न किया। परन्तु जितनोंने उसे ग्रहण १२

किया उन्होंको अर्थात उसके नामपर बिश्वास करनेहा-
रोंको उसने ईश्वरके सन्तान होनेका अधिकार दिया।
१३ उन्होंका जन्म न लोहूसे न शरीरकी इच्छासे न मनुष्यकी
१४ इच्छासे परन्तु ईश्वरसे हुआ। और बचन देहधारी हुआ
और हमारे बीचमें डेरा किया और हमनें उसकी महि-
मा पिताके एकलौतेकीसी महिमा देखी. वह अनुग्रह
१५ और सच्चाईसे परिपूर्ण था। योहनने उसके विषयमें
साक्षी दिई और पुकारके कहा यही था जिसके विषयमें
मैंने कहा कि जो मेरे पीछे आता है सो मेरे आगे हुआ
१६ है क्योंकि वह मुझसे पहिले था। उसकी भरपूरीसे हम
१७ सभोंने पाया है हां अनुग्रहपर अनुग्रह पाया है। क्योंकि
व्यवस्था मूसाके द्वारासे दिई गई अनुग्रह और सच्चाई
१८ यीशु ख्रीष्टके द्वारासे हुए। किसीने ईश्वरको कभी नहीं
देखा है. एकलौता पुत्र जो पिताकी गोदमें है उसीने उसे
बर्णन किया।

१९ योहनकी साक्षी यह है कि जब यिहूदियोंने यिरूश-
लीमसे याजकों और लेवीयोंको उससे यह पूछनेको भेजा
२० कि तू कौन है. तब उसने मान लिया और नहीं मुकर
२१ गया पर मान लिया कि मैं ख्रीष्ट नहीं हूं। तब उन्होंने
उससे पूछा तो कौन. क्या तू एलियाह है. उसने कहा
मैं नहीं हूं. क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है. उसने उत्तर
२२ दिया कि नहीं। फिर उन्होंने उससे कहा तू कौन है
कि हम अपने भेजनेहारोंको उत्तर देवें. तू अपने विषय-
२३ में क्या कहता है। उसने कहा मैं किसीका शब्द हूं जो
जंगलमें पुकारता है कि परमेश्वरका पन्थ सीधा करो

जैसा यिशैयाह भविष्यद्वक्ताने कहा। जो भेजे गये थे सो २४
फरीशियोंमेंसे थे। उन्होंने उससे पूछकरके उससे कहा २५
जो तू न ख्रीष्ट और न एलियाह और न वह भविष्य-
द्वक्ता है तो क्यों डूब देता है। योहनने उनको उत्तर २६
दिया कि मैं तो जलमें डूब देता हूं परन्तु तुम्हारे बीच-
में एक खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते हो। वही है मेरे २७
पीछे आनेवाला जो मेरे आगे हुआ है मैं उसकी जूतीका
बन्ध खोलनेके योग्य नहीं हूं। यह बातें यर्दन नदीके उस २८
पार बैथाबरा गांवमें हुईं जहां योहन डूब देता था।

दूसरे दिन योहनने यीशुको अपने पास आते देखा २९
और कहा देखो ईश्वरका मेम्ना जो जगतके पापको उठा
लेता है। यही है जिसके विषयमें मैंने कहा कि एक ३०
पुरुष मेरे पीछे आता है जो मेरे आगे हुआ है क्योंकि
वह मुझसे पहिले था। मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु ३१
जिस्तें वह इस्रायेली लोगोंपर प्रगट किया जाय इसीलिये
मैं जलमें डूब देता हुआ आया हूं। और भी योहनने ३२
साक्षी दिई कि मैंने आत्माको कपोतकी नाईं स्वर्गसे
उतरते देखा है और वह उसपर ठहर गया। और मैं ३३
उसे नहीं चीन्हता था परन्तु जिसने मुझे जलमें डूब देने-
को भेजा उसीने मुझसे कहा जिसपर तू आत्माको उतरते
और उसपर ठहरते देखे वही तो पवित्र आत्मामें डूब
देनेहारा है। और मैंने देखके साक्षी दिई है कि यही ३४
ईश्वरका पुत्र है।

दूसरे दिन फिर योहन और उसके शिष्योंमेंसे दो ३५
जन खड़े थे। और ज्यों यीशु फिरता था त्यों वह उस- ३६

३७ पर दृष्टि करके बोला देखो ईश्वरका मेम्ना। उन दो
शिष्योंने उसको बोलते सुना और यीशुके पीछे हो लिये।
३८ यीशुने मुंह फेरके उनको पीछे आते देखके उनसे कहा
तुम क्या खोजते हो. उन्होंने उससे कहा हे रब्बी
३९ अर्थात हे गुरु आप कहां रहते हैं। उसने उनसे कहा
आके देखो. उन्होंने जाके देखा वह कहां रहता था और
उस दिन उसके संग रहे कि दो घड़ीके अटकल दिन
४० रहा था। जो दो जन योहनकी सुनके यीशुके पीछे हो
लिये उनमेंसे एक तो शिमोन पितरका भाई अन्द्रिय था।
४१ उसने पहिले अपने निज भाई शिमोनको पाया और
उससे कहा हमने मसीहको अर्थात ख्रीष्टको पाया है।
४२ तब वह उसे यीशु पास लाया और यीशुने उसपर दृष्टि
कर कहा तू यूनसका पुत्र शिमोन है तू कैफा अर्थात
पितर कहावेगा।
४३ दूसरे दिन यीशुने गालील देशको जानेकी इच्छा किई
४४ और फिलिपको पाके उससे कहा मेरे पीछे आ। फिलिप
४५ तो अन्द्रिय और पितरके नगर बैतसैदाका था। फिलि-
पने नथनेलको पाके उससे कहा जिसके विषयमें मूसाने
व्यवस्थामें और भविष्यद्वक्ताओंने लिखा है उसको हमने
पाया है अर्थात यूसफके पुत्र नासरत नगरके यीशुको।
४६ नथनेलने उससे कहा क्या कोई उत्तम वस्तु नासरतसे
उत्पन्न हो सकती है. फिलिपने उससे कहा आके
४७ देखिये। यीशुने नथनेलको अपने पास आते देखा और
उसके विषयमें कहा देखो यह सचमुच इस्रायेली है
४८ जिसमें कपट नहीं है। नथनेलने उससे कहा आप मुझे

कहांसे पहचानते हैं, यीशुने उसको उत्तर दिया कि
फिलिपके तुझे बुलानेके पहिले जब तू गूलरके वृक्षतले
था तब मैंने तुझे देखा। नथनेलने उसको उत्तर दिया ४९
कि हे गुरु आप ईश्वरके पुत्र हैं आप इस्रायेलके राजा
हैं। यीशुने उसको उत्तर दिया मैंने जो तुझसे कहा कि ५०
मैंने तुझे गूलरके वृक्षतले देखा क्या तू इसलिये बिश्वास
करता है, तू इनसे बड़े काम देखेगा। फिर उससे कहा ५१
मैं तुमसे सच सच कहता हूं इसके पीछे तुम स्वर्गको
खुला और ईश्वरके दूतोंको मनुष्यके पुत्रके ऊपरसे चढ़ते
उतरते देखोगे।

## २ दूसरा पर्ब्ब।

१ यीशुका जलको दाख रस बनाना। १२ यिरूशलीममें मन्दिरको शुद्ध करना। १८ अपने मरने और जी उठनेके विषयमें भविष्यद्वाक्य कहना। २३ बिश्वास करनेहारोंके हृदयको जांचना।

तीसरे दिन गालीलके काना नगरमें एक बिवाहका १
भोज था और यीशुकी माता वहां थी। यीशु भी और २
उसके शिष्य लोग उस बिवाहके भोजमें बुलाये गये। जब ३
दाख रस घट गया तब यीशुकी माताने उससे कहा उन-
के पास दाख रस नहीं है। यीशुने उससे कहा हे नारी ४
आपको मुझसे क्या काम, मेरा समय अबलों नहीं पहुंचा
है। उसकी माताने सेवकोंसे कहा जो कुछ वह तुमसे ५
कहे सो करो। वहां पत्थरके छः मटके यिहूदियोंके शुद्ध ६
करनेकी रीतिके अनुसार धरे थे जिनमें डेढ़ डेढ़ अथवा
दो दो मन समाते थे। यीशुने उनसे कहा मटकोंको जलसे ७
भर देओ, सो उन्होंने उन्हें मुंहामुंह भर दिया। तब ८

उसने उनसे कहा अब उंडेलो और भोजके प्रधानके पास
९ ले जाओ। वे ले गये। जब भोजके प्रधानने वह जल जो
दाख रस बन गया था चीखा और वह नहीं जानता था
कि वह कहांसे आया परन्तु जिन सेवकोंने जल उंडेला
था वे जानते थे तब भोजके प्रधानने दूल्हेको बुलाया।
१० और उससे कहा हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाख रस
देता और जब लोग पीके छक जाते तब मध्यम देता है।
११ तूने अच्छा दाख रस अबलों रखा है। यीशुने गालीलके
काना नगरमें आश्चर्य्य कर्म्मोंका यह आरंभ किया और
अपनी महिमा प्रगट किई और उसके शिष्योंने उसपर
बिश्वास किया।
१२ इसके पीछे वह और उसकी माता और उसके भाई
और उसके शिष्य लोग कफर्नाहुम नगरको गये परन्तु
१३ वहां बहुत दिन न रहे। यिहूदियोंका निस्तार पर्व्व
१४ निकट था और यीशु यिरूशलीमको गया। और उसने
मन्दिरमें गोरूओं औ भेड़ों औ कपोतोंके बेचनेहारोंको
१५ और सर्राफोंको बैठे हुए पाया। तब उसने रस्सियोंका
कोड़ा बनाके उन सभोंको भेड़ों औ गोरूओं समेत
मन्दिरसे निकाल दिया और सर्राफोंके पैसे बिथराके
१६ पीढ़ोंको उलट दिया। और कपोतोंके बेचनेहारोंसे कहा
इनको यहांसे ले जाओ मेरे पिताका घर ब्योपारका घर
१७ मत बनाओ। तब उसके शिष्योंने स्मरण किया कि लिखा
है तेरे घरके विषयमेंकी धुन मुझे खा जाती है।
१८ इसपर यिहूदियोंने उससे कहा तू जो यह करता है
१९ तो हमें कौनसा चिन्ह दिखाता है। यीशुने उनको उत्तर

दिया कि इस मन्दिरको ढा दो और मैं उसे तीन दिनमें
उठाऊंगा। यिहूदियोंने कहा यह मन्दिर छयालीस २०
बरसमें बनाया गया और तू क्या तीन दिनमें इसे उठा-
वेगा। परन्तु वह अपने देहके मन्दिरके विषयमें बोला। २१
सो जब वह मृतकोंमेंसे जी उठा तब उसके शिष्योंने स्म- २२
रण किया कि उसने उन्होंसे यह बात कही थी और
उन्होंने धर्म्मपुस्तकपर और उस बचनपर जो यीशुने कहा
था बिश्वास किया।

जब वह निस्तार पर्ब्बमें यिरूशलीममें था तब बहुत २३
लोगोंने उसके आश्चर्य्य कर्म्मोंको जो वह करता था देखके
उसके नामपर बिश्वास किया। परन्तु यीशुने अपनेको २४
उन्होंके हाथ नहीं सोंपा क्योंकि वह सभोंको जानता था.
और उसे प्रयोजन न था कि मनुष्यके विषयमें साक्षी कोई २५
देवे क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्यमें क्या है।

## ३ तीसरा पर्ब्ब।

१ यीशुका निकोदीमको नये जन्मके विषयमें उपदेश देना। ९ अपनी मृत्युके और बिश्वास करनेके विषयमें उसका उपदेश। २२ यीशु और योहनका डूब देना। २५ यीशुके विषयमें योहनकी साची।

फरीशियोंमेंसे निकोदीम नाम एक मनुष्य था जो यि- १
हूदियोंका एक प्रधान था। वह रातको यीशु पास आया २
और उससे कहा हे गुरु हम जानते हैं कि आप ईश्वरकी
ओरसे उपदेशक आये हैं क्योंकि कोई इन आश्चर्य्य कर्म्मों-
को जो आप करते हैं जो ईश्वर उसके संग न हो तो
नहीं कर सकता है। यीशुने उसको उत्तर दिया कि मैं ३

तुझसे सच सच कहता हूं कोई यदि फिरके न जन्मे तो
४ ईश्वरका राज्य नहीं देख सकता है। निकोदीमने उससे
कहा मनुष्य बूढ़ा होके क्योंकर जन्म ले सकता है. क्या
वह अपनी माताके गर्भमें दूसरी बेर प्रवेश करके जन्म ले
५ सकता है। यीशुने उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच सच
कहता हूं कोई यदि जल और आत्मासे न जन्मे तो
६ ईश्वरके राज्यमें प्रवेश नहीं कर सकता है। जो शरीरसे
जन्मा है सो शरीर है और जो आत्मासे जन्मा है सो
७ आत्मा है। अचंभा मत कर कि मैंने तुझसे कहा तुमको
८ फिरके जन्म लेना अवश्य है। पवन जहां चाहता है तहां
बहता है और तू उसका शब्द सुनता है परन्तु नहीं
जानता है वह कहांसे आता और किधरको जाता है.
जो कोई आत्मासे जन्मा है सो इसी रीतिसे है।

९ निकोदीमने उसको उत्तर दिया कि यह बातें क्योंकर
१० हो सकती हैं। यीशुने उसको उत्तर दिया क्या तू इस्रा-
येली लोगोंका उपदेशक है और यह बातें नहीं जानता।
११ मैं तुझसे सच सच कहता हूं हम जो जानते हैं सो
कहते हैं और जो देखा है उसपर साक्षी देते हैं और तुम
१२ हमारी साक्षी ग्रहण नहीं करते हो। जो मैंने तुमसे पृ-
थिवीपरकी बातें कहीं और तुम प्रतीति नहीं करते हो
तो यदि मैं तुमसे स्वर्गमेंकी बातें कहूं तुम क्योंकर प्र-
१३ तीति करोगे। और कोई स्वर्गपर नहीं चढ़ गया है
केवल वह जो स्वर्गसे उतरा अर्थात मनुष्यका पुत्र जो
१४ स्वर्गमें है। जिस रीतिसे मूसाने जंगलमें सांपको ऊंचा
किया उसी रीतिसे अवश्य है कि मनुष्यका पुत्र ऊंचा

किया जाय। इसलिये कि जो कोई उसपर बिश्वास करे १५
सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे। क्योंकि १६
ईश्वरने जगतको ऐसा प्यार किया कि उसने अपना एक-
लौता पुत्र दिया कि जो कोई उसपर बिश्वास करे सो
नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे। ईश्वरने अपने १७
पुत्रको जगतमें इसलिये नहीं भेजा कि जगतको दंडके
योग्य ठहरावे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा त्राण
पावे। जो उसपर बिश्वास करता है सो दंडके योग्य नहीं १८
ठहराया जाता है परन्तु जो बिश्वास नहीं करता सो दंड-
के योग्य ठहर चुका है क्योंकि उसने ईश्वरके एकलौते
पुत्रके नामपर बिश्वास नहीं किया है। और दंडके योग्य १९
ठहरानेका कारण यह है कि उजियाला जगतमें आया
है और मनुष्योंने अंधियारेको उजियालेसे अधिक प्यार
किया क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई २०
करता है सो उजियालेसे घिन्न करता है और उजियालेके
पास नहीं आता है न हो कि उसके कामोंपर उलहना
दिया जाय। परन्तु जो सच्चाईपर चलता है सो उजिया- २१
लेके पास आता है इसलिये कि उसके काम प्रगट होवें
कि ईश्वरकी ओरसे किये गये हैं।

इसके पीछे यीशु और उसके शिष्य यिहूदिया देशमें २२
आये और उसने वहां उनके संग रहके डूब दिलाया।
योहन भी शालीमके निकट ऐनन नाम स्थानमें डूब देता २३
था क्योंकि वहां बहुत जल था और लोग आके डूब लेते
थे। क्योंकि योहन अबलों बन्दीगृहमें नहीं डाला गया था। २४
योहनके शिष्यों और यिहूदियोंमें शुद्ध करनेके विषयमें २५

२६ बिबाद हुआ। और उन्होंने योहनके पास आके उस-
से कहा हे गुरु जो यर्दनके उस पार आपके संग था
जिसपर आपने साक्षी दिई है देखिये वह डूब दिलाता
२७ है और सब लोग उसके पास जाते हैं। योहनने उत्तर
दिया यदि स्वर्गसे उसको न दिया जाय तो मनुष्य कुछ
२८ नहीं पा सकता है। तुम आपही मेरे साक्षी हो कि मैंने
कहा मैं खीष्ट नहीं हूं पर उसके आगे भेजा गया हूं।
२९ दूल्हिन जिसकी है सोई दूल्हा है परन्तु दूल्हेका मित्र जो
खड़ा होके उसकी सुनता है दूल्हेके शब्दसे अति आन-
३० न्दित होता है, मेरा यह आनन्द पूरा हुआ है। अवश्य
३१ है कि वह बढ़े और मैं घटूं। जो ऊपरसे आता है सो
सभोंके ऊपर है, जो पृथिवीसे है सो पृथिवीका है और
पृथिवीकी बातें कहता है, जो स्वर्गसे आता है सो स-
३२ भोंके ऊपर है। जो उसने देखा और सुना है वह उसपर
साक्षी देता है और कोई उसकी साक्षी ग्रहण नहीं करता।
३३ जिसने उसकी साक्षी ग्रहण किई है सो इस बातपर छाप
३४ दे चुका कि ईश्वर सत्य है। इसलिये कि जिसे ईश्वरने
भेजा है सो ईश्वरकी बातें कहता है क्योंकि ईश्वर उसको
३५ आत्मा नापसे नहीं देता है। पिता पुत्रको प्यार करता
३६ है और उसने सब कुछ उसके हाथमें दिया है। जो पुत्र-
पर बिश्वास करता है उसको अनन्त जीवन है पर जो
पुत्रको न माने सो जीवनको नहीं देखेगा परन्तु ईश्वर-
का क्रोध उसपर रहता है।

## ४ चौथा पर्ब्ब।

१ शोमिरोनी स्त्रीसे यीशुकी बातचीत और अमृतका दृष्टान्त और सच्ची उपासनाका बर्णन। २७ नगरमें उस स्त्रीका यीशुके विषयमें समाचार कहना। ३१ शिष्योंसे यीशुकी बातचीत। ३९ नगरके लोगोंका उसपर बिश्वास करना। ४३ उसका गालीलमें जाना और राजाके यहांके एक पुरुषके पुत्रको चंगा करना।

जब प्रभुने जाना कि फरीशियोंने सुना है कि यीशु १
योहनसे अधिक शिष्य करके उन्हें डूब देता है. तौभी २
यीशु आप नहीं परन्तु उसके शिष्य डूब देते थे. तब वह ३
यिहूदियाको छोड़के फिर गालीलको गया। और उसको ४
शोमिरोन देशमेंसे जाना अवश्य हुआ। सो वह शिकर ५
नाम शोमिरोनके एक नगरपर उस भूमिके निकट पहुंचा
जिसे याकूबने अपने पुत्र यूसफको दिया। और याकू- ६
बका कूआं वहां था सो यीशु मार्गमें चलनेसे थकित हो
उस कूंएपर यूंही बैठ गया और दो पहरके निकट था।
एक शोमिरोनी स्त्री जल भरनेको आई. यीशुने उससे ७
कहा मुझे पीनेको दीजिये। उसके शिष्य लोग भोजन मोल ८
लेनेको नगरमें गये थे। शोमिरोनी स्त्रीने उससे कहा ९
आप यिहूदी होके मुझसे जो शोमिरोनी स्त्री हूं क्योंकर
पीनेको मांगते हैं क्योंकि यिहूदी लोग शोमिरोनियोंके
संग व्यवहार नहीं करते। यीशुने उसको उत्तर दिया १०
जो तू ईश्वरके दानको जानती और वह कौन है जो तु-
झसे कहता है मुझे पीनेको दीजिये तो तू उससे मांगती
और वह तुझे अमृत जल देता। स्त्रीने उससे कहा हे ११
प्रभु जल भरनेको आपके पास कुछ नहीं है और कूआं

गहिरा है तो वह अमृत जल आपको कहांसे मिला है।
१२ क्या आप हमारे पिता याकूबसे बड़े हैं जिसने यह कूआं
हमें दिया और आपही अपने सन्तान और अपने ढोर
१३ समेत उसमेंसे पिया। यीशुने उसको उत्तर दिया कि जो
१४ कोई यह जल पीवे सो फिर पियासा होगा. पर जो कोई
वह जल पीवे जो मैं उसको देऊंगा सो फिर कभी पियासा
न होगा परन्तु जो जल मैं उसे देऊंगा सो उसमें अनन्त
१५ जीवनलों उमंगनेहारे जलका सोता हो जायगा। स्त्रीने
उससे कहा हे प्रभु यह जल मुझे दीजिये कि मैं पियासी
१६ न होऊं और न जल भरनेको यहां आऊं। यीशुने उससे
१७ कहा जा अपने स्वामीको बुलाके यहां आ। स्त्रीने उत्तर
दिया कि मेरे तई स्वामी नहीं है. यीशु उससे बोला तूने
१८ अच्छा कहा कि मेरे तई स्वामी नहीं है. क्योंकि तेरे पांच
स्वामी हो चुके और अब जो तेरे संग रहता है सो तेरा
१९ स्वामी नहीं है. यह तूने सच कहा है। स्त्रीने उससे
कहा हे प्रभु मुझे सूझ पड़ता है कि आप भविष्यद्वक्ता
२० हैं। हमारे पितरोंने इसी पहाड़पर भजन किया और
आप लोग कहते हैं कि वह स्थान जहां भजन करना
२१ उचित है यिरूशलीममें है। यीशुने उससे कहा हे नारी
मेरी प्रतीति कर कि वह समय आता है जिसमें तुम न
इस पहाड़पर और न यिरूशलीममें पिताका भजन
२२ करोगे। तुम लोग जिसे नहीं जानते हो उसका भजन
करते हो हम लोग जिसे जानते हैं उसका भजन करते
२३ हैं क्योंकि त्राण यिहूदियोंमेंसे है। परन्तु वह समय आता
है और अब है जिसमें सच्चे भक्त आत्मा और सच्चाईसे

पिताका भजन करेंगे क्योंकि पिता ऐसे भजन करनेहारोंको चाहता है। ईश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसका २४
भजन करनेहारे आत्मा और सच्चाईसे भजन करें। स्त्रीने २५
उससे कहा मैं जानती हूं कि मसीह अर्थात ख्रीष्ट आता
है. वह जब आवेगा तब हमें सब कुछ बतावेगा। यीशुने २६
उससे कहा मैं जो तुझसे बोलता हूं वही हूं।

इतनेमें उसके शिष्य आये और अचंभा किया कि वह २७
स्त्रीसे बात करता है तौभी किसीने नहीं कहा कि आप
क्या चाहते हैं अथवा किसलिये उससे बात करते हैं। तब २८
स्त्रीने अपना घड़ा छोड़ा और नगरमें जाके लोगोंसे कहा.
आओ एक मनुष्यको देखो जिसने सब कुछ जो मैंने किया २९
है मुझसे कहा है. यह क्या ख्रीष्ट है। सो वे नगरसे निक- ३०
लके उस पास आये।

इस बीचमें शिष्योंने यीशुसे बिन्ती किई कि हे गुरु ३१
खाइये। उसने उनसे कहा खानेको मेरे पास भोजन है ३२
जो तुम नहीं जानते हो। शिष्योंने आपसमें कहा क्या ३३
कोई उस पास कुछ खानेको लाया है। यीशुने उनसे ३४
कहा मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेहारेकी इच्छापर चलूं और उसका काम पूरा करूं। क्या तुम नहीं ३५
कहते हो कि अब भी चार मास हैं तब कटनी आवेगी.
देखो मैं तुमसे कहता हूं अपनी आंखें उठाके खेतोंको
देखो कि वे कटनीके लिये पक चुके हैं। और काटनेहारा ३६
बनि पाता और अनन्त जीवनके लिये फल बटोरता है
जिस्तें बोनेहारा और काटनेहारा दोनों एकसंग आनन्द
करें। इसमें वह बात सच्ची है कि एक बोता है और ३७

३८ दूसरा काटता है। जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया है
उसको मैंने तुम्हें काटनेको भेजा, दूसरोंने परिश्रम किया
है और तुमने उनके परिश्रममें प्रवेश किया है।
३९ उस नगरके शोमिरोनियोंमेंसे बहुतोंने उस स्त्रीके
बचनके कारण जिसने साक्षी दिई कि उसने सब कुछ
जो मैंने किया है मुझसे कहा है यीशुपर बिश्वास किया।
४० इसलिये जब शोमिरोनी लोग उस पास आये तब उससे
बिन्ती किई कि हमारे यहां रहिये, और वह वहां दो
४१ दिन रहा। और उसके बचनके कारण बहुत अधिक
४२ लोगोंने बिश्वास किया, और उस स्त्रीसे कहा हम अब
तेरे बचनके कारण बिश्वास नहीं करते हैं क्योंकि हमनें
आपही सुना है और जानते हैं कि यह सचमुच जगतका
चाणकर्त्ता ख्रीष्ट है।
४३ दो दिनके पीछे यीशु वहांसे निकलके गालीलको गया।
४४ उसने तो आपही साक्षी दिई कि भविष्यद्वक्ता अपने
४५ निज देशमें आदर नहीं पाता है। जब वह गालीलमें
आया तब गालीलियोंने उसे ग्रहण किया क्योंकि जो कुछ
उसने यिरूशलीममें पर्ब्बमें किया था उन्होंने सब देखा
४६ था कि वे भी पर्ब्बमें गये थे। सो यीशु फिर गालीलके
काना नगरमें आया जहां उसने जलको दाख रस बनाया
था, और राजाके यहांका एक पुरुष था जिसका पुच
४७ कफर्नाहुममें रोगी था। उसने जब सुना कि यीशु यिहू-
दियासे गालीलमें आया है तब उस पास जाके उससे
बिन्ती किई कि आके मेरे पुचको चंगा कीजिये, क्योंकि
४८ वह लड़का मरनेपर था। यीशुने उससे कहा जो तुम

चिन्ह और अद्भुत काम न देखो तो बिश्वास नहीं करो-
गे। राजाके यहांके पुरुषने उससे कहा हे प्रभु मेरे बाल- ४९
कके मरनेके आगे आइये। यीशुने उससे कहा चला जा ५०
तेरा पुत्र जीता है. उस मनुष्यने उस बातपर जो यीशुने
उससे कही बिश्वास किया और चला गया। और वह ५१
जाताही था कि उसके दास उससे आ मिले और सन्देश
दिया कि आपका लड़का जीता है। उसने उनसे पूछा ५२
किस घड़ी उसका जी हलका हुआ. उन्होंने उससे कहा
कल एक घड़ी दिन झुकते ज्वरने उसको छोड़ा। सो पिताने ५३
जाना कि उसी घड़ीमें हुआ जिस घड़ी यीशुने उससे
कहा तेरा पुत्र जीता है और उसने औ उसके सारे
घरानेने बिश्वास किया। यह दूसरा आश्चर्य्य कर्म्म यीशुने ५४
यिहूदियासे गालीलमें आके किया।

## ५ पांचवां पर्व्व।

१ यीशुका बिश्रामके दिनमें अड़तीस बरसके रोगी मनुष्यको चंगा करना। १४ यिहूदियोंका उसे मार डालनेकी इच्छा करना। १९ उसका अपनी महिमाको बर्णन करना। ३० अपने विषयमें योहनको और ईश्वर पिताकी और धर्म्मपुस्तककी साक्षीको बर्णन करना।

इसके पीछे यिहूदियोंका पर्व्व हुआ और यीशु यि- १
रूशलीमको गया। यिरूशलीममें भेड़ी फाटकके पास २
एक कुंड है जो इब्रीय भाषामें बैथेसदा कहावता है जिस-
के पांच ओसारे हैं। इन्होंमें रोगियों अंधों लंगड़ों और ३
सूखे अंगवालोंकी बड़ी भीड़ पड़ी रहती थी जो जलके
हिलनेकी बाट देखते थे। क्योंकि समयके अनुसार एक ४

स्वर्गदूत उस कुंडमें उतरके जलको हिलाता था इससे
जो कोई जलके हिलनेके पीछे उसमें पहिले उतरता था
५ कोई भी रोग उसको लगा हो चंगा हो जाता था। एक
६ मनुष्य वहां था जो अड़तीस बरससे रोगी था। यीशुने
उसे पड़े हुए देखके और यह जानके कि उसे अब बहुत
दिन हो चुके उससे कहा क्या तू चंगा होने चाहता
७ है। रोगीने उसको उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरा कोई
मनुष्य नहीं है कि जब जल हिलाया जाय तब मुझे कुंडमें
उतारे और जबलों मैं जाता हूं दूसरा मुझसे आगे उत-
८ रता है। यीशुने उससे कहा उठ अपनी खाट उठाके
९ चल। वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट
१० उठाके चलने लगा पर उसी दिन बिश्रामवार था। इस-
लिये यिहूदियोंने उस चंगा किये हुए मनुष्यसे कहा यह
बिश्रामका दिन है खाट उठाना तुझे उचित नहीं है।
११ उसने उन्हें उत्तर दिया कि जिसने मुझे चंगा किया
१२ उसीने मुझसे कहा अपनी खाट उठाके चल। उन्होंने
उससे पूछा वह मनुष्य कौन है जिसने तुझसे कहा अपनी
१३ खाट उठाके चल। परन्तु वह चंगा किया हुआ मनुष्य
नहीं जानता था वह कौन है क्योंकि उस स्थानमें भीड़
होनेसे यीशु वहांसे हट गया।
१४ इसके पीछे यीशुने उसको मन्दिरमें पाके उससे कहा
देख तू चंगा हुआ है फिर पाप मत कर न हो कि इससे
१५ बुरी कोई बिपत्ति तुझपर आवे। उस मनुष्यने जाके यि-
हूदियोंसे कह दिया कि जिसने मुझे चंगा किया सो
१६ यीशु है। इस कारण यिहूदियोंने यीशुको सताया और

उसे मार डालने चाहा कि उसने बिश्रामके दिनमें यह
काम किया था। यीशुने उनको उत्तर दिया कि मेरा १७
पिता अबलों काम करता है मैं भी काम करता हूं। इस १८
कारण यिहूदियोंने और भी उसे मार डालने चाहा कि
उसने न केवल बिश्रामवारकी विधिको लंघन किया परन्तु
ईश्वरको अपना निज पिता कहके अपनेको ईश्वरके तुल्य
भी किया।

इसपर यीशुने उन्होंसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता १९
हूं पुत्र आपसे कुछ नहीं कर सकता है केवल जो कुछ
वह पिताको करते देखे क्योंकि जो कुछ वह करता है उसे
पुत्र भी वैसेही करता है। क्योंकि पिता पुत्रको प्यार २०
करता है और जो वह आप करता सो सब उसको बताता
है और वह इनसे बड़े काम उसको बतावेगा जिस्तें तुम
अचंभा करो। क्योंकि जैसा पिता मृतकोंको उठाता और २१
जिलाता है वैसाही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता
है। और पिता किसीका बिचार भी नहीं करता है परन्तु २२
बिचार करनेका सब अधिकार पुत्रको दिया है इसलिये
कि सब लोग जैसे पिताका आदर करते हैं वैसे पुत्रका
आदर करें। जो पुत्रका आदर नहीं करता है सो पिताका २३
जिसने उसे भेजा आदर नहीं करता है। मैं तुमसे सच सच २४
कहता हूं जो मेरा बचन सुनके मेरे भेजनेहारेपर बिश्वास
करता है उसको अनन्त जीवन है और दंडकी आज्ञा
उसपर नहीं होती परन्तु वह मृत्युसे पार होके जीवन-
में पहुंचा है। मैं तुमसे सच सच कहता हूं वह समय २५
आता है और अब है जिसमें मृतक लोग ईश्वरके पुत्रका

२६ शब्द सुनेंगे और जो सुनेंगे सो जीयेंगे । क्योंकि जैसा पिता
आपहीसे जीता है तैसा उसने पुत्रको भी अधिकार
२७ दिया है कि आपहीसे जीवे. और उसको बिचार कर-
नेका भी अधिकार दिया है क्योंकि वह मनुष्यका पुत्र है।
२८ इससे अचंभा मत करो क्योंकि वह समय आता है जिसमें
२९ जो कबरोंमें हैं सो सब उसका शब्द सुनके निकलेंगे. जि-
ससे भलाई करनेहारे जीवनके लिये जी उठेंगे और
बुराई करनेहारे दंडके लिये जी उठेंगे ।
३० मैं आपसे कुछ नहीं कर सकता हूं जैसा मैं सुनता हूं
वैसा बिचार करता हूं और मेरा बिचार यथार्थ है क्योंकि
मैं अपनी इच्छा नहीं चाहता हूं परन्तु पिताकी इच्छा
३१ जिसने मुझे भेजा । जो मैं अपने विषयमें साक्षी देता हूं
३२ तो मेरी साक्षी ठीक नहीं है । दूसरा है जो मेरे विषयमें
साक्षी देता है और मैं जानता हूं कि जो साक्षी वह मेरे
३३ विषयमें देता है सो साक्षी ठीक है। तुमने योहनके पास
३४ भेजा और उसने सत्यपर साक्षी दिई। मैं मनुष्यसे
साक्षी नहीं लेता हूं परन्तु मैं यह बातें कहता हूं इस-
३५ लिये कि तुम त्राण पावो। वह तो जलता और चमकता
हुआ दीपक था और तुम कितनी बेरलों उसके उजि-
३६ यालेमें आनन्द करनेको प्रसन्न थे। परन्तु योहनकी सा-
क्षीसे बड़ी साक्षी मेरे पास है क्योंकि जो काम पिताने
मुझे पूरे करनेको दिये हैं अर्थात येही काम जो मैं करता
हूं मेरे विषयमें साक्षी देते हैं कि पिताने मुझे भेजा है।
३७ और पिताने जिसने मुझे भेजा आपही मेरे विषयमें साक्षी
दिई है. तुमने कभी उसका शब्द न सुना है और उसका

रूप न देखा है। और तुम उसका बचन अपनेमें नहीं ३८
रखते हो कि जिसे उसने भेजा उसका बिश्वास नहीं करते
हो। धर्म्मपुस्तकमें ढूंढ़ो क्योंकि तुम समझते हो कि उसमें ३९
अनन्त जीवन हमें मिलता है और वही है जो मेरे वि-
षयमें साक्षी देता है। परन्तु तुम जीवन पानेको मेरे पास ४०
आने नहीं चाहते हो। मैं मनुष्योंसे आदर नहीं लेता ४१
हूं। परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं कि ईश्वरका प्रेम तुममें ४२
नहीं है। मैं अपने पिताके नामसे आया हूं और तुम ४३
मुझे ग्रहण नहीं करते हो. यदि दूसरा अपनेही नामसे
आवे तो उसे ग्रहण करोगे। तुम जो एक दूसरेसे आदर ४४
लेते हो और वह आदर जो अद्वैत ईश्वरसे है नहीं
चाहते हो क्योंकर बिश्वास कर सकते हो। मत समझो ४५
कि मैं पिताके आगे तुमपर दोष लगाऊंगा. तुमपर दोष
लगानेहारा तो है अर्थात मूसा जिसपर तुम भरोसा
रखते हो। क्योंकि जो तुम मूसाका बिश्वास करते तो ४६
मेरा बिश्वास करते इसलिये कि उसने मेरे विषयमें
लिखा। परन्तु जो तुम उसके लिखेपर बिश्वास नहीं ४७
करते हो तो मेरे कहेपर क्योंकर बिश्वास करोगे।

## ६ छठवां पर्व्व।

१ यीशुका पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना। १६ समुद्रपर चलना। २२ बहुत लोगोंका उसे ढूंढना और उसका अपनेको जीवनकी रोटीके दृष्टान्तसे प्रगट करना। ४१ बिबादी यिहूदियोंको उत्तर देना। ६० बहुत शिष्योंका उसे छोड़ना और प्रेरितोंका उसके संग बने रहना।

इसके पीछे यीशु गालीलके समुद्र अर्थात तिबरियाके १

२ समुद्रके उस पार गया। और बहुत लोग उसके पीछे
हो लिये इस कारण कि उन्होंने उसके आश्चर्य्य कर्म्मोंको
३ देखा जो वह रोगियोंपर करता था। तब यीशु पर्ब्बतपर
४ चढ़के अपने शिष्योंके संग वहां बैठा। और यिहूदियोंका
५ पर्ब्ब अर्थात निस्तार पर्ब्ब निकट था। यीशुने अपनी
आंखें उठाके बहुत लोगोंको अपने पास आते देखा और
फिलिपसे कहा हम कहांसे रोटी मोल लेवें कि ये लोग
६ खावें। उसने उसे परखनेको यह बात कही क्योंकि जो
७ वह करनेपर था सो आप जानता था। फिलिपने उसको
उत्तर दिया कि दो सौ सूकियोंकी रोटी उनके लिये
इतनी भी न होगी कि उनमेंसे हर एकको थोड़ी थोड़ी
८ मिले। उसके शिष्योंमेंसे एकने अर्थात शिमोन पितरके
९ भाई अन्द्रियने उससे कहा. यहां एक छोकरा है जिस
पास जवकी पांच रोटी और दो मछली हैं परन्तु इतने
१० लोगोंके लिये ये क्या हैं। यीशुने कहा उन मनुष्योंको
बैठाओ. उस स्थानमें बहुत घास थी सो पुरुष जो गि-
११ न्तीमें पांच सहस्रके अटकल थे बैठ गये। तब यीशुने
रोटियां ले धन्य मानके शिष्योंको बांट दिईं और शिष्योंने
बैठनेहारोंको और वैसेही मछलियोंमेंसे जितनी वे चाहते
१२ थे उतनी दिईं। जब वे तृप्त हुए तब उसने अपने शिष्योंसे
कहा बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ खोया न जाय।
१३ सो उन्होंने बटोरा और जवकी पांच रोटियोंके जो टुकड़े
१४ खानेहारोंसे बच रहे उनसे बारह टोकरी भरीं। उन
मनुष्योंने यह आश्चर्य्य कर्म्म जो यीशुने किया था देखके कहा
यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है जो जगतमें आनेवाला

था। जब यीशुने जाना कि वे मुझे राजा बनानेके लिये १५
आके मुझे पकड़ेंगे तब वह फिर अकेला पर्व्वतपर गया।
जब सांझ हुई तब उसके शिष्य लोग समुद्रके तीरपर १६
गये. और नावपर चढ़के समुद्रके उस पार कफर्नाहुमको १७
जाने लगे. और अंधियारा हुआ था और यीशु उनके
पास नहीं आया था। बड़ी बयारके बहनेसे समुद्रमें १८
लहरें भी उठती थीं। जब वे डेढ़ अथवा दो कोस खे गये १९
थे तब उन्होंने यीशुको समुद्रपर चलते और नावके निकट
आते देखा और डर गये। परन्तु उसने उनसे कहा मैं २०
हूं डरो मत। तब वे उसे नावपर चढ़ा लेनेको प्रसन्न थे २१
और तुरन्त नाव उस तीरपर जहां वे जाते थे लग गई।
दूसरे दिन जो लोग समुद्रके उस पार खड़े थे उन्होंने २२
जाना कि जिस नावपर यीशुके शिष्य चढ़े उसे छोड़के
और कोई नाव यहां नहीं थी और यीशु अपने शिष्योंके
संग उस नावपर नहीं चढ़ा पर केवल उसके शिष्य चले
गये। तौभी पीछे और नावें तिबरिया नगरसे उस स्थानके २३
निकट आई थीं जहां उन्होंने जब प्रभुने धन्य माना था
रोटी खाई। सो जब लोगोंने देखा कि यीशु यहां नहीं २४
है और न उसके शिष्य तब वे भी नावोंपर चढ़के यीशुको
ढूंढ़ते हुए कफर्नाहुमको आये। और वे समुद्रके पार उसे २५
पाके उससे बोले हे गुरु आप यहां कब आये। यीशुने २६
उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुमसे सच सच कहता हूं तुम
मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुमने आश्चर्य्य कर्म्मोंको
देखा परन्तु इसलिये कि उन रोटियोंमेंसे खाके तृप्त हुए।
नाशमान भोजनके लिये परिश्रम मत करो परन्तु उस २७

भोजनके लिये जो अनन्त जीवनलों रहता है जिसे मनु-
ष्यका पुत्र तुमको देगा क्योंकि पिताने अर्थात ईश्वरने
२८ उसीपर छाप दिई है। उन्होंने उससे कहा ईश्वरके
२९ कार्य्य करनेको हम क्या करें। यीशुने उन्हें उत्तर दिया
ईश्वरका कार्य्य यह है कि जिसे उसने भेजा है उसपर
३० तुम बिश्वास करो। उन्होंने उससे कहा आप कौनसा
आश्चर्य्य कर्म्म करते हैं कि हम देखके आपका बिश्वास
३१ करें. आप क्या करते हैं। हमारे पितरोंने जंगलमें
मन्ना खाया जैसा लिखा है कि उसने उन्हें स्वर्गकी रोटी
३२ खानेको दिई। यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच सच
कहता हूं मूसाने तुम्हें स्वर्गकी रोटी न दिई परन्तु मेरा
३३ पिता तुम्हें सच्ची स्वर्गकी रोटी देता है। क्योंकि ईश्वरकी
रोटी वह है जो स्वर्गसे उतरती और जगतको जीवन
३४ देती है। उन्होंने उससे कहा हे प्रभु यही रोटी हमें
३५ नित्य दीजिये। यीशुने उनसे कहा जीवनकी रोटी मैं हूं.
जो मेरे पास आवे सो कभी भूखा न होगा और जो
३६ मुझपर बिश्वास करे सो कभी पियासा न होगा। परन्तु
मैंने तुमसे कहा कि तुम मुझे देख भी चुके और बिश्वास
३७ नहीं करते हो। सब जो पिता मुझको देता है मेरे पास
आवेगा और जो कोई मेरे पास आवे मैं उसे किसी
३८ रीतिसे दूर न करूंगा। क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं
परन्तु अपने भेजनेहारेकी इच्छा पूरी करनेको स्वर्गसे
३९ उतरा हूं। और पिताकी इच्छा जिसने मुझे भेजा यह
है कि जिन्हें उसने मुझको दिया है उनमेंसे मैं किसीको
४० न खोऊं परन्तु उन्हें पिछले दिनमें उठाऊं। मेरे भेजने-

हारेकी इच्छा यह है कि जो कोई पुत्रको देखे और उस-
पर बिश्वास करे सो अनन्त जीवन पावे और मैं उसे
पिछले दिनमें उठाऊंगा।
तब यिहूदी लोग उसके विषयमें कुड़कुड़ाने लगे इस- ४१
लिये कि उसने कहा जो रोटी स्वर्गसे उतरी सो मैं हूं।
वे बोले क्या यह यूसफका पुत्र यीशु नहीं है जिसके माता ४२
और पिताको हम जानते हैं. तो वह क्योंकर कहता है कि
मैं स्वर्गसे उतरा हूं। यीशुने उनको उत्तर दिया कि ४३
आपसमें मत कुड़कुड़ाओ। यदि पिता जिसने मुझे भेजा ४४
उसे न खींचे तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता है और
उसको मैं पिछले दिनमें उठाऊंगा। भविष्यद्वक्ताओंके ४५
पुस्तकमें लिखा है कि वे सब ईश्वरके सिखाये हुए होंगे
सो हर एक जिसने पितासे सुना और सीखा है मेरे पास
आता है। यह नहीं कि किसीने पिताको देखा है. केवल ४६
जो ईश्वरकी ओरसे है उसीने पिताको देखा है। मैं ४७
तुमसे सच सच कहता हूं जो कोई मुझपर बिश्वास करता
है उसको अनन्त जीवन है। मैं जीवनकी रोटी हूं। ४८
तुम्हारे पितरोंने जंगलमें मन्ना खाया और मर गये। ४९
यह वह रोटी है जो स्वर्गसे उतरती है कि जो उससे खावे ५०
सो न मरे। मैं जीवती रोटी हूं जो स्वर्गसे उतरी. यदि ५१
कोई यह रोटी खाय तो सदालों जीयेगा और जो रोटी
मैं देऊंगा सो मेरा मांस है जिसे मैं जगतके जीवनके लिये
देऊंगा। इसपर यिहूदी लोग आपसमें बिबाद करने लगे ५२
कि यह हमें क्योंकर अपना मांस खानेको दे सकता है।
यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं जो तुम ५३

मनुष्यके पुत्रका मांस न खावो और उसका लोहू न
५४ पीवो तो तुममें जीवन नहीं है। जो मेरा मांस खाता
और मेरा लोहू पीता है उसको अनन्त जीवन है और
५५ मैं उसे पिछले दिनमें उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस सच्चा
५६ भोजन है और मेरा लोहू सच्ची पीनेकी बस्तु है। जो मेरा
मांस खाता और मेरा लोहू पीता है सो मुझमें रहता है
५७ और मैं उसमें रहता हूं। जैसा जीवते पिताने मुझे भेजा
और मैं पितासे जीता हूं तैसा वह भी जो मुझे खावे
५८ मुझसे जीयेगा। यह वह रोटी है जो स्वर्गसे उतरी,
जैसा तुम्हारे पितरोंने मन्ना खाया और मर गये ऐसा
५९ नहीं, जो यह रोटी खाय सो सदालों जीयेगा। उसने कफ-
नाहुममें उपदेश करते हुए सभाके घरमें यह बातें कहीं।
६० उसके शिष्योंमेंसे बहुतोंने यह सुनके कहा यह बात
६१ कठिन है इसे कौन सुन सकता है। यीशुने अपने मनमें
जाना कि उसके शिष्य इस बातके बिषयमें कुड़कुड़ाते हैं
इसलिये उनसे कहा क्या इस बातसे तुमको ठोकर लग-
६२ ती है। यदि मनुष्यके पुत्रको जहां वह आगे था उस
६३ स्थानपर चढ़ते देखो तो क्या कहोगे। आत्मा तो जीवन-
दायक है शरीरसे कुछ लाभ नहीं, जो बातें मैं तुमसे
६४ बोलता हूं सो आत्मा हैं और जीवन हैं। परन्तु तुम्होंमेंसे
कितने हैं जो बिश्वास नहीं करते हैं, यीशु तो आरंभसे
जानता था कि वे कौन हैं जो बिश्वास करनेहारे नहीं
६५ हैं और वह कौन है जो मुझे पकड़वायगा। और उसने
कहा इसीलिये मैंने तुमसे कहा है कि यदि मेरे पिताकी
ओरसे उसको न दिया जाय तो कोई मेरे पास नहीं आ

सकता है। इस समयसे उसके शिष्योंमेंसे बहुतेरे पीछे ६६
हटे और उसके संग और न चले। इसलिये यीशुने उन ६७
बारह शिष्योंसे कहा क्या तुम भी जाने चाहते हो। शिमोन ६८
पितरने उसको उत्तर दिया कि हे प्रभु हम किसके पास
जायें. आपके पास अनन्त जीवनकी बातें हैं। और ६९
हमने बिश्वास किया और जान लिया है कि आप जीवते
ईश्वरके पुत्र ख्रीष्ट हैं। यीशुने उनको उत्तर दिया क्या मैंने ७०
तुम बारहोंको नहीं चुना और तुममेंसे एक तो शैतान
है। वह शिमोनके पुत्र यिहूदा इस्करियोतीके विषयमें ७१
बोला क्योंकि वही उसे पकड़वानेपर था और वह बारह
शिष्योंमेंसे एक था।

## ७ सातवां पर्व्व।

१ यीशुका अपने भाइयोंसे बातचीत करना और तंबूबास पर्व्वमें यिरूशलीमको जाना। १४ मन्दिरमें यिहूदियोंको उपदेश देना। २५ यीशुके विषयमें लोगोंके अनेक बिचार और उसका उत्तर देना। ४५ प्यादों और फरीशियों और निकोदीमका आपसमें बिबाद।

इसके पीछे यीशु गालीलमें फिरने लगा क्योंकि यिहूदी १
लोग उसे मार डालने चाहते थे इसलिये वह यिहूदिया-
में फिरने नहीं चाहता था। और यिहूदियोंका पर्व्व २
अर्थात तंबूबास पर्व्व निकट था। इसलिये उसके भाइ- ३
योंने उससे कहा यहांसे निकलके यिहूदियामें जा कि तेरे
शिष्य लोग भी तेरे काम जो तू करता है देखें। क्योंकि ४
कोई नहीं गुप्तमें कुछ करता और आपही प्रगट होने
चाहता है. जो तू यह करता है तो अपने तईं जगत-
को दिखा। क्योंकि उसके भाई भी उसपर बिश्वास नहीं ५

६ करते थे। यीशुने उनसे कहा मेरा समय अबलों नहीं
७ पहुंचा है परन्तु तुम्हारा समय नित्य बना है। जगत
तुमसे बैर नहीं कर सकता है परन्तु वह मुझसे बैर
करता है क्योंकि मैं उसके विषयमें साक्षी देता हूं कि
८ उसके काम बुरे हैं। तुम इस पर्ब्बमें जाओ. मैं अभी
इस पर्ब्बमें नहीं जाता हूं क्योंकि मेरा समय अबलों पूरा
९ नहीं हुआ है। वह उनसे यह बातें कहके गालीलमें रह
१० गया। परन्तु जब उसके भाई लोग चले गये तब वह
आप भी प्रगट होके नहीं पर जैसा गुप्त होके पर्ब्बमें गया।
११ यिहूदी लोग पर्ब्बमें उसे ढूंढ़ते थे और बोले वह कहां
१२ है। और लोग उसके विषयमें बहुत बातें आपसमें फुस-
फुसाके कहते थे. कितनोंने कहा वह उत्तम मनुष्य है
परन्तु औरोंने कहा सो नहीं पर वह लोगोंको भरमाता
१३ है। तौभी यिहूदियोंके डरके मारे कोई उसके विषयमें
खोलके नहीं बोला।

१४ पर्ब्बके बीचोबीच यीशु मन्दिरमें जाके उपदेश करने
१५ लगा। यिहूदियोंने अचंभा कर कहा यह बिन सीखे
१६ क्योंकर विद्या जानता है। यीशुने उनको उत्तर दिया कि
१७ मेरा उपदेश मेरा नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेका है। यदि
कोई उसकी इच्छापर चला चाहे तो इस उपदेशके
विषयमें जानेगा कि वह ईश्वरकी ओरसे है अथवा मैं
१८ अपनी ओरसे कहता हूं। जो अपनी ओरसे कहता है
सो अपनीही बड़ाई चाहता है परन्तु जो अपने भेजने-
हारेकी बड़ाई चाहता है सोई सत्य है और उसमें
१९ अधर्म्म नहीं है। क्या मूसाने तुम्हें व्यवस्था न दिई. तौभी

तुममेंसे कोई व्यवस्थापर नहीं चलता है. तुम क्यों मुझे
मार डालने चाहते हो। लोगोंने उत्तर दिया कि तुझे २०
भूत लगा है. कौन तुझे मार डालने चाहता है। यीशुने २१
उनको उत्तर दिया कि मैंने एक काम किया और तुम
सब अचंभा करते हो। मूसाने तुम्हें खतनेकी आज्ञा २२
दिई. इस कारण नहीं कि वह मूसाकी ओरसे है परन्तु
पितरोंकी ओरसे है. और तुम बिश्रामके दिनमें मनुष्यका
खतना करते हो। जो बिश्रामके दिनमें मनुष्यका खत- २३
ना किया जाता है जिस्तें मूसाकी व्यवस्था लंघन न होय
तो तुम मुझसे क्यों इसलिये क्रोध करते हो कि मैंने
बिश्रामके दिनमें सम्पूर्ण एक मनुष्यको चंगा किया। मुंह २४
देखके बिचार मत करो परन्तु यथार्थ बिचार करो।

तब यिरूशलोमके निवासियोंमेंसे कितने बोले क्या यह २५
वह नहीं है जिसे वे मार डालने चाहते हैं। और देखो २६
वह खोलके बात करता है और वे उससे कुछ नहीं
कहते. क्या प्रधानोंने निश्चय जान लिया है कि यह
सचमुच ख्रीष्ट है। परन्तु इस मनुष्यको हम जानते हैं कि २७
वह कहांसे है पर ख्रीष्ट जब आवेगा तब कोई नहीं जा-
नेगा कि वह कहांसे है। यीशुने मन्दिरमें उपदेश करते २८
हुए पुकारके कहा तुम मुझे जानते और यह भी जानते
हो कि मैं कहांसे हूं. मैं तो आपसे नहीं आया हूं परन्तु
मेरा भेजनेहारा सत्य है जिसे तुम नहीं जानते हो। मैं २९
उसे जानता हूं क्योंकि मैं उसकी ओरसे हूं और उसने
मुझे भेजा है। इसपर उन्होंने उसको पकड़ने चाहा तौभी ३०
किसीने उसपर हाथ न बढ़ाया क्योंकि उसका समय

३१ अबलों नहीं पहुंचा था। और लोगोंमेंसे बहुतोंने उस-
पर बिश्वास किया और कहा ख्रीष्ट जब आवेगा तब क्या
इन आश्चर्य्य कर्म्मोंसे जो इसने किये हैं अधिक करेगा।
३२ फरीशियोंने लोगोंको उसके विषयमें यह बातें फुस-
फुसाके कहते सुना और फरीशियों और प्रधान याज-
३३ कोंने प्यादोंको उसे पकड़नेको भेजा। इसपर योशुने
कहा मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ रहता हूं तब
३४ अपने भेजनेहारेके पास जाता हूं। तुम मुझे ढूंढोगे और
न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ
३५ सकोगे। यिहूदियोंने आपसमें कहा यह कहां जायगा कि
हम उसे नहीं पावेंगे. क्या वह यूनानियोंमेंके तितर
बितर लोगोंके पास जायगा और यूनानियोंको उपदेश
३६ देगा। यह क्या बात है जो उसने कही कि तुम मुझे
ढूंढोगे और न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम
नहीं आ सकोगे।
३७ पिछले दिन पर्ब्बके बड़े दिनमें यीशुने खड़ा हो पुका-
रके कहा यदि कोई पियासा होवे तो मेरे पास आके
३८ पीवे। जो मुझपर बिश्वास करे जैसा धर्म्मपुस्तकने कहा
३९ तैसा उसके अन्तरसे अमृत जलकी नदियां बहेंगीं। उसने
यह बचन आत्माके विषयमें कहा जिसे उसपर बिश्वास
करनेहारे पानेपर थे क्योंकि पवित्र आत्मा अबलों नहीं
दिया गया था इसलिये कि यीशुकी महिमा अबलों
४० प्रगट न हुई थी। लोगोंमेंसे बहुतोंने यह बचन सुनके
४१ कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है। औरोंने कहा यह
ख्रीष्ट है परन्तु औरोंने कहा क्या ख्रीष्ट गालीलमेंसे

आवेगा। क्या धर्म्मपुस्तकने नहीं कहा कि ख्रीष्ट दाऊ- ४२
दके बंशसे और बैतलहम नगरसे जहां दाऊद रहता
था आवेगा। सो उसके कारण लोगोंमें बिभेद हुआ। ४३
उनमेंसे कितने उसको पकड़ने चाहते थे परन्तु किसीने ४४
उसपर हाथ न बढ़ाये।

तब प्यादे लोग प्रधान याजकों और फरीशियोंके पास ४५
आये और उन्होंने उनसे कहा तुम उसे क्यों नहीं लाये
हो। प्यादोंनें उत्तर दिया कि किसी मनुष्यने कभी इस ४६
मनुष्यकी नाईं बात न किई। फरीशियोंने उनको उत्तर ४७
दिया क्या तुम भी भरमाये गये हो। क्या प्रधानों अथवा ४८
फरीशियोंमेंसे किसीने उसपर बिश्वास किया है। परन्तु ४९
ये लोग जो ब्यवस्थाको नहीं जानते हैं स्रापित हैं। निको- ५०
दीम जो रातको यीशु पास आया और आप उनमेंसे
एक था उनसे बोला, हमारी ब्यवस्था जबलों मनुष्यकी ५१
न सुने और न जाने कि वह क्या करता है तबलों क्या
उसको दोषी ठहराती है। उन्होंने उसे उत्तर दिया क्या ५२
आप भी गालीलके हैं, ढूंढ़के देखिये कि गालीलमेंसे
भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होता। तब सब कोई अपने अपने ५३
घरको गये।

## ८ आठवां पर्ब्ब।

१ यीशुका एक ब्यभिचारिणीको छुड़ाना। १२ उसके उपदेशकी सच्चाईका प्रमाण। २१ उसका यिहूदियोंको चिताना। ३३ इब्राहीमके सुभावके दृष्टान्तसे उन्होंकी कुचालपर उलहना देना। ४८ अपनी महिमाका बखान करना।

परन्तु यीशु जैतून पर्ब्बतपर गया, और भोरको फिर १ २

मन्दिरमें आया और सब लोग उस पास आये और वह
३ बैठके उन्हें उपदेश देने लगा। तब अध्यापकों और
फरीशियोंने एक स्त्रीको जो व्यभिचारमें पकड़ी गई थी
४ उस पास लाके बीचमें खड़ी किई, और उससे कहा हे
५ गुरु यह स्त्री व्यभिचार कर्म्म करतेही पकड़ी गई। व्यव-
स्थामें मूसाने हमें आज्ञा दिई कि ऐसी स्त्रियां पत्थरवाह
६ किई जावें सो आप क्या कहते हैं। उन्होंने उसको परीक्षा
करनेको यह बात कही कि उसपर दोष लगानेका गैां
मिले परन्तु यीशु नीचे झुकके उंगलीसे भूमिपर लिखने
७ लगा। जब वे उससे पूछते रहे तब उसने उठके उनसे
कहा तुम्होंमेंसे जो निष्पापी होय सो पहिले उसपर पत्थर
८ फेंके। और वह फिर नीचे झुकके भूमिपर लिखने लगा।
९ पर वे यह सुनके और अपने अपने मनसे दोषी ठहरके
बड़ोंसे लेके छोटोंतक एक एक करके निकल गये और
केवल यीशु रह गया और वह स्त्री बीचमें खड़ी रही।
१० यीशुने उठके स्त्रीको छोड़ और किसीको न देखके उससे
कहा हे नारी वे तेरे दोषदायक कहां हैं, क्या किसीने
११ तुझपर दंडकी आज्ञा न दिई। उसने कहा हे प्रभु कि-
सीने नहीं, यीशुने उससे कहा मैं भी तुझपर दंडकी
आज्ञा नहीं देता हूं जा और फिर पाप मत कर।
१२ तब यीशुने फिर लोगोंसे कहा मैं जगतका प्रकाश हूं,
जो मेरे पीछे आवे सो अंधकारमें नहीं चलेगा परन्तु
१३ जीवनका उजियाला पावेगा। फरीशियोंने उससे कहा तू
अपनेही विषयमें साक्षी देता है तेरी साक्षी ठीक नहीं
१४ है। यीशुने उनको उत्तर दिया कि जो मैं अपने विषयमें

साक्षी देता हूं तौभी मेरी साक्षी ठीक है क्योंकि मैं जान-
ता हूं कि मैं कहांसे आया हूं और कहां जाता हूं परन्तु
तुम नहीं जानते हो कि मैं कहांसे आता हूं और कहां
जाता हूं। तुम शरीरको देखके बिचार करते हो मैं १५
किसीका बिचार नहीं करता हूं। और जो मैं बिचार १६
करता हूं भी तो मेरा बिचार ठीक है क्योंकि मैं अकेला
नहीं हूं परन्तु मैं हूं और पिता है जिसने मुझे भेजा।
तुम्हारी व्यवस्थामें लिखा है कि दो जनोंकी साक्षी ठीक १७
होती है। एक मैं हूं जो अपने विषयमें साक्षी देता हूं १८
और पिता जिसने मुझे भेजा मेरे विषयमें साक्षी देता है।
तब उन्होंने उससे कहा तेरा पिता कहां है. यीशुने उत्तर १९
दिया कि तुम न मुझे न मेरे पिताको जानते हो. जो
मुझे जानते तो मेरे पिताको भी जानते। यह बातें यीशुने २०
मन्दिरमें उपदेश करते हुए भंडार घरमें कहीं और
किसीने उसको न पकड़ा क्योंकि उसका समय अबलों
नहीं पहुंचा था।

तब यीशुने उनसे फिर कहा मैं जाता हूं और तुम २१
मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पापमें मरोगे. जहां मैं जाता हूं
तहां तुम नहीं आ सकते हो। इसपर यिहूदियोंने कहा २२
क्या वह अपनेको मार डालेगा कि वह कहता है जहां मैं
जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो। उसने उनसे २३
कहा तुम नीचेके हो मैं ऊपरका हूं. तुम इस जगतके
हो मैं इस जगतका नहीं हूं। इसलिये मैंने तुमसे २४
कहा कि तुम अपने पापोंमें मरोगे क्योंकि जो तुम
बिश्वास न करो कि मैं वही हूं तो अपने पापोंमें मरो-

२५ गे। उन्होंने उससे कहा तू कौन है. यीशुने उनसे कहा
२६ पहिले जो मैं तुमसे कहता हूं वह भी सुनो। तुम्हारे
विषयमें मुझे बहुत कुछ कहना और बिचार करना है
परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है और जो मैंने उससे सुना
२७ है सोई जगतसे कहता हूं। वे नहीं जानते थे कि वह
२८ उनसे पिताके विषयमें बोलता था। तब यीशुने उनसे
कहा जब तुम मनुष्यके पुत्रको ऊंचा करोगे तब जानोगे
कि मैं वही हूं और कि मैं आपसे कुछ नहीं करता हूं
परन्तु जैसे मेरे पिताने मुझे सिखाया तैसे मैं यह बातें
२९ बोलता हूं। और मेरा भेजनेहारा मेरे संग है. पिताने
मुझे अकेला नहीं छोड़ा है क्योंकि मैं सदा वही करता
३० हूं जिससे वह प्रसन्न होता है। उसके यह बातें बोलते-
३१ ही बहुत लोगोंने उसपर बिश्वास किया। तब यीशुने उन
यिहूदियोंसे जिन्होंने उसपर बिश्वास किया कहा जो तुम
३२ मेरे बचनमें बने रहो तो सचमुच मेरे शिष्य हो। और तुम
सत्यको जानोगे और सत्यके द्वारासे तुम्हारा उद्धार होगा।
३३ उन्होंने उसको उत्तर दिया कि हम तो इब्राहीमके बंश
हैं और कभी किसीके दास नहीं हुए हैं. तू क्योंकर कहता
३४ है कि तुम्हारा उद्धार होगा। यीशुने उनको उत्तर दिया
मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है
३५ सो पापका दास है। दास सदा घरमें नहीं रहता है.
३६ पुत्र सदा रहता है। सो यदि पुत्र तुम्हारा उद्धार करे
३७ तो निश्चय तुम्हारा उद्धार होगा। मैं जानता हूं कि तुम
इब्राहीमके बंश हो परन्तु मेरा बचन तुममें नहीं समाता
३८ है इसलिये तुम मुझे मार डालने चाहते हो। मैंने

अपने पिताके पास जो देखा है सो कहता हूं और तुमने
अपने पिताके पास जो देखा है सो करते हो। उन्होंने ३९
उसको उत्तर दिया कि हमारा पिता इब्राहीम है. यीशुने
उनसे कहा जो तुम इब्राहीमके सन्तान होते तो इब्राही-
मके कर्म्म करते। परन्तु अब तुम मुझे अर्थात एक मनु- ४०
ष्यको जिसने वह सत्य बचन जो मैंने ईश्वरसे सुना तुमसे
कहा है मार डालने चाहते हो. यह तो इब्राहीमने
नहीं किया। तुम अपने पिताके कर्म्म करते हो. उन्होंने ४१
उससे कहा हम व्यभिचारसे नहीं जन्मे हैं हमारा एक
पिता है अर्थात ईश्वर। यीशुने उनसे कहा यदि ईश्वर ४२
तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं
ईश्वरकी ओरसे निकलके आया हूं. मैं आपसे नहीं
आया हूं परन्तु उसने मुझे भेजा। तुम मेरी बात क्यों ४३
नहीं बूझते हो. इसीलिये कि मेरा बचन नहीं सुन
सकते हो। तुम अपने पिता शैतानसे हो और अपने ४४
पिताके अभिलाषोंपर चला चाहते हो. वह आरंभसे
मनुष्यघाती था और सच्चाईमें स्थिर नहीं रहता क्योंकि
सच्चाई उसमें नहीं है. जब वह झूठ बोलता तब अपने
स्वभावहीसे बोलता है क्योंकि वह झूठा और झूठका पिता
है। परन्तु मैं सत्य कहता हूं इसीलिये तुम मेरी प्रतीति ४५
नहीं करते हो। तुममेंसे कौन मुझे पापी ठहराता है. ४६
और जो मैं सत्य कहता हूं तो तुम क्यों मेरी प्रतीति नहीं
करते हो। जो ईश्वरसे है सो ईश्वरकी बातें सुनता है. ४७
तुम ईश्वरसे नहीं हो इस कारण नहीं सुनते हो।
तब यिहूदियोंने उसको उत्तर दिया क्या हम अच्छा ४८

नहीं कहते हैं कि तू शोमिरोनी है और भूत तुझे लगा
४९ है। यीशुने उत्तर दिया कि मुझे भूत नहीं लगा है परन्तु
मैं अपने पिताका सन्मान करता हूं और तुम मेरा अप-
५० मान करते हो। पर मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता हूं.
५१ एक है जो चाहता और बिचार करता है। मैं तुमसे
सच सच कहता हूं यदि कोई मेरी बातको पालन करे
५२ तो वह कभी मृत्युको न देखेगा। तब यिहूदियोंने
उससे कहा अब हम जानते हैं कि भूत तुझे लगा है.
इब्राहीम और भविष्यद्वक्ता लोग मर गये हैं और तू
कहता है कि यदि कोई मेरी बातको पालन करे तो वह
५३ कभी मृत्युका स्वाद न चीखेगा। क्या तू हमारे पिता
इब्राहीमसे जो मर गया है बड़ा है. भविष्यद्वक्ता लोग
५४ भी मर गये हैं. तू अपने तई क्या बनाता है। यीशुने
उत्तर दिया कि जो मैं अपनी बड़ाई करूं तो मेरी बड़ाई
कुछ नहीं है. मेरी बड़ाई करनेहारा मेरा पिता है जिसे
५५ तुम कहते हो कि वह हमारा ईश्वर है। तौभी तुम उसे
नहीं जानते हो परन्तु मैं उसे जानता हूं और जो मैं
कहूं कि मैं उसे नहीं जानता हूं तो मैं तुम्हारे समान
झूठा होंगा परन्तु मैं उसे जानता और उसके बचनको
५६ पालन करता हूं। तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन
देखनेको हर्षित होता था और उसने देखा और आनन्द
५७ किया। यिहूदियोंने उससे कहा तू अबलों पचास बर-
५८ सका नहीं है और क्या तूने इब्राहीमको देखा है। यीशुने
उनसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि इब्राहीमके
५९ होनेके पहिलेसे मैं हूं। तब उन्होंने पत्थर उठाये कि

उसपर फेंकें परन्तु यीशु छिप गया और उन्होंके बीचमेंसे
होके मन्दिरसे निकला और यूंहीं चला गया।

## ९ नवां पर्व्व।

१ यीशुका एक अन्धेको चंगा करना। ८ पड़ोसियों और फरीशियोंका उस चंगा किये हुए मनुष्यसे प्रश्न करना। १८ यिहूदियोंका उसके माता पितासे प्रश्न करना। २४ फरीशियोंके आगे उसका यीशुको मान लेना। ३५ यीशुका अपनेको उसपर प्रगट करना।

जाते हुए यीशुने एक मनुष्यको देखा जो जन्मका अंधा १
था। और उसके शिष्योंने उससे पूछा हे गुरु किसने पाप २
किया इस मनुष्यने अथवा उसके माता पिताने जो वह
अंधा जन्मा। यीशुने उत्तर दिया कि न तो इसने न ३
इसके माता पिताने पाप किया परन्तु यह इसलिये हुआ
कि ईश्वरके काम उसमें प्रगट किये जायें। मुझे दिन रहते ४
अपने भेजनेहारेके कामोंको करना अवश्य है. रात आती
है जिसमें कोई नहीं काम कर सकता है। जबलों मैं ५
जगतमें हूं तबलों जगतका प्रकाश हूं। यह कहके उसने ६
भूमिपर थूका और उस थूकसे मिट्टी गीली करके वह
गीली मिट्टी अंधेकी आंखोंपर लगाई. और उससे कहा ७
जाके शीलोहके कुंडमें धो जिसका अर्थ यह है भेजा हुआ.
सो उसने जाके धोया और देखते हुए आया।

तब पड़ोसियोंने और जिन्होंने आगे उसे अंधा देखा ८
था उन्होंने कहा क्या यह वह नहीं है जो बैठा भीख मां-
गता था। कितनोंने कहा यह वही है औरोंने कहा यह ९
उसकी नाईं है वह आप बोला मैं वही हूं। तब उन्होंने १०
उससे कहा तेरी आंखें क्योंकर खुलीं। उसने उत्तर दिया ११

कि यीशु नाम एक मनुष्यने मिट्टी गीली करके मेरी आं-
खोंपर लगाई और मुझसे कहा शीलोहके कुंडको जा
१२ और धो सो मैंने जाके धोया औ दृष्टि पाई। उन्होंने
उससे कहा वह मनुष्य कहां है. उसने कहा मैं नहीं
जानता हूं।
१३ वे उसको जो आगे अंधा था फरीशियोंके पास
१४ लाये। जब यीशुने मिट्टी गीली करके उसकी आंखें खोली
१५ थीं तब बिश्रामका दिन था। सो फरीशियोंने भी फिर
उससे पूछा तूने किस रीतिसे दृष्टि पाई. वह उनसे बोला
उसने गीली मिट्टी मेरी आंखोंपर लगाई और मैंने धोया
१६ और देखता हूं। फरीशियोंमेंसे कितनोंने कहा यह
मनुष्य ईश्वरकी ओरसे नहीं है क्योंकि वह बिश्रामका
दिन नहीं मानता है. औरोंने कहा पापी मनुष्य क्योंकर
ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म कर सकता है. और उन्होंमें बिभेद
१७ हुआ। वे उस अंधेसे फिर बोले उसने जो तेरी आंखें
खोलीं तो तू उसके विषयमें क्या कहता है. उसने कहा
वह भविष्यद्वक्ता है।
१८ परन्तु यिहूदियोंने जबलों उस दृष्टि पाये हुए मनु-
ष्यके माता पिताको नहीं बुलाया तबलों उसके विषयमें
१९ प्रतीति न किई कि वह अंधा था औ दृष्टि पाई। और
उन्होंने उनसे पूछा क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम
कहते हो कि वह अंधा जन्मा. तो वह अब क्योंकर
२० देखता है। उसके माता पिताने उनको उत्तर दिया हम
जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और कि वह अंधा
२१ जन्मा। परन्तु वह अब क्योंकर देखता है सो हम नहीं

जानते अथवा किसने उसकी आंखें खोलीं हम नहीं
जानते हैं, वह सयाना है उसीसे पूछिये वह अपने वि-
षयमें आप कहेगा। यह बातें उसके माता पिताने इस- २२
लिये कहीं कि वे यिहूदियोंसे डरते थे क्योंकि यिहूदी
लोग आपसमें ठहरा चुके थे कि यदि कोई योशुको ख्रीष्ट
करके मान लेवे तो सभामेंसे निकाला जायगा। इस कारण २३
उसके माता पिताने कहा वह सयाना है उसीसे पूछिये।
तब उन्होंने उस मनुष्यको जो अंधा था दूसरी बेर २४
बुलाके उससे कहा ईश्वरका गुणानुबाद कर, हम जानते
हैं कि यह मनुष्य पापी है। उसने उत्तर दिया वह पापी २५
है कि नहीं सो मैं नहीं जानता हूं एक बात मैं जानता
हूं कि मैं जो अंधा था अब देखता हूं। उन्होंने उससे २६
फिर कहा उसने तुझसे क्या किया, तेरी आंखें किस
रीतिसे खोलीं। उसने उनको उत्तर दिया कि मैं आप २७
लोगोंसे कह चुका हूं और आप लोगोंने नहीं सुना,
किसलिये फिर सुना चाहते हैं, क्या आप लोग भी उसके
शिष्य हुआ चाहते हैं। तब उन्होंने उसकी निन्दा कर २८
कहा तू उसका शिष्य है पर हम मूसाके शिष्य हैं। हम २९
जानते हैं कि ईश्वरने मूसासे बातें किईं परन्तु इसको
हम नहीं जानते कि कहांसे है। उस मनुष्यने उनको ३०
उत्तर दिया इसमें अचंभा है कि आप लोग नहीं जानते
वह कहांसे है और उसने मेरी आंखें खोली हैं। हम ३१
जानते हैं कि ईश्वर पापियोंकी नहीं सुनता है परन्तु
यदि कोई ईश्वरका उपासक होय और उसकी इच्छापर
चले तो वह उसकी सुनता है। यह कभी सुननेमें नहीं ३२

३३ आया कि किसीने जन्मके अंधेकी आंखें खाली हों। जो
यह ईश्वरकी ओरसे न होता तो कुछ नहीं कर सकता।
३४ उन्होंने उसको उत्तर दिया कि तू तो सम्पूर्ण पापोंमें
जन्मा और क्या तू हमें सिखाता है. और उन्होंने उसे
बाहर निकाल दिया।
३५ यीशुने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया
था और उसको पाकरके उससे कहा क्या तू ईश्वरके
३६ पुत्रपर बिश्वास करता है। उसने उत्तर दिया कि हे प्रभु
३७ वह कौन है कि मैं उसपर बिश्वास करूं। यीशुने उससे
कहा तूने उसे देखा भी है और जो तेरे संग बात करता
३८ है वही है। उसने कहा हे प्रभु मैं बिश्वास करता हूं
३९ और उसको प्रणाम किया। तब यीशुने कहा मैं इस
जगतमें बिचारके लिये आया हूं कि जो नहीं देखते हैं
४० सो देखें और जो देखते हैं सो अंधे हो जावें। फरीशि-
योंमेंसे जो जन उसके संग थे सो यह सुनके उससे बोले
४१ क्या हम भी अंधे हैं। यीशुने उनसे कहा जो तुम अंधे
होते तो तुम्हें पाप न होता परन्तु अब तुम कहते हो
कि हम देखते हैं इसलिये तुम्हारा पाप बना रहा।

## १० दसवां पर्व्व।

१ यीशुका अपनेको गड़ेरिये और द्वारके दृष्टान्तोंसे प्रगट करना। १९ उसके विषयमें यिहूदियोंका बिबाद। २२ उसका अपनी भेड़ोंको प्रतिज्ञा और अपनी सचाईका प्रमाण देना। ३९ यर्दनके उस पार जाना।

१ मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो द्वारसे भेड़शालामें
नहीं पैठता परन्तु दूसरी ओरसे चढ़ जाता है सो चोर
२ औ डाकू है। जो द्वारसे पैठता है सो भेड़ोंका रखवाला

है। उसके लिये द्वारपाल खोल देता है और भेड़ें उसका ३
शब्द सुनती हैं और वह अपनी भेड़ोंको नाम ले ले
बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है। और जब वह ४
अपनी भेड़ें बाहर ले जाता है तब उनके आगे चलता है
और भेड़ें उसके पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे उसका शब्द
जानती हैं। परन्तु वे परायेके पीछे नहीं जायेंगीं पर ५
उससे भागेंगीं क्योंकि वे परायोंका शब्द नहीं जानती हैं।
यीशुने उनसे यह दृष्टान्त कहा परन्तु उन्होंने न बूझा ६
कि यह क्या बातें हैं जो वह हमसे बोलता है। तब ७
यीशुने फिर उनसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं
कि मैं भेड़ोंका द्वार हूं। जितने मेरे आगे आये सो सब ८
चोर औ डाकू हैं परन्तु भेड़ोंने उनकी न सुनी। द्वार मैं ९
हूं. यदि मुझमेंसे कोई प्रवेश करे तो त्राण पावेगा और
भीतर बाहर आया जाया करेगा और चराई पावेगा।
चोर किसी और कामको नहीं केवल चोरी औ घात औ १०
नाश करनेको आता है. मैं आया हूं कि भेड़ें जीवन पावें
और अधिकाईसे पावें। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं. अच्छा ११
गड़ेरिया भेड़ोंके लिये अपना प्राण देता है। परन्तु मजूर १२
जो गड़ेरिया नहीं है और भेड़ें उसके निजकी नहीं हैं
हुंड़ारको आते देखके भेड़ोंको छोड़ देता और भाग जाता
है और हुंड़ार भेड़ें पकड़के उन्हें तितर बितर करता है।
मजूर भागता है क्योंकि वह मजूर है और भेड़ोंकी कुछ १३
चिन्ता नहीं करता है। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं और १४
जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिताको जानता हूं
वैसा मैं अपनी भेड़ोंको जानता हूं और अपनी भेड़ोंसे

१५ जाना जाता हूं। और मैं भेड़ोंके लिये अपना प्राण देता
१६ हूं। मेरी और भेड़ें हैं जो इस भेड़शालाकी नहीं हैं.
मुझे उनको भी लाना होगा और वे मेरा शब्द सुनेंगीं
१७ और एक झुंड और एक रखवाला होगा। पिता इस
कारणसे मुझे प्यार करता है कि मैं अपना प्राण देता हूं
१८ जिस्तें उसे फिर लेऊं। कोई उसको मुझसे नहीं लेता है
परन्तु मैं आपसे उसे देता हूं. उसे देनेका मुझे अधिकार
है और उसे फिर लेनेका मुझे अधिकार है. यह आज्ञा
मैंने अपने पितासे पाई।

१९ तब यिहूदियोंमें इन बातोंके कारण फिर बिभेद
२० हुआ। उनमेंसे बहुतोंने कहा उसको भूत लगा है वह
२१ बौरहा है तुम उसकी क्यों सुनते हो। औरोंने कहा
यह बातें भूतग्रस्तकी नहीं हैं. भूत क्या अंधोंकी आंखें
खोल सकता है।

२२ यिरूशलीममें स्थापन पर्व्व हुआ और जाड़ेका समय
२३ था। और यीशु मन्दिरमें सुलेमानके ओसारेमें फिरता
२४ था। तब यिहूदियोंने उसे घेरके उससे कहा तू हमारे
मनको कबलों दुबधामें रखेगा. जो तू खीष्ट है तो हमसे
२५ खोलके कह। यीशुने उन्हें उत्तर दिया कि मैंने तुमसे
कहा और तुम विश्वास नहीं करते हो. जो काम मैं
अपने पिताके नामसे करता हूं वेही मेरे विषयमें साक्षी
२६ देते हैं। परन्तु तुम बिश्वास नहीं करते हो क्योंकि तुम
२७ मेरी भेड़ोंमेंसे नहीं हो जैसा मैंने तुमसे कहा। मेरी
भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और
२८ वे मेरे पीछे हो लेती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जी-

वन देता हूं और वे कभी नाश न होंगीं और कोई उन्हें
मेरे हाथसे छीन न लेगा। मेरा पिता जिसने उन्हें मुझको २९
दिया है सभोंसे बड़ा है और कोई मेरे पिताके हाथसे
छीन नहीं सकता है। मैं और पिता एक हैं। तब यिहू- ३० ३१
दियोंने फिर उसे पत्थरवाह करनेको पत्थर उठाये।
यीशुने उनको उत्तर दिया कि मैंने अपने पिताकी ओरसे ३२
बहुतसे भले काम तुम्हें दिखाये हैं उनमेंसे किस कामके
लिये मुझे पत्थरवाह करते हो। यिहूदियोंने उसको उत्तर ३३
दिया कि भले कामके लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं
करते हैं परन्तु ईश्वरकी निन्दाके लिये और इसलिये कि
तू मनुष्य होके अपनेको ईश्वर बनाता है। यीशुने उन्हें ३४
उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्थामें नहीं लिखा है कि
मैंने कहा तुम ईश्वरगण हो। यदि उसने उनको ईश्वर- ३५
गण कहा जिनके पास ईश्वरका बचन पहुंचा और धर्म्म-
पुस्तककी बात लोप नहीं हो सकती है. तो जिसे पिताने ३६
पवित्र करके जगतमें भेजा है उससे क्या तुम कहते हो
कि तू ईश्वरकी निन्दा करता है इसलिये कि मैंने कहा
मैं ईश्वरका पुत्र हूं। जो मैं अपने पिताके कार्य्य नहीं ३७
करता हूं तो मेरी प्रतीति मत करो। परन्तु जो मैं करता ३८
हूं तो यदि मेरी प्रतीति न करो तौभी उन कार्य्योंकी
प्रतीति करो इसलिये कि तुम जानो और बिश्वास करो
कि पिता मुझमें है और मैं उसमें हूं।

तब उन्होंने फिर उसे पकड़ने चाहा परन्तु वह उनके ३९
हाथसे निकल गया. और फिर यर्दनके उस पार उस ४०
स्थानपर गया जहां योहन पहिले डूब देता था और वहां

४१ रहा। और बहुत लोग उस पास आये और बोले योह-
नने तो कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किया परन्तु जो कुछ
४२ योहनने इसके विषयमें कहा सो सब सच था। और वहां
बहुतोंने उसपर बिश्वास किया।

## ११ एग्यारहवां पर्व्व।

१ इलियाजरका रोगी होना। ६ यीशुका अपने शिष्योंके संग बात करना और इलियाजरके पास जाना। १८ इलियाजरकी बहिनोंके संग यीशुकी बातचीत। ४१ प्रार्थना करनेके पीछे इलियाजरको जिलाना। ४५ इस आश्चर्य्य कर्म्मके विषयमें यिहूदियोंका बिचार और कियाफाकी भविष्यद्वाणी।

१ इलियाजर नाम बैथनियाका अर्थात मरियम और
उसकी बहिन मर्थाके गांवका एक मनुष्य रोगी था।
२ मरियम वही थी जिसने प्रभुपर सुगन्ध तेल लगाया और
उसके चरणोंको अपने बालोंसे पोंछा और उसका भाई
३ इलियाजर था जो रोगी था। सो दोनों बहिनोंने यीशुको
कहला भेजा कि हे प्रभु देखिये जिसे आप प्यार करते हैं
४ सो रोगी है। यह सुनके यीशुने कहा यह रोग मृत्युके
लिये नहीं परन्तु ईश्वरकी महिमाके लिये है कि ईश्वरके
५ पुत्रकी महिमा उसके द्वारासे प्रगट किई जाय। यीशु
मर्थाको और उसकी बहिनको और इलियाजरको प्यार
करता था।

६ जब उसने सुना कि इलियाजर रोगी है तब जिस स्था-
७ नमें वह था उस स्थानमें दो दिन और रहा। तब इसके
पीछे उसने शिष्योंसे कहा कि आओ हम फिर यिहूदि-
८ याको चलें। शिष्योंने उससे कहा हे गुरु यिहूदी लोग

अभी आपको पत्थरवाह किया चाहते थे और आप क्या
फिर वहां जाते हैं। यीशुने उत्तर दिया क्या दिनकी ९
बारह घड़ी नहीं हैं. यदि कोई दिनको चले तो ठोकर
नहीं खाता है क्योंकि वह इस जगतका उजियाला देखता
है। परन्तु यदि कोई रातको चले तो ठोकर खाता है १०
क्योंकि उजियाला उसमें नहीं है। उसने यह बातें कहीं ११
और इसके पीछे उनसे बोला हमारा मित्र इलियाजर
सो गया है परन्तु मैं उसे जगानेको जाता हूं। उसके १२
शिष्योंने कहा हे प्रभु जो वह सो गया है तो चंगा हो
जायगा। यीशुने उसकी मृत्युके विषयमें कहा परन्तु १३
उन्होंने समझा कि उसने नींदमें सो जानेके विषयमें
कहा। तब यीशुने उनसे खोलके कहा इलियाजर मर १४
गया है। और तुम्हारे लिये मैं आनन्द करता हूं कि मैं १५
वहां नहीं था जिस्तें तुम बिश्वास करो. परन्तु आओ
हम उस पास चलें। तब थोमाने जो दिदुम कहावता है १६
अपने संगी शिष्योंसे कहा कि आओ हम भी उसके संग
मरनेको जायें। सो जब यीशु आया तब उसने यही पाया १७
कि इलियाजरको कबरमें चार दिन हो चुके।

बैथनिया यिरूशलीमके निकट अर्थात कोश एक दूर १८
था। और बहुतसे यिहूदी लोग मर्था और मरियमके १९
पास आये थे कि उनके भाईके विषयमें उनको शांति देवें।
सो मर्थाने जब सुना कि यीशु आता है तब जाके उससे २०
भेंट किई परन्तु मरियम घरमें बैठी रही। मर्थाने यीशु- २१
से कहा हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं
मरता। परन्तु मैं जानती हूं कि अब भी जो कुछ आप २२

२३ ईश्वरसे मांगें ईश्वर आपको देगा। यीशुने उससे कहा
२४ तेरा भाई जी उठेगा। मर्थाने उससे कहा मैं जानती हूं
२५ कि पिछले दिन पुनरुत्थानमें वह जी उठेगा। यीशुने
उससे कहा मैंही पुनरुत्थान और जीवन हूं, जो मुझपर
२६ बिश्वास करे सो यदि मर जाय तौभी जीयेगा। और जो
कोई जीवता हो और मुझपर बिश्वास करे सो कभी नहीं
२७ मरेगा, क्या तू इस बातका बिश्वास करती है। वह उस-
से बोली हां प्रभु मैंने बिश्वास किया है कि ईश्वरका पुत्र
२८ खीष्ट जो जगतमें आनेवाला था सो आपही हैं। यह
कहके वह चली गई और अपनी बहिन मरियमको चुप-
२९ केसे बुलाके कहा गुरु आये हैं और तुझे बुलाते हैं। मरि-
यम जब उसने सुना तब शीघ्र उठके यीशु पास आई।
३० यीशु अबलों गांवमें नहीं आया था परन्तु उसी स्थानमें
३१ था जहां मर्थाने उससे भेंट किई। जो यिहूदी लोग
मरियमके संग घरमें थे और उसको शांति देते थे सो
जब उसे देखा कि वह शीघ्र उठके बाहर गई तब यह
कहके उसके पीछे हो लिये कि वह कबरपर जाती है कि
३२ वहां रोवे। जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था तब
उसे देखके उसके पांवों पड़ी और उससे बोली हे प्रभु
३३ जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता। जब
यीशुने उसे रोते हुए और जो यिहूदी लोग उसके संग
आये उन्हें भी रोते हुए देखा तब आत्मामें बिकल हुआ
३४ और घबराया, और कहा तुमने उसे कहां रखा है,
३५ वे उससे बोले हे प्रभु आके देखिये। यीशु रोया।
३६ तब यिहूदियोंने कहा देखो वह उसे कैसा प्यार करता

था। परन्तु उनमेंसे कितनोंने कहा क्या यह जिसने अंधे- ३७
को आंखें खोलीं यह भी न कर सकता कि यह मनुष्य
नहीं मरता। यीशु अपनेमें फिर बिकल होके कबरपर ३८
आया. वह गुफा थी और एक पत्थर उसपर धरा था।
यीशुने कहा पत्थरको सरकाओ. उस मरे हुएकी बहिन ३९
मर्था उससे बोली हे प्रभु वह तो अब बसाता है क्योंकि
उसको चार दिन हुए हैं। यीशुने उससे कहा क्या मैंने ४०
तुझसे न कहा कि जो तू बिश्वास करे तो ईश्वरकी महि-
माको देखेगी।

तब जहां वह मृतक पड़ा था वहांसे उन्होंने पत्थरको ४१
सरकाया और यीशुने ऊपर दृष्टि कर कहा हे पिता मैं
तेरा धन्य मानता हूं कि तूने मेरी सुनी है। और मैं ४२
जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है परन्तु जो बहुत
लोग आसपास खड़े हैं उनके कारण मैंने यह कहा कि
वे बिश्वास करें कि तूने मुझे भेजा। यह बातें कहके उसने ४३
बड़े शब्दसे पुकारा कि हे इलियाजर बाहर आ। तब ४४
वह मृतक चद्दरसे हाथ पांव बांधे हुए बाहर आया और
उसका मुंह अंगोछेमें लपेटा हुआ था. यीशुने उनसे
कहा उसे खोलो और जाने दो।

तब बहुतसे यिहूदी लोगोंने जो मरियमके पास आये ४५
थे यह जो यीशुने किया था देखके उसपर बिश्वास किया।
परन्तु उनमेंसे कितनोंने फरीशियोंके पास जाके जो ४६
यीशुने किया था सो उन्होंसे कह दिया। इसपर प्रधान ४७
याजकों और फरीशियोंने सभा एकट्ठी करके कहा हम
क्या करते हैं. यह मनुष्य तो बहुत आश्चर्य्य कर्म्म करता

४८ है। जो हम उसे यूं छोड़ देवें तो सब लोग उसपर बिश्वास
करेंगे और रोमी लोग आके हमारे स्थान और लोगको
४९ भी उठा देंगे। तब उनमेंसे कियाफा नाम एक जन जो
उस बरसका महायाजक था उनसे बोला तुम लोग कुछ
५० नहीं जानते हो. और यह बिचार भी नहीं करते हो
कि हमारे लिये अच्छा है कि लोगोंके लिये एक मनुष्य
५१ मरे और यह सम्पूर्ण लोग नाश न होवें। यह बात वह
आपसे नहीं बोला परन्तु उस बरसका महायाजक होके
भविष्यद्वाक्यसे कहा कि यीशु उन लोगोंके लिये मरनेपर
५२ था. और केवल उन लोगोंके लिये नहीं परन्तु इसलिये
भी कि ईश्वरके सन्तानोंको जो तितर बितर हुए हैं एकमें
५३ एकट्ठे करे। सो उसी दिनसे उन्होंने उसे घात करनेको
५४ आपसमें बिचार किया। इसलिये यीशु प्रगट होके यिहू-
दियोंके बीचमें और नहीं फिरा परन्तु वहांसे जंगलके
निकटके देशमें इफ्राईम नाम एक नगरको गया और
५५ अपने शिष्योंके संग वहां रहा। यिहूदियोंका निस्तार
पर्ब्ब निकट था और बहुत लोग अपने तईं शुद्ध करनेको
५६ निस्तार पर्ब्बके आगे देशमेंसे यिरूशलीमको गये। उन्होंने
यीशुको ढूंढा और मन्दिरमें खड़े हुए आपसमें कहा तुम
५७ क्या समझते हो क्या वह पर्ब्बमें नहीं आवेगा। और
प्रधान याजकों और फरीशियोंने भी आज्ञा दिई थी कि
यदि कोई जाने कि यीशु कहां है तो बतावे इसलिये कि
वे उसे पकड़ें।

---

## १२ बारहवां पर्ब्ब।

१ मरियमका यीशुके चरणोंपर सुगन्ध तेल लगाना। ६ बहुत लोगोंका इलियाजरको देखनेके लिये आना। १२ यीशुका यिरूशलीममें जाना। २० अन्यदेशियोंका उस पास आना और उसका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना। ३७ थोड़े लोगोंका बिश्वास करना। ४४ यीशुका उपदेश।

निस्तार पर्ब्बके छः दिन आगे यीशु बैथनियामें आया १
जहां इलियाजर था जो मर गया था जिसे उसने मृत-
कोंमेंसे उठाया था। वहां उन्होंने उसके लिये बियारी २
बनाई और मर्थाने सेवा किई और इलियाजर यीशुके संग
बैठनेहारोंमेंसे एक था। तब मरियमने आध सेर जटा- ३
मांसीका बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके यीशुके चरणोंपर लगा-
या और उसके चरणोंको अपने बालोंसे पोंछा और
तेलके सुगन्धसे घर भर गया। इसपर उसके शिष्योंमेंसे ४
शिमोनका पुत्र यिहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य जो
उसे पकड़वानेपर था बोला. यह सुगन्ध तेल क्यों नहीं ५
तीन सौ सूकियोंपर बेचा गया और कंगालोंको दिया
गया। वह यह बात इसलिये नहीं बोला कि वह कंगा- ६
लोंकी चिन्ता करता था परन्तु इसलिये कि वह चोर था
और थैली रखता था और जो उसमें डाला जाता सो
उठा लेता था। यीशुने कहा स्त्रीको रहने दे. उसने ७
मेरे गाड़े जानेके दिनके लिये यह रखा है। कंगाल ८
लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग
सदा नहीं रहूंगा।

यिहूदियोंमेंसे बहुत लोगोंने जाना कि यीशु वहां है ९
और वे केवल यीशुके कारण नहीं परन्तु इलियाजरको

देखनेके लिये भी आये जिसे उसने मृतकोंमेंसे उठाया
१० था। तब प्रधान याजकोंने इलियाजरको भी मार डाल-
११ नेका बिचार किया। क्योंकि बहुत यिहूदियोंने उसके
कारण जाके यीशुपर बिश्वास किया।

१२ दूसरे दिन बहुत लोग जो पर्ब्बमें आये थे जब उन्होंने
१३ सुना कि यीशु यिरूशलीममें आता है, तब खजूरोंके
पत्ते लेके उससे मिलनेको निकले और पुकारने लगे कि
जय जय धन्य इस्रायेलका राजा जो परमेश्वरके नामसे
१४ आता है। यीशु एक गधीके बच्चेको पाके उसपर बैठा,
१५ जैसा लिखा है कि हे सियोनकी पुत्री मत डर देख तेरा
१६ राजा गधीके बच्चेपर बैठा हुआ आता है। यह बातें
उसके शिष्योंने पहिले नहीं समझीं परन्तु जब यीशुकी
महिमा प्रगट हुई तब उन्होंने स्मरण किया कि यह बातें
उसके विषयमें लिखी हुई थीं और कि उन्होंने उससे
१७ यह किया था। जो लोग उसके संग थे उन्होंने साक्षी
दिई कि उसने इलियाजरको कबरमेंसे बुलाया और
१८ उसको मृतकोंमेंसे उठाया। लोग इसी कारण उससे आ
मिले भी कि उन्होंने सुना कि उसने यह आश्चर्य्य कर्म्म
१९ किया था। तब फरीशियोंने आपसमें कहा क्या तुम देख-
ते हो कि तुमसे कुछ बन नहीं पड़ता, देखो संसार
उसके पीछे गया है।

२० जो लोग पर्ब्बमें भजन करनेको आये उन्होंमेंसे कितने
२१ यूनानी लोग थे। उन्होंने गालीलके बैतसैदा नगरके
रहनेहारे फिलिपके पास आके उससे बिन्ती किई कि हे
२२ प्रभु हम यीशुको देखने चाहते हैं। फिलिपने आके

अन्द्रियसे कहा और फिर अन्द्रिय और फिलिपने यीशुसे
कहा। यीशुने उनको उत्तर दिया कि मनुष्यके पुचको २३
महिमाके प्रगट होनेकी घड़ी आ पहुंची है। मैं तुमसे २४
सच सच कहता हूं यदि गेहूंका दाना भूमिमें पड़के मर
न जाय तो वह अकेला रहता है परन्तु जो मर जाय तो
बहुत फल फलता है। जो अपने प्राणको प्यार करे सो २५
उसे खोवेगा और जो इस जगतमें अपने प्राणको अप्रिय
जाने सो अनन्त जीवनलों उसकी रक्षा करेगा। यदि २६
कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे हो लेवे और जहां मैं
रहूंगा तहां मेरा सेवक भी रहेगा. यदि कोई मेरी सेवा
करे तो पिता उसका आदर करेगा। अब मेरा मन २७
व्याकुल हुआ है और मैं क्या कहूं. हे पिता मुझे इस
घड़ीसे बचा. परन्तु मैं इसी लिये इस घड़ीलों आया हूं।
हे पिता अपने नामकी महिमा प्रगट कर. तब यह २८
आकाशबाणी हुई कि मैंने उसकी महिमा प्रगट किई है
और फिर प्रगट करूंगा। तब जो लोग खड़े हुए सुनते २९
थे उन्होंने कहा कि मेघ गर्जा. औरोंने कहा कोई स्वर्ग
दूत उससे बोला। इसपर यीशुने कहा यह शब्द मेरे ३०
लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये हुआ। अब इस जगतका ३१
बिचार होता है. अब इस जगतका अध्यक्ष बाहर
निकाला जायगा। और मैं यदि पृथिवीपरसे ऊंचा किया ३२
जाऊं तो सभोंको अपनी ओर खींचूंगा। यह कहनेमें ३३
उसने पता दिया कि वह कैसी मृत्युसे मरनेपर था।
लोगोंनें उसको उत्तर दिया कि हमने व्यवस्थामेंसे सुना ३४
है कि ख्रीष्ट सदालों रहेगा. तू क्योंकर कहता है कि

मनुष्यके पुत्रको ऊंचा किया जाना होगा. यह मनुष्यका
३५ पुत्र कौन है। यीशुने उनसे कहा उजियाला अब थोड़ी
बेर तुम्हारे साथ है. जबलों उजियाला मिलता है
तबलों चलो न हो कि अंधकार तुम्हें घेरे. जो अंधकारमें
३६ चलता है सो नहीं जानता मैं कहां जाता हूं। जबलों
उजियाला मिलता है उजियालेपर बिश्वास करो कि
तुम ज्योतिके सन्तान होओ. यह बातें कहके यीशु चला
गया और उनसे छिपा रहा।

३७ परन्तु यद्यपि उसने उनके साम्ने इतने आश्चर्य्य कर्म्म
३८ किये थे तौभी उन्होंने उसपर बिश्वास न किया. कि यिशै-
याह भविष्यद्वक्ताका बचन पूरा होवे जो उसने कहा कि
हे परमेश्वर किसने हमारे समाचारका बिश्वास किया है
३९ और परमेश्वरकी भुजा किसपर प्रगट किई गई है। इस
कारण वे बिश्वास न कर सके क्योंकि यिशैयाहने फिर कहा.
४० उसने उनके नेत्र अंधे और उनका मन कठोर किया है
ऐसा न हो कि वे नेत्रोंसे देखें और मनसे बूझें और फिर
४१ जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। जब यिशैयाहने उसका ऐश्वर्य्य
देखा और उसके विषयमें बोला तब उसने यह बातें
४२ कहीं। पर तौभी प्रधानोंमेंसे भी बहुतोंने उसपर बिश्वास
किया परन्तु फरीशियोंके कारण नहीं मान लिया न हो
४३ कि वे सभामेंसे निकाले जायें। क्योंकि मनुष्योंकी प्रशंसा
उनको ईश्वरकी प्रशंसासे अधिक प्रिय लगती थी।

४४ यीशुने पुकारके कहा जो मुझपर बिश्वास करता है
सो मुझपर नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेपर बिश्वास करता
४५ है। और जो मुझे देखता है सो मेरे भेजनेहारेको देखता

है। मैं जगतमें ज्योतिसा आया हूं कि जो कोई मुझपर ४६
बिश्वास करे सो अंधकारमें न रहे। और यदि कोई मेरी ४७
बातें सुनके बिश्वास न करे तो मैं उसे दंडके योग्य नहीं
ठहराता हूं क्योंकि मैं जगतको दंडके योग्य ठहरानेको नहीं
परन्तु जगतका त्राण करनेको आया हूं। जो मुझे तुच्छ ४८
जाने और मेरी बातें ग्रहण न करे एक उसको दंडके
योग्य ठहरानेहारा है. जो बचन मैंने कहा है वही पिछले
दिनमें उसे दंडके योग्य ठहरावेगा। क्योंकि मैंने अपनी ४९
ओरसे बात नहीं किई है परन्तु पिताने जिसने मुझे भेजा
आपही मुझे आज्ञा दिई है कि मैं क्या कहूं और क्या
बोलूं। और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन ५०
है इसलिये मैं जो बोलता हूं सो जैसा पिताने मुझसे कहा
है वैसाही बोलता हूं।

## १३ तेरहवां पर्व्व।

१ यीशुका अपने शिष्योंके पांवोंको धोना। १२ पांव धोनेका तात्पर्य्य। २१ यिहूदाके विषयमें यीशुका भविष्यद्वाक्य कहना। ३१ शिष्योंको उपदेश देना। ३६ पितरके उससे मुकर जानेकी भविष्यद्वाणी।

निस्तार पर्व्वके आगे यीशुने जाना कि मेरी घड़ी आ १
पहुंची है कि मैं इस जगतमेंसे पिताके पास जाऊं और
उसने अपने निज लोगोंको जो जगतमें थे प्यार करके
उन्हें अन्तलों प्यार किया। और बियारीके समयमें जब २
शैतान शिमोनके पुत्र यिहूदा इस्करियोतीके मनमें उसे
पकड़वानेका मत डाल चुका था. तब यीशु यह जानके ३
कि पिताने सब कुछ मेरे हाथोंमें दिया है और कि मैं
ईश्वरकी ओरसे निकल आया और ईश्वरके पास जाता

४ हूं। बियारीसे उठा और अपने कपड़े रख दिये और
५ अंगोछा लेके अपनी कमर बांधी। तब पात्रमें जल डालके
वह शिष्योंके पांव धोने लगा और जिस अंगोछेसे उसकी
६ कमर बंधी थी उससे पोंछने लगा। तब वह शिमोन
पितरके पास आया, उसने उससे कहा हे प्रभु क्या आप
७ मेरे पांव धोते हैं। यीशुने उसको उत्तर दिया कि जो मैं
करता हूं सो तू अब नहीं जानता है परन्तु इसके पीछे
८ जानेगा। पितरने उससे कहा आप मेरे पांव कभी न
धोइयेगा, यीशुने उसको उत्तर दिया कि जो मैं तुझे न
९ धोऊं तो मेरे संग तेरा कुछ अंश नहीं है। शिमोन पित-
रने उससे कहा हे प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परन्तु मेरे
१० हाथ और सिर भी धोइये। यीशुने उससे कहा जो न-
हाया है उसको पांव धोने बिना और कुछ आवश्यक
नहीं है परन्तु वह सम्पूर्ण शुद्ध है और तुम लोग शुद्ध हो
११ परन्तु सब नहीं। वह तो अपने पकड़वानेहारेको जानता
था इसलिये उसने कहा तुम सब शुद्ध नहीं हो।
१२ जब उसने उनके पांव धोके अपने कपड़े ले लिये थे
तब फिर बैठके उन्होंसे कहा क्या तुम जानते हो कि मैंने
१३ तुमसे क्या किया है। तुम मुझे हे गुरु और हे प्रभु पुका-
रते हो और तुम अच्छा कहते हो क्योंकि मैं वही हूं।
१४ सो यदि मैंने प्रभु और गुरु होके तुम्हारे पांव धोये हैं
१५ तो तुम्हें भी एक दूसरेके पांव धोना उचित है। क्योंकि
मैंने तुमको नमूना दिया है कि जैसा मैंने तुमसे किया
१६ है तुम भी वैसा करो। मैं तुमसे सच सच कहता हूं
दास अपने स्वामीसे बड़ा नहीं और न प्रेरित अपने

भेजनेहारेसे बड़ा है। जो तुम यह बातें जानते हो यदि १७
उनपर चलो तो धन्य हो। मैं तुम सभोंके विषयमें नहीं १८
कहता हूं, जिन्हें मैंने चुना है उन्हें मैं जानता हूं, परन्तु
यह इसलिये है कि धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा होवे कि
जो मेरे संग रोटी खाता है उसने मेरे बिरुद्ध अपनी
लात उठाई है। मैं अबसे इसके होनेके आगे तुमसे १९
कहता हूं कि जब वह हो जाय तब तुम विश्वास करो कि
मैं वही हूं। मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जिस कि- २०
सीको मैं भेजूं उसको जो ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण
करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजने-
हारेको ग्रहण करता है।

यह बातें कहके यीशु आत्मामें व्याकुल हुआ और २१
साक्षी देके बोला मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि तुम-
मेंसे एक मुझे पकड़वायगा। इसपर शिष्य लोग यह सन्देह २२
करते हुए कि वह किसके विषयमें बोलता है एक दूस-
रेकी ओर ताकने लगे। परन्तु यीशुके शिष्योंमेंसे एक २३
जिसे यीशु प्यार करता था उसकी गोदमें बैठा हुआ था।
सो शिमोन पितरने उसको सैन किया कि पूछिये कौन २४
है जिसके विषयमें आप बोलते हैं। तब उसने यीशुकी २५
छातीपर उठंगके उससे कहा हे प्रभु कौन है। यीशुने २६
उत्तर दिया वही है जिसको मैं यह रोटीका टुकड़ा डुबोके
देऊंगा, और उसने टुकड़ा डुबोके शिमोनके पुत्र यिहूदा
इस्करियोतीको दिया। उसी समयमें टुकड़ा लेनेके पीछे २७
शैतान उसमें पैठ गया, तब यीशुने उससे कहा जो तू करता
है सो बहुत शीघ्र कर। परन्तु बैठनेहारोंमेंसे किसीने २८

न जाना कि उसने किस कारण यह बात उससे कही ।
२९ क्योंकि यिहूदा थैली जो रखता था इसलिये कितनोंने
समझा कि यीशुने उससे कहा पर्ब्बके लिये जो हमें आव-
३० श्यक है सो मोल ले अथवा कंगालोंको कुछ दे। सो टुकड़ा
लेनेके पीछे वह तुरन्त बाहर गया, उस समय रात थी।
३१ जब वह बाहर गया था तब यीशुने कहा अब मनुष्यके
पुत्रकी महिमा प्रगट होती है और ईश्वरकी महिमा
३२ उसके द्वारा प्रगट होती है। जो ईश्वरकी महिमा उसके
द्वारा प्रगट होती है तो ईश्वर भी अपनी ओरसे उसकी
३३ महिमा प्रगट करेगा और तुरन्त उसे प्रगट करेगा। हे
बालको मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ हूं, तुम मुझे
ढूंढ़ोगे और जैसा मैंने यिहूदियोंसे कहा कि जहां मैं जाता
हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो तैसा मैं अब तुमसे भी
३४ कहता हूं। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूस-
रेको प्यार करो, जैसा मैंने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम
३५ भी एक दूसरेको प्यार करो। जो तुम आपसमें प्यार करो
तो इसीसे सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।
३६ शिमोन पितरने उससे कहा हे प्रभु आप कहां जाते
हैं, यीशुने उसको उत्तर दिया कि जहां मैं जाता हूं तहां
तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता है परन्तु इसके उपरान्त
३७ तू मेरे पीछे आवेगा। पितरने उससे कहा हे प्रभु मैं क्यों
नहीं अब आपके पीछे आ सकता हूं, मैं आपके लिये अप-
३८ ना प्राण देऊंगा। यीशुने उसको उत्तर दिया क्या तू मेरे
लिये अपना प्राण देगा, मैं तुझसे सच सच कहता हूं कि
जबलों तू तीन बार मुझसे न मुकरे तबलों मुर्ग न बोलेगा।

## १४ चौदहवां पर्व्व।

१ यीशुका अपने शिष्योंको शांति देना। ५ थोमाको सत्य मार्गके विषयमें उत्तर देना। ८ फिलिपको ईश्वर पिताको देखनेके विषयमें उत्तर देना। १५ शांतिदाताको भेजने और शिष्योंको ज्ञान और शांति देनेकी प्रतिज्ञा।

तुम्हारा मन व्याकुल न होवे. ईश्वरपर बिश्वास करो १
और मुझपर बिश्वास करो। मेरे पिताके घरमें बहुतसे रह- २
नेके स्थान हैं नहीं तो मैं तुमसे कहता. मैं तुम्हारे लिये
स्थान तैयार करने जाता हूं। और जो मैं जाके तुम्हारे लिये ३
स्थान तैयार करूं तो फिर आके तुम्हें अपने यहां ले जा-
ऊंगा कि जहां मैं रहूं तहां तुम भी रहो। और मैं कहां ४
जाता हूं सो तुम जानते हो और मार्गको जानते हो।

थोमाने उससे कहा हे प्रभु आप कहां जाते हैं सो हम ५
नहीं जानते हैं और मार्गको हम क्योंकर जान सकें।
यीशुने उससे कहा मैंही मार्ग औ सत्य औ जीवन हूं. ६
बिना मेरे द्वारासे कोई पिता पास नहीं पहुंचता है। जो ७
तुम मुझे जानते तो मेरे पिताको भी जानते और अबसे
तुम उसको जानते हो और उसको देखा है।

फिलिपने उससे कहा हे प्रभु पिताको हमें दिखाइये ८
तो हमारे लिये यही बहुत है। यीशुने उससे कहा हे ९
फिलिप मैं इतने दिनसे तुम्हारे संग हूं और क्या तूने
मुझे नहीं जाना है. जिसने मुझे देखा है उसने पिताको
देखा है और तू क्योंकर कहता है कि पिताको हमें दि-
खाइये। क्या तू प्रतीति नहीं करता है कि मैं पितामें हूं १०
और पिता मुझमें है. जो बातें मैं तुमसे कहता हूं सो

अपनी ओरसे नहीं कहता हूं परन्तु पिता जो मुझमें
११ रहता है वही इन कामोंको करता है। मेरीही प्रतीति
करो कि मैं पितामें हूं और पिता मुझमें है नहीं तो
१२ कामोंहीके कारण मेरी प्रतीति करो। मैं तुमसे सच सच
कहता हूं कि जो मुझपर बिश्वास करे जो काम मैं करता
हूं उन्हें वह भी करेगा और इनसे बड़े काम करेगा
१३ क्योंकि मैं अपने पिताके पास जाता हूं। और जो कुछ
तुम मेरे नामसे मांगोगे सोई मैं करूंगा इसलिये कि
१४ पुत्रके द्वारा पिताकी महिमा प्रगट होय। जो तुम मेरे
नामसे कुछ मांगो तो मैं उसे करूंगा।
१५ जो तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाओंको
१६ पालन करो। और मैं पितासे मांगूंगा और वह तुम्हें
दूसरा शांतिदाता देगा कि वह सदा तुम्हारे संग रहे.
१७ अर्थात सत्यताका आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर
सकता है क्योंकि वह उसे नहीं देखता है और न उसे
जानता है. परन्तु तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे
१८ संग रहता है और तुम्होंमें होगा। मैं तुम्हें अनाथ नहीं
१९ छोड़ूंगा मैं तुम्हारे पास आऊंगा। अब थोड़ी बेरमें
संसार मुझे फिर नहीं देखेगा परन्तु तुम मुझे देखोगे
२० क्योंकि मैं जीता हूं तुम भी जीओगे। उस दिन तुम
जानोगे कि मैं अपने पितामें हूं और तुम मुझमें हो
२१ और मैं तुममें हूं। जो मेरी आज्ञाओंको पाके उन्हें पालन
करता है वही है जो मुझे प्यार करता है और जो मुझे
प्यार करता है सो मेरे पिताका प्यारा होगा और मैं
उसे प्यार करूंगा और अपने तईं उसपर प्रगट करूंगा।

तब इस्करियोती नहीं परन्तु दूसरे यिहूदाने उससे २२
कहा हे प्रभु आप किसलिये अपने तईं हमोंपर प्रगट
करेंगे और संसारपर नहीं। यीशुने उसको उत्तर दिया २३
यदि कोई मुझे प्यार करे तो मेरी बातको पालन करेगा
और मेरा पिता उसे प्यार करेगा और हम उस पास
आवेंगे और उसके संग बास करेंगे। जो मुझे प्यार नहीं २४
करता है सो मेरी बातें पालन नहीं करता है और जो
बात तुम सुनते हो सो मेरी नहीं परन्तु पिताकी है
जिसने मुझे भेजा। यह बातें मैंने तुम्हारे संग रहते हुए २५
तुमसे कही हैं। परन्तु शांतिदाता अर्थात पवित्र आत्मा २६
जिसे पिता मेरे नामसे भेजेगा वह तुम्हें सब कुछ सिखा-
वेगा और सब कुछ जो मैंने तुमसे कहा है तुम्हें स्मरण
करावेगा। मैं तुम्हें शांति दे जाता हूं मैं अपनी शांति तुम्हें २७
देता हूं. जैसा जगत देता है तैसा मैं तुम्हें नहीं देता हूं.
तुम्हारा मन व्याकुल न होय और डर न जाय। तुमने २८
सुना कि मैंने तुमसे कहा मैं जाता हूं और तुम्हारे पास
फिर आऊंगा. जो तुम मुझे प्यार करते तो मैंने जो कहा
कि मैं पिता पास जाता हूं इससे तुम आनन्द करते
क्योंकि मेरा पिता मुझसे बड़ा है। और मैंने अब इसके २९
होनेके आगे तुमसे कहा है कि जब वह हो जाय तब तुम
बिश्वास करो। मैं तुम्हारे संग और बहुत बातें न करूंगा ३०
क्योंकि इस जगतका अध्यक्ष आता है और मुझमें उसका
कुछ नहीं है। परन्तु यह इसलिये है कि जगत जाने कि ३१
मैं पिताको प्यार करता हूं और जैसा पिताने मुझे आज्ञा
दिई तैसाही करता हूं. उठो हम यहांसे चलें।

## १५ पन्द्रहवां पर्व्व ।

१ दाख लता और उसकी डालियोंका दृष्टान्त । ९ शिष्योंसे यीशुका बड़ा
प्रेम । १७ शिष्योंके सताये जानेकी भविष्यद्वाणी । २२ जगतके लोगोंके
दोषका प्रमाण ।

१ मैं सच्ची दाख लता हूं और मेरा पिता किसान है ।
२ मुझमें जो जो डाल नहीं फलती है वह उसे दूर करता
है और जो जो डाल फलती है वह उसे शुद्ध करता है
३ कि वह अधिक फल फले । तुम तो उस बचनके गुणसे
४ जो मैंने तुमसे कहा है शुद्ध हो चुके । तुम मुझमें रहो
और मैं तुममें. जैसे डाल जो वह दाख लतामें न रहे
तो आपसे फल नहीं फल सकती है तैसे तुम भी जो
५ मुझमें न रहो तो नहीं फल सकते हो । मैं दाख लता
हूं तुम लोग डालें हो. जो मुझमें रहता है और मैं
उसमें सो बहुत फल फलता है क्योंकि मुझसे अलग तुम
६ कुछ नहीं कर सकते हो । यदि कोई मुझमें न रहे तो
वह ऐसा फेंका जाता जैसे डाल फेंकी जाती और सूख
जाती और लोग ऐसी डालें बटोरके आगमें डालते हैं
७ और वे जल जाती हैं । जो तुम मुझमें रहो और मेरी
बातें तुममें रहें तो जो कुछ तुम्हारी इच्छा होय सो
८ मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जायगा । तुम्हारे बहुत
फल फलनेमें मेरे पिताकी महिमा प्रगट होती है और
तुम मेरे शिष्य होओगे ।

९ जैसा पिताने मुझसे प्रेम किया है तैसा मैंने तुमसे प्रेम
१० किया है. मेरे प्रेममें रहो । जैसे मैंने अपने पिताकी
आज्ञाओंको पालन किया है और उसके प्रेममें रहता

हूं तैसे तुम जो मेरी आज्ञाओंको पालन करो तो मेरे
प्रेममें रहोगे। मैंने यह बातें तुमसे इसलिये कही हैं कि ११
मेरा आनन्द तुम्होंमें रहे और तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण
हो जाय। यह मेरी आज्ञा है कि जैसा मैंने तुम्हें प्यार १२
किया है तैसा तुम एक दूसरेको प्यार करो। इससे बड़ा १३
प्रेम किसीका नहीं है कि कोई अपने मित्रोंके लिये अप-
ना प्राण देवे। तुम यदि सब काम करो जो मैं तुम्हें आज्ञा १४
देता हूं तो मेरे मित्र हो। मैं आगेको तुम्हें दास नहीं १५
कहता हूं क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी
क्या करता है परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैंने
जो अपने पितासे सुना है सो सब तुम्हें जनाया है। तुमने १६
मुझे नहीं चुना परन्तु मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें ठहराया
कि तुम जाके फल फलो और तुम्हारा फल रहे और कि
तुम मेरे नामसे जो कुछ पितासे मांगो वह तुमको देवे।
मैं तुम्हें इन बातोंकी आज्ञा देता हूं इसलिये कि तुम १७
एक दूसरेको प्यार करो। यदि संसार तुमसे बैर करता १८
है तुम जानते हो कि उन्होंने तुमसे पहिले मुझसे बैर
किया। जो तुम संसारके होते तो संसार अपनोंको प्यार १९
करता परन्तु तुम संसारके नहीं हो पर मैंने तुम्हें संसार-
मेंसे चुना है इसीलिये संसार तुमसे बैर करता है। जो २०
बचन मैंने तुमसे कहा कि दास अपने स्वामीसे बड़ा नहीं
है सो स्मरण करो. जो उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें
भी सतावेंगे जो मेरी बातको पालन किया है तो तुम्हारी
भी पालन करेंगे। परन्तु वे मेरे नामके कारण तुमसे यह २१
सब करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेहारेको नहीं जानते हैं।

२२ जो मैं न आता और उनसे बात न करता तो उन्हें
पाप न होता परन्तु अब उन्हें उनके पापके लिये कोई
२३ बहाना नहीं है। जो मुझसे बैर करता है सो मेरे पिता-
२४ से भी बैर करता है। जो मैं उन कामोंको जो और
किसीने नहीं किये हैं उन्होंमें न किये होता तो उन्हें पाप
न होता परन्तु अब उन्होंने देखके भी मुझसे और मेरे
२५ पितासे भी बैर किया है। पर यह इसलिये है कि जो
बचन उन्होंकी व्यवस्थामें लिखा है कि उन्होंने मुझसे अ-
२६ कारण बैर किया सो पूरा होवे। परन्तु शांतिदाता जिसे
मैं पिताको ओरसे तुम्हारे पास भेजूंगा अर्थात सत्यताका
आत्मा जो पिताकी ओरसे निकलता है जब आवेगा तब
२७ वह मेरे विषयमें साक्षी देगा। और तुम भी साक्षी दे-
ओगे क्योंकि तुम आरंभसे मेरे संग रहे हो।

## १६ सोलहवां पर्व्व।

१ शिष्योंके सताये जानेका भविष्यद्वाक्य। ५ यीशुके जानेसे शांतिदाताका आना। ८ शांतिदाताके आनेका प्रयोजन। १६ यीशुका अपने जानेके विषयमें शिष्योंको समझाना और शांति देना।

१ मैंने तुमसे यह बातें कही हैं कि तुम ठोकर न खावो।
२ वे तुम्हें सभामेंसे निकालेंगे हां वह समय आता है जिसमें
जो कोई तुम्हें मार डालेगा सो समझेगा कि मैं ईश्वरकी
३ सेवा करता हूं। और वे तुमसे इसलिये यह करेंगे कि
४ उन्होंने न पिताको न मुझको जाना है। परन्तु मैंने तुमसे
यह बातें कही हैं कि जब वह समय आवे तब तुम उन्हें
स्मरण करो कि मैंने तुमसे कह दिया. और मैं तुमसे
यह बातें आरंभसे न बोला क्योंकि मैं तुम्हारे संग था।

पर अब मैं अपने भेजनेहारेके पास जाता हूं और ५
तुममेंसे कोई नहीं मुझसे पूछता है कि आप कहां जाते
हैं। परन्तु मैंने जो यह बातें तुमसे कही हैं इसलिये तु- ६
म्हारे मन शोकसे भर गये हैं। तौभी मैं तुमसे सच बात ७
कहता हूं तुम्हारे लिये अच्छा है कि मैं जाऊं क्योंकि जो
मैं न जाऊं तो शांतिदाता तुम्हारे पास नहीं आवेगा
परन्तु जो मैं जाऊं तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा।

और वह आके जगतको पापके विषयमें और धर्म्मके ८
विषयमें और बिचारके विषयमें समझावेगा। पापके वि- ९
षयमें यह कि वे मुझपर बिश्वास नहीं करते हैं। धर्म्मके १०
विषयमें यह कि मैं अपने पिता पास जाता हूं और तुम
मुझे फिर नहीं देखोगे। बिचारके विषयमें यह कि इस ११
जगतके अध्यक्षका बिचार किया गया है। मुझे और भी १२
बहुत कुछ तुमसे कहना है परन्तु तुम अब नहीं सह
सकते हो। पर वह जब आवेगा अर्थात सत्यताका आत्मा १३
तब तुम्हें सारी सच्चाईलों मार्ग बतावेगा क्योंकि वह
अपनी ओरसे नहीं कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा सो
कहेगा और वह आनेवाली बातें तुमसे कह देगा। वह मेरी १४
महिमा प्रगट करेगा क्योंकि वह मेरी बातमेंसे लेके तुमसे
कह देगा। जो कुछ पिताका है सो सब मेरा है इस- १५
लिये मैंने कहा कि वह मेरी बातमेंसे लेके तुमसे कह देगा।

थोड़ी बेरमें तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी १६
बेरमें मुझे देखोगे क्योंकि मैं पिताके पास जाता हूं। तब १७
उसके शिष्योंमेंसे कोई कोई आपसमें बोले यह क्या है जो
वह हमसे कहता है कि थोड़ी बेरमें तुम मुझे नहीं देखोगे

और फिर थोड़ी बेरमें मुझे देखोगे. और यह कि मैं
१८ पिताके पास जाता हूं। सो उन्होंने कहा यह थोड़ी बेरकी
बात जो वह कहता है क्या है. हम नहीं जानते वह क्या
१९ कहता है। यीशुने जाना कि वे मुझसे पूछा चाहते हैं
और उनसे कहा मैं जो बोला कि थोड़ी बेरमें तुम मुझे
नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेरमें मुझे देखोगे क्या तुम
२० इसके विषयमें आपसमें बिचार करते हो। मैं तुमसे
सच सच कहता हूं कि तुम रोओगे और बिलाप करोगे
परन्तु संसार आनन्दित होगा. तुम्हें शोक होगा परन्तु
२१ तुम्हारा शोक आनन्द हो जायगा। स्त्रीको जननेमें शोक
होता है क्योंकि उसका समय आ पहुंचा है परन्तु जब
वह बालक जन चुकी तब जगतमें एक मनुष्यके उत्पन्न
होनेके आनन्दके कारण अपने क्लेशको फिर स्मरण नहीं
२२ करती है। और तुम्हें तो अभी शोक होता है परन्तु मैं
तुम्हें फिर देखूंगा और तुम्हारा मन आनन्दित होगा
२३ और तुम्हारा आनन्द कोई तुमसे छीन न लेगा। और
उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे. मैं तुमसे सच
सच कहता हूं जो कुछ तुम मेरे नामसे पितासे मांगोगे
२४ वह तुमको देगा। अबलों तुमने मेरे नामसे कुछ नहीं
मांगा है. मांगो तो पाओगे कि तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण
२५ होय। मैंने यह बातें तुमसे दृष्टान्तोंमें कही हैं परन्तु
समय आता है जिसमें मैं तुमसे दृष्टान्तोंमें और नहीं
२६ कहूंगा परन्तु खोलके तुम्हें पिताके विषयमें बताऊंगा। उस
दिन तुम मेरे नामसे मांगोगे और मैं तुमसे नहीं कहता
२७ हूं कि मैं तुम्हारे लिये पितासे प्रार्थना करूंगा। क्योंकि

पिता आपही तुम्हें प्यार करता है इसलिये कि तुमने
मुझे प्यार किया है और यह बिश्वास किया है कि मैं
ईश्वरकी ओरसे निकल आया। मैं पिताकी ओरसे निक- २८
लके जगतमें आया हूं, फिर जगतको छोड़के पिता पास
जाता हूं। उसके शिष्योंने उससे कहा देखिये अब तो २९
आप खोलके कहते हैं और कुछ दृष्टान्त नहीं कहते हैं।
अब हमें ज्ञान हुआ कि आप सब कुछ जानते हैं और ३०
आपको प्रयोजन नहीं कि कोई आपसे पूछे, इससे हम
बिश्वास करते हैं कि आप ईश्वरकी ओरसे निकल आये।
यीशुने उनको उत्तर दिया क्या तुम अब बिश्वास करते ३१
हो। देखो समय आता है और अभी आया है जिसमें ३२
तुम सब तितर बितर होके अपने अपने स्थानको जाओगे
और मुझे अकेला छोड़ोगे, तौभी मैं अकेला नहीं हूं
क्योंकि पिता मेरे संग है। मैंने यह बातें तुमसे कही हैं ३३
इसलिये कि मुझमें तुमको शांति होय, जगतमें तुम्हें क्लेश
होगा परन्तु ढाढ़स बांधो मैंने जगतको जीता है।

## १७ सत्रहवां पर्ब्ब।

१ यीशुका अपने लिये और प्रेरितों और सब शिष्योंके लिये पितासे प्रार्थना करना।

यह बातें कहके यीशुने अपनी आंखें स्वर्गकी ओर १
उठाईं और कहा हे पिता घड़ी आ पहुंची है, अपने
पुत्रकी महिमा प्रगट कर कि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा
प्रगट करे। क्योंकि तूने उसको सब प्राणियोंपर अधिकार २
दिया कि जिन्हें तूने उसको दिया है उन सभोंको वह
अनन्त जीवन देवे। और अनन्त जीवन यह है कि वे ३

तुझको जो अद्वैत सत्य ईश्वर है और यीशु खीष्टको जिसे
४ तूने भेजा है पहचानें। मैंने पृथिवीपर तेरी महिमा
प्रगट किई है . जो काम तूने मुझे करनेको दिया सो मैंने
५ पूरा किया है। और अभी हे पिता तेरे संग जगतके
होनेके आगे जो मेरी महिमा थी उस महिमासे तू अपने
संग मेरी महिमा प्रगट कर।
६ जिन मनुष्योंको तूने जगतमेंसे मुझको दिया है उन्हों-
पर मैंने तेरा नाम प्रगट किया है . वे तेरे थे और तूने
उन्हें मुझको दिया और उन्होंने तेरे बचनको पालन
७ किया है। अब उन्होंने जान लिया है कि सब कुछ जो
८ तूने मुझको दिया है तेरी ओरसे है। क्योंकि वह बातें
जो तूने मुझको दिई हैं मैंने उन्होंको दिई हैं और
उन्होंने उनको ग्रहण किया है और निश्चय जान लिया
है कि मैं तेरी ओरसे निकल आया और बिश्वास किया
९ है कि तूने मुझे भेजा। मैं उन्होंके लिये प्रार्थना करता
हूं . मैं संसारके लिये नहीं परन्तु जिन्हें तूने मुझको दिया
१० है उन्हींके लिये प्रार्थना करता हूं क्योंकि वे तेरे हैं। और
जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है और जो तेरा है सो
११ मेरा है और मेरी महिमा उसमें प्रगट हुई है। मैं अब
जगतमें नहीं रहूंगा परन्तु ये जगतमें रहेंगे और मैं तेरे
पास आता हूं . हे पवित्र पिता जिन्हें तूने मुझको दिया
है उनकी अपने नाममें रक्षा कर कि जैसे हम एक हैं
१२ तैसे वे एक होवें। जब मैं उनके संग जगतमें था तब मैंने
तेरे नाममें उनकी रक्षा किई . जिन्हें तूने मुझको दिया
है उनकी मैंने रक्षा किई और उनमेंसे कोई नाश नहीं

हुआ केवल बिनाशका पुच जिस्तें धर्म्मपुस्तकका बचन
पूरा होवे। अब मैं तेरे पास आता हूं और मैं जगतमें १३
यह बातें कहता हूं कि वे मेरा आनन्द अपनेमें सम्पूर्ण
पावें। मैंने तेरा बचन उन्होंको दिया है और संसारने १४
उनसे बैर किया है क्योंकि जैसा मैं संसारका नहीं हूं
तैसे वे संसारके नहीं हैं। मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं १५
कि तू उन्हें जगतमेंसे ले जा परन्तु यह कि तू उन्हें उस
दुष्टसे बचा रख। जैसा मैं संसारका नहीं हूं तैसे वे सं- १६
सारके नहीं हैं। अपनी सच्चाईसे उन्हें पवित्र कर. तेरा १७
बचन सच्चाई है। जैसे तूने मुझे जगतमें भेजा तैसे मैंने १८
उन्हें भी जगतमें भेजा है। और उनके लिये मैं अपनेको १९
पवित्र करता हूं कि वे भी सच्चाईसे पवित्र किये जावें।

और मैं केवल इनके लिये नहीं परन्तु उनके लिये २०
भी जो इनके बचनके द्वारासे मुझपर बिश्वास करेंगे
प्रार्थना करता हूं कि वे सब एक होवें. जैसा तू हे पिता २१
मुझमें है और मैं तुझमें हूं तैसे वे भी हममें एक होवें
इसलिये कि जगत बिश्वास करे कि तूने मुझे भेजा। और २२
वह महिमा जो तूने मुझको दिई है मैंने उनको दिई है
कि जैसे हम एक हैं तैसे वे एक होवें. मैं उनमें और २३
तू मुझमें कि वे एकमें सिद्ध होवें और कि जगत जाने
कि तूने मुझे भेजा और जैसा मुझे प्यार किया तैसा
उन्हें प्यार किया है। हे पिता मैं चाहता हूं कि जहां मैं २४
रहूं तहां वे भी जिन्हें तूने मुझको दिया है मेरे संग रहें
कि वे मेरी महिमाको देखें जो तूने मुझको दिई क्योंकि
तूने जगतकी उत्पत्तिके आगे मुझे प्यार किया। हे धर्म्मी २५

पिता संसार तुझे नहीं जानता है परन्तु मैं तुझे जानता
२६ हूं और ये लोग जानते हैं कि तूने मुझे भेजा। और मैंने
तेरा नाम उनको जनाया है और जनाऊंगा कि वह
प्यार जिससे तूने मुझे प्यार किया उनमें रहे और
मैं उनमें रहूं।

## १८ अठारहवां पर्व्व।

१ यिहूदाका योशुको पकड़वाना। १२ प्यादोंका उसे ले जाना। १५ पितर और योहनका उसके पीछे हो लेना। १९ महायाजकके आगे उसका बिचार होना। २५ पितरका उससे मुकर जाना। २८ उसका पिलातके हाथ सौंपा जाना। ३३ पिलातका उसे बिचार करना और छोड़नेकी इच्छा करना।

१ यीशु यह बातें कहके अपने शिष्योंके संग किद्रोन
नालेके उस पार निकल गया जहां एक बारी थी जिसमें
२ वह और उसके शिष्य गये। उसका पकड़वानेहारा
यिहूदा भी वह स्थान जानता था क्योंकि यीशु बारंबार
३ वहां अपने शिष्योंके संग एकट्ठा हुआ था। तब यिहूदा
पलटनको और प्रधान याजकों औ फरीशियोंकी ओरसे
प्यादोंको लेके दीपकों और मशालों और हथियारोंको
४ लिये हुए वहां आया। सो यीशु सब बातें जो उसपर
आनेवाली थीं जानके निकला और उनसे कहा तुम
५ किसको ढूंढते हो। उन्होंने उसको उत्तर दिया कि यीशु
नासरीको. यीशुने उनसे कहा मैं हूं. और उसका
६ पकड़वानेहारा यिहूदा भी उनके संग खड़ा था। ज्योंही
उसने उनसे कहा मैं हूं त्योंही वे पीछे हटके भूमिपर
७ गिर पड़े। तब उसने फिर उनसे पूछा तुम किसको ढूंढते
८ हो. वे बोले यीशु नासरीको। यीशुने उत्तर दिया मैंने

तुमसे कहा कि मैं हूं सो जो तुम मुझे ढूंढते हो तो
इन्होंको जाने देश्रो। यह इसलिये हुश्रा कि जो बचन ९
उसने कहा था कि जिन्हें तूने मुझको दिया है उनमेंसे
मैंने किसीको न खोया सो पूरा होवे। शिमोन पितरके १०
पास खड्ग था सो उसने उसे खींचके महायाजकके दासको
मारा श्रोर उसका दहिना कान काट डाला. उस दास-
का नाम मलक था। तब यीशुने पितरसे कहा श्रपना ११
खड्ग काठीमें रख. जो कटोरा पिताने मुझको दिया है
क्या मैं उसे न पीऊं।

तब उस पलटनने श्रोर सहस्रपतिने श्रोर यिहूदियोंके १२
प्यादोंने यीशुको पकड़के बांधा. श्रोर पहिले उसे हन्नसके १३
पास ले गये क्योंकि कियाफा जो उस बरसका महायाजक
था उसका वह ससुर था। कियाफा वह था जिसने १४
यिहूदियोंको परामर्श दिया कि एक मनुष्यका हमारे
लोगके लिये मरना श्रच्छा है।

शिमोन पितर श्रोर दूसरा शिष्य यीशुके पीछे हो १५
लिये. वह शिष्य महायाजकका जान पहचान था श्रोर
यीशुके संग महायाजकके श्रंगनेके भीतर गया। परन्तु १६
पितर बाहर द्वारपर खड़ा रहा सो दूसरा शिष्य जो महा-
याजकका जान पहचान था बाहर गया श्रोर द्वारपालि-
नसे कहके पितरको भीतर ले श्राया। वह दासी श्रर्थात १७
द्वारपालिन पितरसे बोली क्या तू भी इस मनुष्यके शिष्यों-
मेंसे एक है. उसने कहा मैं नहीं हूं। दास श्रोर प्यादे १८
लोग जाड़ेके कारण कोयलेकी श्राग सुलगाके खड़े हुए
तापते थे श्रोर पितर उनके संग खड़ा हो तापने लगा।

१९ तब महायाजकने यीशुसे उसके शिष्योंके विषयमें और
२० उसके उपदेशके विषयमें पूछा। यीशुने उसको उत्तर दिया
कि मैंने जगतसे खोलके बातें किईं मैंने सभाके घरमें और
मन्दिरमें जहां यिहूदी लोग नित्य एकट्ठे होते हैं सदा
२१ उपदेश किया और गुप्तमें कुछ नहीं कहा। तू मुझसे
क्यों पूछता है. जिन्होंने सुना उन्होंसे पूछ ले कि मैंने
उनसे क्या कहा. देख वे जानते हैं कि मैंने क्या कहा।
२२ जब यीशुने यह कहा तब प्यादोंमेंसे एक जो निकट खड़ा
था उसको थपेड़ा मारके बोला क्या तू महायाजकको इस
२३ रीतिसे उत्तर देता है। यीशुने उसे उत्तर दिया यदि मैंने
बुरा कहा तो उस बुराईकी साक्षी दे परन्तु यदि भला
२४ कहा तो मुझे क्यों मारता है। हन्नसने यीशुको बंधे हुए
कियाफा महायाजकके पास भेजा।

२५ शिमोन पितर खड़ा हुआ आग तापता था. तब
उन्होंने उससे कहा क्या तू भी उसके शिष्योंमेंसे एक है.
२६ उसने मुकरके कहा मैं नहीं हूं। महायाजकके दासोंमेंसे
एक दास जो उस मनुष्यका कुटुंब था जिसका कान पित-
रने काट डाला बोला क्या मैंने तुझे बारीमें उसके संग न
२७ देखा। पितर फिर मुकर गया और तुरन्त मुर्ग बोला।
२८ तब भोर हुआ और वे यीशुको कियाफाके पाससे
अध्यक्षभवनपर ले गये परन्तु वे आप अध्यक्षभवनके
भीतर नहीं गये इसलिये कि अशुद्ध न होवें परन्तु निस्तार
२९ पर्ब्बका भोजन खावें। सो पिलात उन पास निकल आया
और कहा तुम इस मनुष्यपर क्या दोष लगाते हो।
३० उन्होंने उसको उत्तर दिया कि जो यह कुकर्म्मी न होता

तो हम उसे आपके हाथ न सोंपते। पिलातने उनसे ३१
कहा तुम उसको लेओ और अपनी व्यवस्थाके अनुसार
उसका बिचार करो. यिहूदियोंने उससे कहा किसीको
बध करनेका हमें अधिकार नहीं है। यह इसलिये हुआ ३२
कि यीशुका बचन जिसे कहनेमें उसने पता दिया कि वह
कैसी मृत्युसे मरनेपर था पूरा होवे।

तब पिलात फिर अध्यक्षभवनके भीतर गया और ३३
यीशुको बुलाके उससे कहा क्या तू यिहूदियोंका राजा
है। यीशुने उसको उत्तर दिया क्या आप अपनी ओरसे ३४
यह बात कहते हैं अथवा औरोंने मेरे विषयमें आपसे
कही। पिलातने उत्तर दिया क्या मैं यिहूदी हूं. तेरेही ३५
लोगोंने और प्रधान याजकोंने तुझे मेरे हाथमें सोंपा.
तूने क्या किया है। यीशुने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस ३६
जगतका नहीं है. जो मेरा राज्य इस जगतका होता तो
मेरे सेवक लड़ते जिस्तें मैं यिहूदियोंके हाथमें न सोंपा
जाता. परन्तु अब मेरा राज्य यहांका नहीं है। पिला- ३७
तने उससे कहा फिर भी तू राजा है. यीशुने उत्तर दिया
कि आप ठीक कहते हैं क्योंकि मैं राजा हूं. मैंने इसलिये
जन्म लिया है और इसलिये जगतमें आया हूं कि सत्य-
पर साक्षी देऊं. जो कोई सत्यकी ओर है सो मेरा शब्द
सुनता है। पिलातने उससे कहा सत्य क्या है और यह ३८
कहके फिर यिहूदियोंके पास निकल गया और उनसे
कहा मैं उसमें कुछ दोष नहीं पाता हूं। परन्तु तुम्हारी ३९
यह रीति है कि मैं निस्तार पर्व्वमें तुम्हारे लिये एक
जनको छोड़ देऊं सो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे

४० लिये यिहूदियोंके राजाको छोड़ देऊं। तब सभोंने फिर
पुकारा कि इसको नहीं परन्तु बरब्बाको. और बरब्बा
डाकू था।

## १९ उनीसवां पर्ब्ब।

१ योद्धाओंका यीशुको अपमान करना। ४ पिलातका उसे छोड़नेकी युक्ति करनेके पीछे घातकोंके हाथ सोंपना। १७ उसका क्रूशपर चढ़ाया जाना। २३ उसके वस्त्रका बांटा जाना। २५ उसका अपनी माताके लिये चिन्ता करना। २८ उसका सिरका पीना और प्राण त्यागना। ३१ योद्धाका उसके पंजरमें बर्छा मारना। ३८ यूसफका उसे कबरमें रखना।

१ २ तब पिलातने यीशुको लेके उसे कोड़े मारे। और यो-
द्धाओंने कांटोंका मुकुट गून्थके उसके सिरपर रखा और
३ उसे बैजनी वस्त्र पहिराया. और कहा हे यिहूदियोंके
राजा प्रणाम और उसे थपेड़े मारे।
४ तब पिलातने फिर बाहर निकलके लोगोंसे कहा देखो
मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूं कि तुम जानो कि मैं
५ उसमें कुछ दोष नहीं पाता हूं। सो यीशु कांटोंका
मुकुट और बैजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और
६ उसने उन्होंसे कहा देखो यही मनुष्य है। जब प्रधान
याजकों और प्यादोंने उसे देखा तब उन्होंने पुकारा कि
उसे क्रूशपर चढ़ाइये क्रूशपर चढ़ाइये. पिलातने उनसे
कहा तुम उसे लेके क्रूशपर चढ़ाओ क्योंकि मैं उसमें दोष
७ नहीं पाता हूं। यिहूदियोंने उसको उत्तर दिया कि
हमारी भी व्यवस्था है और हमारी व्यवस्थाके अनुसार
वह बध होनेके योग्य है क्योंकि उसने अपनेको ईश्वरका
८ पुत्र कहा। जब पिलातने यह बात सुनी तब और भी
९ डर गया. और फिर अध्यक्षभवनके भीतर गया और

यीशुसे बोला तू कहांसे है. परन्तु यीशुने उसको उत्तर
न दिया। पिलातने उससे कहा क्या तू मुझसे नहीं १०
बोलता क्या तू नहीं जानता है कि तुझे क्रूशपर चढ़ानेका
मुझको अधिकार है और तुझे छोड़ देनेका मुझको अधि-
कार है। यीशुने उत्तर दिया जो आपको ऊपरसे न ११
दिया जाता तो आपको मुझपर कुछ अधिकार न होता
इसलिये जो मुझे आपके हाथमें पकड़वाता है उसको
अधिक पाप है। इससे पिलातने उसको छोड़ देने चाहा १२
परन्तु यिहूदियोंने पुकारके कहा जो आप इसको छोड़
देवें तो आप कैसरके मित्र नहीं हैं. जो कोई अपनेको
राजा कहता है सो कैसरके बिरुद्ध बोलता है। यह बात १३
सुनके पिलात यीशुको बाहर लाया और जो स्थान चबू-
तरा परन्तु इब्रीय भाषामें गबथा कहावता है उस स्थानमें
बिचार आसनपर बैठा। निस्तार पर्ब्बकी तैयारीका दिन १४
और दो पहरके निकट था. तब उसने यिहूदियोंसे कहा
देखो तुम्हारा राजा। परन्तु उन्होंने पुकारा कि ले जाओ १५
ले जाओ उसे क्रूशपर चढ़ाओ. पिलातने उनसे कहा
क्या मैं तुम्हारे राजाको क्रूशपर चढ़ाऊंगा. प्रधान याज-
कोंने उत्तर दिया कि कैसरको छोड़ हमारा कोई राजा
नहीं है। तब उसने यीशुको क्रूशपर चढ़ाये जानेको १६
उन्होंके हाथ सोंपा. तब वे उसे पकड़के ले गये।

और यीशु अपना क्रूश उठाये हुए उस स्थानको जो १७
खोपड़ीका स्थान कहावता और इब्रीय भाषामें गलगथा
कहावता है निकल गया। वहां उन्होंने उसको और १८
उसके संग दो और मनुष्योंको क्रूशोंपर चढ़ाया एकको

१९ इधर और एकको उधर और बीचमें यीशुको। और
पिलातने दोषपत्र लिखके क्रूशपर लगाया और लिखी
२० हुई बात यह थी यीशु नासरी यिहूदियोंका राजा। यह
दोषपत्र बहुत यिहूदियोंने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां
यीशु क्रूशपर चढ़ाया गया नगरके निकट था और पत्र
इब्रीय औ यूनानीय औ रोमीय भाषामें लिखा हुआ
२१ था। तब यिहूदियोंके प्रधान याजकोंने पिलातसे कहा
यिहूदियोंका राजा मत लिखिये परन्तु यह कि उसने
२२ कहा मैं यिहूदियोंका राजा हूं। पिलातने उत्तर दिया
कि मैंने जो लिखा है सो लिखा है।

२३ जब योद्धाओंने यीशुको क्रूशपर चढ़ाया था तब उसके
कपड़े लेके चार भाग किये हर एक योद्धाके लिये एक
भाग, और अंगा भी लिया परन्तु अंगा बिन सीअन
२४ ऊपरसे नीचेलों बिना हुआ था। इसलिये उन्होंने आ-
पसमें कहा हम इसको न फाड़ें परन्तु उसपर चिट्ठियां
डालें कि वह किसका होगा, जिस्तें धर्म्मपुस्तकका बचन
पूरा होवे कि उन्होंने मेरे कपड़े आपसमें बांट लिये और
मेरे बस्त्रपर चिट्ठियां डालीं, सो योद्धाओंने यह किया।

२५ परन्तु यीशुकी माता और उसकी माताकी बहिन
मरियम जो क्लियोपाकी स्त्री थी और मरियम मगदलीनी
२६ उसके क्रूशके निकट खड़ी थीं। सो यीशुने अपनी माताको
और उस शिष्यको जिसे वह प्यार करता था उसके निकट
खड़े हुए देखके अपनी मातासे कहा हे नारी देखिये
२७ आपका पुत्र। तब उसने उस शिष्यसे कहा देख तेरी माता,
और उस समयसे उस शिष्यने उसको अपने घरमें ले लिया।

इसके पीछे योशुने यह जानके कि अब सब कुछ हो २८
चुका जिस्तें धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा हो जाय इसलिये
कहा मैं पियासा हूं। सिरकेसे भरा हुआ एक बर्त्तन धरा २९
था सो उन्होंने इस्पंजको सिरकेमें भिंगाके एसोबके नल-
पर रखके उसके मुंहमें लगाया। जब यीशुने सिरका लिया ३०
था तब कहा पूरा हुआ है और सिर झुकाके प्राण त्यागा।

वह दिन तैयारीका दिन था और वह बिश्रामवार ३१
बड़ा दिन था इस कारण जिस्तें लोथें बिश्रामके दिन
क्रूशपर न रहें यिहूदियोंने पिलातसे बिन्ती किई कि
उनकी टांगें तोड़ी जायें और वे उतारे जायें। सो यो- ३२
द्धाओंने आके पहिलेकी टांगें तोड़ीं तब दूसरेकी भी जो
यीशुके संग क्रूशपर चढ़ाये गये थे। परन्तु योशु पास ३३
आके जब उन्होंने देखा कि वह मर चुका है तब उसकी
टांगें न तोड़ीं। परन्तु योद्धाओंमेंसे एकने बर्छेसे उसका ३४
पंजर बेधा और तुरन्त लोहू और पानी निकला। इसके ३५
देखनेहारेने साक्षी दिई है और उसकी साक्षी सत्य है
और वह जानता है कि सत्य कहता है इसलिये कि तुम
बिश्वास करो। क्योंकि यह बातें इसलिये हुईं कि धर्म्मपु- ३६
स्तकका बचन पूरा होवे कि उसकी कोई हड्डी नहीं तोड़ी
जायगी। और फिर धर्म्मपुस्तकका दूसरा एक बचन है ३७
कि जिसे उन्होंने बेधा उसपर वे दृष्टि करेंगे।

इसके पीछे अरिमथिया नगरके यूसफने जो यीशुका ३८
शिष्य था परन्तु यिहूदियोंके डरसे इसको छिपाये रहता
था पिलातसे बिन्ती किई कि मैं यीशुकी लोथको ले जाऊं
और पिलातने आज्ञा दिई सो वह आके यीशुकी लोथ

३९ ले गया। निकोदीम भी जो पहिले रातको यीशु पास आया
था पचास सेरके अटकल मिलाये हुए गन्धरस और एलवा
४० लेके आया। तब उन्होंने यीशुकी लोथको लिया और
यिहूदियोंके गाड़नेकी रीतिके अनुसार उसे सुगन्धके संग
४१ चद्दरमें लपेटा। उस स्थानपर जहां यीशु क्रूशपर चढ़ाया
गया एक बारी थी और उस बारीमें एक नई कबर जिसमें
४२ कोई कभी नहीं रखा गया था। सो यिहूदियोंकी तैयारीके
दिनके कारण उन्होंने यीशुको वहां रखा क्योंकि वह कबर
निकट थी।

## २० बीसवां पर्ब्ब।

१ यीशुके जी उठनेका शिष्योंपर प्रगट होना। १० उसका मरियम मगदलीनीको दर्शन देना। १९ शिष्योंको दर्शन देना और उन्हें प्रेरण करना। २४ थोमाको अपने जी उठनेका प्रमाण देना। ३० सुसमाचार लिखनेका अभिप्राय।

१ अठवारेके पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोरको
अंधियारा रहतेही कबरपर आई और पत्थरको कबरसे
२ सरकाया हुआ देखा। तब वह दौड़ी और शिमोन पितर
और उस दूसरे शिष्यके पास जिसे यीशु प्यार करता था
आके उनसे बोली वे प्रभुको कबरमेंसे ले गये हैं और हम
३ नहीं जानतीं कि उसे कहां रखा है। तब पितर और वह
४ दूसरा शिष्य निकलके कबरपर आये। वे दोनों एक संग
दौड़े और दूसरा शिष्य पितरसे शीघ्र दौड़के आगे बढ़ा
५ और कबरपर पहिले पहुंचा। और उसने झुकके चद्दर
६ पड़ी हुई देखी तौभी वह भीतर नहीं गया। तब शिमोन
पितर उसके पीछेसे आ पहुंचा और कबरके भीतर गया
७ और चद्दर पड़ी हुई देखी• और वह अंगोछा जो उसके

सिरपर था चद्दरके संग पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग
एक स्थानमें लपेटा हुआ देखा। तब दूसरा शिष्य भी जो ८
कबरपर पहिले पहुंचा भीतर गया और देखके बिश्वास
किया। वे तो अबलों धर्म्मपुस्तकका वचन नहीं समझते ९
थे कि उसको मृतकोंमेंसे जी उठना होगा।
तब दोनों शिष्य फिर अपने घर चले गये। परन्तु १० ११
मरियम रोती हुई कबरके पास बाहर खड़ी रही और
रोते रोते कबरकी ओर झुकी, और दो दूतोंको उजला १२
बस्त्र पहिने हुए देखा कि जहां यीशुकी लोथ पड़ी थी
तहां एक सिरहाने और दूसरा पैताने बैठा था। उन्होंने १३
उससे कहा हे नारी तू क्यों रोती है, वह उनसे बोली
वे मेरे प्रभुको ले गये हैं और मैं नहीं जानती कि उसे
कहां रखा है। यह कहके उसने पीछे फिरके यीशुको खड़े १४
देखा और नहीं जानती थी कि यीशु है। यीशुने उससे १५
कहा हे नारी तू क्यों रोती है किसको ढूंढ़ती है, उसने
यह समझके कि माली है उससे कहा हे प्रभु जो आपने
उसको उठा लिया है तो मुझसे कहिये कि उसे कहां
रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी। यीशुने उससे कहा हे १६
मरियम, वह पीछे फिरके उससे बोली हे रब्बूनी अर्थात
हे गुरु। यीशुने उससे कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अबलों १७
अपने पिताके पास नहीं चढ़ गया हूं परन्तु मेरे भाइयोंके
पास जाके उनसे कह दे कि मैं अपने पिता औ तुम्हारे
पिता और अपने ईश्वर औ तुम्हारे ईश्वर पास चढ़ जाता
हूं। मरियम मगदलीनीने जाके शिष्योंको सन्देश दिया कि १८
मैंने प्रभुको देखा है और उसने मुझसे यह बातें कहीं।

१९ अठवारेके उस पहिले दिनको सांझ होते हुए और जहां
शिष्य लोग एकट्ठे हुए थे तहां द्वार यिहूदियोंके डरके मारे
बन्द होते हुए यीशु आया और बीचमें खड़ा होके उनसे
२० कहा तुम्हारा कल्याण होय। और यह कहके उसने अपने
हाथ और अपना पंजर उनको दिखाये. तब शिष्य लोग प्रभु-
२१ को देखके आनन्दित हुए। यीशुने फिर उनसे कहा तुम्हारा
कल्याण होय. जैसे पिताने मुझे भेजा है तैसे मैं भी तुम्हें
२२ भेजता हूं। यह कहके उसने फूंक दिया और उनसे कहा
२३ पवित्र आत्मा लेओ। जिन्होंके पाप तुम क्षमा करो वे उनके
लिये क्षमा किये जाते हैं. जिन्होंके तुम रखो वे रखे हुए हैं।
२४ परन्तु बारहोंमेंसे एक जन अर्थात थोमा जो दिदुम
कहावता है जब यीशु आया तब उनके संग नहीं था।
२५ सो दूसरे शिष्योंने उससे कहा हमने प्रभुको देखा है.
उसने उनसे कहा जो मैं उसके हाथोंमें कीलोंका चिन्ह न
देखूं और कीलोंके चिन्हमें अपनी उंगली न डालूं और
उसके पंजरमें अपना हाथ न डालूं तो मैं बिश्वास न
२६ करूंगा। आठ दिनके पीछे उसके शिष्य लोग फिर घरके
भीतर थे और थोमा उनके संग था. तब द्वार बन्द होते
हुए यीशु आया और बीचमें खड़ा होके कहा तुम्हारा
२७ कल्याण होय। तब उसने थोमासे कहा अपनी उंगली
यहां लाके मेरे हाथोंको देख और अपना हाथ लाके मेरे
पंजरमें डाल और अबिश्वासी नहीं परन्तु बिश्वासी हो।
२८ थोमाने उसको उत्तर दिया कि हे मेरे प्रभु और मेरे
२९ ईश्वर। यीशुने उससे कहा हे थोमा तूने मुझे देखा है इस-
लिये बिश्वास किया है. धन्य वे हैं जो बिन देखे बिश्वास करें।

यीशुने अपने शिष्योंके आगे बहुत और आश्चर्य्य कर्म्म ३०
भी किये जो इस पुस्तकमें नहीं लिखे हैं। परन्तु ये लिखे ३१
गये हैं इसलिये कि तुम बिश्वास करो कि यीशु जो है सो
ईश्वरका पुत्र ख्रीष्ट है और कि बिश्वास करनेसे तुमको
उसके नामसे जीवन होय।

## २१ इकईसवां पर्व्व।

१ यीशुका तिवरियाके समुद्रके तीरपर शिष्योंको दर्शन देना। १५ पितरके संग उसकी बातचीत। २० योहनके विषयमेंकी कथा। २४ सुसमाचारकी समाप्ति।

इसके पीछे यीशुने फिर अपने तईं तिबरियाके समुद्रके १
तीरपर शिष्योंको दिखाया और इस रीतिसे दिखाया।
शिमोन पितर और थोमा जो दिदुम कहावता है और २
गालीलके काना नगरका नथनेल और जबदीके दोनों
पुत्र और उसके शिष्योंमेंसे दो और जन एक संग थे।
शिमोन पितरने उनसे कहा मैं मछली पकड़नेको जाता ३
हूं. वे उससे बोले हम भी तेरे संग जायेंगे. सो वे नि-
कलके तुरन्त नावपर चढ़े और उस रात कुछ नहीं
पकड़ा। जब भोर हुआ तब यीशु तीरपर खड़ा हुआ ४
तौभी शिष्य लोग नहीं जानते थे कि यीशु है। तब ५
यीशुने उनसे कहा हे लड़को क्या तुम्हारे पास कुछ खा-
नेको है. उन्होंने उसको उत्तर दिया कि नहीं। उसने ६
उनसे कहा नावकी दहिनी ओर जाल डालो तो पा-
ओगे. सो उन्होंने डाला और अब मछलियोंके झुंडके
कारण वे उसे खींच न सके। इसलिये वह शिष्य जिसे ७
यीशु प्यार करता था पितरसे बोला यह तो प्रभु है.

शिमोन पितरने जब सुना कि प्रभु है तब कमरमें अंग-
रखा कस लिया क्योंकि वह नंगा था और समुद्रमें कूद
८ पड़ा। परन्तु दूसरे शिष्य लोग नावपर मछलियोंका जाल
घसीटते हुए चले आये क्योंकि वे तीरसे दूर नहीं प्राय
९ दो सौ हाथपर थे। जब वे तीरपर उतरे तब उन्होंने
कोयलेकी आग धरी हुई और मछली उसपर रखी हुई
१० और रोटी देखी। यीशुने उनसे कहा जो मछलियां
११ तुमने अभी पकड़ी हैं उनमेंसे ले आओ। शिमोन पि-
तरने जाके जालको जो एक सौ तिर्पन बड़ी मछलियोंसे
भरा था तीरपर खींच लिया और इतनी होनेसे भी
१२ जाल नहीं फटा। यीशुने उनसे कहा कि आओ भोजन
करो. परन्तु शिष्योंमेंसे किसीको साहस न हुआ कि
उससे पूछे आप कौन हैं क्योंकि वे जानते थे कि प्रभु है।
१३ तब यीशुने आके रोटी लेके उनको दिई और वैसेही
१४ मछली भी। यह अब तीसरी बेर हुआ कि यीशुने मृत-
कोंमेंसे उठके अपने शिष्योंको दर्शन दिया।
१५ तब भोजन करनेके पीछे यीशुने शिमोन पितरसे कहा
हे यूनसके पुत्र शिमोन क्या तू मुझे इन्होंसे अधिक प्यार
करता है. वह उससे बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि
मैं आपको प्यार करता हूं. उसने उससे कहा मेरे
१६ मेम्नोंको चरा। उसने फिर दूसरी बेर उससे कहा हे
यूनसके पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है. वह
उससे बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आपको
प्यार करता हूं. उसने उससे कहा मेरी भेड़ोंकी रखवाली
१७ कर। उसने तीसरी बेर उससे कहा हे यूनसके पुत्र शि-

मोन क्या तू मुझे प्यार करता है • पितर उदास हुआ
कि यीशुने उससे तीसरी बेर कहा क्या तू मुझे प्यार
करता है और उससे बोला हे प्रभु आप सब कुछ जानते
हैं आप जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूं • यीशुने
उससे कहा मेरी भेड़ोंको चरा। मैं तुझसे सच सच कहता १८
हूं जब तू जवान था तब अपनी कमर बांधके जहां चाहता
था वहां चलता था परन्तु जब तू बूढ़ा होगा तब अपने
हाथ फैलावेगा और दूसरा तेरी कमर बांधके जहां तू न
चाहे वहां तुझे ले जायगा। यह कहनेमें उसने पता १९
दिया कि पितर कैसी मृत्युसे ईश्वरको महिमा प्रगट करेगा
और यह कहके उससे बोला मेरे पीछे हो ले।

पितरने मुंह फेरके उस शिष्यको जिसे यीशु प्यार करता २०
था और जिसने बियारीमें उसकी छातीपर उठंगके कहा
हे प्रभु आपका पकड़वानेहारा कौन है पीछेसे आते
देखा। उसको देखके पितरने यीशुसे कहा हे प्रभु इसका २१
क्या होगा। यीशुने उससे कहा जो मैं चाहूं कि वह मेरे २२
आनेलों रहे तो तुझे क्या • तू मेरे पीछे हो ले। इसलिये २३
भाइयोंमें यह बात फैल गई कि वह शिष्य नहीं मरेगा •
तौभी यीशुने यह नहीं कहा कि वह नहीं मरेगा परन्तु
यह कि जो मैं चाहूं कि वह मेरे आनेलों रहे तो तुझे क्या।

यह तो वह शिष्य है जो इन बातोंके विषयमें साक्षी देता २४
है और जिसने यह बातें लिखीं और हम जानते हैं कि उस-
की साक्षी सत्य है। और बहुत और काम भी हैं जो यीशुने २५
किये • जो वे एक एक करके लिखे जाते तो मुझे बूझ पड़ता है
कि पुस्तक जो लिखे जाते जगतमें भी न समाते। आमीन॥

# प्रेरितोंकी क्रियाओंका वृत्तान्त।

## १ पहिला पर्ब्ब।

१ यीशुका शिष्योंको आज्ञा देना और स्वर्गमें जाना। १२ शिष्योंका एकट्ठे रहके प्रार्थना करना। १५ यिहूदाकी सन्ती मत्तथियाहको प्रेरितके कामपर ठहराना।

१ हे थियोफिल वह पहिला वृत्तान्त मैंने सब बातोंके
विषयमें रचा जो यीशु उस दिनलों करने और सिखाने-
२ का आरंभ किये था. जिस दिन वह पवित्र आत्माके
द्वारासे जिन प्रेरितोंको उसने चुना था उन्हें आज्ञा दे
३ करके उठा लिया गया। और उसने उन्हें बहुतेरे अचल
प्रमाणोंसे अपने तईं दुःख भोगनेके पीछे जीवता दिखाया
कि चालीस दिनलों वे उसे देखा करते थे और वह ईश्व-
४ रके राज्यके विषयमें उनसे बातें करता था। और जब
वह उनके संग एकट्ठा हुआ तब उन्हें आज्ञा दिई कि
यिरूशलीमको मत छोड़ जाओ परन्तु पिताकी जो प्रतिज्ञा
५ तुमने मुझसे सुनी है उसकी बाट जोहते रहो। क्योंकि
योहनने तो जलमें डूब दिया परन्तु थोड़े दिनोंके पीछे
६ तुम्हें पवित्र आत्मामें डूब दिया जायगा। सो उन्होंने एकट्ठे
होके उससे पूछा कि हे प्रभु क्या आप इसी समयमें
७ इस्रायेली लोगोंको राज्य फेर देते हैं। उसने उनसे कहा
जिन कालों अथवा समयोंको पिताने अपनेही बशमें रखा
८ है उन्हें जाननेका अधिकार तुम्हें नहीं है। परन्तु तुमपर
पवित्र आत्माके आनेसे तुम सामर्थ्य पाओगे और यिरू-

शलीममें और सारे यिहूदिया और शोमिरोन देशोंमें
और पृथिवीके अन्तलों मेरे साक्षी होओगे। यह कहके ९
वह उनके देखते हुए ऊपर उठाया गया और मेघने उसे
उनकी दृष्टिसे छिपा लिया। ज्योंही वे उसके जाते हुए १०
स्वर्गकी ओर तकते रहे त्योंही देखो दो पुरुष उजला बस्त्र
पहिने हुए उनके निकट खड़े हो गये. और कहा हे ११
गालीली लोगो तुम क्यों स्वर्गकी ओर देखते हुए खड़े हो.
यही यीशु जो तुम्हारे पाससे स्वर्गपर उठा लिया गया
है जिस रीतिसे तुमने उसे स्वर्गको जाते देखा है उसी
रीतिसे आवेगा।

तब वे जैतून नाम पर्ब्बतसे जो यिरूशलीमके निकट १२
अर्थात एक बिश्रामवारकी बाट भर दूर है यिरूशलीमको
लौटे। और जब वे पहुंचे तब उपरौठी कोठरीमें गये १३
जहां वे अर्थात पितर औ याकूब औ योहन औ अन्द्रिय
और फिलिप औ थोमा और बर्थलमई औ मत्ती और
अलफईका पुत्र याकूब औ शिमोन उद्योगी और याकूब-
का भाई यिहूदा रहते थे। ये सब एक चित्त होके स्त्रि- १४
योंके और यीशुकी माता मरियमके संग और उसके
भाइयोंके संग प्रार्थना और बिन्तीमें लगे रहते थे।

उन दिनोंमें पितर शिष्योंके बीचमें खड़ा हुआ. एक १५
सौ बीस जनके अटकल एकट्ठे थे. और कहा हे भाइयो १६
अवश्य था कि धर्म्मपुस्तकका यह बचन पूरा होय जो
पवित्र आत्माने दाऊदके मुखसे यिहूदाके विषयमें जो
यीशुके पकड़नेहारोंका अगुवा था आगेसे कह दिया।
क्योंकि वह हमारे संग गिना गया था और इस सेवकाई १७

१८ का अधिकार पाया था। उसने तो अधर्म्मकी मजूरीसे
एक खेत मोल लिया और औंधे मुंह गिरके बीचसे फट
१९ गया और उसकी सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं। यह बात
यिरूशलीमके सब निवासियोंको जान पड़ी इसलिये
वह खेत उनकी भाषामें हकलदामा अर्थात लोहूका
२० खेत कहलाया। गीतोंके पुस्तकमें लिखा है कि उसका
घर उजाड़ होय और उसमें कोई न बसे और कि
२१ उसका रखवालीका काम दूसरा लेवे। इसलिये प्रभु
यीशु योहनके डूबके समयसे लेके उस दिनलों कि वह
हमारे पाससे उठा लिया गया जितने दिन हमारे
२२ बीचमें आया जाया किया. जो मनुष्य सब दिन हमारे
संग रहे हैं उन्होंमेंसे उचित है कि एक जन हमारे संग
२३ यीशुके जी उठनेका साक्षी होय। तब उन्होंने दोको
अर्थात यूसफको जो बर्शबा कहावता है जिसका उपनाम
२४ युस्त था और मत्तथियाहको खड़ा किया. और प्रार्थना
करके कहा हे प्रभु सभोंके अन्तर्यामी इन दोनोंमेंसे
२५ एकको जिसे तूने चुना है ठहरा दे. कि वह इस सेव-
काई और प्रेरिताईका अधिकार पावे जिससे यिहूदा
२६ पतित हुआ कि अपने निज स्थानको जाय। तब उन्होंने
चिट्ठियां डालीं और चिट्ठी मत्तथियाहके नामपर निकली
और वह एग्यारह प्रेरितोंके संग गिना गया।

## २ दूसरा पर्ब्ब।

१ पवित्र आत्माका दिया जाना और शिष्योंका अनेक बोलियां बोलना। ५ लोगोंका अचंभा करना। १४ पितरका उपदेश। ३७ बहुत लोगोंका

इस उपदेशको ग्रहण करना। ४१ उनके डूब लेने और सुचाल चल-
नेका बर्णन।

जब पेंतिकोष्ट पर्ब्बका दिन आ पहुंचा तब वे सब १
एक चित्त होकर एकट्ठे हुए थे। और अचांचक प्रबल २
बयारके चलनेकासा स्वर्गसे एक शब्द हुआ जिससे सारा
घर जहां वे बैठे थे भर गया। और आगकीसी जीभें ३
अलग अलग होती हुईं उन्हें दिखाई दिईं और वह
हर एक जनपर ठहर गई। तब वे सब पवित्र आत्मासे ४
परिपूर्ण हुए और जैसे आत्माने उन्हें बुलवाया तैसे आन
आन बोलियां बोलने लगे।

यिरूशलीममें कितने भक्त यिहूदी लोग बास करते थे ५
जो स्वर्गके नीचेके हर एक देशसे आये थे। इस शब्दके ६
होनेपर बहुत लोग एकट्ठे हुए और घबरा गये क्योंकि
उन्होंने उनको हर एक अपनीही भाषामें बोलते हुए
सुना। और वे सब बिस्मित और अचंभित हो आपसमें ७
कहने लगे देखो ये सब जो बोलते हैं क्या गालीली लोग
नहीं हैं। फिर हम लोग क्योंकर हर एक अपने अपने ८
जन्म देशकी भाषामें सुनते हैं। हम जो पर्थी और मादी ९
और एलमी लोग और मिसपतामिया और यिहूदिया
औ कपदोकिया और पन्त औ आशिया, और फ्रूगिया १०
औ पंफुलिया और मिसर औ कुरीनीके आसपासका
लूबिया देश इन सब देशोंके निवासी और रोम नगरसे
आये हुए लोग क्या यिहूदी क्या यिहूदीय मतावलंबी,
क्रीतीय भी औ अरब लोग हैं उन्हें अपनी अपनी बोलि- ११
योंमें ईश्वरके महाकार्य्योंकी बात बोलते हुए सुनते हैं।

१२ सो वे सब बिस्मित हो दुबधामें पड़े और एक दूसरेसे
१३ कहने लगा इसका अर्थ क्या है। परन्तु और लोग ठट्ठेमें
कहने लगे वे नई मदिरासे छकाछक हुए हैं।
१४ तब पितरने एग्यारह शिष्योंके संग खड़ा होके ऊंचे
शब्दसे उन्हें कहा हे यिहूदियो और यिरूशलीमके सब
निवासियो इस बातको बूझ लो और मेरी बातोंपर कान
१५ लगाओ। ये तो मतवाले नहीं हैं जैसा तुम समझते हो
१६ क्योंकि पहरही दिन चढ़ा है। परन्तु यह वह बात है जो
१७ योएल भविष्यद्वक्तासे कही गई, कि ईश्वर कहता है
पिछले दिनोंमें ऐसा होगा कि मैं सब मनुष्योंपर अपना
आत्मा उंडेलूंगा और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां
भविष्यद्वाक्य कहेंगे और तुम्हारे जवान लोग दर्शन देखेंगे
१८ और तुम्हारे वृद्ध लोग स्वप्न देखेंगे। और भी मैं अपने
दासों और अपनी दासियोंपर उन दिनोंमें अपना आत्मा
१९ उंडेलूंगा और वे भविष्यद्वाक्य कहेंगे। और मैं ऊपर
आकाशमें अद्भुत काम और नीचे पृथिवीपर चिन्ह
अर्थात लोहू और आग और धूंएकी भाफ दिखाऊंगा।
२० परमेश्वरके बड़े और प्रसिद्ध दिनके आनेके पहिले सूर्य्य
२१ अंधियारा और चांद लोहूसा हो जायगा। और जो
कोई परमेश्वरके नामकी प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा।
२२ हे इस्रायेली लोगो यह बातें सुनो, यीशु नासरी एक
मनुष्य जिसका प्रमाण ईश्वरसे आश्चर्य्य कर्म्मों और अद्भुत
कामों और चिन्होंसे तुम्हें दिया गया है जो ईश्वरने
तुम्हारे बीचमें जैसा तुम आप भी जानते हो उसके
२३ द्वारासे किये, उसीको जब वह ईश्वरके स्थिर मत और

भविष्यत ज्ञानके अनुसार सोंपा गया तुमने लिया और
अधर्म्मियोंके हाथोंके द्वारा क्रूशपर ठोंकके मार डाला।
उसीको ईश्वरने मृत्युके बंधन खोलके जिला उठाया क्योंकि २४
अन्होना था कि वह मृत्युके वशमें रहे। क्योंकि दाऊदने २५
उसके विषयमें कहा मैंने परमेश्वरको सदा अपने साम्हने
देखा कि वह मेरी दहिनी ओर है जिस्तें मैं डिग न
जाऊं। इस कारण मेरा मन आनन्दित हुआ और मेरी २६
जीभ हर्षित हुई हां मेरा शरीर भी आशामें बिश्राम
करेगा। क्योंकि तू मेरे प्राणको परलोकमें न छोड़ेगा २७
और न अपने पवित्र जनको सड़ने देगा। तूने मुझे जीव- २८
नका मार्ग बताया है तू मुझे अपने सन्मुख आनन्दसे
परिपूर्ण करेगा।

हे भाइयो उस कुलपति दाऊदके विषयमें मैं तुमसे २९
खोलके कहूं. वह तो मरा और गाड़ा भी गया और
उसकी कबर आजलों हमारे बीचमें है। सो भविष्यद्वक्ता ३०
होके और यह जानके कि ईश्वरने मुझसे किरिया खाई
है कि मैं शरीरके भावसे ख्रीष्टको तेरे बंशमेंसे उत्पन्न
करूंगा कि वह तेरे सिंहासनपर बैठे. उसने होन्हारको ३१
आगेसे देखके ख्रीष्टके जी उठनेके विषयमें कहा कि उसका
प्राण परलोकमें नहीं छोड़ा गया और न उसका देह
सड़ गया। इसी यीशुको ईश्वरने जिला उठाया और इस ३२
बातके हम सब साक्षी हैं। सो ईश्वरके दहिने हाथ ऊंच ३३
पद प्राप्त करके और पवित्र आत्माके विषयमें जो कुछ
प्रतिज्ञा किया गया सोई पितासे पाके उसने यह जो तुम
अब देखते और सुनते हो उंडेल दिया है। क्योंकि ३४

दाऊद स्वर्गपर नहीं चढ़ गया परन्तु उसने कहा कि
३५ परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा • जबलों मैं तेरे शत्रुओंको
तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी
३६ ओर बैठ। सो इस्रायेलका सारा घराना निश्चय जाने
कि यह यीशु जिसे तुमने क्रूशपर घात किया इसीको
ईश्वरने प्रभु और ख्रीष्ट ठहराया है।
३७ तब सुननेहारोंके मन छिद गये और वे पितरसे और
३८ दूसरे प्रेरितोंसे बोले हे भाइयो हम क्या करें। पितरने
उनसे कहा पश्चात्ताप करो और हर एक जन यीशु
ख्रीष्टके नामसे डूब लेओ कि तुम्हारा पापमोचन होय
३९ और तुम पवित्र आत्मा दान पाओगे। क्योंकि वह
प्रतिज्ञा तुम्होंके लिये और तुम्हारे सन्तानोंके लिये और
दूर दूरके सब लोगोंके लिये है जितनोंको परमेश्वर हमारा
४० ईश्वर अपने पास बुलावे। बहुत और बातोंसे भी उसने
साक्षी और उपदेश दिया कि इस समयके टेढ़े लोगोंसे
बच जाओ।
४१ तब जिन्होंने उसका बचन आनन्दसे ग्रहण किया
उन्होंने डूब लिया और उस दिन तीन सहस्र जनके अट-
४२ कल शिष्योंमें मिल गये। और वे प्रेरितोंके उपदेशमें
और संगतिमें और रोटी तोड़नेमें और प्रार्थनामें लगे
४३ रहते थे। और सब मनुष्योंको भय हुआ और बहुतेरे
अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितोंके द्वारा प्रगट होते थे।
४४ और सब बिश्वास करनेहारे एकट्ठे थे और उन्होंकी सब
४५ सम्पत्ति साझेकी थी। और वे धन सम्पत्तिको बेचके
जैसा जिसको प्रयोजन होता था तैसा सभोंमें बांट लेते

थे। और वे प्रतिदिन मन्दिरमें एक चित्त होके लगे रहते ४६
थे और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मनकी
सुधाईसे भोजन करते थे. और ईश्वरकी स्तुति करते थे ४७
और सब लोगोंका उनपर अनुग्रह था. और प्रभु त्राण
पानेहारोंको प्रतिदिन मंडलीमें मिलाता था।

## ३ तीसरा पर्ब्ब।

१ पितरसे एक लंगड़ेका चंगा होना। ९ लोगोंका एकट्ठे होना। १२ पितरका उनसे बातें करना।

तीसरे पहर प्रार्थनाके समयमें पितर और योहन एक १
संग मन्दिरको जाते थे। और लोग किसी मनुष्यको जो २
अपनी माताके गर्भहीसे लंगड़ा था लिये जाते थे जिसको
वे प्रतिदिन मन्दिरके उस द्वारपर जो सुन्दर कहावता है
रख देते थे कि वह मन्दिरमें जानेहारोंसे भीख मांगे।
उसने पितर और योहनको देखके कि मन्दिरमें जानेपर ३
हैं उनसे भीख मांगी। पितरने योहनके संग उसकी ओर ४
दृष्टि कर कहा हमारी ओर देख। सो वह उनसे कुछ ५
पानेकी आशा करते हुए उनकी ओर ताकने लगा।
परन्तु पितरने कहा चांदी और सोना मेरे पास नहीं है ६
परन्तु यह जो मेरे पास है मैं तुझे देता हूं यीशु ख्रीष्ट
नासरीके नामसे उठ और चल। तब उसने उसका ७
दहिना हाथ पकड़के उसे उठाया और तुरन्त उसके पांवों
और घुट्टियोंमें बल हुआ। और वह उछलके खड़ा हुआ ८
और फिरने लगा और फिरता और कूदता और ईश्व-
रकी स्तुति करता हुआ उनके संग मन्दिरमें प्रवेश किया।

९ सब लोगोंने उसे फिरते और ईश्वरकी स्तुति करते
१० हुए देखा. और उसको चीन्हा कि वही है जो मन्दिरके
सुन्दर फाटकपर भीखके लिये बैठा रहता था और जो
उसको हुआ था उससे वे अति अचंभित और बिस्मित
११ हुए। जिस समय वह लंगड़ा जो चंगा हुआ था पितर
और योहनको पकड़े रहा सब लोग बहुत अचंभा करते
हुए उस ओसारेमें जो सुलेमानका कहावता है उनके
पास दौड़े आये।

१२ यह देखके पितरने लोगोंसे कहा हे इस्रायेली लोगो
तुम इस मनुष्यसे क्यों अचंभा करते हो अथवा हमारी
ओर क्यों ऐसा ताकते हो कि जैसा हमने अपनीही शक्ति
अथवा भक्तिसे इसको चलनेका सामर्थ्य दिया होता।
१३ इब्राहीम और इसहाक और याकूबके ईश्वरने हमारे
पितरोंके ईश्वरने अपने सेवक यीशुकी महिमा प्रगट किई
जिसे तुमने पकड़वाया और उसको पिलातके सन्मुख
नकारा जब कि उसने उसे छोड़ देनेको ठहराया था।
१४ परन्तु तुमने उस पवित्र और धर्म्मीको नकारा और
१५ मांगा कि एक हत्यारा तुम्हें दिया जाय। और तुमने
जीवनके कर्त्ताको घात किया परन्तु ईश्वरने उसे मृतकों-
१६ मेंसे उठाया और इस बातके हम साक्षी हैं। और उसके
नामके बिश्वाससे उसके नामहीने इस मनुष्यको जिसे
तुम देखते औ जानते हो सामर्थ्य दिया है हां जो बिश्वास
उसके द्वारासे है उसीसे यह संपूर्ण आरोग्य तुम सभोंके
साम्ने इसको मिला है।

१७ और अब हे भाइयो मैं जानता हूं कि तुम्होंने वह

काम अज्ञानतासे किया और वैसे तुम्हारे प्रधानोंने भी
किया। परन्तु ईश्वरने जो बात उसने अपने सब भविष्य- १८
द्वक्ताओंके मुखसे आगे बताई थी कि ख्रीष्ट दुःख भोगेगा
वह बात इस रीतिसे पूरी किई। इसलिये पश्चात्ताप १९
करके फिर जाओ कि तुम्हारे पाप मिटाये जायें जिस्तें
जीवका ठंढा होनेका समय परमेश्वरकी ओरसे आवे.
और वह यीशु ख्रीष्टको भेजे जिसका समाचार तुम्हें २०
आगेसे कहा गया है. जिसे अवश्य है कि स्वर्ग सब २१
बातोंके सुधारे जानेके उस समयलों ग्रहण करे जिसकी
कथा ईश्वरने आदिसे अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओंके
मुखसे कही है।

मूसाने पितरोंसे कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे २२
भाइयोंमेंसे मेरे समान एक भविष्यद्वक्ताको तुम्हारे लिये
उठावेगा जो जो बातें वह तुमसे कहे उन सब बातोंमें
तुम उसकी सुनो। परन्तु हर एक मनुष्य जो उस भवि- २३
ष्यद्वक्ताकी न सुने लोगोंमेंसे नाश किया जायगा। और २४
सब भविष्यद्वक्ताओंने भी शमुएलसे और उसके पीछेके
भविष्यद्वक्ताओंसे लेके जितनोंने बातें किईं इन दिनोंका
भी आगेसे सन्देश दिया है। तुम भविष्यद्वक्ताओंके और २५
उस नियमके सन्तान हो जो ईश्वरने हमारे पितरोंके
संग बांधा कि उसने इब्राहीमसे कहा पृथिवीके सारे
घराने तेरे बंशके द्वारासे आशीस पावेंगे। तुम्हारे पास २६
ईश्वरने अपने सेवक यीशुको उठाके पहिले भेजा जो तुम-
मेंसे हर एकको तुम्हारे कुकर्म्मोंसे फिरानेमें तुम्हें आ-
शीस देता था।

## ४ चौथा पर्ब्ब ।

१ पितर और योहनका बन्दीगृहमें डाला जाना । ५ पितरका महायाजकके आगे उत्तर देना । १३ न्याइयोंका आपसमें बिचार करना और पितर औ योहनको धमकाना और छोड़ देना । २३ उन दोनोंका शिष्योंके संग मिलके प्रार्थना करना । ३२ शिष्योंका अपने धनको आपसमें बांट लेना और बर्णबाकी कथा ।

१ जिस समय वे लोगोंसे कह रहे याजक लोग और
मन्दिरके पहरुओंका अध्यक्ष और सदूकी लोग उनपर
२ चढ़ आये. कि वे अप्रसन्न होते थे इसलिये कि वे लो-
गोंको सिखाते थे और मृतकोंमेंसे जी उठनेकी बात यीशु-
३ के प्रमाणसे प्रचार करते थे। और उन्होंने उन्हें पकड़के
४ बिहानलों बन्दीगृहमें रखा क्योंकि सांझ हुई थी। परन्तु
बचनके सुननेहारोंमेंसे बहुतोंने बिश्वास किया और उन
मनुष्योंकी गिन्ती पांच सहस्रके अटकल हुई।

५ बिहान हुए लोगोंके प्रधान और प्राचीन और अध्या-
६ पक लोग. और हन्नस महायाजक और कियाफा और
योहन और सिकन्दर और महायाजकके घरानेके जितने
७ लोग थे ये सब यिरूशलीममें एकट्ठे हुए। और उन्होंने
पितर और योहनको बीचमें खड़ा करके पूछा तुमने यह
८ काम किस सामर्थ्यसे अथवा किस नामसे किया। तब
पितरने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हो उनसे कहा हे लो-
९ गोंके प्रधानो और इस्रायेलके प्राचीनो. इस दुर्ब्बल मनुष्य-
पर जो भलाई किई गई है यदि उसके विषयमें आज
हमसे पूछा जाता है कि वह किस नामसे चंगा किया
१० गया है. तो आप लोग सब जानिये और समस्त इस्रा-
येली लोग जानें कि यीशु ख्रीष्ट नासरीके नामसे जिसे

आप लोगोंने क्रूशपर घात किया जिसे ईश्वरने मृतकों-
मेंसे उठाया उसीसे यह मनुष्य आप लोगोंके आगे चंगा
खड़ा है। यही वह पत्थर है जिसे आप थवइयोंने तुच्छ ११
जाना जो कोनेका सिरा हुआ है। और किसी दूसरेसे १२
चाण नहीं है क्योंकि स्वर्गके नीचे दूसरा नाम नहीं है जो
मनुष्योंके बीचमें दिया गया है जिससे हमें चाण पाना होगा।
तब उन्होंने पितर और योहनका साहस देखके और १३
यह जानके कि वे बिद्याहीन और अज्ञान मनुष्य हैं अचंभा
किया और उनको चीन्हा कि वे यीशुके संग थे। और १४
उस चंगा किये हुए मनुष्यको उनके संग खड़े देखके वे
कोई बात बिरोधमें न कह सके। परन्तु उनको सभाके १५
बाहर जानेकी आज्ञा देके उन्होंने आपसमें विचार
किया. कि हम इन मनुष्योंसे क्या करें क्योंकि एक प्रसिद्ध १६
आश्चर्य्य कर्म्म उन्होंसे हुआ है यह बात यिरूशलीमके
सब निवासियोंपर प्रगट है और हम नहीं मुकर सकते
हैं। परन्तु जिस्तें लोगोंमें अधिक फैल न जावे आओ १७
हम उन्हें बहुत धमकावें कि वे इस नामसे फिर किसी
मनुष्यसे बात न करें। और उन्होंने उन्हें बुलाके आज्ञा १८
दिई कि यीशुके नामसे कुछ भी मत बोलो और मत सि-
खाओ। परन्तु पितर और योहनने उनको उत्तर दिया १९
कि ईश्वरसे अधिक आप लोगोंको मानना क्या ईश्वरके
आगे उचित है सो आप लोग बिचार कीजिये। क्योंकि २०
जो हमने देखा और सुना है उसको न कहना हमसे
नहीं हो सकता है। तब उन्होंने और धमकी देके उन्हें २१
छोड़ दिया कि उन्हें दंड देनेका लोगोंके कारण कोई

उपाय नहीं मिलता था क्योंकि जो हुआ था उसके लिये
२२ सब लोग ईश्वरका गुणानुबाद करते थे। क्योंकि वह
मनुष्य जिसपर यह चंगा करनेका आश्चर्य्य कर्म्म किया
गया था चालीस बरसके ऊपरका था।
२३ वे छूटके अपने संगियोंके पास आये और जो कुछ
प्रधान याजकों औ प्राचीनोंने उनसे कहा था सो सुना
२४ दिया। वे सुनके एक चित्त होकर ऊंचा शब्द करके
ईश्वरसे बोले हे प्रभु तू ईश्वर है जिसने स्वर्ग औ पृथिवी
२५ औ समुद्र और सब कुछ जो उनमें है बनाया. जिसने
अपने सेवक दाऊदके मुखसे कहा अन्यदेशियोंने क्यों
२६ कोप किया और लोगोंने क्यों व्यर्थ चिन्ता किई। परमेश्वर-
के और उसके अभिषिक्त जनके बिरुद्ध पृथिवीके राजा
लोग खड़े हुए और अध्यक्ष लोग एक संग एकट्ठे हुए।
२७ क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशुके बिरुद्ध जिसे
तूने अभिषेक किया हेरोद और पन्तिय पिलात भी
२८ अन्यदेशियों और इस्रायेली लोगोंके संग एकट्ठे हुए. कि
जो कुछ तेरे हाथ और तेरे मतने आगेसे ठहराया था
२९ कि हो जाय सोई करें। और अब हे प्रभु उनकी धमकि-
३० योंको देख. और चंगा करनेके लिये और चिन्हों और
अद्भुत कामोंके तेरे पवित्र सेवक यीशुके नामसे किये
जानेके लिये अपना हाथ बढ़ानेसे अपने दासोंको यह
३१ दीजिये कि तेरा बचन बड़े साहससे बोलें। जब उन्होंने
प्रार्थना किई थी तब वह स्थान जिसमें वे एकट्ठे हुए थे
हिल गया और वे सब पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुए और
ईश्वरका बचन साहससे बोलने लगे।

विश्वासियोंकी मंडलीका एक मन और एक जीव था ३२
और न कोई अपनी सम्पत्तिमेंसे कोई वस्तु अपनी कहता
था परन्तु उन्होंकी सब सम्पत्ति साझेकी थी। और प्रेरित ३३
लोग बड़े सामर्थ्यसे प्रभु यीशुके जी उठनेकी साक्षी देते
थे और उन सभोंपर बड़ा अनुग्रह था। और न उनमेंसे ३४
कोई दरिद्र था क्योंकि जो जो लोग भूमि अथवा घरोंके
अधिकारी थे सो उन्हें बेचते थे. और बेची हुई वस्तुओंका ३५
दाम लाके प्रेरितोंके पांवोंपर रखते थे और जैसा जिसको
प्रयोजन होता था तैसा हर एकको बांटा जाता था।
और योशी नाम कुप्रस टापूका एक लेवीय जिसे प्रेरितों- ३६
ने बर्णबा अर्थात शांतिका पुत्र कहा उसकी कुछ भूमि
थी। सो वह उसे बेचके रुपैयोंको लाया और प्रेरितों- ३७
के पांवोंपर रखा।

## ५ पांचवां पर्ब्ब।

१ अननियाह और सफीराका कपट करना और मर जाना। १२ प्रेरितोंके अनेक आश्चर्य कर्म्म। १७ प्रेरितोंका बन्दीगृहमें रखा जाना और स्वर्गदूतका उन्हें छुड़ाना। २७ पितरका महायाजकको उत्तर देना। ३३ गमलियेलका परामर्श। ४० प्रेरितोंका मार खाके छूट जाना और सताये जानेमें आनन्द करना।

परन्तु अननियाह नाम एक मनुष्यने अपनी स्त्री सफी- १
राके संगमें कुछ भूमि बेची. और दाममेंसे कुछ रख २
छोड़ा जो उसकी स्त्री भी जानती थी और कुछ लाके
प्रेरितोंके पांवोंपर रखा। परन्तु पितरने कहा हे अननि- ३
याह शैतानने क्यों तेरे मनमें यह मत दिया है कि तू
पवित्र आत्मासे झूठ बोले और भूमिके दाममेंसे कुछ
रख छोड़े। जबलों वह रही क्या तेरी न रही और जब ४

बिक गई क्या तेरे बशमें न थी. यह क्या है कि तूने यह
बात अपने मनमें रखी है. तू मनुष्योंसे नहीं परन्तु
५ ईश्वरसे झूठ बोला है। अननियाह यह बातें सुनतेही
गिर पड़ा औ प्राण छोड़ दिया और इन बातोंके सब
६ सुननेहारोंको बड़ा भय हुआ। और जवानोंने उठके
७ उसे लपेटा और बाहर ले जाके गाड़ा। पहर एकके
पीछे उसकी स्त्री यह जो हुआ था न जानके भीतर
८ आई। इसपर पितरने उससे कहा मुझसे कह दे क्या
तुमने वह भूमि इतनेहीमें बेची. वह बोली हां इतने-
९ में। तब पितरने उससे कहा यह क्या है कि तुम दोनोंने
परमेश्वरके आत्माकी परीक्षा करनेको एक संग युक्ति
बांधी है. देख तेरे स्वामीके गाड़नेहारोंके पांव द्वारपर
१० हैं और वे तुझे बाहर ले जायेंगे। तब वह तुरन्त उसके
पांवोंके पास गिर पड़ी औ प्राण छोड़ दिया और जवानों-
ने भीतर आके उसे मरी हुई पाया और बाहर ले जाके
११ उसके स्वामीके पास गाड़ा। और सारी मंडलीको और
इन बातोंके सब सुननेहारोंको बड़ा भय हुआ।
१२ प्रेरितोंके हाथोंसे बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों-
के बीचमें किये जाते थे और वे सब एक चित्त होके
१३ सुलेमानके ओसारेमें थे। औरोंमेंसे किसीको उनके संग
मिलनेका साहस नहीं था परन्तु लोग उनकी बड़ाई
१४ करते थे। और और भी बहुत लोग पुरुष और स्त्रियां
१५ भी बिश्वास करके प्रभुसे मिल जाते थे। इससे लोग
रोगियोंको बाहर सड़कोंमें लाके खाटों और खटोलोंपर
रखते थे कि जब पितर आवे तब उसकी परछाईं भी

उनमेंसे किसीपर पड़े। आसपासके नगरोंके लोग भी १६
रोगियोंको और अशुद्ध भूतोंसे सताये हुए लोगोंको लिये
हुए यिरूशलीममें एकट्ठे होते थे और वे सब चंगे
किये जाते थे।

तब महायाजक उठा और उसके सब संगी जो सदू- १७
कियोंका पंथ है और डाहसे भर गये. और प्रेरितोंको १८
पकड़के उन्हें सामान्य बन्दीगृहमें रखा। परन्तु परमेश्वरके १९
एक दूतने रातको बन्दीगृहके द्वार खोलके उन्हें बाहर
लाके कहा. जाओ और मन्दिरमें खड़े होके इस जीव- २०
नकी सारी बातें लोगोंसे कहो। यह सुनके उन्होंने २१
भोरको मन्दिरमें प्रवेश किया और उपदेश करने लगे.
तब महायाजक और उसके संगी लोग आये और न्याइ-
योंकी सभाको और इस्रायेलके सन्तानोंके सारे प्राची-
नोंको एकट्ठे बुलाया और प्यादोंको बन्दीगृहमें भेजा कि
उन्हें लावें। प्यादोंने जब पहुंचे तब उन्हें बन्दीगृहमें २२
न पाया परन्तु लौटके सन्देश दिया. कि हमने बन्दीगृह- २३
को बड़ी दृढ़तासे बन्द किये हुए और पहरुओंको बाहर
द्वारोंके साम्ने खड़े हुए पाया परन्तु जब खोला तब भीतर
किसीको न पाया। जब महायाजक और मन्दिरके पहरु- २४
ओंके अध्यक्ष और प्रधान याजकोंने यह बातें सुनीं तब
वे उन्होंके विषयमें दुबधामें पड़े कि यह क्या हुआ
चाहता है। तब किसीने आके उन्हें सन्देश दिया कि २५
देखिये वे मनुष्य जिनको आप लोगोंने बन्दीगृहमें रखा
मन्दिरमें खड़े हुए लोगोंको उपदेश देते हैं। तब पहरु- २६
ओंका अध्यक्ष प्यादोंके संग जाके उन्हें ले आया परन्तु

बरियाईसे नहीं क्योंकि वे लोगोंसे डरते थे ऐसा न हो
कि पत्थरवाह किये जायें।
२७ उन्होंने उन्हें लाके न्याइयोंकी सभामें खड़ा किया
२८ और महायाजकने उनसे पूछा. क्या हमने तुम्हें दृढ़
आज्ञा न दिई कि इस नामसे उपदेश मत करो. तौभी
देखो तुमने यिरूशलीमको अपने उपदेशसे भर दिया
है और इस मनुष्यका लोहू हमोंपर लाने चाहते हो।
२९ तब पितरने और प्रेरितोंने उत्तर दिया कि मनुष्योंकी
आज्ञासे अधिक ईश्वरकी आज्ञाको मानना उचित है।
३० हमारे पितरोंके ईश्वरने यीशुको जिसे आप लोगोंने काठ-
३१ पर लटकाके घात किया जिला उठाया। उसको ईश्वरने
कर्त्ता और त्राताका ऊंच पद अपने दहिने हाथ दिया है
कि वह इस्रायेली लोगोंसे पश्चात्ताप करवाके उन्हें पाप-
३२ मोचन देवे। और इन बातोंमें हम उसके साक्षी हैं
और पवित्र आत्मा भी जिसे ईश्वरने अपने आज्ञाकारि-
योंको दिया है साक्षी है।
३३ यह सुननेसे उनको तीरसा लग गया और वे उन्हें
३४ मार डालनेका विचार करने लगे। परन्तु न्याइयोंकी
सभामें गमलियेल नाम एक फरीशी जो व्यवस्थापक
और सब लोगोंमें मर्य्यादिक था खड़ा हुआ और प्रेरि-
३५ तोंको थोड़ी बेर बाहर करनेकी आज्ञा किई. और
उनसे कहा हे इस्रायेली मनुष्यो अपने विषयमें सचेत
३६ रहो कि तुम इन मनुष्योंसे क्या किया चाहते हो। क्योंकि
इन दिनोंके आगे यूदा यह कहता हुआ उठा कि मैं भी
कोई हूं और लोग गिन्तीमें चार सौके अटकल उसके

साथ लग गये परन्तु वह मारा गया और जितने लोग
उसको मानते थे सब तितर बितर हुए और बिला गये।
उसके पीछे नाम लिखानेके दिनोंमें यिहूदा गालीली उठा ३७
और बहुत लोगोंको अपने पीछे बहका लिया, वह भी
नष्ट हुआ और जितने लोग उसको मानते थे सब तितर
बितर हुए। और अब मैं तुम्हांसे कहता हूं इन मनुष्योंसे ३८
हाथ उठाओ और उन्हें जाने दो क्योंकि यह बिचार
अथवा यह काम यदि मनुष्योंकी ओरसे होय तो लोप
हो जायगा। परन्तु यदि ईश्वरसे है तो तुम उसे लोप ३९
नहीं कर सकते हो, ऐसा न हो कि तुम ईश्वरसे भी
लड़नेहारे ठहरो।

तब उन्होंने उसकी मान लिई और प्रेरितोंको बुलाके ४०
उन्हें कोड़े मारके आज्ञा दिई कि यीशुके नामसे बात मत
करो, तब उन्हें छोड़ दिया। सो वे इस बातसे कि हम ४१
उसके नामके लिये निन्दित होनेके योग्य गिने गये आनन्द
करते हुए न्याइयोंकी सभाके साम्हनेसे चले गये, और ४२
प्रतिदिन मन्दिरमें और घर घर उपदेश करने और यीशु
ख्रीष्टका सुसमाचार सुनानेसे नहीं थंभे।

## ६ छठवां पर्ब्ब।

१ कंगालोंकी सेवाके लिये सात सेवकोंको ठहराया जाना। ८ स्तिफानका
उपदेश करना। ११ बिबादियोंका उसपर झूठा दोष लगाना।

उन दिनोंमें जब शिष्य बहुत होने लगे तब यूनानीय १
भाषा बोलनेहारे इब्रियोंपर कुड़कुड़ाने लगे कि प्रति-
दिनकी सेवकाईमें हमारी बिधवाओंकी सुध नहीं लिई

२ जाती। तब बारह प्रेरितोंने शिष्योंकी मंडलीको अपने
पास बुलाके कहा यह अच्छा नहीं लगता है कि हम
लोग ईश्वरका बचन छोड़के खिलाने पिलानेकी सेवकाईमें
३ रहें। इसलिये हे भाइयो अपनेमेंसे सात सुख्यात मनु-
ष्योंको जो पवित्र आत्मासे और बुद्धिसे परिपूर्ण हों चुन
४ लो कि हम उनको इस कामपर नियुक्त करें। परन्तु हम
५ तो प्रार्थनामें और बचनकी सेवकाईमें लगे रहेंगे। यह
बात सारी मंडलीको अच्छी लगी और उन्होंने स्तिफान
एक मनुष्यको जो बिश्वाससे और पवित्र आत्मासे परि-
पूर्ण था और फिलिप औ प्रखर औ निकानर औ
तीमोन औ पर्मिना और अन्तैखिया नगरके यिहूदीय
६ मतावलंबी निकोलावको चुन लिया, और उन्हें प्रेरितोंके
आगे खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उनपर
७ हाथ रखे। और ईश्वरका बचन फैलता गया और यिरू-
शलीममें शिष्य लोग गिन्तीमें बहुत बढ़ते गये और बहु-
तेरे याजक लोग बिश्वासके अधीन हुए।
८ स्तिफान बिश्वास और सामर्थ्यसे पूर्ण होके बड़े बड़े
अद्भुत और आश्चर्य्य कर्म्म लोगोंके बीचमें करता था।
९ तब उस सभामेंसे जो लिबर्त्तिनियोंकी कहावती है और
कुरीनीय औ सिकन्दरीय लोगोंमेंसे और किलिकिया औ
आशिया देशोंके लोगोंमेंसे कितने उठके स्तिफानसे बिबाद
१० करने लगे, परन्तु उस ज्ञानका और उस आत्माका जिन
करके वह बात करता था साम्हना नहीं कर सकते थे।
११ तब उन्होंने लोगोंको उभाड़ा जो बोले हमने उसको
मूसाके और ईश्वरके बिरोधमें निन्दाकी बातें बोलते

सुना है। और लोगों औ प्राचीनों औ अध्यापकोंको १२
उसकाके वे चढ़ आये और उसे पकड़के न्याइयोंकी
सभामें लाये. और झूठे साक्षियोंको खड़ा किया जो बोले १३
यह मनुष्य इस पवित्र स्थानके और व्यवस्थाके बिरोधमें
निन्दाकी बातें बोलनेसे नहीं थंभता है। क्योंकि हमने १४
उसे कहते सुना है कि यह यीशु नासरी इस स्थानको
ढायगा और जो व्यवहार मूसाने हमें सोंप दिये उन्हें
बदल डालेगा। तब सब लोगोंने जो सभामें बैठे थे उसकी १५
ओर ताकके उसका मुंह स्वर्ग दूतके मुंहके ऐसा देखा।

## ७ सातवां पर्ब्ब।

१ स्तिफानका महायाजकको उत्तर देना. इब्राहीम इत्यादिका बर्णन। १७ मूसाकी कथा। ४१ यिहूदियोंको मूर्त्तिपूजाका वृत्तान्त। ४३ ईश्वरकी सेवाके तम्बूओंका ब्योरा। ५१ यिहूदियोंपर उलहना। ५४ यिहूदियोंका स्तिफानको पत्थरोंसे मारना।

तब महायाजकने कहा क्या यह बातें यूंहीं हैं। स्ति- १ २
फानने कहा हे भाइयो और पितरो सुनो. हमारा पिता
इब्राहीम हारान नगरमें बसनेके पहिले जब मिसपता-
मिया देशमें था तब तेजोमय ईश्वरने उसको दर्शन दिया.
और उससे कहा तू अपने देश और अपने कुटुंबोंमेंसे ३
निकलके जो देश मैं तुझे दिखाऊं उसीमें आ। तब उसने ४
कलदियोंके देशसे निकलके हारानमें बास किया और
वहांसे उसके पिताके मरनेके पीछे ईश्वरने उसको इस
देशमें लाके बसाया जिसमें आप लोग अब बसते हैं।
और उसने इस देशमें उसको कुछ अधिकार न दिया ५
पैर रखने भर भूमि भी नहीं परन्तु उसको पुत्र न रहतेही

उसको प्रतिज्ञा दिई कि मैं यह देश तुझको और तेरे
६ पीछे तेरे बंशको अधिकारके लिये देऊंगा। और ईश्वरने
यूं कहा कि तेरे सन्तान पराये देशमें बिदेशी होंगे और
वे लोग उन्हें दास बनावेंगे और चार सौ बरस उन्हें
७ दुःख देंगे। और जिन लोगोंके वे दास होंगे उन लोगोंको
(ईश्वरने कहा) मैं बिचार करूंगा और इसके पीछे वे
निकल आवेंगे और इसी स्थानमें मेरी सेवा करेंगे।
८ और उसने उसको खतनेका नियम दिया और इस
रीतिसे इसहाक उससे उत्पन्न हुआ और उसने आठवें
दिन उसका खतना किया और इसहाकने याकूबको
९ और याकूबने बारह कुलपतियोंको। और कुलपतियोंने
यूसफसे डाह करके उसे मिसर देश जानेहारोंके हाथ
१० बेचा परन्तु ईश्वर उसके संग था. और उसे उसके सब
क्लेशोंसे छुड़ाके मिसरके राजा फिरऊनके आगे अनुग्रहके
योग्य और बुद्धिमान किया और उसने उसे मिसर
११ देशपर और अपने सारे घरपर प्रधान ठहराया। तब
मिसर और कनानके सारे देशमें अकाल और बड़ा क्लेश
पड़ा और हमारे पितरोंको अन्न नहीं मिलता था।
१२ परन्तु याकूबने यह सुनके कि मिसरमें अनाज है हमारे
१३ पितरोंको पहिली बेर भेजा। और दूसरी बेरमें यूसफ
अपने भाइयोंसे पहचाना गया और यूसफका घराना
१४ फिरऊनपर प्रगट हुआ। तब यूसफने अपने पिता याकू-
बको और अपने सब कुटुंबोंको जो पछत्तर जन थे बुलवा
१५ भेजा। सो याकूब मिसरको गया और वह आप मरा
१६ और हमारे पितर लोग. और वे शिखिम नगरमें पहुं-

चाये गये और उस कबरमें रखे गये जिसे इब्राहीमने
चांदी देके शिखिमके पिता हमोरके सन्तानोंसे मोल लिया।
परन्तु जो प्रतिज्ञा ईश्वरने किरिया खाके इब्राहीमसे १७
किई थी उसका समय ज्योंही निकट आया त्योंही वे
लोग मिसरमें बढ़े और बहुत हो गये। इतनेमें दूसरा १८
राजा उठा जो यूसफको नहीं जानता था। उसने हमारे १९
लोगोंसे चतुराई करके हमारे पितरोंके साथ ऐसी बुराई
किई कि उनके बालकोंको बाहर फिंकवाया कि वे जीते
न रहें। उस समयमें मूसा उत्पन्न हुआ जो परमसुन्दर था २०
और वह अपने पिताके घरमें तीन मास पाला गया। जब २१
वह बाहर फेंका गया तब फिरऊनकी बेटीने उसे उठा
लिया और अपना पुत्र करके उसे पाला। और मूसाको २२
मिसरियोंकी सारी बिद्या सिखाई गई और वह बातों और
कामोंमें सामर्थी था। जब वह चालीस बरसका हुआ तब २३
उसके मनमें आया कि अपने भाइयोंको अर्थात इस्रायेलके
सन्तानोंको देख लेवे। और उसने एकपर अन्याय होते २४
देखके रक्षा किई और मिसरीको मारके सताये हुएका
पलटा लिया। वह बिचार करता था कि मेरे भाई सम- २५
झेंगे कि ईश्वर मेरे हाथसे उन्होंका निस्तार करता है परन्तु
उन्होंने नहीं समझा। अगले दिन वह उन्हें जब वे आपसमें २६
लड़ते थे दिखाई दिया और यह कहके उन्हें मिलाप करने-
को मनाया कि हे मनुष्यो तुम तो भाई हो एक दूसरेसे
क्यों अन्याय करते हो। परन्तु जो अपने पड़ोसीसे अन्याय २७
करता था उसने उसको हटाके कहा किसने तुझे हमोंपर
अध्यक्ष और न्यायी ठहराया। क्या जिस रीतिसे तूने कल २८

मिसरीको मार डाला तू मुझे मार डालने चाहता है।
२९ इस बातपर मूसा भागा और मिदियान देशमें परदेशी
३० हुआ और वहां दो पुत्र उसको उत्पन्न हुए। जब
चालीस बरस बीत गये तब परमेश्वरके दूतने सीनई
पर्व्वतके जंगलमें उसको एक झाड़ीकी आगकी ज्वालामें
३१ दर्शन दिया। मूसाने देखके उस दर्शनसे अचंभा किया
और जब वह दृष्टि करनेको निकट आता था तब परमे-
३२ श्वरका शब्द उस पास पहुंचा, कि मैं तेरे पितरोंका
ईश्वर अर्थात इब्राहीमका ईश्वर और इसहाकका ईश्वर
और याकूबका ईश्वर हूं, तब मूसा कांपने लगा और
३३ दृष्टि करनेका उसे साहस न रहा। तब परमेश्वरने उससे
कहा अपने पांवोंकी जूतियां खोल क्योंकि वह स्थान जिस-
३४ पर तू खड़ा है पवित्र भूमि है। मैंने दृष्टि करके अपने
लोगोंकी जो मिसरमें हैं दुर्दशा देखी है और उनका
कहरना सुना है और उन्हें छुड़ानेको उतर आया हूं
३५ और अब आ मैं तुझे मिसरको भेजूंगा। यही मूसा जिसे
उन्होंने नकारके कहा किसने तुझे अध्यक्ष और न्यायी
ठहराया उसीको ईश्वरने उस दूतके हाथसे जिसने उसको
झाड़ीमें दर्शन दिया अध्यक्ष और निस्तारक करके भेजा।
३६ यही मिसर देशमें और लाल समुद्रमें और जंगलमें
चालीस बरस अद्भुत काम और चिन्ह दिखाके उन्हें नि-
३७ काल लाया। यही वह मूसा है जिसने इस्रायेलके सन्ता-
नोंसे कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयोंमेंसे
मेरे समान एक भविष्यद्वक्ताको तुम्हारे लिये उठावेगा
३८ तुम उसकी सुनो। यही है जो जंगलमें मंडलीके बीचमें

उस दूतके संग जो सीनई पर्ब्बतपर उससे बोला और
हमारे पितरोंके संग था और उसने हमें देनेके लिये
जीवती बाणियां पाईं। पर हमारे पितरोंने उसके आज्ञा- ३९
कारी होनेकी इच्छा न किई परन्तु उसे हटाके अपने
मनमें मिसरकी ओर फिरे. और हारोनसे बोले हमारे ४०
लिये देवोंको बनाइये जो हमारे आगे जायें क्योंकि यह
मूसा जो हमें मिसर देशमेंसे निकाल लाया उसे हम
नहीं जानते क्या हुआ है।

उन दिनोंमें उन्होंने बछड़ू बनाके उस मूर्त्तिके आगे ४१
बलि चढ़ाया और अपने हाथोंके कामोंसे मगन होते
थे। तब ईश्वरने मुंह फेरके उन्हें आकाशकी सेना पूज- ४२
नेको त्याग दिया जैसा भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें लिखा
है कि हे इस्रायेलके घराने क्या तुमने चालीस बरस
जंगलमें मेरे आगे पशुमेध और बलि चढ़ाये। तौभी ४३
तुमने मोलकका तंबू और अपनी देवता रिंफनका तारा
उठा लिया अर्थात उन आकारोंको जो तुमने पूजनेको
बनाये. और मैं तुम्हें बाबुलसे और उधर ले जाके बसाऊंगा।

साक्षीका तंबू जंगलमें हमारे पितरोंके बीचमें था जैसा ४४
उसीनें ठहराया जिसने मूसासे कहा कि जो आकार तूने
देखा है उसके अनुसार उसको बना। और उसको हमारे ४५
पितर लोग यिहोशुआके संग अगलोंसे पाके तब यहां लाये
जब उन्होंने उन अन्यदेशियोंका अधिकार पाया जिन्हें ईश्व-
रने हमारे पितरोंके साम्नेसे निकाल दिया. सोई दाऊदके ४६
दिनोंतक हुआ जिसपर ईश्वरका अनुग्रह था और जिसने
मांगा कि मैं याकूबके ईश्वरके लिये डेरा ठहराऊं। पर ४७

४८ सुलेमानने उसके लिये घर बनाया। परन्तु सर्व्वप्रधान जो
है सो हाथके बनाये हुए मन्दिरोंमें बास नहीं करता है
४९ जैसा भविष्यद्वक्ताने कहा है. कि परमेश्वर कहता है स्वर्ग
मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे चरणोंकी पीढ़ी है तुम मेरे
लिये कैसा घर बनाओगे अथवा मेरे बिश्रामका कौनसा
५० स्थान है। क्या मेरे हाथने यह सब बस्तु नहीं बनाई।
५१ हे हठीले और मन और कानोंके खतनाहीन लोगो
तुम सदा पवित्र आत्माका साम्हना करते हो. जैसा
५२ तुम्हारे पितरोंने तैसा तुम भी। भविष्यद्वक्ताओंमेंसे
तुम्हारे पितरोंने किसको नहीं सताया. और उन्होंने
उन्हें मार डाला जिन्होंने इस धर्म्मी जनके आनेका
आगेसे सन्देश दिया जिसके तुम अब पकड़वानेहारे
५३ और हत्यारे हुए हो. जिन्होंने स्वर्ग दूतोंके द्वारा ठहराई
हुई व्यवस्था पाई है तौभी पालन न किई।
५४ यह बातें सुननेसे उनके मनको तीरसा लग गया और
५५ वे स्तिफानपर दांत पीसने लगे। परन्तु उसने पवित्र आ-
त्मासे परिपूर्ण हो स्वर्गकी ओर ताकके ईश्वरकी महिमाको
५६ और यीशुको ईश्वरकी दहिनी ओर खड़े देखा. और
कहा देखो मैं स्वर्गको खुले और मनुष्यके पुत्रको ईश्वरकी
५७ दहिनी ओर खड़े देखता हूं। तब उन्होंने बड़े शब्दसे
चिल्लाके अपने कान बन्द किये और एक चित्त होके
५८ उसपर लपके. और उसे नगरके बाहर निकालके पत्थ-
रवाह करने लगे और साक्षियोंने अपने कपड़े शावल
५९ नाम एक जवानके पांवों पास उतार रखे। और उन्होंने
स्तिफानको पत्थरवाह किया जो यह कहके प्रार्थना करता

था कि हे प्रभु यीशु मेरे आत्माको ग्रहण कर। और ६०
घुटने टेकके उसने बड़े शब्दसे पुकारा हे प्रभु यह पाप
उनपर मत लगा और यह कहके सो गया।

## ८ आठवां पर्ब्ब।

१ उपद्रवके कारण मंडलीके लोगोंका तितर बितर होना। ४ फिलिपका शोमिरोनियोंको सुसमाचार सुनाना। ९ शिमोन टोन्हाका वृत्तान्त। २५ फिलिप और नपुंसकका बर्णन।

शावल स्तिफानके मारे जानेमें सम्मति देता था. उस १
समय यिरूशलीममेंकी मंडलीपर बड़ा उपद्रव हुआ
और प्रेरितोंको छोड़ वे सब यिहूदिया और शोमिरोन
देशोंमें तितर बितर हुए। भक्त लोगोंने स्तिफानको २
कबरमें रखा और उसके लिये बड़ा बिलाप किया।
शावल मंडलीको नाश करता रहा कि घर घर घुसके ३
पुरुषों और स्त्रियोंको पकड़के बन्दीगृहमें डालता था।

जो तितर बितर हुए सो सुसमाचार प्रचार करते ४
हुए फिरा किये। और फिलिपने शोमिरोनके एक नगरमें ५
जाके खीष्टकी कथा लोगोंको सुनाई। और जो बातें ६
फिलिपने कहीं उन्होंपर लोगोंने उन आश्चर्य्य कर्म्मोंको
जो वह करता था सुनने और देखनेसे एक चित्त होके
मन लगाया। क्योंकि बहुतोंमेंसे जिन्हें अशुद्ध भूत लगे ७
थे वे भूत बड़े शब्दसे पुकारते हुए निकले और बहुत
अर्द्धांगी और लंगड़े लोग चंगे किये गये। और उस नगर- ८
में बड़ा आनन्द हुआ।

परन्तु उस नगरमें आगेसे शिमोन नाम एक मनुष्य ९
था जो टोना करके शोमिरोनके लोगोंको बिस्मित करता

१० था और अपनेको कोई बड़ा पुरुष कहता था। और
छोटेसे बड़ेतक सब उसको मानके कहते थे कि यह मनुष्य
११ ईश्वरकी महा शक्ति ही है। उसने बहुत दिनोंसे उन्हें
टोनोंसे बिस्मित किया था इसलिये वे उसको मानते थे।
१२ परन्तु जब उन्होंने फिलिपका जो ईश्वरके राज्यके और
यीशु ख्रीष्टके नामके विषयमेंका सुसमाचार सुनाता था
बिश्वास किया तब पुरुष और स्त्रियां भी डूब लेने लगे।
१३ तब शिमोनने आप भी बिश्वास किया और डूब लेके फि-
लिपके संग लगा रहा और आश्चर्य्य कर्म्म और बड़े चिन्ह
जो होते थे देखके बिस्मित होता था।
१४ जो प्रेरित यिरूशलीममें थे उन्होंने जब सुना कि शो-
मिरोनियोंने ईश्वरका बचन ग्रहण किया है तब पितर
१५ और योहनको उनके पास भेजा। और उन्होंने जाके
उनके लिये प्रार्थना किई कि वे पवित्र आत्मा पावें।
१६ क्योंकि वह अबलों उनमेंसे किसीपर नहीं पड़ा था केवल
१७ उन्होंने प्रभु यीशुके नामसे डूब लिया था। तब उन्होंने
उनपर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।
१८ शिमोन यह देखके कि प्रेरितोंके हाथोंके रखनेसे पवित्र
१९ आत्मा दिया जाता है उनके पास रुपैये लाया, और
कहा मुझको भी यह अधिकार दीजिये कि जिस किसी-
२० पर मैं हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पावे। परन्तु पितरने
उससे कहा तेरे रुपैये तेरे संग नष्ट होवें क्योंकि तूने ईश्व-
२१ रका दान रुपैयोंसे मोल लेनेका बिचार किया है। तुझे
इस बातमें न भाग न अधिकार है क्योंकि तेरा मन ईश्वरके
२२ आगे सीधा नहीं है। इसलिये अपनी इस बुराईसे पश्चा-

त्ताप करके ईश्वरसे प्रार्थना कर क्या जाने तेरे मनका
बिचार क्षमा किया जाय। क्योंकि मैं देखता हूं कि तू २३
अति कड़वे पित्तमें और अधर्म्मके बंधनमें पड़ा है। शिमो- २४
नने उत्तर दिया कि आप लोग मेरे लिये प्रभुसे प्रार्थना
कीजिये कि जो बातें आप लोगोंने कही हैं उनमेंसे कोई
बात मुझपर न पड़े।
सो वे साक्षी देके और प्रभुका बचन सुनाके यिरूश- २५
लीमको लौटे और उन्होंने शोमिरोनियोंके बहुत गांवोंमें
सुसमाचार प्रचार किया। परन्तु परमेश्वरके एक दूतने २६
फिलिपसे कहा उठके दक्षिणको उस मार्गपर जा जो
यिरूशलीमसे अज्जा नगरको जाता है वह जंगल है। वह २७
उठके गया और देखो कूश देशका एक मनुष्य था जो
नपुंसक और कूशियोंकी राणी कन्दाकीका एक प्रधान
और उसके सारे धनपर अध्यक्ष था और यिरूशलीमको
भजन करनेको आया था। और वह लौटता था और २८
अपने रथपर बैठा हुआ यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका पुस्तक
पढ़ता था। तब आत्माने फिलिपसे कहा निकट जाके २९
इस रथसे मिल जा। फिलिपने उस और दौड़के उस ३०
मनुष्यको यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका पुस्तक पढ़ते हुए सुना
और कहा क्या आप जो पढ़ते हैं उसे बूझते हैं। उसने ३१
कहा यदि कोई मुझे न बतावे तो मैं क्योंकर बूझ सकूं.
और उसने फिलिपसे बिन्ती किई कि चढ़के मेरे संग
बैठिये। धर्म्मपुस्तकका अध्याय जो वह पढ़ता था यही ३२
था कि वह भेड़की नाईं बध होनेको पहुंचाया गया
और जैसा मेम्ना अपने रोम कतरनेहारेके साम्ने अबोल

३३ है तैसा उसने अपना मुंह न खोला। उसकी दीनताईमें
उसका न्याय नहीं होने पाया और उसके समयके लो-
गोंका बर्णन कौन करेगा क्योंकि उसका प्राण पृथिवीसे
३४ उठाया गया। इसपर नपुंसकने फिलिपसे कहा मैं
आपसे बिन्ती करता हूं भविष्यद्वक्ता यह बात किसके
विषयमें कहता है अपने विषयमें अथवा किसी दूसरे-
३५ के विषयमें। तब फिलिपने अपना मुंह खोलके और
धर्म्मपुस्तकके इस बचनसे आरंभ करके यीशुका सुसमा-
३६ चार उसको सुनाया। मार्गमें जाते जाते वे किसी पानी-
के पास पहुंचे और नपुंसकने कहा देखिये जल है डूब
३७ लेनेमें मुझे क्या रोक है। [फिलिपने कहा जो आप
सारे मनसे बिश्वास करते हैं तो हो सकता है. उसने
उत्तर दिया मैं बिश्वास करता हूं कि यीशु ख्रीष्ट ईश्वरका
३८ पुत्र है।] तब उसने रथ खड़ा करनेकी आज्ञा दिई
और वे दोनों फिलिप और नपुंसक भी जलमें उतरे
३९ और फिलिपने उसको डूब दिया। जब वे जलमेंसे ऊपर
आये तब परमेश्वरका आत्मा फिलिपको ले गया और
नपुंसकने उसे फिर नहीं देखा क्योंकि वह अपने मार्ग-
४० पर आनन्द करता हुआ चला गया। परन्तु फिलिप
असदोद नगरमें पाया गया और आगे बढ़के जबलों
कैसरिया नगरमें न पहुंचा सब नगरोंमें सुसमाचार
सुनाता गया।

## ९ नवां पर्ब्ब।

१ दमेसकको जाते हुए शावलका यीशुका दर्शन पाना और मन फिराना।
१० अननियाहपर पावल (अर्थात शावल) की बातका प्रगट होना।

१७ अननियाहके हाथसे पावलका दृष्टि पाना और डूब लेना। १९ पावलका सभाके घरोंमें यीशुका सुसमाचार प्रचार करना और यिहूदियोंका उससे बैर करना। २६ उसका यिरूशलीमके भाइयोंसे मिलना। ३१ पितरका ऐनियको चंगा करना। ३६ दर्काको जिलाना।

शावल जिसकी अबलों प्रभुके शिष्योंको धमकाने और १
घात करनेको सांस फूल रही थी महायाजकके पास गया.
और उससे दमेसक नगरकी सभाओंके नामपर चिट्ठियां २
मांगीं इसलिये कि यदि कोई मिलें क्या पुरुष क्या स्त्रियां
जो उस पन्थके हों तो उन्हें बांधे हुए यिरूशलीमको
ले आवे। परन्तु जाते हुए जब वह दमेसकके निकट ३
पहुंचा तब अचांचक स्वर्गसे एक ज्योति उसकी चारों
ओर चमकी। और वह भूमिपर गिरा और एक शब्द ४
सुना जो उससे बोला हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों
सताता है। उसने कहा हे प्रभु तू कौन है. प्रभुने कहा ५
मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है पैनोंपर लात मारना तेरे
लिये कठिन है। उसने कंपित और अचंभित हो कहा ६
हे प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं करूं. प्रभुने उससे कहा
उठके नगरमें जा और तुझसे कहा जायगा तुझे क्या
करना उचित है। और जो मनुष्य उसके संग जाते थे ७
सो चुप खड़े थे कि वे शब्द तो सुनते थे पर किसीको
नहीं देखते थे। तब शावल भूमिसे उठा परन्तु जब ८
अपनी आंखें खोलीं तब किसीको न देख सका पर वे
उसका हाथ पकड़के उसे दमेसकमें लाये। और वह तीन ९
दिनलों नहीं देख सकता था और न खाता न पीता था।
दमेसकमें अननियाह नाम एक शिष्य था और प्रभुने १०

दर्शनमें उससे कहा हे अननियाह. उसने कहा हे प्रभु
११ देखिये मैं हूं। तब प्रभुने उससे कहा उठके उस गलीमें
जो सीधी कहावती है जा और यिहूदाके घरमें शावल
नाम तारस नगरके एक मनुष्यको ढूंढ क्योंकि देख वह
१२ प्रार्थना करता है. और उसने दर्शनमें यह देखा है
कि अननियाह नाम एक मनुष्यने भीतर आके उसपर
१३ हाथ रखा कि वह दृष्टि पावे। अननियाहने उत्तर दिया
कि हे प्रभु मैंने बहुतोंसे इस मनुष्यके विषयमें सुना है कि
उसने यिरूशलीममें तेरे पवित्र लोगोंसे कितनी बुराई
१४ किई है। और यहां उसको तेरे नामकी सब प्रार्थना
करनेहारोंको बांधनेका प्रधान याजकोंकी ओरसे अधि-
१५ कार है। प्रभुने उससे कहा चला जा क्योंकि वह अन्य-
देशियों और राजाओं और इस्रायेलके सन्तानोंके आगे
मेरा नाम पहुंचानेको मेरा एक चुना हुआ पात्र है।
१६ क्योंकि मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नामके लिये उसको
कैसा बड़ा दुःख उठाना होगा।

१७ तब अननियाहने जाके उस घरमें प्रवेश किया और
उसपर हाथ रखके कहा हे भाई शावल प्रभुने अर्थात
यीशुने जिसने उस मार्गमें जिससे तू आता था तुझको
दर्शन दिया मुझे भेजा है इसलिये कि तू दृष्टि पावे और
१८ पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होवे। और तुरन्त उसकी
आंखोंसे छिलकेसे गिर पड़े और वह तुरन्त देखने लगा
और उठके डूब लिया और भोजन करके बल पाया।

१९ तब शावल कितने दिन दमेसकमेंके शिष्योंके संग था।
२० और वह तुरन्त सभाओंमें यीशुकी कथा सुनाने लगा

कि वह ईश्वरका पुत्र है। और सब सुननेहारे बिस्मित २१
हो कहने लगे क्या यह वह नहीं है जिसने यिरूशलीममें
इस नामकी प्रार्थना करनेहारोंको नाश किया और यहां
इसीलिये आया था कि उन्हें बांधे हुए प्रधान याजकोंके
आगे पहुंचावे। परन्तु शावल और भी दृढ़ होता गया २२
और यही ख्रीष्ट है इस बातका प्रमाण देके दमेसकमें
रहनेहारे यिहूदियोंको ब्याकुल किया। जब बहुत दिन २३
बीत गये तब यिहूदियोंने उसे मार डालनेका आपसमें
बिचार किया। परन्तु उनकी कुमंत्रणा शावलको जान २४
पड़ी, वे उसे मार डालनेको रात और दिन फाटकोंपर
पहरा भी देते थे। परन्तु शिष्योंने रातको उसे लेके २५
टोकरेमें लटकाके भीतपरसे उतार दिया।

जब शावल यिरूशलीममें पहुंचा तब वह शिष्योंसे २६
मिल जाने चाहता था और वे सब उससे डरते थे क्योंकि
वे उसके शिष्य होनेकी प्रतीति नहीं करते थे। परन्तु २७
बर्णबा उसे ले करके प्रेरितोंके पास लाया और उनसे
कह दिया कि उसने क्योंकर मार्गमें प्रभुको देखा था
और प्रभु उससे बोला था और क्योंकर उसने दमेसकमें
यीशुके नामसे खोलके बात किई थी। तब वह यिरूश- २८
लीममें उनके संग आया जाया करने लगा और प्रभु
यीशुके नामसे खोलके बात करने लगा। उसने यूनानीय २९
भाषा बोलनेहारोंसे भी कथा और बिबाद किया पर वे
उसे मार डालनेका यत्न करने लगे। यह जानके भाई ३०
लोग उसे कैसरियामें लाये और तारसको और भेजा।

सो सारे यिहूदिया और गालील और शोमिरोनमें ३१

मंडलियोंको चैन होता था और वे सुधर जाती थीं और
प्रभुके भयमें और पवित्र आत्माकी शांतिमें चलती थीं
३२ और बढ़ जाती थीं। तब पितर सब पवित्र लोगोंमें
फिरते हुए उन्होंके पास भी आया जो लुद्दा नगरमें वास
३३ करते थे। वहां उसने ऐनिय नाम एक मनुष्यको पाया
जो अर्द्धांगी था और आठ बरससे खाटपर पड़ा हुआ
३४ था। पितरने उससे कहा हे ऐनिय यीशु ख्रीष्ट तुझे चंगा
करता है उठ और अपना बिछौना सुधार, तब वह
३५ तुरन्त उठा। और लुद्दा और शारोनके सब निवासियों-
ने उसे देखा और वे प्रभुकी ओर फिरे।
३६ याफो नगरमें तबीथा अर्थात दर्का नाम एक शिष्या
थी, वह सुकर्म्मों और दानोंसे जो वह करती थी पूर्ण
३७ थी। उन दिनोंमें वह रोगी हुई और मर गई और
३८ उन्होंने उसे नहलाके उपरौठी कोठरीमें रखा। और
इसलिये कि लुद्दा याफोके निकट था शिष्योंने यह सुनके
कि पितर वहां है दो मनुष्योंको उस पास भेजके बिन्ती
३९ किई कि हमारे पास आनेमें बिलंब न कीजिये। तब
पितर उठके उनके संग गया और जब वह पहुंचा तब
वे उसे उस उपरौठी कोठरीमें ले गये और सब बिधवाएं
रोती हुई और जो कुरते और बस्त्र दर्का उनके संग होते
हुए बनाती थी उन्हें दिखाती हुई उस पास खड़ी हुई।
४० परन्तु पितरने सभोंको बाहर निकाला और घुटने टेकके
प्रार्थना किई और लोथकी ओर फिरके कहा हे तबीथा
उठ, तब उसने अपनी आंखें खोलीं और पितरको देखके
४१ उठ बैठी। उसने हाथ देके उसको उठाया और पवित्र

लोगों और बिधवाओंको बुलाके उसे जीवती दिखाई।
यह बात सारे याफोमें जान पड़ी और बहुत लोगोंने ४२
प्रभुपर बिश्वास किया। और पितर याफोमें शिमोन नाम ४३
किसी चमारके यहां बहुत दिन रहा।

## १० दसवां पर्ब्ब।

१ स्वर्गदूतकी आज्ञासे कर्णीलियका पितरको बुलवा भेजना। ९ पितरका एक दर्शन पाना। १७ कर्णीलियके दूतोंके संग पितरकी बातचीत और पितरका उनके साथ जाना। २४ कर्णीलियसे पितरकी बातचीत। ३४ पितरका सुसमाचार प्रचार करना। ४४ कर्णीलिय और उसके मित्रोंपर पवित्र आत्माका उतरना और उनका डूब लेना।

कैसरियामें कर्णीलिय नाम एक मनुष्य था जो इतलीय १
नाम पलटनका एक शतपति था। वह भक्त जन था २
और अपने सारे घराने समेत ईश्वरसे डरता था और
लोगोंको बहुत दान देता था और नित्य ईश्वरसे प्रार्थना
करता था। उसने दिनको तीसरे पहरके निकट दर्शनमें ३
प्रत्यक्ष देखा कि ईश्वरका एक दूत उस पास भीतर आया
और उससे बोला हे कर्णीलिय। उसने उसकी ओर ४
ताकके और भयमान होके कहा हे प्रभु क्या है. उसने
उससे कहा तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरणके लिये
ईश्वरके आगे पहुंचे हैं। और अब मनुष्योंको याफो ५
नगर भेजके शिमोनको जो पितर कहावता है बुला। वह ६
शिमोन नाम किसी चमारके यहां जिसका घर समुद्रके
तीरपर है पाहुन है. जो कुछ तुझे करना उचित है सो
वही तुझसे कहेगा। जब वह दूत जो कर्णीलियसे बात ७
करता था चला गया तब उसने अपने सेवकोंमेंसे दोको

और जो उसके यहां लगे रहते थे उनमेंसे एक भक्त
८ योद्धाको बुलाया. और उन्होंको सब बातें सुनाके उन्हें
याफोको भेजा।
९ दूसरे दिन ज्योंही वे मार्गमें चलते थे और नगरके
निकट पहुंचे त्योंही पितर दो पहरके निकट प्रार्थना
१० करनेको कोठेपर चढ़ा। तब वह बहुत भूखा हुआ और
कुछ खाने चाहता था पर जिस समय वे तैयार करते थे
११ वह बेसुध हो गया। और उसने स्वर्गको खुले और बड़ी
चद्दरकी नाईं किसी पात्रको चार कोनोंसे बांधे हुए और
पृथिवीकी ओर लटकाये हुए अपनी ओर उतरते देखा।
१२ उसमें पृथिवीके सब चौपाय और बन पशु और रेंगनेहारे
१३ जन्तु और आकाशके पंछी थे। और एक शब्द उस पास
१४ पहुंचा कि हे पितर उठ मार और खा। पितरने कहा हे
प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र अथवा
१५ अशुद्ध बस्तु नहीं खाई। और शब्द फिर दूसरी बेर उस
पास पहुंचा कि जो कुछ ईश्वरने शुद्ध किया है उसको
१६ तू अशुद्ध मत कह। यह तीन बार हुआ तब वह पात्र
फिर स्वर्गपर उठा लिया गया।
१७ जिस समय पितर अपने मनमें दुबधा करता था कि
यह दर्शन जो मैंने देखा है क्या है देखो वे मनुष्य जो
कर्णीलियकी ओरसे भेजे गये थे शिमोनके घरका ठिकाना
१८ पा करके डेवढ़ीपर खड़े हुए. और पुकारके पूछते थे क्या
१९ शिमोन जो पितर कहावता है यहां पाहुन है। पितर
उस दर्शनके विषयमें सोचताही था कि आत्माने उससे
२० कहा देख तीन मनुष्य तुझे ढूंढते हैं। पर तू उठके उतर

जा और उनके संग बेखटके चला जा क्योंकि मैंने उन्हें
भेजा है। तब पितरने उन मनुष्योंके पास जो कर्णीलियकी २१
ओरसे उस पास भेजे गये थे उतरके कहा देखो जिसे तुम
ढूंढते हो सो मैं हूं तुम किस कारणसे आये हो। वे बोले २२
कर्णीलिय शतपति जो धर्म्मी मनुष्य और ईश्वरसे डरने-
हारा और सारे यिहूदी लोगोंमें सुख्यात है उसको एक
पवित्र दूतसे आज्ञा दिई गई कि आपको अपने घरमें
बुलाके आपसे बातें सुने। तब पितरने उन्हें भीतर बुलाके २३
उनकी पहुनई किई और दूसरे दिन वह उनके संग गया
और याफोके भाइयोंमेंसे कितने उसके साथ हो लिये।

दूसरे दिन उन्होंने कैसरियामें प्रवेश किया और २४
कर्णीलिय अपने कुटुंबों और प्रिय मित्रोंको एकट्ठे बुलाके
उनकी बाट जोहता था। जब पितर भीतर आता था २५
तब कर्णीलिय उससे आ मिला और पांवों पड़के प्रणाम
किया। परन्तु पितरने उसको उठाके कहा खड़ा हो मैं २६
आप भी मनुष्य हूं। और वह उसके संग बातचीत करता २७
हुआ भीतर गया और बहुत लोगोंको एकट्ठे पाया। और २८
उनसे कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशीकी संगति करना
अथवा उसके यहां जाना यिहूदी मनुष्यको बर्ज्जित है
परन्तु ईश्वरने मुझे बताया है कि तू किसी मनुष्यको अप-
वित्र अथवा अशुद्ध मत कह। इसलिये मैं जो बुलाया गया २९
तो इसके बिरुद्ध कुछ न कहके चला आया सो मैं पूछता
हूं कि तुम्होंने किस बातके लिये मुझे बुलाया है। कर्णी- ३०
लियने कहा चार दिन हुए कि मैं इस घड़ीलों उपवास
करता था और तीसरे पहर अपने घरमें प्रार्थना करता था

कि देखो एक पुरुष चमकता बस्त्र पहिने हुए मेरे आगे
३१ खड़ा हुआ. और बोला हे कर्णीलिय तेरी प्रार्थना सुनी
गई है और तेरे दान ईश्वरके आगे स्मरण किये गये
३२ हैं। इसलिये याफो नगर भेजके शिमोनको जो पितर
कहावता है बुला. वह समुद्रके तीरपर शिमोन चमारके
३३ घरमें पाहुन है. वह आके तुझसे बात करेगा। तब मैंने
तुरन्त आपके पास भेजा और आपने अच्छा किया जो
आये हैं सो अब ईश्वरने जो कुछ आपको आज्ञा दिई
है सोई सुननेको हम सब यहां ईश्वरके साम्हने हैं।
३४ तब पितरने मुंह खोलके कहा मुझे सचमुच बूझ पड़ता
है कि ईश्वर मुंह देखा बिचार करनेहारा नहीं है।
३५ परन्तु हर एक देशके लोगोंमें जो उससे डरता है और
धर्म्मके कार्य्य करता है सो उससे ग्रहण किया जाता है।
३६ उसने वह बचन तुम्हांके पास भेजा है जो उसने इस्रा-
येलके सन्तानोंके पास भेजा अर्थात यीशु ख्रीष्टके द्वारासे
३७ जो सभोंका प्रभु है शांतिका सुसमाचार सुनाया। तुम
वह बात जानते हो जो उस डूबके पीछे जिसका योहनने
उपदेश किया गालीलसे आरंभ कर सारे यिहूदियामें
३८ फैल गई. अर्थात नासरत नगरके यीशुके विषयमें क्योंकर
ईश्वरने उसको पवित्र आत्मा और सामर्थ्यसे अभिषेक
किया और वह भलाई करता और सभोंको जो शैतानसे
पेरे जाते थे चंगा करता फिरा क्योंकि ईश्वर उसके संग
३९ था। और हम उन सब कामोंके साक्षी हैं जो उसने यिहू-
दियोंके देशमें और यिरूशलीममें भी किये जिसे लोगोंने
४० काठपर लटकाके मार डाला। उसको ईश्वरने तीसरे दिन

जिला उठाया और उसको प्रगट होने दिया. सब लो- ४१
गोंके आगे नहीं परन्तु साक्षियोंके आगे जिन्हें ईश्वरने
पहिलेसे ठहराया था अर्थात हमोंके आगे जिन्होंने उसके
मृतकोंमेंसे जी उठनेके पीछे उसके संग खाया और पीया।
और उसने हमोंको आज्ञा दिई कि लोगोंको उपदेश और ४२
साक्षी देओ कि वही है जिसको ईश्वरने जीवतों और
मृतकोंका न्यायी ठहराया है। उसपर सारे भविष्यद्वक्ता ४३
साक्षी देते हैं कि जो कोई उसपर बिश्वास करे सो उसके
नामके द्वारा पापमोचन पावेगा।

पितर यह बातें कहताही था कि पवित्र आत्मा बचनके ४४
सब सुननेहारोंपर पड़ा। और खतना किये हुए बिश्वासी ४५
जितने पितरके संग आये थे बिस्मित हुए कि अन्यदेशियों-
पर भी पवित्र आत्माका दान उंडेला गया है। क्योंकि ४६
उन्होंने उन्हें अनेक बोलियां बोलते और ईश्वरकी महि-
मा करते सुना। इसपर पितरने कहा क्या कोई जलको ४७
रोक सकता है कि इन लोगोंको जिन्होंने हमारी नाईं
पवित्र आत्मा पाया है डूब न दिया जावे। और उसने ४८
आज्ञा दिई कि उन्हें प्रभुके नामसे डूब दिया जाय. तब
उन्होंने उससे कई एक दिन ठहर जानेकी बिन्ती किई।

## ११ एग्यारहवां पर्ब्ब।

१ अन्यदेशियोंको सुसमाचार सुनानेके विषयमें पितरका उत्तर। १९ अन्तैखियामें सुसमाचारके प्रचार किये जानेका बर्णन। २७ क्लौदिय कैसरके समयके अकालकी कथा।

जो प्रेरित और भाई लोग यिहूदियामें थे उन्होंने १
सुना कि अन्यदेशियोंने भी ईश्वरका बचन ग्रहण किया

२ है। और जब पितर यिरूशलीमको गया तब खतना किये
३ हुए लोग उससे बिबाद करने लगे. और बोले तूने खत-
४ नाहीन लोगोंके यहां जाके उनके संग खाया। तब पितरने
५ आरंभ कर एक ओरसे उन्हें कह सुनाया. कि मैं याफो
नगरमें प्रार्थना करता था और बेसुध होके एक दर्शन
अर्थात स्वर्गपरसे चार कोनोंसे लटकाई हुई बड़ी चद्दरकी
नाईं किसी पात्रको उतरते देखा और वह मेरे पासलों
६ आया। मैंने उसकी ओर ताकके देख लिया और पृथिवी-
के चौपायों और बन पशुओं और रेंगनेहारे जन्तुओंको
७ और आकाशके पंछियोंको देखा. और एक शब्द सुना जो
८ मुझसे बोला हे पितर उठ मार और खा। मैंने कहा हे
प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध
९ बस्तु मेरे मुंहमें कभी नहीं गई। परन्तु शब्दने दूसरी
बेर स्वर्गसे मुझे उत्तर दिया कि जो कुछ ईश्वरने शुद्ध
१० किया है उसको तू अशुद्ध मत कह। यह तीन बार हुआ
११ तब सब कुछ फिर स्वर्गपर खींचा गया। और देखो
तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरियासे मेरे पास भेजे गये थे
१२ जिस घरमें मैं था उस घरपर आ पहुंचे। तब आत्माने
मुझसे उनके संग बेखटके चले जानेको कहा और ये
छः भाई भी मेरे संग गये और हमने उस मनुष्यके घरमें
१३ प्रवेश किया। और उसने हमें बताया कि उसने क्योंकर
अपने घरमें एक दूतको खड़े हुए देखा था जो उससे
बोला कि मनुष्योंको याफो नगर भेजके शिमोनको जो
१४ पितर कहावता है बुला। वह तुझसे बातें कहेगा जिनके
१५ द्वारा तू और तेरा सारा घराना त्राण पावे। जब मैं बात

करने लगा तब पवित्र आत्मा जिस रीतिसे आरंभमें
हमोंपर पड़ा उसी रीतिसे उन्होंपर भी पड़ा। तब मैंने १६
प्रभुका बचन स्मरण किया कि उसने कहा योहनने जलमें
डूब दिया परन्तु तुम्हें पवित्र आत्मामें डूब दिया जायगा।
सो जब कि ईश्वरने प्रभु यीशु ख्रीष्टपर बिश्वास करनेहा- १७
रोंको जैसे हमोंको तैसे उन्होंको भी एकसां दान दिया
तो मैं कैान था कि मैं ईश्वरको रोक सकता। वे यह १८
सुनके चुप हुए श्रोर यह कहके ईश्वरकी स्तुति करने लगे
कि तब तो ईश्वरने अन्यदेशियोंको भी पश्चात्ताप दान
किया है कि वे जीवें।

स्तिफानके कारण जो क्लेश हुआ तिसके हेतुसे जो १९
लोग तितर बितर हुए थे उन्होंने फैनीकिया देश श्रोर
कुप्रस टापू श्रोर अन्तैखिया नगरलें फिरते हुए किसी
श्रोरको नहीं केवल यिहूदियोंको बचन सुनाया। परन्तु २०
उनमेंसे कितने कुप्री श्रोर कुरीनीय मनुष्य थे जो अन्तै-
खियामें आके यूनानियोंसे बात करने श्रोर प्रभु यीशुका
सुसमाचार सुनाने लगे। श्रोर प्रभुका हाथ उनके संग २१
था श्रोर बहुत लोग बिश्वास करके प्रभुकी श्रोर फिरे।
तब उनके विषयमें वह बात यिरूशलीममेंकी मंडलीके २२
कानोंमें पहुंची श्रोर उन्होंने बर्णबाको भेजा कि वह अन्तै-
खियालों जाय। वह जब पहुंचा श्रोर ईश्वरके अनुग्रहको २३
देखा तब आनन्दित हुआ श्रोर सभोंको उपदेश दिया
कि मनकी अभिलाषा सहित प्रभुसे मिले रहो। क्योंकि २४
वह भला मनुष्य श्रोर पवित्र आत्मा श्रोर बिश्वाससे परि-
पूर्ण था• श्रोर बहुत लोग प्रभुसे मिल गये। तब बर्णबा २५

२६ शावलको ढूंढनेके लिये तारसको गया। और वह उसको
पाके अन्तैखियामें लाया और वे दोनों जन बरस भर मंड-
लीमें एकट्ठे होते थे और बहुत लोगोंको उपदेश देते थे
और शिष्य लोग पहिले अन्तैखियामें ख्रीष्टियान कहलाये।
२७ उन दिनोंमें कई एक भविष्यद्वक्ता यिरूशलीमसे अन्तै-
२८ खियामें आये। उनमेंसे आगाब नाम एक जनने उठके
आत्माकी शिक्षासे बताया कि सारे संसारमें बड़ा अकाल
पड़ेगा और वह अकाल क्लौदिय कैसरके समयमें पड़ा।
२९ तब शिष्योंने हर एक अपनी अपनी सम्पत्तिके अनुसार
यिहूदियामें रहनेहारे भाइयोंकी सेवकाईके लिये कुछ
३० भेजनेको ठहराया। और उन्होंने यही किया अर्थात
बर्णबा और शावलके हाथ प्राचीनोंके पास कुछ भेजा।

## १२ बारहवां पर्ब्ब।

१ हेरोदका याकूबको बध करना और पितरको बन्दीगृहमें डालना। ५ दूतका पितरको छुड़ाना। १२ पितरका मरियमके घरमें जाना। १८ हेरोदका पहरुओंको बध करवाना। २० हेरोदका मरण।

१ उस समय हेरोद राजाने मंडलीके कई एक जनोंको
२ दुःख देनेको उनपर हाथ बढ़ाये। उसने योहनके भाई
३ याकूबको खड्गसे मार डाला। और जब उसने देखा कि
यिहूदी लोग इससे प्रसन्न होते हैं तब उसने पितरको
४ भी पकड़ा और अखमीरी रोटीके पर्ब्बके दिन थे। और
उसने उसे पकड़के बन्दीगृहमें डाला और चार चार
योद्धाओंके चार पहरोंमें सौंप दिया कि वे उसको रखें
और उसको निस्तार पर्ब्बके पीछे लोगोंके आगे निकाल
लानेकी इच्छा करता था।

सो पितर बन्दीगृहमें पहरेमें रहता था परन्तु मंडली ५
लै। लगाके उसके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करती थी।
और जब हेरोद उसे निकाल लानेपर था उसी रात ६
पितर दो योद्धाओंके बीचमें दो जंजीरोंसे बंधा हुआ सोता
था और पहरुए द्वारके आगे बन्दीगृहकी रक्षा करते थे।
और देखो परमेश्वरका एक दूत आ खड़ा हुआ और ७
कोठरीमें ज्योति चमकी और उसने पितरके पंजरपर
हाथ मारके उसे जगाके कहा शीघ्र उठ. तब उसकी
जंजीरें उसके हाथोंसे गिर पड़ीं। दूतने उससे कहा कमर ८
बांध और अपने जूते पहिन ले और उसने वैसा किया.
तब उससे कहा अपना वस्त्र ओढ़के मेरे पीछे हो ले।
और वह निकलके उसके पीछे चलने लगा और नहीं ९
जानता था कि जो दूतसे किया जाता है सो सत्य है परन्तु
समझता था कि मैं दर्शन देखता हूं। परन्तु वे पहिले १०
और दूसरे पहरेमेंसे निकले और नगरमें जानेके लोहे-
के फाटकपर पहुंचे जो आपसे आप उनके लिये खुल
गया और वे निकलके एक गलीके अन्तलों बढ़े और
तुरन्त दूत पितरके पाससे चला गया। तब पितरको चेत ११
हुआ और उसने कहा अब मैं निश्चय जानता हूं कि
प्रभुने अपना दूत भेजा है और मुझे हेरोदके हाथसे
और सब बातोंसे जिनकी आस यिहूदी लोग देख-
ते थे छुड़ाया है।

और यह जानके वह योहन जो मार्क कहावता है १२
तिसकी माता मरियमके घरपर आया जहां बहुत लोग
एकट्ठे हुए प्रार्थना करते थे। जब पितर डेवढ़ीके द्वारपर १३

खटखटाया तब रोदा नाम एक दासी चुप चाप सुननेको
१४ आई। और पितरका शब्द पहचानके उसने आनन्दके
मारे द्वार न खोला परन्तु भीतर दौड़के बताया कि
१५ पितर द्वारपर खड़ा है। उन्होंने उससे कहा तू बौराही
है परन्तु वह दृढ़तासे बोली कि ऐसाही है. तब उन्हों-
१६ ने कहा उसका दूत है। परन्तु पितर खटखटाता रहा
१७ और वे द्वार खोलके उसे देखके बिस्मित हुए। तब
उसने हाथसे उन्हें चुप रहनेका सैन किया और उनसे
कहा कि प्रभु क्योंकर उसको बन्दीगृहमेंसे बाहर लाया
था और बोला यह बातें याकूबसे और भाइयोंसे कह
दीजियो तब निकलके दूसरे स्थानको गया।

१८ बिहान हुए योद्धाओंमें बड़ी घबराहट होने लगी
१९ कि पितर क्या हुआ। जब हेरोदने उसे ढूंढ़ा और
नहीं पाया तब पहरुओंको जांचके आज्ञा किई कि वे
बध किये जायें. तब यिहूदियासे कैसरियाको गया
और वहां रहा।

२० हेरोदको सोर और सीदोनके लोगोंसे लड़नेका
मन था परन्तु वे एक चित्त होके उस पास आये और
बलास्तको जो राजाके शयनस्थानका अध्यक्ष था मनाके
मिलाप चाहा क्योंकि राजाके देशसे उनके देशका पालन
२१ होता था। और ठहराये हुए दिनमें हेरोदने राजबस्त्र
२२ पहिनके सिंहासनपर बैठके उन्होंको कथा सुनाई। और
लोग पुकार उठे कि ईश्वरका शब्द है मनुष्यका नहीं।
२३ तब परमेश्वरके एक दूतने तुरन्त उसको मारा क्योंकि
उसने ईश्वरकी स्तुति न किई और कीड़े उसको खा

गये और उसने प्राण छोड़ दिया। परन्तु ईश्वरका बचन २४
अधिक अधिक फैलता गया।
जब बर्णबा और शावलने वह सेवकाई पूरी किई २५
थी तब वे योहनको भी जो मार्क कहावता था संग लेके
यिरूशलीमसे लौटे।

## १३ तेरहवां पर्व्व।

१ बर्णबा और पावलका आन आन देशोंमें भेजा जाना। ४ उनका सुसमाचार प्रचार करना और इलुमा टोन्हेका साम्ना करना। १३ उनका पिसिदिया देशके अन्तैखिया नगरमें पञ्चना और पावलका उपदेश। ४२ बज्जत लोगोंका इस उपदेशको ग्रहण करना। ४४ यिह्नदियोंका बिरोध करना।

अन्तैखियामेंकी मंडलीमें कितने भविष्यद्वक्ता और १
उपदेशक थे अर्थात बर्णबा और शिमियोन जो निगर
कहावता है और कुरीनीय लूकिय और चौथाईके राजा
हेरोदका दूधभाई मनहेम और शावल। जिस समय २
वे उपवास सहित प्रभुकी सेवा करते थे पवित्र आत्माने
कहा मैंने बर्णबा और शावलको जिस कामके लिये
बुलाया है उस कामके निमित्त उन्हें मेरे लिये अलग
करो। तब उन्होंने उपवास औ प्रार्थना करके और उन- ३
पर हाथ रखके उन्हें बिदा किया।
सो वे पवित्र आत्माके भेजे हुए सिलूकिया नगरको गये ४
और वहांसे जहाजपर कुप्रस टापूको चले। और साला- ५
मी नगरमें पहुंचके उन्होंने ईश्वरका बचन यिहूदियोंकी
सभाओंमें प्रचार किया और योहन भी सेवक होके
उनके संग था। और उन्होंने उस टापूके बीचसे पाफो ६

नगरलों पहुंचके एक टोन्हेको पाया जो झूठा भविष्यदक्ता
७ और यिहूदी था जिसका नाम बरयीशु था। वह सर्ज्जिय
पावल प्रधानके संग था जो बुद्धिमान पुरुष था. उसने
बर्णबा और शावलको अपने पास बुलाके ईश्वरका बचन
८ सुनने चाहा। परन्तु इलुमा टोन्हा कि उसके नामका
यही अर्थ है उनका साम्ना करके प्रधानको बिश्वासकी
९ ओरसे बहकाने चाहता था। तब शावल अर्थात पावल-
ने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होके और उसकी ओर
१० ताकके कहा. हे सारे कपट और सब कुचालसे भरे
हुए शैतानके पुत्र सकल धर्म्मके बैरी क्या तू प्रभुके सीधे
११ मार्गोंको टेढ़ा करना न छोड़ेगा। अब देख प्रभुका हाथ
तुझपर है और तू कितने समयलों अंधा होगा और
सूर्य्यको न देखेगा. तुरन्त धुंधलाई और अंधकार उस-
पर पड़ा और वह इधर उधर टटोलने लगा कि लोग
१२ उसका हाथ पकड़ें। तब प्रधानने जो हुआ था सो देखके
प्रभुके उपदेशसे अचंभित हो बिश्वास किया।
१३ पावल और उसके संगी पाफ़ोसे जहाज़ खोलके पंफु-
लिया देशके पर्गा नगरमें आये परन्तु योहन उन्हें छोड़के
१४ यिरूशलीमको लौट गया। और पर्गासे आगे बढ़के
वे पिसिदिया देशके अन्तैखिया नगरमें पहुंचे और
१५ बिश्रामके दिन सभाके घरमें प्रवेश करके बैठ गये। और
व्यवस्था और भविष्यदक्ताओंके पुस्तकके पढ़े जानेके
पीछे सभाके अध्यक्षोंने उनके पास कहला भेजा कि हे
भाइयो यदि लोगोंके लिये उपदेशकी कोई बात आप
१६ लोगोंके पास होय तो कहिये। तब पावलने खड़ा होके

और हाथसे सैन करके कहा हे इस्रायेली लोगो और
ईश्वरसे डरनेहारो सुनो। इन इस्रायेली लोगोंके ईश्वरने १७
हमारे पितरोंको चुन लिया और इन लोगोंके मिसर
देशमें परदेशी होते हुए उन्हें ऊंच पद दिया और बलवन्त
भुजासे उस देशमेंसे निकाल लिया। और उसने चालीस १८
एक बरस जंगलमें उनका निर्ब्बाह किया. और कनान १९
देशमें सात राज्यके लोगोंको नाश करके उनका देश
चिट्ठियां डलवाके उनको बांट दिया। इसके पीछे उसने २०
साढ़े चार सौ बरसके अटकल शमुएल भविष्यद्वक्तालों
उन्हें न्याय करनेहारे दिये। उस समयसे उन्होंने राजा २१
चाहा और ईश्वरने चालीस बरसलों बिन्यामीनके कुलके
एक मनुष्य अर्थात कीशके पुत्र शावलको उन्हें दिया।
और उसको अलग करके उसने उन्होंके लिये दाऊदको २२
राजा होनेको उठाया जिसके विषयमें उसने साक्षी देके
कहा मैंने यिशीका पुत्र दाऊद अपने मनके अनुसार
एक मनुष्य पाया है जो मेरी सारी इच्छाको पूरी करेगा।
इसीके बंशमेंसे ईश्वरने प्रतिज्ञाके अनुसार इस्रायेलके २३
लिये एक त्राणकर्त्ता अर्थात यीशुको उठाया। पर उसके २४
आनेके आगे योहनने सब इस्रायेली लोगोंको पश्चात्तापके
डूबका उपदेश दिया। और योहन जब अपनी दौड़ २५
पूरी करता था तब बोला तुम क्या समझते हो मैं कौन
हूं. मैं वह नहीं हूं परन्तु देखो मेरे पीछे एक आता है
जिसके पांवोंकी जूती मैं खोलनेके योग्य नहीं हूं।

हे भाइयो तुम जो इब्राहीमके बंशके सन्तान हो और २६
तुम्होंमें जो ईश्वरसे डरनेहारे हो तुम्हारे पास इस त्राण-

२७ की कथा भेजी गई है। क्योंकि यिरूशलीमके निवासि-
योंने और उनके प्रधानोंने यीशुको न पहचानके उसका
बिचार करनेमें भविष्यद्वक्ताओंकी बातें भी जो हर एक
२८ बिश्रामवार पढ़ी जाती हैं पूरी किईं। और उन्होंने बधके
योग्य कोई दोष उसमें न पाया तौभी पिलातसे बिन्ती
२९ किई कि वह घात किया जाय। और जब उन्होंने उसके
विषयमें लिखी हुई सब बातें पूरी किई थीं तब उसे
३० काठपरसे उतारके कबरमें रखा। परन्तु ईश्वरने उसे
३१ मृतकोंमेंसे उठाया। और उसने बहुत दिन उन्होंको जो
उसके संग गालीलसे यिरूशलीममें आये थे दर्शन दिया
३२ और वे लोगोंके पास उसके साक्षी हैं। हम उस प्रतिज्ञा-
का जो पितरोंसे किई गई तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं.
३३ कि ईश्वरने यीशुको उठानेमें यह प्रतिज्ञा उनके सन्तानों-
के अर्थात हमोंके लिये पूरी किई है जैसा दूसरे गीतमें
भी लिखा है कि तू मेरा पुत्र है मैंने आजही तुझे जन्म
३४ दिया है। और उसने जो उसको मृतकोंमेंसे उठाया
और वह कभी सड़ न जायगा इसलिये यूं कहा है
कि मैंने दाऊदपर जो अचल कृपा किई सो तुमपर
३५ करूंगा। इसलिये उसने दूसरे एक गीतमें भी कहा है
३६ कि तू अपने पवित्र जनको सड़ने न देगा। दाऊद तो
ईश्वरकी इच्छासे अपने समयके लोगोंकी सेवा करके
सो गया और अपने पितरोंमें मिला और सड़ गया।
३७ परन्तु जिसको ईश्वरने जिला उठाया वह नहीं सड़
३८ गया। इसलिये हे भाइयो जानो कि इसीके द्वारा पाप-
३९ मोचनकी कथा तुमको सुनाई जाती है। और इसीके

हेतुसे हर एक बिश्वासी जन सब बातोंसे निर्दोष ठहराया
जाता है जिनसे तुम मूसाकी व्यवस्थाके हेतुसे निर्दोष
नहीं ठहर सकते थे। इसलिये चौकस रहो कि जो ४०
भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें कहा गया है सो तुमपर न
पड़े. कि हे निन्दको देखो और अचंभित हो और लोप ४१
हो जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे दिनोंमें एक काम करता
हूं ऐसा काम कि यदि कोई तुमसे उसका बर्णन करे
तो तुम कभी प्रतीति न करोगे।

जब यिहूदी लोग सभाके घरमेंसे निकलते थे तब ४२
अन्यदेशियोंने बिन्ती किई कि यह बातें अगले बिश्राम-
वार हमसे कही जायें। और जब सभा उठ गई तब यिहू- ४३
दियोंमेंसे और भक्तिमान यिहूदीय मतावलंबियोंमेंसे
बहुत लोग पावल और बर्णबाके पीछे हो लिये और
उन्होंने उनसे बातें करके उन्हें समझाया कि ईश्वरके
अनुग्रहमें बने रहो।

अगले बिश्रामवार नगरके प्राय सब लोग ईश्वरका ४४
बचन सुननेको एकट्ठे आये। परन्तु यिहूदी लोग भीड़- ४५
को देखके डाहसे भर गये और बिबाद औ निन्दा करते
हुए पावलकी बातोंके बिरुद्ध बोलने लगे। तब पावल ४६
और बर्णबाने साहस करके कहा अवश्य था कि ईश्वरका
बचन पहिले तुम्होंसे कहा जाय परन्तु जब कि तुम उसे
दूर करते हो और अपने तईं अनन्त जीवनके अयोग्य
ठहराते हो देखो हम अन्यदेशियोंकी ओर फिरते हैं।
क्योंकि परमेश्वरने हमें यूंहीं आज्ञा दिई है कि मैंने तुझे ४७
अन्यदेशियोंकी ज्योति ठहराई है कि तू पृथिवीके अन्तलों

४८ चाणकर्त्ता होवे। तब अन्यदेशी लोग जो सुनते थे आन-
न्दित हुए और प्रभुके बचनकी बड़ाई करने लगे और
जितने लोग अनन्त जीवनके लिये ठहराये गये थे उन्होंने
४९ बिश्वास किया। तब प्रभुका बचन उस सारे देशमें फैलने
५० लगा। परन्तु यिहूदियोंने भक्तिमती और कुलवन्ती स्त्रि-
योंको और नगरके बड़े लोगोंको उसकाया और पावल
और बर्णबापर उपद्रव करवाके उन्हें अपने सिवानोंमेंसे
५१ निकाल दिया। तब वे उनके बिरुद्ध अपने पांवोंकी धूल
५२ झाड़के इकोनिया नगरमें आये। और शिष्य लोग आन-
न्दसे और पवित्र आत्मासे पूर्ण हुए।

## १४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ इकोनिया नगरमें बर्णबा और पावलका सताया जाना। ८ पावलका लुस्त्रा नगरमें एक लंगड़ेको चंगा करना। ११ नगरके लोगोंका उन्हें पूजनेकी इच्छा करना। १९ उन्होंका पावलको पत्थरवाह करना। २१ प्रेरितोंका अनेक नगरोंमें उपदेश करना और अन्तैखियाको लौट जाना।

१ इकोनियामें उन्होंने यिहूदियोंके सभाके घरमें एक
संग प्रवेश किया और ऐसी बातें किईं कि यिहूदियों
और यूनानियोंमेंसे भी बहुत लोगोंने बिश्वास किया।
२ परन्तु न माननेहारे यिहूदियोंने अन्यदेशियोंके मन
३ भाइयोंके बिरुद्ध उसकायें और बुरे कर दिये। सो उन्होंने
प्रभुके भरोसे जो अपने अनुग्रहके बचनपर साक्षी देता
था और उनके हाथोंसे चिन्ह और अद्भुत काम कर-
वाता था साहससे बात करते हुए बहुत दिन बिताये।
४ और नगरके लोग बिभिन्न हुए और कितने तो यिहूदि-

योंके साथ श्रोर कितने प्रेरितोंके साथ थे। परन्तु जब ५
अन्यदेशियों श्रोर यिहूदियोंने भी अपने प्रधानोंके संग
उनकी दुर्द्दशा करने श्रोर उन्हें पत्थरवाह करनेका हल्ला
किया, तब वे जान गये श्रोर लुकाश्रोनिया देशके लुस्त्रा ६
श्रोर दर्बी नगरोंमें श्रोर आसपासके देशमें भाग गये,
श्रोर वहां सुसमाचार प्रचार करने लगे। ७
लुस्त्रामें एक मनुष्य पांवोंका निर्बल बैठा था जो ८
अपनी माताके गर्भहीसे लंगड़ा था श्रोर कभी नहीं चला
था। वह पावलको बात करते सुनता था श्रोर उसने ९
उसको श्रोर ताकके देखा कि इसको चंगा किये जानेका
बिश्वास है, श्रोर बड़े शब्दसे कहा अपने पांवोंपर सीधा १०
खड़ा हो, तब वह कूदने श्रोर फिरने लगा।
पावलने जो किया था उसे देखके लोगोंने लुकाश्रो- ११
नीय भाषामें ऊंचे शब्दसे कहा देवगण मनुष्योंके समान
होके हमारे पास उतर आयें हैं। श्रोर उन्होंने बर्णबाको १२
जूपितर श्रोर पावलको हर्मि कहा क्योंकि वह बात करने-
में मुख्य था। श्रोर जूपितर जो उनके नगरके साम्हने था १३
उसका याजक बैलोंको श्रोर फूलोंके हारोंको फाटकोंपर
लाके लोगोंके संग बलिदान किया चाहता था। परन्तु १४
प्रेरितोंने अर्थात बर्णबा श्रोर पावलने यह सुनके अपने
कपड़े फाड़े श्रोर लोगोंकी श्रोर लपक गये श्रोर पुकारके
बोले, हे मनुष्यो यह क्यों करते हो, हम भी तुम्हारे १५
समान दुःख सुख भोगी मनुष्य हैं श्रोर तुम्हें सुसमाचार
सुनाते हैं कि तुम इन ब्यर्थ विषयोंसे जीवते ईश्वरकी
श्रोर फिरो जिसने स्वर्ग श्रो पृथिवी श्रो समुद्र श्रोर सब

१६ कुछ जो उनमें है बनाया। उसने बीती हुई पीढ़ियोंमें
सब देशोंके लोगोंको अपने अपने मार्गोंमें चलने दिया।
१७ तौभी उसने अपनेको बिना साक्षी नहीं रख छोड़ा है
कि वह भलाई किया करता और आकाशसे बर्षा और
फलवन्त ऋतु देके हमोंके मनको भोजन और आनन्दसे
१८ तृप्त किया करता है। यह कहनेसे उन्होंने लोगोंको
कठिनतासे रोका कि वे उनके आगे बलिदान न करें।
१९ परन्तु कितने यिहूदियोंने अन्तैखिया और इकोनि-
यासे आके लोगोंको मनाया और पावलको पत्थरवाह
किया और यह समझके कि वह मर गया है उसे नगर-
२० के बाहर घसीट ले गये। परन्तु जब शिष्य लोग उस पास
घिर आये तब उसने उठके नगरमें प्रवेश किया और
दूसरे दिन बर्णबाके संग दर्बीको गया।
२१ जब उन्होंने उस नगरके लोगोंको सुसमाचार सुनाया
और बहुतोंको शिष्य किया था तब वे लुस्त्रा और
२२ इकोनिया और अन्तैखियाको लौटे. और यह उपदेश
करते हुए कि बिश्वासमें बने रहो और कि हमें बड़े
क्लेशसे ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना होगा शिष्योंके मन-
२३ को स्थिर करते गये। और हर एक मंडलीमें प्राचीनों-
को उनपर ठहराके उन्होंने उपवास सहित प्रार्थना करके
उन्हें प्रभुके हाथ सोंपा जिसपर उन्होंने बिश्वास किया
२४ था। और पिसिदियासे होके वे पंफुलियामें आये.
२५ और पर्गामें बचन सुनाके आतालिया नगरको गये।
२६ और वहांसे वे जहाजपर अन्तैखियाको चले जहांसे वे
उस कामके लिये जो उन्होंने पूरा किया था ईश्वरके

अनुग्रहपर सोंपे गये थे। वहां पहुंचके और मंडलीको २७
एकट्ठी करके उन्होंने बताया कि ईश्वरने उन्होंके साथ
कैसे बड़े काम किये थे और कि उसने अन्यदेशियोंके
लिये बिश्वासका द्वार खोला था। और उन्होंने वहां शिष्यों- २८
के संग बहुत दिन बिताये।

## १५ पन्द्रहवां पर्व्व।

१ खतनेके विषयमें बिबाद होना और उसके निर्णयके लिये कितने भाइयों-का यिरूशलीमको जाना। ६ प्रेरितोंका इस बातका बिचार करना। २२ इस बातका निर्णय पत्रमें लिखना। ३० इस पत्रका अन्तैखियामें पहुंचाया जाना। ३६ पावल और बर्णबाका अलग अलग यात्रा करना।

कितने लोग यिहूदियासे आके भाइयोंको उपदेश १
देने लगे कि जो मूसाकी रीतिके अनुसार तुम्हारा खत-
ना न किया जाय तो तुम त्राण नहीं पा सकते हो। जब २
पावल और बर्णबासे और उन्होंसे बहुत बिबाद और
बिचार हुआ था तब भाइयोंने यह ठहराया कि पावल
और बर्णबा और हममेंसे कितने और जन इस प्रश्नके
विषयमें यिरूशलीमको प्रेरितों और प्राचीनोंके पास
जायेंगे। सो मंडलीसे कुछ दूर पहुंचाये जाके वे फैनी- ३
किया और शोमिरोनसे होते हुए अन्यदेशियोंके मन
फेरनेका समाचार कहते गये और सब भाइयोंको बहुत
आनन्दित किया। जब वे यिरूशलीममें पहुंचे तब मंड- ४
लीने और प्रेरितों और प्राचीनोंने उन्हें ग्रहण किया
और उन्होंने बताया कि ईश्वरने उन्होंके साथ कैसे बड़े
काम किये थे। परन्तु फरीशियोंके पंथके लोगोंमेंसे ५
कितने जिन्होंने बिश्वास किया था उठके बोले उन्हें

खतना करना और मूसाकी व्यवस्थाको पालन करनेकी
आज्ञा देना उचित है।
६ तब प्रेरित और प्राचीन लोग इस बातका बिचार
७ करनेको एकट्ठे हुए। जब बहुत बिबाद हुआ तब पितरने
उठके उनसे कहा हे भाइयो तुम जानते हो कि बहुत
दिन हुए ईश्वरनें हममेंसे चुन लिया कि मेरे मुंहसे
अन्यदेशी लोग सुसमाचारका बचन सुनके बिश्वास करें।
८ और अन्तर्यामी ईश्वरने जैसा हमको तैसा उनको भी
९ पवित्र आत्मा देके उनके लिये साक्षी दिई, और बिश्वा-
ससे उन्होंके मनको शुद्ध करके हमोंके और उन्होंके
१० बीचमें कुछ भेद न रखा। सो अब तुम क्यों ईश्वरकी
परीक्षा करते हो कि शिष्योंके गलेपर जूआ रखो जिसे
११ न हमारे पितर लोग न हम लोग उठा सके। परन्तु
जिस रीतिसे वे उसी रीतिसे हम भी प्रभु यीशु खीष्टके
अनुग्रहसे चाण पानेको बिश्वास करते हैं।
१२ तब सारी सभा चुप हुई और बर्णबा और पावलकी
जो यह बताते थे कि ईश्वरने उनके द्वारा कैसे बड़े चिन्ह
और अद्भुत काम अन्यदेशियोंके बीचमें किये थे सुनती
१३ रही। जब वे चुप हुए तब याकूबने उत्तर दिया कि हे
१४ भाइयो मेरी सुन लीजिये। शिमोनने बताया है कि
ईश्वरनें क्योंकर अन्यदेशियोंपर पहिले दृष्टि किई कि
१५ उनमेंसे अपने नामके लिये एक लोगको ले लेवे। और
इससे भविष्यद्वक्ताओंकी बातें मिलती हैं जैसा लिखा
१६ है, कि परमेश्वर जो यह सब करता है सो कहता है
इसके पीछे मैं फिरके दाऊदका गिरा हुआ डेरा

उठाऊंगा और उसके खंड़हर बनाऊंगा और उसे खड़ा
करूंगा. इसलिये कि वे मनुष्य जो रह गये हैं और सब १७
अन्यदेशी लोग जो मेरे नामसे पुकारे जाते हैं परमेश्वर-
को ढूंढें। ईश्वर अपने सब कामोंको आदिसे जानता है। १८
इसलिये मेरा बिचार यह है कि अन्यदेशियोंमेंसे जो १९
लोग ईश्वरकी ओर फिरते हैं हम उनको दुःख न देवें.
परन्तु उनके पास लिखें कि वे मूरतोंकी अशुद्ध बस्तुओंसे २०
और व्यभिचारसे और गला घोंटे हुओंके मांससे और
लोहूसे परे रहें। क्योंकि पूर्ष्वोंके समयसे मूसाके पुस्तकके २१
नगर नगरमें प्रचार करनेहारे हैं और हर एक बिश्राम-
वार वह सभाके घरोंमें पढ़ा जाता है।

तब सारी मंडली सहित प्रेरितों और प्राचीनोंको २२
अच्छा लगा कि अपनेमेंसे मनुष्योंको चुनें अर्थात यिहूदा-
को जो बर्श्बा कहावता है और सीलाको जो भाइयोंमें
बड़े मनुष्य थे और उन्हें पावल और बर्णबाके संग अन्तै-
खियाको भेजें. और उनके हाथ यही लिख भेजें कि २३
प्रेरित औ प्राचीन औ भाई लोग अन्तैखिया और सुरिया
और किलिकियामेंके उन भाइयोंको जो अन्यदेशियोंमेंसे
हैं नमस्कार। हमने सुना है कि कितने लोगोंने हममेंसे २४
निकलके तुम्हें बातोंसे व्याकुल किया है कि वे खतना
करवानेको और व्यवस्थाको पालन करनेको कहते हुए
तुम्हारे मनको चंचल करते हैं पर हमने उनको आज्ञा न
दिई। इसलिये हमने एक चित्त होके अच्छा जाना २५
है. कि मनुष्योंको चुनके अपने प्यारे बर्णबा और पाव- २६
लके संग जो ऐसे मनुष्य हैं कि अपने प्राणोंको हमारे

प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामके लिये सोंप दिया है तुम्हारे पास
२७ भेजें। सो हमने यिहूदा और सीलाको भेजा है जो आप
२८ भी यही बातें मुखबचनसे कह देवें। पवित्र आत्माको और
हमको अच्छा लगा है कि तुम्होंपर इन आवश्यक बातोंसे
२९ अधिक कोई भार न रखें. अर्थात कि मूरतोंके आगे
बलि किये हुओंसे और लोहूसे और गला घोंटे हुओंके
मांससे और व्यभिचारसे परे रहो. इन्होंसे अपनेको
बचा रखनेसे तुम भला करोगे. आगे शुभ।
३० सो वे बिदा होके अन्तैखियामें पहुंचे और लोगोंको
३१ एकट्ठे करके वह पत्र दिया। वे पढ़के उस शांतिकी बात-
३२ से आनन्दित हुए। और यिहूदा और सीलाने जो
आप भी भविष्यद्वक्ता थे बहुत बातोंसे भाइयोंको समझा-
३३ के स्थिर किया। और कुछ दिन रहके वे प्रेरितोंके पास
३४ जानेको कुशलसे भाइयोंसे बिदा हुए। परन्तु सीलाने
३५ वहां रहना अच्छा जाना। और पावल और बर्णबा
बहुत औरोंके संग प्रभुके बचनका उपदेश करते और
सुसमाचार सुनाते हुए अन्तैखियामें रहे।
३६ कितने दिनोंके पीछे पावलने बर्णबासे कहा जिन
नगरोंमें हमने प्रभुका बचन प्रचार किया आओ हम
हर एक नगरमें फिरके अपने भाइयोंको देख लेवें कि
३७ वे कैसे हैं। तब बर्णबाने योहनको जो मार्क कहावता
३८ है संग लेनेका बिचार किया। परन्तु पावलने उसको
जो पंफुलियासे उनके पाससे चला गया और कामपर
उनके साथ न गया संग ले जाना अच्छा नहीं समझा।
३९ सो ऐसा टंटा हुआ कि वे एक दूसरेको छोड़ गये और

बर्णबा मार्कको लेके जहाजपर कुप्रसको गया। परन्तु ४०
पावलने सीलाको चुन लिया और भाइयोंसे ईश्वरके
अनुग्रहपर सोंपा जाके निकला. और मंडलियोंको स्थिर ४१
करता हुआ सारे सुरिया और किलिकियामें फिरा।

## १६ सोलहवां पर्व्व।

१ पावलका तिमोथियको खतना करना और अनेक ठौर फिरना। ९ उसका एक दर्शन पाना और उन्होंका फिलिपी नगरको जाना। १३ लुदियाका वृत्तान्त। १६ एक भूतग्रस्त कन्यासे भूतका निकाला जाना। १९ पावल और सीलाका बन्दीगृहमें डाला जाना। २५ बन्दीगृहके रक्षकका प्रभुकी ओर फिरना। ३५ पावल और सीलाका बन्दीगृहसे छुड़ाया जाना।

तब पावल दर्बी और लुस्त्रामें पहुंचा और देखो १
वहां तिमोथिय नाम एक शिष्य था जो किसी बिश्वासी
यिहूदिनीका पुत्र था परन्तु उसका पिता यूनानी था।
और लुस्त्रा और इकोनियामेंके भाई लोग उसकी सुख्या- २
ति करते थे। पावलने चाहा कि यह मेरे संग जाय ३
और जो यिहूदी लोग उन स्थानोंमें थे उनके कारण
उसे लेके उसका खतना किया क्योंकि वे सब उसके पिता-
को जानते थे कि वह यूनानी था। परन्तु नगर नगर ४
जाते हुए उन्होंने उन बिधियोंको जो यिरूशलीममेंके प्रेरि-
तों और प्राचीनोंसे ठहराई गई थीं भाइयोंको सोंप दिया
कि उनको पालन करें। सो मंडलियां बिश्वासमें स्थिर ५
होती थीं और प्रतिदिन गिन्तीमें बढ़ती थीं। और जब ६
वे फ्रूगिया और गलातिया देशोंमें फिर चुके और पवित्र
आत्माने उन्हें आशिया देशमें बात सुनानेको बर्जा. तब ७

उन्होंने मुसिया देशपर आके बिथुनिया देशको जानेकी
८ चेष्टा किई परन्तु आत्माने उन्हें जाने न दिया। और
मुसियासे होके वे त्रोआ नगरमें आये।
९ रातको एक दर्शन पावलको दिखाई दिया कि कोई
माकिदोनी पुरुष खड़ा हुआ उससे बिन्ती करके कहता
था कि उस पार माकिदोनिया देश जाके हमारा उप-
१० कार कीजिये। जब उसने यह दर्शन देखा तब हमने
निश्चय जाना कि प्रभुने हमें उन लोगोंके तईं सुसमाचार
सुनानेको बुलाया है इसलिये हमने तुरन्त माकिदो-
११ नियाको जाने चाहा। सो त्रोआसे खोलके हम सामोथा-
की टापूको सीधे आये और दूसरे दिन नियापलि नगर-
१२ में पहुंचे। वहांसे हम फिलिपी नगरमें आये जो माकि-
दोनियाके उस अंशका पहिला नगर है और रोमियोंकी
बस्ती है और हम उस नगरमें कुछ दिन रहे।
१३ बिश्रामके दिन हम नगरके बाहर नदीके तीरपर गये
जहां प्रार्थना किई जाती थी और बैठके स्त्रियोंसे जो
१४ एकट्ठी हुई थीं बात करने लगे। और लुदिया नाम
थुआतीरा नगरकी एक स्त्री बैजनी बस्त्र बेचनेहारी जो
ईश्वरकी उपासना किया करती थी सुनती थी और
प्रभुने उसका मन खोला कि वह पावलकी बातोंपर
१५ चित्त लगावे। और जब उसने और उसके घरानेने डूब
लिया था तब उसने बिन्ती किई कि यदि आप लोगोंने
मुझे प्रभुकी बिश्वासिनी जान लिई है तो मेरे घरमें आके
रहिये और वह हमें मनाके ले गई।
१६ जब हम प्रार्थनाको जाते थे तब एक दासी जिसे आग-

मबक्ता भूत लगा था हमको मिली जो आगमके कहनेसे
अपने स्वामियोंके लिये बहुत कमा लाती थी। वह १७
पावलके और हमारे पीछे आके पुकारने लगी कि ये
मनुष्य सर्व्वप्रधान ईश्वरके दास हैं जो हमें चाणके मार्गकी
कथा सुनाते हैं। उसने बहुत दिन यह किया परन्तु १८
पावल अप्रसन्न हुआ और मुंह फेरके उस भूतसे कहा
मैं तुझे यीशु ख्रीष्टके नामसे आज्ञा देता हूं कि उसमेंसे
निकल आ और वह उसी घड़ी निकल आया।

जब उसके स्वामियोंने देखा कि हमारी कमाईकी १९
आशा गई है तब उन्होंने पावल और सीलाको पकड़के
चौकमें प्रधानोंके पास खींच लिया. और उन्हें अध्यक्षोंके २०
पास लाके कहा ये मनुष्य जो यिहूदी हैं हमारे नगरके
लोगोंको व्याकुल करते हैं. और व्यवहारोंको प्रचार २१
करते हैं जिन्हें ग्रहण करना अथवा मानना हमोंको
जो रोमी हैं उचित नहीं है। तब लोग उनके बिरुद्ध २२
एकट्ठे चढ़ आये और अध्यक्षोंने उनके कपड़े फाड़ डाले
और उन्हें बेत मारनेकी आज्ञा दिई. और उन्हें बहुत २३
घायल करके बन्दीगृहमें डाला और बन्दीगृहके रक्षकको
उन्हें यत्नसे रखनेकी आज्ञा दिई। उसने ऐसी आज्ञा २४
पाके उन्हें भीतरकी कोठरीमें डाला और उनके पांव
काठमें ठोंके।

आधी रातको पावल और सीला प्रार्थना करते हुए २५
ईश्वरका भजन गाते थे और बंधुए उनकी सुनते थे। तब २६
अचांचक ऐसा बड़ा भुईंडोल हुआ कि बन्दीगृहकी नेवें
हिलीं और तुरन्त सब द्वार खुल गये और सभोंके बंधन

२७ खुल पड़े। तब बन्दीगृहका रक्षक जागा और बन्दीगृह-
के द्वार खुले देखके खड्ग खींचा और अपने तईं मार
डालनेपर था कि वह समझता था कि बंधुए लोग भाग
२८ गये हैं। परन्तु पावलने बड़े शब्दसे पुकारके कहा अपने-
२९ को कुछ दुःख न देना क्योंकि हम सब यहां हैं। तब
वह दीपक मंगाके भीतर लपक गया और कंपित होके
३० पावल और सीलाको दंडवत किई. और उनको बाहर
लाके कहा हे प्रभुओ त्राण पानेको मुझे क्या करना
३१ होगा। उन्होंने कहा प्रभु यीशु ख्रीष्टपर बिश्वास कर
३२ तो तू और तेरा घराना त्राण पावेगा। और उन्होंने
उसको और सभोंको जो उसके घरमें थे प्रभुका बचन
३३ सुनाया। और रातको उसी घड़ी उसने उनको लेके
उनके घावोंको धोया और उसने और उसके सब लोगोंने
३४ तुरन्त डूब लिया। तब उसने उन्हें अपने घरमें लाके
उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत ईश्वर-
पर बिश्वास कियेसे आनन्दित हुआ।

३५ बिहान हुए अध्यक्षोंने प्यादोंके हाथ कहला भेजा कि
३६ उन मनुष्योंको छोड़ देओ। तब बन्दीगृहके रक्षकने
यह बातें पावलसे कह सुनाईं कि अध्यक्षोंने कहला भेजा
है कि आप लोग छोड़ दिये जायें सो अब निकलके
३७ कुशलसे जाइयें। परन्तु पावलने उनसे कहा उन्होंने
हमें जो रोमी मनुष्य हैं दंडके योग्य ठहराये बिना लोगों-
के आगे मारा और बन्दीगृहमें डाला और अब क्या
चुपकेसे हमें निकाल देते हैं. सो नहीं परन्तु आपही
३८ आके हमें बाहर ले जावें। प्यादोंने यह बातें अध्यक्षोंसे

कह दिईं और वे यह सुनके कि रोमी हैं डर गये. और ३९
आके उन्हें मनाया और बाहर लाके बिन्ती किई कि
नगरसे निकल जाइये। वे बन्दीगृहमेंसे निकलके लुदिया- ४०
के यहां गये और भाइयोंको देखके उन्हें उपदेश देके
चले गये।

## १७ सत्रहवां पर्ब्ब।

१ थिसलोनिका नगरमें लोगोंका भिन्न भिन्न बिचार और प्रेरितोंका निकाला जाना। १० बिरया नगरके लोगोंका पहिले सुबिचार पीछे बिरोध करना। १६ आथीनी नगरके लोगोंसे पावलका बिबाद करना। २२ अरियोपाग स्थानमें पावलका उपदेश। ३२ उस उपदेशका फल।

अंफिपलि और अपल्लोनिया नगरोंसे होके वे थिस- १
लोनिका नगरमें आये जहां यिहूदियोंकी सभाका घर
था। और पावल अपनी रीतिपर उनके यहां गया और २
तीन बिश्रामवार उनसे धर्म्मपुस्तकमेंसे बातें किईं. और ३
यही खोल देता और समझाता रहा कि ख्रीष्टको दुःख
भोगना और मृतकोंमेंसे जी उठना आवश्यक था और
कि यह यीशु जिसकी कथा मैं तुम्हें सुनाता हूं वही ख्रीष्ट
है। तब उनमेंसे कितने जनोंने और भक्त यूनानियोंमेंसे ४
बहुत लोगोंने और बहुतसी बड़ी बड़ी स्त्रियोंने मान
लिया और पावल और सीलासे मिल गये। परन्तु न ५
माननेहारे यिहूदियोंने डाह करके बाजारू लोगोंमेंसे
कितने दुष्ट मनुष्योंको लिया और भीड़ लगाके नगरमें
धूम मचाई और यासोनके घरपर चढ़ाई करके पावल
और सीलाको लोगोंके पास लाने चाहा। और उन्हें न ६
पाके वे यह पुकारते हुए यासोनको और कितने भाइयों-

को नगरके प्रधानोंके आगे खींच लाये कि ये लोग जिन्होंने
ने जगतको उलटा पुलटा किया है यहां भी आये हैं।
७ और यासोनने उनकी पहुनई किई है और ये सब
यह कहते हुए कि यीशु नाम दूसरा राजा है कैसरकी
८ आज्ञाओंके बिरुद्ध करते हैं। सो उन्होंने लोगोंको और
नगरके प्रधानोंको जो यह बातें सुनते थे ब्याकुल किया।
९ और उन्होंने यासोनसे और दूसरोंसे मुचलका लेके
उन्हें छोड़ दिया।
१० तब भाइयोंने तुरन्त रातको पावल और सीलाको
बिरेया नगरको भेजा और वे पहुंचके यिहूदियोंकी
११ सभाके घरमें गये। ये तो थिसलोनिकामेंके यिहूदियोंसे
सुशील थे और उन्होंने सब भांतिसे तत्पर होके बचनको
ग्रहण किया और प्रतिदिन धर्म्मपुस्तकमें ढूंढ़ते रहे कि
१२ यह बातें यूंहीं हैं कि नहीं। सो उनमेंसे बहुतोंने और
यूनानीय कुलवन्ती स्त्रियोंमेंसे और पुरुषोंमेंसे बहुतेरोंने
१३ बिश्वास किया। परन्तु जब थिसलोनिकाके यिहूदियोंने
जाना कि पावल बिरेयामें भी ईश्वरका बचन प्रचार
करता है तब वे वहां भी आके लोगोंको उसकाने लगे।
१४ तब भाइयोंने तुरन्त पावलको बिदा किया कि वह
समुद्रकी ओर जावे परन्तु सीला और तिमोथिय वहां
१५ रह गये। पावलके पहुंचानेहारे उसे आथीनी नगरतक
लाये और सीला और तिमोथियके लिये उस पास बहुत
शीघ्र जानेकी आज्ञा लेके बिदा हुए।
१६ जब पावल आथीनीमें उनकी बाट जोहता था तब
नगरको मूरतोंसे भरे हुए देखनेसे उसका मन भीतरसे

उभड़ आया। सो वह सभाके घरमें यिहूदियों और १७
भक्त लोगोंसे और प्रतिदिन चौकमें जो लोग मिलते थे
उन्होंसे बातें करने लगा। तब इपिकूरीय और स्तोइकीय १८
ज्ञानियोंमेंसे कितने उससे बिबाद करने लगे और कितने
बोले यह बकवादी क्या कहने चाहता है पर औरोंने
कहा वह ऊपरी देवताओंका प्रचारक देख पड़ता है.
क्योंकि वह उन्हें यीशुका और जी उठनेका सुसमाचार
सुनाता था। तब उन्होंने उसे लेके अरेयोपाग नाम १९
स्थानपर लाके कहा क्या हम जान सकते कि यह नया
उपदेश जो तुझसे सुनाया जाता है क्या है। क्योंकि तू २०
अनूठी बातें हमें सुनाता है सो हम जानने चाहते हैं
कि इनका अर्थ क्या है। सब आथीनीय लोग और २१
परदेशी जो वहां रहते थे किसी और काममें नहीं केवल
नई नई बातके कहने अथवा सुननेमें समय काटते थे।

तब पावलने अरेयोपागके बीचमें खड़ा होके कहा २२
हे आथीनीय लोगो मैं आप लोगोंको सर्व्वथा बड़े देव-
पूजक देखता हूं। क्योंकि जब मैं फिरते हुए आप लोगों- २३
की पूज्य बस्तुओंको देखता था तब एक ऐसी बेदी भी
पाई जिसपर लिखा हुआ था कि अनजाने ईश्वरको. सो
जिसे आप लोग बिन जाने पूजते हैं उसीकी कथा मैं
आप लोगोंको सुनाता हूं। ईश्वर जिसने जगत और सब २४
कुछ जो उसमें है बनाया सो स्वर्ग और पृथिवीका प्रभु
होके हाथके बनाये हुए मन्दिरोंमें बास नहीं करता है.
और न किसी बस्तुका प्रयोजन रखनेसे मनुष्योंके हाथोंकी २५
सेवा लेता है क्योंकि वह आपही सभोंको जीवन और

२६ श्वास और सब कुछ देता है। उसने एकही लोहूसे
मनुष्योंके सब जातिगण सारी पृथिवीपर बसनेको बनाये
हैं और ठहराये हुए समयोंको और उनके निवासके
२७ सिवानोंको इसलिये बांधा है. कि वे परमेश्वरको ढूंढें
क्या जानें उसे टटोलके पावें और तौभी वह हममेंसे
२८ किसीसे दूर नहीं है. क्योंकि हम उसीसे जीते और
फिरते और होते हैं जैसे आप लोगोंके यहांके कितने
२९ कबियोंने भी कहा है कि हम तो उसके बंश हैं। सो जो
हम ईश्वरके बंश हैं तो यह समझना कि ईश्वरत्व सोने
अथवा रूपे अथवा पत्थरके अर्थात मनुष्यकी कारीगरी
और कल्पनाकी गढ़ी हुई बस्तुके समान है हमें उचित
३० नहीं है। इसलिये ईश्वर अज्ञानताके समयोंसे आनाकानी
करके अभी सर्व्वत्र सब मनुष्योंको पश्चात्ताप करनेकी आज्ञा
३१ देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह
उस मनुष्यके द्वारा जिसे उसने नियुक्त किया है धर्म्मसे
जगतका न्याय करेगा और उसने उस मनुष्यको मृतकोंमें-
से उठाके सभोंको निश्चय कराया है।

३२ मृतकोंके जी उठनेकी बात सुनके कितने ठट्ठा करने
लगे और कितने बोले हम इसके विषयमें तुझसे फिर
३३ सुनेंगे। इसपर पावल उनके बीचमेंसे चला गया।
३४ परन्तु कई एक मनुष्य उससे मिल गये और बिश्वास
किया जिनमें दियोनुसिय अरेयोपागी था और दामरी
नाम एक स्त्री और उनके संग कितने और लोग।

## १८ अठारहवां पर्व्व।

१ पावलका करिन्थ नगरमें सुसमाचार प्रचार करना। १२ यिहूदियोंका गालियोके पास पावलपर नालिश करना। १८ पावलका अनेक नगरों और देशोंमें फिरना। २४ अपल्लोका बखान।

इसके पीछे पावल आथीनीसे निकलके करिन्थ नगरमें १
आया। और अक्कूला नाम पन्त देशका एक यिहूदी था २
जो उन दिनोंमें इतलिया देशसे आया था इसलिये कि
क्लौदियने सब यिहूदियोंको रोम नगरसे निकल जानेकी
आज्ञा दिई थी. पावल उसको और उसकी स्त्री प्रिस्की-
लाको पाके उनके यहां गया। और उसका और उनका ३
एकही उद्यम था इसलिये वह उनके यहां रहके कमाता
था क्योंकि तम्बू बनाना उनका उद्यम था। परन्तु हर ४
एक बिश्रामवार वह सभाके घरमें बातें करके यिहूदियों
और यूनानियोंको भी समझाता था। जब सीला और ५
तिमोथिय माकिदोनियासे आये तब पावल आत्माके बशमें
होके यिहूदियोंको साक्षी देता था कि यीशु तो ख्रीष्ट
है। परन्तु जब वे बिरोध और निन्दा करने लगे तब ६
उसने कपड़े झाड़के उनसे कहा तुम्हारा लोहू तुम्हारेही
सिरपर होय. मैं निर्दोष हूं. अबसे मैं अन्यदेशियोंके
पास जाऊंगा। और वहांसे जाके वह युस्त नाम ईश्वरके ७
एक उपासकके घरमें आया जिसका घर सभाके घरसे
लगा हुआ था। तब सभाके अध्यक्ष क्रीस्पने अपने सारे ८
घराने समेत प्रभुपर बिश्वास किया और करिन्थियोंमेंसे
बहुत लोग सुनके बिश्वास करते और डूब लेते थे। और ९
प्रभुने रातको दर्शनके द्वारा पावलसे कहा मत डर परन्तु

१० बात कर और चुप मत रह। क्योंकि मैं तेरे संग हूं
और कोई तुझपर चढ़ाई न करेगा कि तुझे दुःख देवे
११ क्योंकि इस नगरमें मेरे बहुत लोग हैं। सो वह उन्होंमें
ईश्वरका बचन सिखाते हुए डेढ़ बरस रहा।
१२ जब गालियो आखाया देशका प्रधान था तब यिहूदी
लोग एक चित्त होकर पावलपर चढ़ाई करके उसे
१३ बिचार आसनके आगे लाये. और बोले यह तो मनुष्यों-
को व्यवस्थाके विपरीत रीतिसे ईश्वरकी उपासना करने-
१४ को समझाता है। ज्योंही पावल मुंह खोलनेपर था
त्योंही गालियोने यिहूदियोंसे कहा हे यिहूदियो जो
यह कोई कुकर्म्म अथवा बुरी कुचाल होती तो उचित
१५ जानके मैं तुम्हारी सहता। परन्तु जो यह बिबाद
उपदेशके और नामोंके और तुम्हारे यहांकी व्यवस्थाके
विषयमें है तो तुमही जानो क्योंकि मैं इन बातोंका
१६ न्यायी होने नहीं चाहता हूं। और उसने उन्हें बिचार
१७ आसनके आगेसे खदेड़ दिया। तब सारे यूनानियोंने
सभाके अध्यक्ष सोस्थिनीको पकड़के बिचार आसनके साम्ने
मारा और गालियोने इन बातोंकी कुछ चिन्ता न किई।
१८ पावल और भी बहुत दिन रहा तब भाइयोंसे बिदा
होके जहाजपर सुरिया देशको गया और उसके संग
प्रिस्कीला और अकूला. उसने किंक्रिया नगरमें अपना
१९ सिर मुंड़वाया क्योंकि उसने मन्नत मानी थी। और
उसने इफिस नगरमें पहुंचके उनको वहां छोड़ा और
आपही सभाके घरमें प्रवेश करके यिहूदियोंसे बातें
२० किईं। जब उन्होंने उससे बिन्ती किई कि हमारे संग

कुछ दिन और रहिये तब उसने न माना। परन्तु यह २१
कहके उनसे बिदा हुआ कि आनेवाला पर्ब्ब यिरूशलीम-
में करना मुझे बहुत अवश्य है परन्तु ईश्वर चाहे तो
मैं तुम्हारे पास फिर लौट आऊंगा। तब उसने इफिससे २२
खोल दिया और कैसरियामें आया तब (यिरूशलीमको)
जाके मंडलीको नमस्कार किया और अन्तैखियाको गया।
फिर कुछ दिन रहके वह निकला और एक ओरसे २३
गलातिया और फ्रूगिया देशोंमें सब शिष्योंको स्थिर करता
हुआ फिरा।

अपल्लो नाम सिकन्दरिया नगरका एक यिहूदी जो २४
सुबक्ता पुरुष और धर्म्मपुस्तकमें सामर्थी था इफिसमें
आया। उसने प्रभुके मार्गकी शिक्षा पाई थी और २५
आत्मामें अनुरागी होके प्रभुके विषयमेंकी बातें बड़े यत्नसे
सुनाता और सिखाता था परन्तु केवल योहनके डूबकी
बात जानता था। वह सभाके घरमें साहससे बात करने २६
लगा पर अक्विला और प्रिस्कीलाने उसकी सुनके उसे
लिया और ईश्वरका मार्ग उसको और ठीक करके
बताया। और वह आखायाको जाने चाहता था सो २७
भाइयोंने उसे ढाढ़स देके शिष्योंके पास लिखा कि वे
उसे ग्रहण करें और उसने पहुंचके अनुग्रहसे जिन्होंने
बिश्वास किया था उन्होंकी बड़ी सहायता किई। क्योंकि २८
यीशु जो खीष्ट है यह बात धर्म्मपुस्तकके प्रमाणोंसे बतला-
के उसने बड़े यत्नसे लोगोंके आगे यिहूदियोंको निरु-
त्तर किया।

## १९ उनीसवां पर्ब्ब।

१ इफिस नगरमें बारह शिष्योंको पवित्र आत्माका दिया जाना। ८ पावलका उपदेश और बिबाद करना और अनेक आश्चर्य्य कर्म्मोंका उससे प्रगट होना। १३ स्केवाके पुत्रोंका बर्णन और टोनेके पुस्तकोंका जलाया जाना। २१ दीमीत्रिय सुनारका पावलपर उपद्रव मचाना।

१ अपल्लोके करिन्थमें होते हुए पावल ऊपरके सारे
२ देशमें फिरके इफिसमें आया. और कितने शिष्योंको
पाके उनसे कहा क्या तुमने बिश्वास करके पवित्र आत्मा
पाया. उन्होंने उससे कहा हमने तो सुना भी नहीं
३ कि पवित्र आत्मा दिया जाता है। तब उसने उनसे
कहा तो तुमने किस बातपर डूब लिया. उन्होंने कहा
४ योहनके डूबपर। पावलने कहा योहनने पश्चात्तापका
डूब देके अपने पीछे आनेवालेहीपर बिश्वास करनेको
५ लोगोंसे कहा अर्थात ख्रीष्ट यीशुपर। यह सुनके उन्होंने
६ प्रभु यीशुके नामसे डूब लिया। और जब पावलने उन-
पर हाथ रखे तब पवित्र आत्मा उनपर आया और वे
७ अनेक बोलियां बोलने और भविष्यद्वाक्य कहने लगे। ये
सब मनुष्य बारह एक थे।

८ तब पावल सभाके घरमें प्रवेश करके साहससे बात करने
लगा और तीन मास ईश्वरके राज्यके विषयमेंकी बातें
९ सुनाता और समझाता रहा। परन्तु जब कितने लोग
कठोर हो गये और नहीं मानते थे और लोगोंके आगे
इस मार्गकी निन्दा करने लगे तब वह उनके पाससे
चला गया और शिष्योंको अलग करके तुरान नाम किसी
१० मनुष्यके विद्यालयमें प्रतिदिन बातें किईं। यह दो

बरस होता रहा यहांलों कि आशियाके निवासी यिहूदी
और यूनानी भी सभोंने प्रभु यीशुका बचन सुना। और ११
ईश्वरने पावलके हाथोंसे अनोखे आश्चर्य्य कर्म्म किये.
यहांलों कि उसके देहपरसे अंगोछे और रूमाल रोगियों- १२
के पास पहुंचाये जाते थे और रोग उनसे जाते रहते थे
और दुष्ट भूत उनमेंसे निकल जाते थे।

तब यिहूदी लोगोंमेंसे जो इधर उधर फिरा करते १३
और भूत निकालनेको किरिया देते थे कितने जन उन्हों-
पर जिनको दुष्ट भूत लगे थे प्रभु यीशुका नाम यह कहके
लेने लगे कि यीशु जिसे पावल प्रचार करता है हम
उसीकी तुम्हें किरिया देते हैं। स्कवा नाम एक यिहूदीय १४
प्रधान याजकके सात पुत्र थे जो यह करते थे। परन्तु १५
दुष्ट भूतने उत्तर दिया कि यीशुको मैं जानता हूं और
पावलको पहचानता हूं पर तुम कौन हो। और वह १६
मनुष्य जिसे दुष्ट भूत लगा था उनपर लपकके और
उन्हें बशमें लाके उनपर ऐसा प्रबल हुआ कि वे नंगे
और घायल उस घरमेंसे भागे। और यह बात इफिसके १७
निवासी यिहूदी और यूनानी भी सब जान गये और
उन सभोंको डर लगा और प्रभु यीशुके नामकी महिमा
किई जाती थी। और जिन्होंने बिश्वास किया था उन्होंमें- १८
से बहुतोंने आके अपने काम मान लिये और बतलाये।
टोना करनेहारोंमेंसे भी अनेकोंने अपनी पोथियां एकट्ठी १९
करके सभोंके साम्ने जला दिईं और उन्होंका दाम जोड़ा
गया तो पचास सहस्र रुपैये ठहरा। यूं पराक्रमसे प्रभुका २०
बचन फैला और प्रबल हुआ।

२१ जब यह बातें हो चुकीं तब पावलने आत्मामें माकिदो-
निया और आखायाके बीचसे यिरूशलीम जानेको ठह-
राया और कहा कि वहां जानेके पीछे मुझे रोमको भी
२२ देखना होगा। सो जो उसकी सेवा करते थे उनमेंसे
दोको अर्थात तिमोथिय और इरास्तको माकिदोनियामें
२३ भेजके वह आपही आशियामें कुछ दिन रह गया। उस
२४ समय इस मार्गके विषयमें बड़ा हुल्लड़ हुआ। क्योंकि
दीमीत्रिय नाम एक सुनार अर्त्तिमीके मन्दिरकी चांदी-
की मूरतें बनानेसे कारीगरोंको बहुत काम दिलाता था।
२५ उसने उन्होंको और ऐसी ऐसी बस्तुओंके कारीगरोंको
एकट्ठे करके कहा हे मनुष्यो तुम जानते हो कि इस
२६ कामसे हमोंको सम्पत्ति प्राप्त होती है। और तुम देखते
और सुनते हो कि इस पावलने यह कहके कि जो हाथों-
से बनाये जाते सो ईश्वर नहीं हैं केवल इफिसके नहीं
परन्तु प्राय समस्त आशियाके बहुत लोगोंको समझाके
२७ भरमाया है। और हमोंको केवल यह डर नहीं है कि
यह उद्यम निन्दित हो जाय परन्तु यह भी कि बड़ी
देवी अर्त्तिमीका मन्दिर तुच्छ समझा जाय और उसकी
महिमा जिसे समस्त आशिया और जगत पूजता है नष्ट
२८ हो जाय। वे यह सुनके और क्रोधसे पूर्ण होके पुकारने
२९ लगे इफिसियोंकी अर्त्तिमीकी जय। और सारे नगरमें
बड़ी गड़बड़ाहट हुई और लोग गायस और अरिस्तार्ख
दो माकिदोनियोंको जो पावलके संगी पथिक थे पकड़के
३० एक चित्त होके रंगशालामें दौड़ गये। जब पावलने
लोगोंके पास भीतर जाने चाहा तब शिष्योंने उसको

जाने न दिया। आशियाके प्रधानोंमेंसे भी कितनोंने जो ३१
उसके मित्र थे उस पास भेजके उससे बिन्ती किई कि
रंगशालामें जानेकी जोखिम मत अपनेपर उठाइये। सो ३२
कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे क्योंकि सभा घब-
राई हुई थी और अधिक लोग नहीं जानते थे हम किस
कारण एकट्ठे हुए हैं। तब भीड़मेंसे कितनोंने सिकन्दर- ३३
को जिसे यिहूदियोंने खड़ा किया था आगे बढ़ाया और
सिकन्दर हाथसे सैन करके लोगोंके आगे उत्तर दिया
चाहता था। परन्तु जब उन्होंने जाना कि वह यिहूदी है ३४
सबके सब एक शब्दसे दो घड़ीके अटकल इफिसियोंकी
अर्त्तिमीकी जय पुकारते रहे। तब नगरके लेखकने लोगों- ३५
को शांत करके कहा हे इफिसी लोगो कौन मनुष्य है जो
नहीं जानता कि इफिसियोंका नगर बड़ी देवी अर्त्तिमीका
और जूपितरकी ओरसे गिरी हुई मूर्त्तिका टहलुआ है।
सो जब कि इन बातोंका खंडन नहीं हो सकता है ३६
उचित है कि तुम शांत होओ और कोई काम उताव-
लीसे न करो। क्योंकि तुम इन मनुष्योंको लाये हो जो ३७
न पवित्र बस्तुओंके चोर न तुम्हारी देवीके निन्दक हैं।
सो जो दीमीत्रियको और उसके संगके कारीगरोंको ३८
किसीसे बिबाद है तो बिचारके दिन होते हैं और
प्रधान लोग हैं वे एक दूसरेपर नालिश करें। परन्तु ३९
जो तुम दूसरी बातोंके विषयमें कुछ पूछते हो तो व्यव-
हारिक सभामें निर्णय किया जायगा। क्योंकि जो आज ४०
हुई है उसके हेतुसे हमपर बलवेका दोष लगाये जाने-
का डर है इसलिये कि कोई कारण नहीं है जिस

४१ करके हम इस भीड़का उत्तर दे सकेंगे। और यह कहके
उसने सभाको बिदा किया।

## २० बीसवां पर्व्व।

१ पावलका कई एक देशोंसे होके चोआ नगरको जाना। ७ उतुखका मरना और फिरके जिलाया जाना। १३ पावलका मिलीत नगरमें पऊंचना। १७ इफिसकी मंडलीके प्राचीनोंको उपदेश देना। ३६ वहांसे बिदा होना।

१ जब हुल्लड़ थम गया तब पावल शिष्योंको अपने पास
बुलाके और गले लगाके माकिदोनिया जानेको चल
२ निकला। उस सारे देशमें फिरके और बहुत बातोंसे
३ उन्हें उपदेश देके वह यूनान देशमें आया। और तीन
मास रहके जब वह जहाजपर सुरियाको जानेपर था
यिहूदी लोग उसकी घातमें लगे इसलिये उसने माकि-
४ दोनिया होके लौट जानेको ठहराया। बिरेया नगरका
सोपातर और थिसलोनियोंमेंसे अरिस्तार्ख और सिकुन्द
और दर्बी नगरका गायस और तिमोथिय और आशिया
देशके तुखिक और चोफिम आशियालों उसके संग हो
५ लिये। इन्होंने आगे जाके चोआमें हमोंकी बाट देखी।
६ और हम लोग अखमीरी रोटीके पर्व्वके दिनोंके पीछे
जहाजपर फिलिपीसे चले और पांच दिनमें चोआमें
उनके पास पहुंचे जहां हम सात दिन रहे।

७ अठवारेके पहिले दिन जब शिष्य लोग रोटी तोड़नेको
एकट्ठे हुए तब पावलने जो अगले दिन चले जानेपर
था उनसे बातें किईं और आधी रातलों बात करता
८ रहा। जिस उपरौठी कोठरीमें वे एकट्ठे हुए थे उसमें

बहुत दीपक बरते थे। और उतुख नाम एक जवान ९
खिड़कीपर बैठा हुआ भारी नींदसे झुक रहा था और
पावलके बड़ी बेरलों बातें करते करते वह नींदसे झुकके
तीसरी अटारीपरसे नीचे गिर पड़ा और मूआ उठाया
गया। परन्तु पावल उतरके उसपर औंधे पड़ गया १०
और उसे गोदीमें लेके बोला मत धूम मचाओ क्योंकि उस-
का प्राण उसमें है। तब ऊपर जाके और रोटी तोड़के ११
और खाके और बड़ी बेरलों भोरतक बातचीत करके वह
चला गया। और वे उस जवानको जीते ले आये और १२
बहुत शांति पाई।

तब हम लोग आगेसे जहाजपर चढ़के आसस नगर- १३
को गये जहांसे हमें पावलको चढ़ा लेना था क्योंकि उसने
यूं ठहराया था इसलिये कि आपही पैदल जानेवाला
था। जब वह आससमें हमसे आ मिला तब हम उसे १४
चढ़ाके मितुलीनी नगरमें आये। और वहांसे खोलके १५
हम दूसरे दिन खीयो टापूके साम्हने पहुंचे और अगले
दिन सामो टापूमें लगान किया फिर त्रोगुलिया नगरमें
रहके दूसरे दिन मिलीत नगरमें आये। क्योंकि पावलने १६
इफिसको एक ओर छोड़के जाना ठहराया इसलिये कि
उसको आशियामें अबेर न लगे क्योंकि वह शीघ्र जाता
था कि जो उससे बन पड़े तो पेंतिकोष्ट पर्ब्बके दिनलों
यिरूशलीममें पहुंचे।

मिलीतसे उसने लोगोंको इफिस नगर भेजके मंडलीके १७
प्राचीनोंको बुलाया। जब वे उस पास आये तब उसने १८
उनसे कहा तुम जानते हो कि पहिले दिनसे जो मैं

आशियामें पहुंचा मैं हर समय क्योंकर तुम्हारे बीचमें
१९ रहा, कि बड़ी दीनताईसे और बहुत रो रोके और
उन परीक्षाओंमें जो मुझपर यिहूदियोंकी कुमंत्रणासे
२० पड़ीं मैं प्रभुकी सेवा करता रहा, और क्योंकर मैंने ला-
भकी बातोंमेंसे कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई
२१ और लोगोंके आगे और घर घर तुम्हें न सिखाई, कि
यिहूदियों और यूनानियोंको भी मैं साक्षी देके ईश्वरके
आगे पश्चात्ताप करनेकी और हमारे प्रभु यीशु खीष्टपर
२२ बिश्वास करनेकी बात कहता रहा। और अब देखो मैं
आत्मासे बंधा हुआ यिरूशलीमको जाता हूं और नहीं
२३ जानता हूं कि वहां मुझपर क्या पड़ेगा, केवल यही
जानता हूं कि पवित्र आत्मा नगर नगर साक्षी देता है
२४ कि बंधन और क्लेश मेरे लिये धरे हैं। परन्तु मैं किसी
बातकी चिन्ता नहीं करता हूं और न अपना प्राण इतना
बहुमूल्य जानता हूं जितना आनन्दसे अपनी दौड़को
और ईश्वरके अनुग्रहके सुसमाचारपर साक्षी देनेकी
सेवकाईको जो मैंने प्रभु यीशुसे पाई है पूरी करना बहु-
२५ मूल्य है। और अब देखो मैं जानता हूं कि तुम सब
जिन्होंमें मैं ईश्वरके राज्यकी कथा सुनाता फिरा हूं मेरा
२६ मुंह फिर नहीं देखोगे। इसलिये मैं आजके दिन ईश्वर-
को साक्षी रखके तुमसे कहता हूं कि मैं सभोंके लोहूसे
२७ निर्दोष हूं। क्योंकि मैंने ईश्वरके सारे मतमेंसे कोई बात
२८ न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई। सो अपने विषयमें
और सारे झुंडके विषयमें जिसके बीचमें पवित्र आत्माने
तुम्हें रखवाले ठहराये हैं सचेत रहो कि तुम ईश्वरकी

मंडलीकी चरवाही करो जिसे उसने अपने लोहूसे मोल
लिया है। क्योंकि मैं यह जानता हूं कि मेरे जानेके पीछे २९
क्रूर हुंड़ार तुम्होंमें प्रवेश करेंगे जो झुंडको न छोड़ेंगे।
तुम्हारेही बीचमेंसे भी मनुष्य उठेंगे जो शिष्योंको अपने ३०
पीछे खींच लेनेको टेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिये मैंने जो ३१
तीन बरस रात और दिन रो रोके हर एकको चिताना
न छोड़ा यह स्मरण करते हुए जागते रहो। और अब ३२
हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वरको और उसके अनुग्रहके बचन-
को सोंप देता हूं जो तुम्हें सुधारने और सब पवित्र किये
हुए लोगोंके बीचमें अधिकार देने सकता है। मैंने किसी- ३३
के रूपे अथवा सोने अथवा बस्त्रका लालच नहीं किया।
तुम आपही जानते हो कि इन हाथोंने मेरे प्रयोजनकी ३४
और मेरे संगियोंकी टहल किई। मैंने सब बातें तुम्हें ३५
बताईं कि इस रीतिसे परिश्रम करते हुए दुर्ब्बलोंका उप-
कार करना और प्रभु यीशुकी बातें स्मरण करना चाहिये
कि उसने कहा लेनेसे देना अधिक धन्य है।

यह बातें कहके उसने अपने घुटने टेकके उन सभों- ३६
के संग प्रार्थना किई। तब वे सब बहुत रोये और ३७
पावलके गलेमें लिपटके उसे चूमने लगे। वे सबसे ३८
अधिक उस बातसे शोक करते थे जो उसने कही थी
कि तुम मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे। तब उन्होंने उसे
जहाजलों पहुंचाया।

# २१ इकईसवां पर्व्व।

१ पावलका सोर नगरमें भाइयोंसे भेंट करना। ७ कैसरिया नगरमें फिलिपसे भेंट करना। १० आगाबका भविष्यद्वाक्य श्रीर पावलकी दृढ़ताई। १५ पावल श्रीर उसके संगियोंका यिरूशलीममें पङ्चना। १८ भाइयोंका पावलको परामर्श देना। २७ यिहूदियोंका उसको पकड़ना। ३१ रोमी सहस्रपतिका उसे यिहूदियोंके हाथसे छीन लेना। ३७ सहस्रपतिसे पावलकी बातचीत।

१ जब हमने उनसे अलग होके जहाज खोला तब सीधे
सीधे कोस टापूको चले श्रीर दूसरे दिन रोद टापूको श्रीर
२ वहांसे पातारा नगरपर पहुंचे। श्रीर एक जहाजको जो
फैनीकियाको जाता था पाके हमने उसपर चढ़के खोल
३ दिया। जब कुप्रस टापू देखनेमें आया तब हमने उसे
बायें हाथ छोड़ा श्रीर सुरियाको जाके सोर नगरमें
लगान किया क्योंकि जहाजकी बोझाई वहां उतरनेपर
४ थी। श्रीर वहांके शिष्योंको पाके हम वहां सात दिन
रहे. उन्होंने आत्माकी शिक्षासे पावलसे कहा यिरू-
५ शलीमको न जाइयें। जब हम उन दिनोंको पूरे कर
चुके तब निकलके चलने लगे श्रीर सभोंने स्त्रियों श्रीर
बालकों समेत हमें नगरके बाहरलों पहुंचाया श्रीर हमों-
६ ने तीरपर घुटने टेकके प्रार्थना किई। तब एक दूसरेको
गले लगाके हम तो जहाजपर चढ़े श्रीर वे अपने अप-
ने घर लौटे।

७ तब हम सोरसे जलयात्रा पूरी करके तलिमाई नगरमें
पहुंचे श्रीर भाइयोंको नमस्कार करके उनके संग एक
८ दिन रहे। दूसरे दिन हम जो पावलके संगके थे वहांसे

चलके कैसरियामें आये और फिलिप सुसमाचार प्रचा-
रकके घरमें जो सातोंमेंसे एक था प्रवेश करके उसके
यहां रहे। इस मनुष्यको चार कुंवारी पुत्रियां थीं जो ९
भविष्यद्वाणी कहा करती थीं।

जब हम बहुत दिन रह चुके तब आगाब नाम एक १०
भविष्यद्वक्ता यिहूदियासे आया। वह हमारे पास आके ११
और पावलका पटुका लेके और अपने हाथ और पांव
बांधके बोला पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस
मनुष्यका यह पटुका है उसको यिरूशलीममें यिहूदी
लोग यूंहीं बांधेंगे और अन्यदेशियोंके हाथ सोंपेंगे। जब १२
हमने यह बातें सुनीं तब हम लोग और उस स्थानके
रहनेहारे भी पावलसे बिन्ती करने लगे कि यिरूशलीम-
को न जाइये। परन्तु उसने उत्तर दिया कि तुम क्या १३
करते हो कि रोते और मेरा मन चूर करते हो. मैं
तो प्रभु यीशुके नामके लिये यिरूशलीममें केवल बांधे
जानेको नहीं परन्तु मरनेको भी तैयार हूं। जब वह १४
नहीं मानता था तब हम यह कहके चुप हुए कि प्रभुकी
इच्छा पूरी होवे।

इन दिनोंके पीछे हम लोग बांध छांदके यिरूशलीम- १५
को जाने लगे। कैसरियाके शिष्योंमेंसे भी कितने हमारे १६
संग हो लिये और मनासोन नाम कुप्रसके एक प्राचीन
शिष्यके पास जिसके यहां हम पाहुन होवें हमें पहुं-
चाया। जब हम यिरूशलीममें पहुंचे तब भाइयोंने हमें १७
आनन्दसे ग्रहण किया।

दूसरे दिन पावल हमारे संग याकूबके यहां गया १८

१९ और सब प्राचीन लोग आये। तब उसने उनको नम-
स्कार कर जो जो कर्म्म ईश्वरने उसकी सेवकाईके द्वारासे
अन्यदेशियोंमें किये थे उन्हें एक एक करके बर्णन किया।
२० उन्होंने सुनके प्रभुकी स्तुति किई और उससे कहा हे
भाई आप देखते हैं कितने सहस्रों यिहूदियोंने बिश्वास
२१ किया है और सब व्यवस्थाके लिये धुन लगाये हैं। और
उन्होंने आपके विषयमें सुना है कि आप अन्यदेशियोंके
बीचमेंके सब यिहूदियोंके तईं मूसाको त्याग करनेको
सिखाते हैं और कहते हैं कि अपने बालकोंका खतना
२२ मत करो और न व्यवहारोंपर चलो। सो क्या है कि
बहुत लोग निश्चय एकट्ठे होंगे क्योंकि वे सुनेंगे कि आप
२३ आये हैं। इसलिये यह जो हम आपसे कहते हैं कीजिये।
२४ हमारे यहां चार मनुष्य हैं जिन्होंने मन्नत मानी है। उन्हें
लेके उनके संग अपनेको शुद्ध कीजिये और उनके लिये
खर्चा दीजिये कि वे सिर मुंड़ावें तब सब लोग जानेंगे कि
जो बातें हमने इसके विषयमें सुनी थीं सो कुछ नहीं है
परन्तु वह आप भी व्यवस्थाको पालन करते हुए उसके
२५ अनुसार चलता है। परन्तु जिन अन्यदेशियोंने बिश्वास
किया है हमने उनके विषयमें यही ठहराके लिख भेजा कि
वे ऐसी कोई बात न मानें केवल मूरतोंके आगे बलि किये
हुएसे और लोहूसे और गला घोंटे हुओंके मांससे और
२६ व्यभिचारसे बचे रहें। तब पावलने उन मनुष्योंको लेके दूस-
रे दिन उनके संग शुद्ध होके मन्दिरमें प्रवेश किया और
सन्देश दिया कि शुद्ध होनेके दिन अर्थात उनमेंसे हर
एकके लिये चढ़ावा चढ़ाये जानेतकके दिन कब पूरे होंगे।

जब वे सात दिन पूरे होनेपर थे तब आशियाके यिहू- २७
दियोंने पावलको मन्दिरमें देखके सब लोगोंको उस्काया
और उसपर हाथ डालके पुकारा. हे इस्रायेली लोगो २८
सहायता करो यही वह मनुष्य है जो इन लोगोंके और
व्यवस्थाके और इस स्थानके बिरुद्ध सर्व्वत्र सब लोगोंको
उपदेश देता है. हां और उसने यूनानियोंको मन्दिरमें
लाके इस पवित्र स्थानको अपवित्र भी किया है। उन्होंने २९
तो इसके पहिले चोफिम इफिसीको पावलके संग नगरमें
देखा था और समझते थे कि वह उसको मन्दिरमें लाया
था। तब सारे नगरमें घबराहट हुई और लोग एकट्ठे दौड़े ३०
और पावलको पकड़के उसे मन्दिरके बाहर खींच लाये
और तुरन्त द्वार मून्दे गये।

जब वे उसे मार डालने चाहते थे तब पलटनके सह- ३१
स्रपतिको सन्देश पहुंचा कि सारे यिरूशलीममें घबराहट
हुई है। तब वह तुरन्त योद्धाओं और शतपतियोंको लेके ३२
उन पास दौड़ा और उन्होंने सहस्रपतिको और योद्धा-
ओंको देखके पावलको मारना छोड़ दिया। तब सहस्रप- ३३
तिने निकट आके उसे लेके आज्ञा किई कि दो जंजीरोंसे
बांधा जाय और पूछने लगा यह कौन है और क्या किया
है। परन्तु भीड़में कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे ३४
और जब सहस्रपति हुल्लड़के मारे निश्चय नहीं जान
सकता था तब पावलको गढ़में ले जानेकी आज्ञा किई।
जब वह सीढ़ीपर पहुंचा ऐसा हुआ कि भीड़की बरियाईके ३५
कारण योद्धाओंने उसे उठा लिया। क्योंकि लोगोंकी भीड़ ३६
उसे दूर कर पुकारती हुई पीछे आती थी।

३७ जब पावल गढ़के भीतर पहुंचाये जानेपर था तब उस-
ने सहस्रपतिसे कहा जो आपसे कुछ कहनेकी मुझे आज्ञा
होय तो कहूं. उसने कहा क्या तू यूनानीय भाषा
३८ जानता है। तो क्या तू वह मिसरी नहीं है जो इन
दिनोंके आगे बलवा करके कटारबन्ध लोगोंमेंसे चार
३९ सहस्र मनुष्योंको जंगलमें ले गया। पावलने कहा मैं तो
तारसका एक यिहूदी मनुष्य हूं. किलिकियाके एक प्र-
सिद्ध नगरका निवासी हूं. और मैं आपसे बिन्ती करता
४० हूं कि मुझे लोगोंसे बात करने दीजिये। जब उसने आज्ञा
दिई तब पावलने सीढ़ीपर खड़ा होके लोगोंको हाथसे
सैन किया. जब वे बहुत चुप हुए तब उसने इब्रीय
भाषामें उनसे बात किई।

## २२ बाईसवां पर्ब्ब ।

१ यिहूदी लोगोंसे पावलकी कथा। २२ सहस्रपतिका उसे कोड़े मारने-
की आज्ञा देना और फिर छोड़ देना। ३० उसका यिहूदियोंकी
न्यायसभाके आगे खड़ा किया जाना।

१ उसने कहा हे भाइयो और पितरो मेरा उत्तर जो मैं
२ आप लोगोंके आगे अब देता हूं सुनिये। वे यह सुनके
कि वह हमसे इब्रीय भाषामें बात करता है और भी
३ चुप हुए। तब उसने कहा मैं तो यिहूदी मनुष्य हूं जो
किलिकियाके तारस नगरमें जन्मा पर इस नगरमें पाला
गया और गमलियेलके चरणोंके पास पितरोंकी व्यव-
स्थाकी ठीक रीतिपर सिखाया गया और जैसे आज तुम
४ सब हो ऐसाही ईश्वरके लिये धुन लगाये था। और मैंने
इस पन्थके लोगोंको मृत्युलों सताया कि पुरुषों और स्त्रि-

योंको भी बांध बांधके बन्दीगृहोंमें डालता था। इसमें ५
महायाजक और सब प्राचीन लोग मेरे साक्षी हैं जिनसे
मैं भाइयोंके नामपर चिट्ठियां पाके दमेसकको जाता था
कि जो वहां थे उन्हें भी ताड़ना पानेको बांधे हुए यिरूश-
लीममें लाऊं। परन्तु जब मैं जाता था और दमेसकके ६
समीप पहुंचा तब दो पहरके निकट अचांचक बड़ी ज्योति
स्वर्गसे मेरी चारों ओर चमकी। और मैं भूमिपर ७
गिरा और एक शब्द सुना जो मुझसे बोला हे शावल हे
शावल तू मुझे क्यों सताता है। मैंने उत्तर दिया कि हे ८
प्रभु तू कौन है. उसने मुझसे कहा मैं यीशु नासरी हूं
जिसे तू सताता है। जो लोग मेरे संग थे उन्होंने वह ९
ज्योति देखी और डर गये परन्तु जो मुझसे बोलता था
उसकी बात न सुनी। तब मैंने कहा हे प्रभु मैं क्या १०
करूं. प्रभुने मुझसे कहा उठके दमेसकको जा और जो
जो काम करनेको तुझे ठहराया गया है सबके विषयमें
वहां तुझसे कहा जायगा। जब उस ज्योतिके तेजके मारे ११
मुझे नहीं सूझता था तब मैं अपने संगियोंके हाथ पकड़े
हुए दमेसकमें आया। और अननियाह नाम व्यवस्थाके १२
अनुसार एक भक्त मनुष्य जो वहांके रहनेहारे सब
यिहूदियोंके यहां सुख्यात था मेरे पास आया. और १३
निकट खड़ा होके मुझसे कहा हे भाई शावल अपनी
दृष्टि पा और उसी घड़ी मैंने उसपर दृष्टि किई। तब १४
उसने कहा हमारे पितरोंके ईश्वरने तुझे ठहराया है कि
तू उसकी इच्छाको जाने और उस धर्म्मीको देखे और
उसके मुंहसे बात सुने। क्योंकि जो बातें तूने देखी और १५

सुनी हैं उनके विषयमें तू सब मनुष्योंके आगे उसका
१६ साक्षी होगा। और अब तू क्यों बिलंब करता है. उठके
डूब ले और प्रभुके नामकी प्रार्थना करके अपने पापोंको
१७ धो डाल। जब मैं यिरूशलीमको फिर आया ज्योंही
१८ मन्दिरमें प्रार्थना करता था त्योंही बेसुध हुआ. और
उसको देखा कि मुझसे बोलता था शीघ्रता करके यिरू-
शलीमसे झट निकल जा क्योंकि वे मेरे विषयमें तेरी साक्षी
१९ ग्रहण न करेंगे। मैंने कहा हे प्रभु वे जानते हैं कि तुझ-
पर बिश्वास करनेहारोंको मैं बन्दीगृहमें डालता और
२० हर एक सभामें मारता था। और जब तेरे साक्षी
स्तिफानका लोहू बहाया जाता था तब मैं भी आप
निकट खड़ा था और उसके मारे जानेमें सम्मति देता
था और उसके घातकोंके कपड़ोंकी रखवाली करता था।
२१ तब उसने मुझसे कहा चला जा क्योंकि मैं तुझे अन्य-
देशियोंके पास दूर भेजूंगा।
२२ लोगोंने इस बातलों उसकी सुनी तब ऊंचे शब्दसे
पुकारा कि ऐसे मनुष्यको पृथिवीपरसे दूर कर कि उसका
२३ जीता रहना उचित न था। जब वे चिल्लाते और कपड़े
२४ फेंकते और आकाशमें धूल उड़ाते थे. तब सहस्रपतिने
उसको गढ़में ले जानेकी आज्ञा किई और कहा उसे कोड़े
मारके जांचो कि मैं जानूं लोग किस कारणसे उसके
२५ बिरुद्ध ऐसा पुकारते हैं। जब वे पावलको चमड़ेके बंधोंसे
बांधते थे तब उसने शतपतिसे जो खड़ा था कहा क्या
मनुष्यको जो रोमी है और दंडके योग्य नहीं ठहराया
२६ गया है कोड़े मारना तुम्हें उचित है। शतपतिने यह

सुनके सहस्रपतिके पास जाके कह दिया कि देखिये आप
क्या किया चाहते हैं यह मनुष्य तो रोमी है। तब सहस्र- २७
पतिने उस पास आके उससे कहा मुझसे कह क्या तू
रोमी है. उसने कहा हां। सहस्रपतिने उत्तर दिया कि २८
मैंने यह रोमनिवासीकी पदवी बहुत रुपैयोंपर मोल
लिई. पावलने कहा परन्तु मैं ऐसाही जन्मा। तब जो २९
लोग उसे जांचनेपर थे सो तुरन्त उसके पाससे हट गये
और सहस्रपति भी यह जानके कि रोमी है और मैंने
उसे बांधा है डर गया।

और दूसरे दिन वह निश्चय जानने चाहता था कि ३०
उसपर यिहूदियोंसे क्यों दोष लगाया जाता है इसलिये
उसको बंधनोंसे खोल दिया और प्रधान याजकोंको और
न्याइयोंकी सारी सभाको आनेकी आज्ञा दिई और पाव-
लको लाके उनके आगे खड़ा किया।

## २३ तेईसवां पर्व्व।

१ पावलकी कथा और सभाका बिभिन्न होना। १२ चालीस जनोंका उसे मार डालनेका नियम बांधना। १६ पावलके भांजेका सहस्रपतिको उस बातका संदेश देना। २२ पावलका फीलिक्स अध्यक्षके पास भेजा जाना। २५ सहस्रपतिका पत्र। ३१ पावलका फीलिक्सके पास पहुंचना।

पावलने न्याइयोंकी सभाकी ओर ताकके कहा हे १
भाइयो मैं इस दिनलों सर्व्वथा ईश्वरके आगे शुद्ध मनसे
चला हूं। परन्तु अननियाह महायाजकने उन लोगोंको २
जो उसके निकट खड़े थे उसके मुंहमें मारनेकी आज्ञा
दिई। तब पावलने उससे कहा हे चूना फेरी हुई भीत्ति ३
ईश्वर तुझे मारेगा. क्या तू मुझे व्यवस्थाके अनुसार बिचार

करनेको बैठा है और व्यवस्थाको लंघन करता हुआ मुझे
४ मारनेकी आज्ञा देता। जो लोग निकट खड़े थे सो बोले
५ क्या तू ईश्वरके महायाजककी निन्दा करता है। पावलने
कहा हे भाइयो मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक
है, क्योंकि लिखा है अपने लोगोंके प्रधानको बुरा मत
६ कह। तब पावलने यह जानके कि एक भाग सदूकी
और एक भाग फरीशी हैं सभामें पुकारा हे भाइयो
मैं फरीशी और फरीशीका पुत्र हूं मृतकोंकी आशा
और जी उठनेके विषयमें मेरा बिचार किया जाता है।
७ जब उसने यह बात कही तब फरीशियों और सदूकियों-
८ में बिबाद हुआ और सभा बिभिन्न हुई। क्योंकि सदूकी
कहते हैं कि न मृतकोंका जी उठना न दूत न आत्मा
९ है परन्तु फरीशी दोनोंको मानते हैं। तब बड़ी धूम मची
और जो अध्यापक फरीशियोंके भागके थे सो उठके
लड़ते हुए कहने लगे कि हम लोग इस मनुष्यमें कुछ
बुराई नहीं पाते हैं परन्तु यदि कोई आत्मा अथवा
१० दूत उससे बोला है तो हम ईश्वरसे न लड़ें। जब बहुत
बिबाद हुआ तब सहस्रपतिको शंका हुई कि पावल उनसे
फाड़ न डाला जाय इसलिये पलटनको आज्ञा दिई कि
जाके उसको उनके बीचमेंसे छीनके गढ़में लाओ।

११ उस रात प्रभुने उसके निकट खड़े हो कहा हे पावल
ढाढ़स कर क्योंकि जैसा तूने यिरूशलीममें मेरे विषय-
मेंकी साक्षी दिई है तैसाही तुझे रोममें भी साक्षी देना
होगा।

१२ बिहान हुए कितने यिहूदियोंने एका करके प्रण बांधा

कि जबलों हम पावलको मार न डालें तबलों जो खायें
अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है। जिन्होंने आपसमें यह १३
किरिया खाई थी सो चालीस जनोंसे अधिक थे। वे १४
प्रधान याजकों और प्राचीनोंके पास आके बोले हमने यह
प्रण बांधा है कि जबलों हम पावलको मार न डालें तबलों
यदि कुछ चीखें भी तो हमें धिक्कार है। इसलिये अब १५
आप लोग न्याइयोंकी सभा समेत सहस्रपतिको समझाइये
कि हम पावलके विषयमेंकी बातें और ठीक करके
निर्णय करेंगे सो आप उसे कल हमारे पास लाइये.
परन्तु उसके पहुंचनेके पहिलेही हम लोग उसे मार
डालनेको तैयार हैं।

परन्तु पावलके भांजेने उनका घातमें लगना सुना १६
और आके गढ़में प्रवेश कर पावलको सन्देश दिया।
पावलने शतपतियोंमेंसे एकको अपने पास बुलाके कहा १७
इस जवानको सहस्रपतिके पास ले जाइये क्योंकि उसको
उससे कुछ कहना है। सो उसने उसे ले सहस्रपतिके १८
पास लाके कहा पावल बन्धुवेने मुझे अपने पास बुलाके
बिन्ती किई कि इस जवानको सहस्रपतिसे कुछ कहना
है उसे उस पास ले जाइये। सहस्रपतिने उसका हाथ १९
पकड़के और एकांतमें जाके पूछा तुझको जो मुझसे कहना
है सो क्या है। उसने कहा यिहूदियोंने आपसे यही २०
बिन्ती करनेको आपसमें ठहराया है कि हम पावलके
विषयमें कुछ बात और ठीक करके पूछेंगे सो आप उसे
कल न्याइयोंकी सभामें लाइये। परन्तु आप उनकी २१
न मानिये क्योंकि उनमेंसे चालीससे अधिक मनुष्य उसकी

घातमें लगे हैं जिन्होंने यह प्रण बांधा है कि जबलों हम
पावलको मार न डालें तबलों जो खायें अथवा पीयें तो
हमें धिक्कार है और अब वे तैयार हैं और आपकी
प्रतिज्ञाकी आस देख रहे हैं।
२२ सो सहस्रपतिने यह आज्ञा देके कि किसीसे मत कह
कि मैंने यह बातें सहस्रपतिको बताई हैं जवानको बिदा
२३ किया। और शतपतियोंमेंसे दोको अपने पास बुलाके
उसने कहा दो सौ योद्धाओं और सत्तर घुड़चढ़ों और
दो सौ भालैतोंको पहर रात बीते कैसरियाको जानेके लिये
२४ तैयार करो। और बाहन तैयार करो कि वे पावलको
बैठाके फीलिक्स अध्यक्षके पास बचाके ले जावें।
२५
२६ उसने इस प्रकारकी चिट्ठी भी लिखी। क्लौदिय लुसिय
२७ महामहिमन अध्यक्ष फीलिक्सको नमस्कार। इस मनुष्य-
को जो यिहूदियोंसे पकड़ा गया था और उनसे मार
डाले जानेपर था मैंने यह सुनके कि वह रोमी है
२८ पलटनके संग जा पहुंचके छुड़ाया। और मैं जानने
चाहता था कि वे उसपर किस कारणसे दोष लगाते
हैं इसलिये उसे उनकी न्याइयोंकी सभामें लाया।
२९ तब मैंने यह पाया कि उनकी व्यवस्थाके बिबादोंके विषय-
में उसपर दोष लगाया जाता है परन्तु बध किये जाने
अथवा बांधे जानेके योग्य कोई दोष उसमें नहीं है।
३० जब मुझे बताया गया कि यिहूदी लोग इस मनुष्यको
घातमें लगेंगे तब मैंने तुरन्त उसको आपके पास भेजा
और दोषदायकोंको भी आज्ञा दिई कि उसके बिरुद्ध
जो बात होय उसे आपके आगे कहें. आगे शुभ।

योद्धा लोग जैसे उन्हें आज्ञा दिई गई थी तैसे पावल- ३१
को लेके रातहीको अन्तिपाची नगरमें लाये। दूसरे दिन ३२
वे गढ़को लौटे और घुड़चढ़ोंको उसके संग जाने दिया।
उन्होंने कैसरियामें पहुंचके और अध्यक्षको चिट्ठी देके ३३
पावलको भी उसके आगे खड़ा किया। अध्यक्षने पढ़के पूछा ३४
यह कौन प्रदेशका है और जब जाना कि किलिकियाका
है. तब कहा जब तेरे दोषदायक भी आवें तब मैं तेरी ३५
सुनूंगा. और उसने उसे हेरोदके राजभवनमें पहरेमें
रखनेकी आज्ञा किई।

## २४ चौबीसवां पर्व्व।

१ फीलिक्सके आगे यिहूदियोंका पावलपर नालिश करना। १० पावलका उत्तर। २२ उसके विषयमें फीलिक्सकी आज्ञा। २४ उसका फीलिक्स और उसकी पत्नीसे धर्म्मकी बात कहना।

पांच दिनके पीछे अननियाह महायाजक प्राचीनोंके १
और तर्त्तूल नाम किसी सुबक्ताके संग आया और उन्होंने
अध्यक्षके आगे पावलपर नालिश किई। जब पावल २
बुलाया गया तब तर्त्तूल यह कहके उसपर दोष लगाने
लगा कि हे महामहिमन फीलिक्स आपके द्वारा हमारा
बहुत कल्याण जो होता है और आपकी प्रवीणतासे इस
देशके लोगोंके लिये कितने काम जो सुफल होते हैं.
इसको हम लोग सर्व्वथा और सर्व्वत्र बहुत धन्य मानके ३
ग्रहण करते हैं। परन्तु जिस्तें मेरी ओरसे आपको ४
अधिक बिलंब न होय मैं बिन्ती करता हूं कि आप
अपनी सुशीलतासे हमारी संक्षेप कथा सुन लीजिये।
क्योंकि हमने यही पाया है कि यह मनुष्य एक मरीके ५

ऐसा है और जगतके सारे यिहूदियोंमें बलवा करानेहारा
६ और नासरियोंके कुपन्थका प्रधान। उसने मन्दिरको
भी अपवित्र करनेकी चेष्टा किई और हमने उसे पकड़के
७ अपनी व्यवस्थाके अनुसार बिचार करने चाहा। परन्तु
लुसिय सहस्रपतिने आके बड़ी बरियाईसे उसको हमारे
हाथोंसे छीन लिया और उसके दोषदायकोंको आपके
८ पास आनेकी आज्ञा दिई। उसीसे आप पूछके इन सब
बातोंके विषयमें जिनसे हम उसपर दोष लगाते हैं
९ आपही जान सकेंगे। यिहूदियोंने भी उसके संग लगके
कहा यह बातें यूंहीं हैं।
१० तब पावलने जब अध्यक्षने बोलनेका सैन उससे किया
तब उत्तर दिया कि मैं यह जानके कि आप बहुत बरसों-
से इस देशके लोगोंके न्यायी हैं औरही साहससे अपने
११ विषयमेंकी बातोंका उत्तर देता हूं। क्योंकि आप जान
सकते हैं कि जबसे मैं यिरूशलीममें भजन करनेको
१२ आया मुझे बारह दिनसे अधिक नहीं हुए। और उन्होंने
मुझे न मन्दिरमें न सभाके घरोंमें न नगरमें किसीसे
बिबाद करते हुए अथवा लोगोंकी भीड़ लगाते हुए
१३ पाया। और न वे उन बातोंको जिनके विषयमें वे अब
१४ मुझपर दोष लगाते हैं ठहरा सकते हैं। परन्तु यह मैं
आपके आगे मान लेता हूं कि जिस मार्गको वे कुपन्थ
कहते हैं उसीकी रीतिपर मैं अपने पितरोंके ईश्वरकी
सेवा करता हूं और जो बातें व्यवस्थामें औ भविष्यद्वक्ता-
ओंके पुस्तकमें लिखी हैं उन सभोंका बिश्वास करता हूं.
१५ और ईश्वरसे आशा रखता हूं जिसे ये भी आप रखते

हैं कि धर्म्मी और अधर्म्मी भी सब मृतकोंका जी उठना
होगा। इससे मैं आप भी साधना करता हूं कि ईश्वरकी १६
और मनुष्योंकी ओर मेरा मन सदा निर्दोष रहे। बहुत १७
बरसोंके पीछे मैं अपने लोगोंको दान देनेको और चढ़ावा
चढ़ानेको आया। इसमें इन्होंने नहीं पर आशियाके १८
कितने यिहूदियोंने मुझे मन्दिरमें शुद्ध किये हुए न
भीड़के संग और न धूमधामके संग पाया। उनको उचित १९
था कि जो मेरे बिरुद्ध उनकी कोई बात होय तो यहां
आपके आगे होते और मुझपर दोष लगाते। अथवा २०
येही लोग आपही कहें कि जब मैं न्याइयोंकी सभाके
आगे खड़ा था तब उन्होंने मुझमें कौनसा कुकर्म्म पाया।
केवल इसी एक बातके विषयमें जो मैंने उनके बीचमें २१
खड़ा होके पुकारा कि मृतकोंके जी उठनेके विषयमें मेरा
बिचार आज तुमसे किया जाता है।

यह बातें सुनके फीलिक्सने जो इस मार्गकी बातें २२
बहुत ठीक करके बूझता था उन्हें यह कहके टाल दिया
कि जब लुसिय सहस्रपति आवे तब मैं तुम्हारे विषयमेंकी
बातें निर्णय करूंगा। और उसने शतपतिको आज्ञा दिई २३
कि पावलकी रक्षा कर पर उसको अवकाश दे और
उसके मित्रोंमेंसे किसीको उसकी सेवा करनेमें अथवा
उस पास आनेमें मत रोक।

कितने दिनोंके पीछे फीलिक्स अपनी स्त्री द्रुसिल्लाके २४
संग जो यिहूदिनी थी आया और पावलको बुलवाके
ख्रीष्टपर बिश्वास करनेके विषयमें उसकी सुनी। और जब २५
वह धर्म्म और संयमके और आनेवाले बिचारके विषयमें

बातें करता था तब फीलिक्सने भयमान होके उत्तर दिया
कि अब तो जा और अवसर पाके मैं तुझे बुलाऊंगा ।
२६ वह यह आशा भी रखता था कि पावल मुझे रुपैये देगा
कि मैं उसे छोड़ देऊं इसलिये और भी बहुत बार
२७ उसको बुलवाके उससे बातचीत करता था । परन्तु जब
दो बरस पूरे हुए तब पर्किय फीष्टने फीलिक्सका काम
पाया और फीलिक्स यिहूदियोंका मन रखनेकी इच्छा
कर पावलको बंधा हुआ छोड़ गया ।

## २५ पचीसवां पर्ब्ब ।

१ फीष्टका पावलके दोषदायकोंको कैसरियामें बुलाना । ६ पावलका फीष्टके आगे बिचार होना और कैसरकी दोहाई देना । १३ फीष्टका पावलकी बात अग्रिपासे कहना । २३ बिचार स्थानमें फीष्टकी कथा ।

१ फीष्ट उस प्रदेशमें पहुंचके तीन दिनके पीछे कैसरिया-
२ से यिरूशलीमको गया । तब महायाजकने और यिहू-
दियोंके बड़े लोगोंने उसके आगे पावलपर नालिश किई ·
३ और उससे बिन्ती कर उसके बिरुद्ध यह अनुग्रह चाहा
कि वह उसे यिरूशलीममें मंगवाय क्योंकि वे उसे मार्गमें
४ मार डालनेको घात लगाये हुए थे । फीष्टने उत्तर दिया
कि पावल कैसरियामें पहरेमें रहता है और मैं आप
५ वहां शीघ्र जाऊंगा । फिर बोला तुममेंसे जो सामर्थी
लोग हैं सो मेरे संग चलें और जो इस मनुष्यमें कुछ
दोष होय तो उसपर दोष लगावें ।
६ और उनके बीचमें दस एक दिन रहके वह कैसरिया-
को गया और दूसरे दिन बिचार आसनपर बैठके पावल-
७ को लानेकी आज्ञा किई । जब पावल आया तब जो

यिहूदी लोग यिरूशलीमसे आये थे उन्होंने आसपास
खड़े होके उसपर बहुत बहुत और भारी भारी दोष
लगाये जिनका प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। परन्तु उसने ८
उत्तर दिया कि मैंने न यिहूदियोंकी व्यवस्थाके न मन्दि-
रके न कैसरके बिरुद्ध कुछ अपराध किया है। तब ९
फीष्टने यिहूदियोंका मन रखनेकी इच्छा कर पावलको
उत्तर दिया क्या तू यिरूशलीमको जाके वहां मेरे आगे
इन बातोंके विषयमें बिचार किया जायगा। पावलने १०
कहा मैं कैसरके बिचार आसनके आगे खड़ा हूं जहां
उचित है कि मेरा बिचार किया जाय. यिहूदियोंका
जैसा आप भी अच्छी रीतिसे जानते हैं मैंने कुछ अप-
राध नहीं किया है। क्योंकि जो मैं अपराधी हूं और बधके ११
योग्य कुछ किया है तो मैं मृत्युसे छुड़ाया जाना नहीं
मांगता हूं परन्तु जिन बातोंसे ये मुझपर दोष लगाते
हैं यदि उनमेंसे कोई बात नहीं ठहरती है तो कोई मुझे
उन्होंके हाथ नहीं सोंप सकता है. मैं कैसरकी दोहाई
देता हूं। तब फीष्टने मंत्रियोंकी सभाके संग बात करके १२
उत्तर दिया क्या तूने कैसरकी दोहाई दिई है. तू
कैसरके पास जायगा।

जब कितने दिन बीत गये तब अग्रिपा राजा और १३
बर्णीकी फीष्टको नमस्कार करनेको कैसरियामें आये।
और उनके बहुत दिन वहां रहते रहते फीष्टने पावलको १४
कथा राजाको सुनाई कि एक मनुष्य है जिसे फीलिक्स
बंधमें छोड़ गया है। उसपर जब मैं यिरूशलीममें था १५
तब प्रधान याजकोंने और यिहूदियोंके प्राचीनोंने नालिश

किई और चाहा कि दंडकी आज्ञा उसपर दिई जाय।
१६ परन्तु मैंने उनको उत्तर दिया रोमियोंकी यह रीति नहीं
है कि जबलों वह जिसपर दोष लगाया जाता है अपने
दोषदायकोंके आम्ने साम्ने न हो और दोषके विषयमें
उत्तर देनेका अवकाश न पाय तबलों किसी मनुष्यको नाश
१७ किये जानेके लिये सोंप देवें। सो जब वे यहां एकट्ठे हुए
तब मैंने कुछ बिलंब न करके अगले दिन बिचार आसन-
१८ पर बैठके उस मनुष्यको लानेकी आज्ञा किई। दोषदाय-
कोंने उसके आसपास खड़े होके जैसे दोष मैं समझता था
१९ वैसा कोई दोष नहीं लगाया। परन्तु अपनी पूजाके वि-
षयमें और किसी मरे हुए यीशुके विषयमें जिसे पावल
कहता था कि जीता है वे उससे कितने बिबाद करते थे।
२० मुझे इस विषयके बिबादमें सन्देह था इसलिये मैंने कहा
क्या तू यिरूशलीमको जाके वहां इन बातोंके विषयमें
२१ बिचार किया जायगा। परन्तु जब पावलने दोहाई दे
कहा मुझे अगस्त महाराजासे बिचार किये जानेको
रखिये तब मैंने आज्ञा दिई कि जबलों मैं उसे कैसरके
२२ पास न भेजूं तबलों उसकी रक्षा किई जाय। तब अग्रिपा-
ने फीष्टसे कहा मैं आप भी उस मनुष्यकी सुननेसे प्रसन्न
होता. उसने कहा आप कल उसकी सुनेंगे।
२३ सो दूसरे दिन जब अग्रिपा और बर्णीकीने बड़ी
धूमधामसे आके सहस्रपतियों और नगरके श्रेष्ठ मनुष्योंके
संग समाज स्थानमें प्रवेश किया और फीष्टने आज्ञा
२४ किई तब वे पावलको ले आये। और फीष्टने कहा हे
राजा अग्रिपा और हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे संग

हो आप लोग इसको देखते हैं जिसके विषयमें सारे
यिहूदियोंने यिरूशलीममें और यहां भी मुझसे बिन्ती
करके पुकारा है कि इसका और जीता रहना उचित
नहीं है। परन्तु यह जानके कि उसने बधके योग्य कुछ २५
नहीं किया है जब कि उसने आप अगस्त महाराजाको
दोहाई दिई मैंने उसे भेजनेको ठहराया। परन्तु मैंने २६
उसके विषयमें कोई निश्चयकी बात नहीं पाई है जो मैं
महाराजाके पास लिखूं इसलिये मैं उसे आप लोगोंके
साम्ने और निज करके हे राजा अग्रिपा आपके साम्ने
लाया हूं कि बिचार किये जानेके पीछे मुझे कुछ लिखने-
को मिले। क्योंकि बन्धुवेको भेजनेमें दोष जो उसपर २७
लगाये गये हैं नहीं बताना मुझे असंगत देख पड़ता है।

## २६ छबीसवां पर्ब्ब।

१ अग्रिपाके आगे पावलका उत्तर देना। २४ फीष्ट और अग्रिपासे पावल-
की बातचीत। ३० उसका निर्दोष ठहराया जाना।

अग्रिपाने पावलसे कहा तुझे अपने विषयमें बोलनेकी १
आज्ञा दिई जाती है, तब पावल हाथ बढ़ाके उत्तर
देने लगा, कि हे राजा अग्रिपा जिन बातोंसे यिहूदी २
लोग मुझपर दोष लगाते हैं उन सब बातोंके विषयमें मैं
अपनेको धन्य समझता हूं कि आज आपके आगे उत्तर
देऊंगा, निज करके इसी लिये कि आप यिहूदियोंके ३
बीचके सब व्यवहारों और बिबादोंको बूझते हैं, सो मैं
आपसे बिन्ती करता हूं धीरज करके मेरी सुन लीजिये।
लड़कपनसे मेरी जैसी चाल चलन आरंभसे यिरूशलीम- ४
में मेरे लोगोंके बीचमें थी सो सब यिहूदी लोग जानते

५ हैं। वे जो साक्षी देने चाहते तो आदिसे मुझे पहचानते
हैं कि हमारे धर्म्मके सबसे खरे पन्थके अनुसार मैं फरीशी-
६ की चाल चला। और अब जो प्रतिज्ञा ईश्वरने पितरोंसे
किई मैं उसीकी आशाके विषयमें बिचार किये जानेको
७ खड़ा हूं, जिसे हमारे बारहों कुल रात दिन यत्नसे सेवा
करते हुए पानेकी आशा रखते हैं, इसी आशाके विषयमें
हे राजा अग्रिपा यिहूदी लोग मुझपर दोष लगाते हैं।
८ आप लोगोंके यहां यह क्यों बिश्वासके अयोग्य जाना
९ जाता है कि ईश्वर मृतकोंको जिलाता। मैंने तो अपनेमें
समझा कि यीशु नासरीके नामके बिरुद्ध बहुत कुछ कर-
१० ना उचित है। और मैंने यिरूशलीममें वही किया भी
और प्रधान याजकोंसे अधिकार पाके पवित्र लोगोंमेंसे
बहुतोंको बन्दीगृहोंमें मूंद रखा और जब वे घात किये
११ जाते थे तब मैंने अपनी सम्मति दिई। और समस्त
सभाके घरोंमें मैं बार बार उन्हें ताड़ना देके यीशुकी
निन्दा करवाता था और उनपर अत्यन्त क्रोधसे उन्मत्त
१२ होके बाहरके नगरोंतक भी सताता था। इस बीचमें
जब मैं प्रधान याजकोंसे अधिकार और आज्ञा लेके दमे-
१३ सकको जाता था, तब हे राजा मार्गमें दो पहर दिनको
मैंने स्वर्गसे सूर्य्यके तेजसे अधिक एक ज्योति अपनी और
अपने संग जानेहारोंकी चारों ओर चमकती हुई देखी।
१४ और जब हम सब भूमिपर गिर पड़े तब मैंने एक शब्द
सुना जो मुझसे बोला और इब्रीय भाषामें कहा हे
शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है, पैनोंपर लात
१५ मारना तेरे लिये कठिन है। तब मैंने कहा हे प्रभु तू

कौन है. उसने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है।
परन्तु उठके अपने पांवोंपर खड़ा हो क्योंकि मैंने तुझे १६
इसीलिये दर्शन दिया है कि उन बातोंका जो तूने देखी
हैं और जिनमें मैं तुझे दर्शन देऊंगा तुझे सेवक और
साक्षी ठहराऊं। और मैं तुझे तेरे लोगोंसे और अन्य- १७
देशियोंसे बचाऊंगा जिनके पास मैं अब तुझे भेजता हूं.
कि तू उनकी आंखें खोले इसलिये कि वे अंधियारेसे १८
उजियालेकी ओर और शैतानके अधिकारसे ईश्वरकी
ओर फिरें जिस्तें पापमोचन और उन लोगोंमें जो मुझ-
पर बिश्वास करनेसे पवित्र किये गये हैं अधिकार पावें।
सो हे राजा अग्रिपा मैंने उस स्वर्गीय दर्शनकी बात न १९
टाली. परन्तु पहिले दमेसक और यिरूशलीमके निवा- २०
सियोंको तब यिहूदियाके सारे देशमें और अन्यदेशियोंको
पश्चात्ताप करनेका और ईश्वरकी ओर फिरनेका और
पश्चात्तापके योग्य काम करनेका उपदेश दिया। इन बातोंके २१
कारण यिहूदी लोग मुझे मन्दिरमें पकड़के मार डालनेकी
चेष्टा करते थे। सो ईश्वरसे सहायता पाके मैं छोटे और २२
बड़ेको साक्षी देता हुआ आजलों ठहरा हूं और उन बातों-
को छोड़ कुछ नहीं कहता हूं जो भविष्यद्वक्ताओंने और
मूसाने भी कहा कि होनेवाली हैं. अर्थात ख्रीष्टको दुःख २३
भोगना होगा और वही मृतकोंमेंसे पहिले उठके हमारे
लोगोंको और अन्यदेशियोंको ज्योतिकी कथा सुनावेगा।
जब वह यह उत्तर देता था तब फीष्टने बड़े शब्दसे २४
कहा हे पावल तू बौड़हा है बहुत बिद्या तुझे बौड़हा
करती है। पर उसने कहा हे महामहिमन फीष्ट मैं २५

बौड़हा नहीं हूं परन्तु सच्चाई और बुद्धिकी बातें कहता
२६ हूं। इन बातोंको राजा बूझता है जिसके आगे मैं खोल-
के बोलता हूं क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि इन बातों-
मेंसे कोई बात उससे छिपी नहीं है कि यह तो कोनेमें
२७ नहीं किया गया है। हे राजा अग्रिपा क्या आप भवि-
ष्यद्वक्ताओंका बिश्वास करते हैं. मैं जानता हूं कि आप
२८ बिश्वास करते हैं। तब अग्रिपाने पावलसे कहा तू थोड़ेमें
२९ मुझे ख्रीष्टियान होनेको मनाता है। पावलने कहा ईश्वर-
से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़ेमें क्या बहुतमें केवल
आप नहीं परन्तु सब लोग भी जो आज मेरी सुनते हैं
इन बन्धनोंको छोड़के ऐसे हो जायें जैसा मैं हूं।
३० जब उसने यह कहा तब राजा और अध्यक्ष और बर्णीकी
३१ और उनके संग बैठनेहारे उठे. और अलग जाके आपसमें
बोले यह मनुष्य बध किये जाने अथवा बांधे जानेके योग्य
३२ कुछ नहीं करता है। तब अग्रिपाने फोष्टसे कहा जो यह
मनुष्य कैसरकी दोहाई न दिये होता तो छोड़ा जा सकता।

## २७ सताईसवां पर्व्व।

१ पावलका जहाजपर चढ़ाया जाना और रोम नगरकी ओर जाना। ९ पावलका परामर्श और लोगोंका उसे न मानना। १३ बड़ी आंधीका उठना। २१ पावलका लोगोंको समझाना और मल्लाहोंका समाचार। ३९ जहाजका टूटना और लोगोंका बच निकलना।

१ जब यह ठहराया गया कि हम जहाजपर इतलियाको
जायें तब उन्होंने पावलको और कितने और बन्धुवोंको
भी यूलिय नाम अगस्तकी पलटनके एक शतपतिके हाथ
२ सोंप दिया। और आद्रामुतिया नगरके एक जहाजपर

जो आशियाके तीरपरके स्थानोंको जाता था चढ़के
हमने खोल दिया और अरिस्तार्ख नाम थिसलोनिकाका
एक माकिदोनी हमारे संग था। दूसरे दिन हमने ३
सीदोनमें लगान किया और यूलियने पावलके साथ
प्रेमसे व्यवहार करके उसे मित्रोंके पास जाने और पाहुन
होने दिया। वहांसे खोलके बयारके सन्मुख होनेके ४
कारण हम कुप्रसके नीचेसे होके चले. और किलिकिया ५
और पंफुलियाके निकटके समुद्रमें होके लुकिया देशके
मुरा नगर पहुंचे। वहां शतपतिने सिकन्दरियाके एक ६
जहाजको जो इतलियाको जाता था पाके हमें उसपर
चढ़ाया। बहुत दिनोंमें हम धीरे धीरे चलके और बयार ७
जो हमें चलने न देती थी इसलिये कठिनतासे कनीदके
साम्ने पहुंचके सलमोनीके आम्ने साम्ने क्रीतीके नीचे चले.
और कठिनतासे उसके पाससे होते हुए शुभलंगरबारी ८
नाम एक स्थानमें पहुंचे जहांसे लासेया नगर निकट था।
जब बहुत दिन बीत गये थे और जलयात्रामें जोखिम ९
होती थी क्योंकि उपवास पर्ब्ब भी अब बीत चुका था
तब पावलने उन्हें समझाके कहा. हे मनुष्यो मुझे सूझ १०
पड़ता है कि इस जलयात्रामें हानि और बहुत टूटी
केवल बोझाई और जहाजकी नहीं परन्तु हमारे प्राणोंकी
भी हुआ चाहती है। परन्तु शतपतिने पावलकी बातोंसे ११
अधिक मांझीकी और जहाजके स्वामीकी मान लिई।
और वह लंगरबारी जाड़ेका समय काटनेको अच्छी न थी १२
इसलिये बहुतेरोंने परामर्श दिया कि वहांसे भी खोलके
जो किसी रीतिसे हो सके तो फैनीकी नाम क्रीतीकी एक

लंगरबारीमें जो दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिमकी ओर
खुलती है जा रहें और वहां जाड़ेका समय काटें ।
१३ जब दक्षिणकी बयार मन्द मन्द बहने लगी तब उन्होंने
यह समझके कि हमारा अभिप्राय सुफल हुआ है लंगर
उठाया और तीर धरे धरे क्रीतीके पाससे जाने लगे।
१४ परन्तु थोड़ी बेरमें क्रीतीपरसे अति प्रचण्ड एक बयार
१५ उठी जो उरकलूदन कहावती है। यह जब जहाजपर
लगी और वह बयारके साम्ने ठहर न सका तब हमने उसे
१६ जाने दिया और उड़ाये हुए चले गये। तब क्लौदा नाम
एक छोटे टापूके नीचेसे जाके हम कठिनतासे डिंगीको धर
१७ सके। उसे उठाके उन्होंने अनेक उपाय करके जहाजको
नीचेसे बांधा और सुर्त्ती नाम चड़पर टिक जानेके भयसे
१८ मस्तूल गिराके यूंहीं उड़ाये जाते थे। तब निपट बड़ी
आंधी हमपर चलती थी इसलिये उन्होंने दूसरे दिन
१९ कुछ बोझाई फेंक दिई। और तीसरे दिन हमने अपने
२० हाथोंसे जहाजकी सामग्री फेंक दिई। और जब बहुत
दिनोंतक न सूर्य्य न तारे दिखाई दिये और बड़ी आंधी
चलती रही अन्तमें हमारे बचनेकी सारी आशा जाती रही।
२१ जब वे बहुत उपवास कर चुके तब पावलने उनके
बीचमें खड़ा होके कहा हे मनुष्यो उचित था कि तुम
मेरी बात मानते और क्रीतीसे न खोलते न यह हानि
२२ और टूटी उठाते। पर अब मैं तुमसे बिन्ती करता हूं
कि ढाढ़स बांधो क्योंकि तुम्हांमेंसे किसीके प्राणका नाश न
२३ होगा केवल जहाजका। क्योंकि ईश्वर जिसका मैं हूं और
जिसकी सेवा करता हूं उसका एक दूत इसी रात मेरे

निकट खड़ा हुआ. और कहा हे पावल मत डर तुझे २४
कैसरके आगे खड़ा होना अवश्य है और देख ईश्वरने
सभोंको जो तेरे संग जलयात्रा करते हैं तुझे दिया है।
इसलिये हे मनुष्यो ढाढ़स बांधो क्योंकि मैं ईश्वरका बि- २५
श्वास करता हूं कि जिस रीतिसे मुझे कहा गया है उसी
रीतिसे होगा। परन्तु हमें किसी टापूपर पड़ना होगा। २६
जब चौदहवीं रात पहुंची ज्योंही हम आद्रिया समुद्र- २७
में इधर उधर उड़ाये जाते थे त्योंही आधी रातके निकट
मल्लाहोंने जाना कि हम किसी देशके समीप पहुंचते हैं।
और थाह लेके उन्होंने बीस पुरसे पाये और थोड़ा २८
आगे बढ़के फिर थाह लेके पन्द्रह पुरसे पाये। तब पत्थरै- २९
ले स्थानोंपर टिक जानेके डरसे उन्होंने जहाजकी पिछा-
ड़ीसे चार लंगर डाले और भोरका होना मनाते रहे।
परन्तु जब मल्लाह लोग जहाजपरसे भागने चाहते थे ३०
और गलहीसे लंगर डालनेके बहानासे डिंगी समुद्रमें उ-
तार दिई. तब पावलने शतपतिसे और योद्धाओंसे कहा ३१
जो ये लोग जहाजपर न रहें तो तुम नहीं बच सकते हो।
तब योद्धाओंने डिंगीके रस्से काटके उसे गिरा दिया। ३२
जब भोर होनेपर थी तब पावलने यह कहके सभोंसे ३३
भोजन करनेकी बिन्ती किई कि आज चौदह दिन हुए
कि तुम लोग आस देखते हुए उपवासी रहते हो और
कुछ भोजन न किया है। इसलिये मैं तुमसे बिन्ती करता ३४
हूं कि भोजन करो जिससे तुम्हारा बचाव होगा क्योंकि
तुममेंसे किसीके सिरसे एक बाल न गिरेगा। और यह ३५
बातें कहके औ रोटी लेके उसने सभोंके साम्ने ईश्वरका

३६ धन्य माना और तोड़के खाने लगा। तब उन सभोंने
३७ भी ढाढ़स बांधके भोजन किया। हम सब जो जहाजपर
३८ थे दो सौ छिहत्तर जन थे। भोजनसे तृप्त होके उन्होंने
गेहूंको समुद्रमें फेंकके जहाजको हलका किया।
३९ जब बिहान हुआ तब वे उस देशको नहीं चीन्हते थे
परन्तु किसी खालको देखा जिसका चौरस तीर था और
बिचार किया कि जो हो सके तो इसीपर जहाजको टि-
४० कावें। तब उन्होंने लंगरोंको काटके समुद्रमें छोड़ दिया
और उसी समय पतवारोंके बंधन खोल दिये और बयारके
४१ सन्मुख पाल चढ़ाके तीरकी ओर चले। परन्तु दो समुद्रों-
के संगमके स्थानमें पड़के उन्होंने जहाजको टिकाया और
गलही तो गड़ गई और हिल न सकी परन्तु पिछाड़ी
४२ लहरोंकी बरियाईसे टूट गई। तब योद्धाओंका यह परामर्श
था कि बन्धुवोंको मार डालें ऐसा न हो कि कोई पैरके
४३ निकल भागे। परन्तु शतपतिने पावलको बचानेकी इच्छासे
उन्हें उस मतसे रोका और जो पैर सकते थे उन्हें आज्ञा
४४ दिई कि पहिले कूदके तीरपर निकल चलें. और दूस-
रोंको कि कोई पटरोंपर और कोई जहाजमेंकी बस्तुओंपर
निकल जायें. इस रीतिसे सब कोई तीरपर बच निकले।

## २८ अठाईसवां पर्ब्ब।

१ मलिता टापूके लोगोंका शिष्टाचार। ३ पावलका सांपके काटनेसे कुछ दुःख न पाना। ७ पबलियके पिताको और दूसरोंको चंगा करना। ११ रोम नगरकी ओर जाना और मार्गमें भाइयोंसे भेंट करना। १६ रोममें यिहूदियोंसे बात करना और सुसमाचार सुनाना।

१ जब वे बच गये तब जाना कि यह टापू मलिता कहा-

वता है। और उन जंगली लोगोंने हमोंसे अनोखा प्रेम २
किया क्योंकि मेंहके कारण जो पड़ता था और जाड़ेके
कारण उन्होंने आग सुलगाके हम सभोंको ग्रहण किया।
जब पावलने बहुतसी लकड़ी बटोरके आगपर रखी ३
तब एक सांपने आंचसे निकलके उसका हाथ धर लिया।
और जब उन जंगलियोंने सांपको उसके हाथमें लटकते ४
हुए देखा तब आपसमें कहा निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है
जिसे यद्यपि समुद्रसे बच गया तौभी दंडदायकने जीते रहने
नहीं दिया है। तब उसने सांपको आगमें झटक दिया और ५
कुछ दुःख न पाया। पर वे बाट देखते थे कि वह सूज जाय- ६
गा अथवा अचांचक मरके गिर पड़ेगा परन्तु जब वे बड़ी
बेरलों बाट देखते रहे और देखा कि उसका कुछ नहीं
बिगड़ता है तब औरही बिचार कर कहा यह तो देवता है।
उस स्थानके आसपास पबलिय नाम उस टापूके प्रधान- ७
की भूमि थी. उसने हमें ग्रहण करके तीन दिन प्रीति-
भावसे पहुनई किई। पबलियका पिता ज्वरसे और ८
आंवलोहूसे रोगी पड़ा था सो पावलने उस पास घरमें
प्रवेश करके प्रार्थना किई और उसपर हाथ रखके उसे
चंगा किया। जब यह हुआ था तब दूसरे लोग भी जो ९
उस टापूमें रोगी थे आके चंगे किये गये। और उन्होंने १०
हम लोगोंका बहुत आदर किया और जब हम खोलने-
पर थे तब जो कुछ आवश्यक था सो दे दिया।
तीन मासके पीछे हम लोग सिकन्दरियाके एक जहा- ११
जपर जिसने उस टापूमें जाड़ेका समय काटा था जिसका
चिन्ह दियस्कूरे था चल निकले। सुराकूस नगरमें लगान १२

१३ करके हम तीन दिन रहे। वहांसे हम घूमके रीगिया
नगर पहुंचे और एक दिनके पीछे दक्षिणकी बयार जो
१४ उठी तो दूसरे दिन पुतियली नगरमें आये। वहां
भाइयोंको पाके हम उनके यहां सात दिन रहनेको बुला-
१५ ये गये और इस रीतिसे रोमको चले। वहांसे भाई लोग
हमारा समाचार सुनके अप्पियचौक और तीन सराय-
लों हमसे मिलनेको निकल आये जिन्हें देखके पावलने
ईश्वरका धन्य मानके ढाढ़स बांधा।

१६ जब हम रोममें पहुंचे तब शतपतिने बन्धुवोंको सेना-
पतिके हाथ सोंप दिया परन्तु पावलको एक योद्धाके संग
जो उसकी रक्षा करता था अकेला रहनेकी आज्ञा हुई।
१७ तीन दिनके पीछे पावलने यिहूदियोंके बड़े बड़े लोगोंको
एकट्ठे बुलाया और जब वे एकट्ठे हुए तब उनसे कहा हे
भाइयो मैंने हमारे लोगोंके अथवा पितरोंके व्यवहारोंके
बिरुद्ध कुछ नहीं किया था तौभी बन्धुआ होके यिरू-
१८ शलोमसे रोमियोंके हाथमें सोंपा गया। उन्होंने मुझे
जांचके छोड़ देने चाहा क्योंकि मुझमें बधके योग्य कोई
१९ दोष न था। परन्तु जब यिहूदी लोग इसके बिरुद्ध बोलने
लगे तब मुझे कैसरकी दोहाई देना अवश्य हुआ पर यह
नहीं कि मुझे अपने लोगोंपर कोई दोष लगाना है।
२० इस कारणसे मैंने आप लोगोंको बुलाया कि आप
लोगोंको देखके बात करूं क्योंकि इस्रायेलकी आशाके
२१ लिये मैं इस जंजीरसे बन्धा हुआ हूं। तब वे उससे बोले
न हमोंने आपके विषयमें यिहूदियासे चिट्ठियां पाईं न
भाइयोंमेंसे किसीने आके आपके विषयमें बुरा कुछ

बताया अथवा कहा। परन्तु आपका मत क्या है सो हम २२
आपसे सुना चाहते हैं क्योंकि इस पन्थके विषयमें हम
जानते हैं कि सर्ब्बत्र उसके बिरुद्धमें बातें किई जाती हैं।
सो उन्होंने उसको एक दिन ठहराया और बहुत लोग २३
बासेपर उस पास आये जिनसे वह ईश्वरके राज्यकी साक्षी
देता हुआ और यीशुके विषयमेंकी बातें उन्हें मूसाकी
व्यवस्थासे और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकसे भी समझाता
हुआ भोरसे सांझलों चर्चा करता रहा। तब कितनोंने २४
उन बातोंको मान लिया और कितनोंने प्रतीति न किई।
सो वे आपसमें एक मत न होके जब पावलने उनसे एक २५
बात कही थी तब बिदा हुए कि पवित्र आत्माने हमारे
पितरोंसे यिशैयाह भविष्यद्वक्ताके द्वारासे अच्छा कहा। कि २६
इन लोगोंके पास जाके कह तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु
नहीं बूझोगे और देखते हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा।
क्योंकि इन लोगोंका मन मोटा हो गया है और वे कानोंसे २७
ऊंचा सुनते हैं और अपने नेत्र मून्द लिये हैं ऐसा न हो
कि वे कभी नेत्रोंसे देखें और कानोंसे सुनें और मनसे
समझें और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। सो तुम २८
जानो कि ईश्वरके त्राणकी कथा अन्यदेशियोंके पास भेजी
गई है और वे सुनेंगे। जब वह यह बातें कह चुका तब २९
यिहूदी लोग आपसमें बहुत बिबाद करते हुए चले गये।
और पावलने दो बरस भर अपने भाड़ेके घरमें रहके ३०
सभोंको जो उस पास आते थे ग्रहण किया। और बिना ३१
रोक टोक बड़े साहससे ईश्वरके राज्यकी कथा सुनाता
और प्रभु यीशु ख्रीष्टके विषयमेंकी बातें सिखाता रहा॥

LIBRARY OF CONGRESS
0 039 326 404 4